

लोक कवि अब गाते नहीं

दयानंद पांडेय

लोक कवि अब गाते नहीं सिर्फ भोजपुरी भाषा, ओकरा गायकी आ भोजपुरी समाज के क्षरण के कथे भर ना ह बलुक लोक भावना आ भारतीय समाज के संत्रास के आइनो ह. गांव के निर्धन, अनपढ़ आ पिछड़ी जाति के एगो आदमी एक जून भोजन, एगो कुर्ता पायजामा पा जाए का ललक आ अनथक संघर्ष का बावजूद अपना लोक गायकी के कइसे बचा के राखऽता, ना सिर्फ लोक गायकी के बचा के राखऽता बलुक माथो पर चहुंपत बा, ई उपन्यास एह ब्यौरा के बहुते बेकली से बांचऽता. साथ ही माथ पर चहुँपला का बावजूद लोक गायक के गायकी कइसे अउर निखरला का बजाय बिखर जात बिया. बाजार का दलदल में दबत जात बिया, एही सचाई के ई उपन्यास बहुते बेलौस हो के भाखऽता, एकर गहन पड़ताल करऽता. लोक जीवन त एह उपन्यास के रीढ़ हइले ह. आ कि जइसे उपन्यास के अंत में नई दिल्ली स्टेशन पर लीडर-ठेकेदार बब्बन यादव के बेर-बेर कइल जाए वाला उद्धोष 'लोक कवि जिंदाबाद!' आ फेर छूटते पलट के लोक कवि के कान में फुसफुसा-फुसफुसा के बेर-बेर ई पूछल, 'लेकिन पिंकीआ कहां बिया?' लोक कवि के कवनो भाले जस खोभऽता आ उनुका के तूड के राख देत बा. तबहियो ऊ निरुत्तर बाड़े. ऊ आदमी जे माथ पर बइठिओ के बिखरत जाए ला मजबूर हो गइल बा, अभिशप्त हो गइल बा, अपने रचल, गढ़ल बाजार के दलदल में दबा गइल बा. छटपटा रहल बा कवनो मछली का तरह आ पूछत बा, 'लेकिन भोजपुरी कहां बियाहै?' बतर्ज बब्बन यादव, 'लेकिन पिंकीआ कहां बिया?' लोक गायकी पर निरंतर चलत ई जूते त 'लोक कवि अब गाते नहीं' के शोक गीत ह ! आ संघर्षो गीत !

"तोहरे बर्फी ले मीठ मोर लबाही मितवा!" गावत-बजावत लोक कवि अपना गाँव से एगो कम्युनिष्ट नेता का साथे सीधे लखनऊ चहुँपले त उनुका तनिको अन्दाजा ना रहल कि सफलता आ मशहूरी के कई-कई गो सीढ़ी उनुका इन्तजार में खड़ा बाड़ी सँ. ऊ त बस कवनो तरह दू जून के रोटी जुगाड़े का लालसा में रहलन. संघर्ष करत-करत ई दू जून के रोटी के लालसा कइसे आ कब यश का लालसा में बदलि गइल, उनुका पतो ना चलल. हँ, यश आ मशहूरी का बाद ई लालसा कब धन-वृक्ष के लालसा में बदलल एहकर तफसील जरूर उनुका लगे बा. बलुक कहीं त ई तफसीले एह दिना में उनुका के हरान करिके रखले बा.

गाँव में नौटंकी, बिदेसिया देखि-देखि नकल उतारे के लत उनुका के कब कलाकार बना गइल एहकरो तफसील उनुका पाले बा. एह कलाकार बने के संघर्ष के तफसीलो उनुका लगे तनि बेसिये शिद्धत से बा.

पहिले त ऊ बस नौटंकी देखि-देखि ओकर नकल पेश करके लोग के मनसायन करत रहलें. फेरु ऊ गाना गावे लगले. कँहरवा गाना सुनतन. धोबिया नाच, चमरउआ नाचो देखतन. एहकर बेसिये असर पड़त उनुका पर. कँहरवा धुन के सबले बेसी. ऊ एहकरो नकल करतन, नकल उतारत-उतारत ऊ लगभग पैरौडी पर आ गइले. जइसे नौटंकी में नाटक के कवनो कथा-वस्तु के गायकी का माध्यम से आगा बढ़ावल जाला, ठीक ओही तर्ज पर लोककवि गाँव के कवनो समस्या उठवतन आ ओकरा के गाना में फिट करिके गावसु. अब उनुका हाथ में बजावे खातिर एगो खँजड़ी कहीं कि ढपलिओ आ गइल रहुवे. जबकि पहिले ऊ थरिया भा गगरी बजावत रहलें. बाकिर अब खँजड़ी. फेर त उनकर गाना के सिवान गाँव के सरहद लाँघत जिला-जवार के समस्या छूवे लागल. एह फेर में ऊ कई बेरा फजीहतो का फेज से गुजरलन. कुछ सामन्ती जमींदार टाइप के लोगो जब उनुका गाना में आवे लागल, आ जाहिर बा कि एह गाना में लोक कवि एह सामंतन के अत्याचारे के गाथा गूँथल करसु, त ओह लोग के नागवार गुजरे. से लोक कवि के कुटाई पिटाइओ ऊ लोग कवनो ना कवनो बहाने जबे-तबे करवा देव. बाकिर लोक कवि के

हिम्मत एह सब से टूटे ना. उलटे उनुकर हौसला बढत जाव. नतीजतन जिला-जवार में अब लोक कवि आ उनुका कविताई चरचा के विषय बने लागल. एही चरच का साथे ऊ अब जवानो होखे लगलन. शादीओबियाह हो गइल उनुकर. बाकिर रोजी-रोजगार के कुछ जुगाड़ ना हो पावल उनुकर. जाति से पिछड़ा जाति के भर रहले. कवनो बेसी जमीन-जायदादो ना रहवे. पढाई-लिखाई आठवींओ तकले ठीक से ना हो पावल रहवे. त ऊ करबो करतन त का ? कविताई से चरचा आ वाहवाही त मिलत रहे, कभी-कभार पिटाई-बेईज्जतिओ हो जाइल करे बाकिर रोजगार तबहियो ना मिले. कुर्ता पायजामा तक के मुश्किल हो जाव. कई बेर फटहा पहिर के घूमे पड़े. कि तबहिये लोक कवि का भाग से छींका टूटल. विधान सभा चुनाव के एलान हो गइल. एगो जवारी कम्युनिष्ट नेता-विधायक फेरु चुनाव में उतरलन. एह चुनाव में ऊ कविओ के सेवा लिहलन. उनुका कुरतो पायजामा मिल गइल. लोक कवि जवार के समस्या जानत रहलें आ ओहिजा के धड़कनो. उनुकर गाना वइसहूँ पीड़ित आ सतावल जा रहल लोग के सच्चाई का निगचा रहत रहे. से कम्युनिष्ट पार्टी के जीप में उनकर गाना अइसन लहकल कि बस पूछीं मत. ई ऊ जमाना रहवे जब चुनाव प्रचार में जीप आ लाउडस्पीकरे सबले बड़ प्रचार माध्यम रहे. कैसेट वगैरह त तबले देश देखलही ना रहे. से लोक कवि जीप में बइठ के गाना गावत घूमसु. मंचो पर सभा में गावसु.

कुछ ओह कम्युनिष्ट नेता के आपन जमीन त कुछ लोक कवि के गीतन के प्रभाव. नेताजी फेरु चुनाव जीत गइले. ऊ चुनाव जीत के उत्तरप्रदेश का विधानसभा में चुना के लखनऊ आ गइलें तबहियो लोक कवि के ना भुलइले. साथही लोक कविओ के लखनऊ खींच ले अइलन. अब लखनऊ लोक कवि खातिर नया जमीन रहवे. अपरिचित आ अनचिन्हार. चउतरफा संघर्ष उनुकर राह ताकत रहे. जीवन के संघर्ष, रोटी-दाल के संघर्ष, आ एह खाये-पहिरे-रहे के संघर्षो से बेसी बड़ संघर्ष रहवे उनुका गाना के संघर्ष. अवध के सरजमीं लखनऊ जहाँ अवधी के बोलबाला रहवे ओहिजा लोक कवि के भोजपुरी भहरा जाइल करे. तबहियो उनुकर जुनून कायम रहल. ऊ लागल रहले आ गली-गली, मुहल्ला-मुहल्ला छानत रहसु. जहँवे चार लोग मिल जाव तहँवे "रइ-रइ-रइ-रइ" गुहार कर के कवनो कँहरवा सुनावे लागसु. बावजूड एह सबके उनुकर संघर्ष आउरी गाढ़ होखत जाव.

एही गाढ़ संघर्ष का दिन में लोक कवि एकदिन आकाशवाणी चहुँप गइले. बड़ा मुश्किल से घंटन के जद्दोजहद का बाद उनुका परिसर में ढुके के मिल पावल. जाते पूछल गइल, "का काम बा ?" लोक कवि बेधड़क कहले, "हमहू रेडियो पर गाना गायब !" उनुका के समुझावल गइल कि अइसहीये जेही तेही के आकाशवाणी से गाना गावे ना दिहल जाव. त लोक कवि तपाक से पूछलें, "त फेरु कइसे गवावल जाला ?" बतावल गइल कि एकरा खातिर आवाज के टेस्ट लिहल जाला त लोक कवि पूछले, "ई टेस्ट कवन चीज होखेला ?" बतावल गइल कि एक तरह के इम्तिहान हवे, त लोक कवि तनी मेहरियइले आ

भडकलन, "ई गाना गावे के कइसन इम्तिहान ?"

"बाकिर देवे के त पड़बे करी." आकाशवाणी के एगो कर्मचारी उनुका के समुझावत कहलसि.

"त हम परीक्षा देब गावे के. बोलीं कब देबे के बा ?" लोक कवि कहले, "हम पहिलहू मिडिल स्कूल में परीक्षा दे चुकल बानी." ऊ बोलत गइले, "दर्जा आठ त ना पास कर पवनी बाकिर दर्जा सात त पास हइये हईं. बोलीं काम चली ?" कर्मचारी बतवलसि कि, "दर्जा सात, आठ के इम्तिहान ना, गावे के इम्तिहान होखी जवना के आडिशन कहल जाला. एकरा ला फारम भरे के पड़ेला. फारम भरिं. फेर कवनो तारीख तय कर के खबर कर दिहल जाई." लोक कवि मान गइल रहले. फार्म भरले, इन्तजार कइले, अउर इम्तिहान दिहले. बाकिर इम्तिहान में फेल कर गइले.

लोक कवि बेर-बेर इम्तिहान देसु आ आकाशवाणी वाले उनुका के फेल कर देसु. रेडियो पर गाना गावे के उनुकर सपना टूटे लागल रहे कि तबहिये एगो मुहल्ला टाइप कार्यक्रम में लोक कवि के गाना एगो छुटभैया एनाउन्सर के भा गइल. ऊ उनका के अपना साथे ले जा के छिटपुट कार्यक्रमन में एगो आइटम लोको कवि के राखे लागल. लोक कवि पूरा मन लगा के गावसु. धीरे-धीरे लोक कवि के नाम लोग का जुबान पर चढ़े लागल. बाकिर उनकर सपना त रेडियो पर "रइ-रइ-रइ-रइ" गावे के रहल. बाकिर पता ना काहे ऊ हर बेर फेल कर जासु. कि तबहिये एगो शो मैन टाइप एनाउन्सर से लोक कवि के भेंट हो गइल. लोक कवि ओकरा क्लिक कर गइले. फेरु ऊ शो मैन एनाउन्सर लोक कवि के गाना गावे के सलीका सिखवलसि, लखनऊ के तहजीब आ लंद-फंद समुझवलसि. गरम रहे का बजाय बेवहार में नरमी के गुन समुझवलसि. ना सिर्फ अतने, बलुक कुछ सरकारी कार्यक्रमो में लोक कवि के हिस्सेदारी करवलसि. अब जइसे सफलता लोक कवि के राह देखत रहे. आ संजोग ई कि ओह कम्युनिष्ट विधायक का जुगाड़ से लोक कवि के चतुर्थ श्रेणी के सरकारी नौकरियो मिल गइल. एगो विधायके निवास में उनकर पोस्टिंगो हो गइल. जवना के लोक कवि "इयूटी मिलल बा" बतावसु. अब नौकरियो रहे आ गावलो-बजावल. लखनऊ के तहजीब के ऊ आ ई तहजीब उनुका के सोखत रहुवे.

जवने भइल बाकिर भूजा, चना, सतुआ खा के भा भूखे पेट सूते आ मटमइल कपड़ा धोवे के दिन लोक कवि का जिंदगी से जा चुकल रहुवे. इहाँ उहाँ जेकरा-तेकरा किहाँ दरी, बेंच पर ठिठुरत भा सिकुड के सूते दिनो बीत गइल रहे लोक कवि के. इनकर-उनकर दया, अपमान आ जब-तब गारी सुने के दिनो हवा हो चुकल रहे. अब त चहकत जवानी के बहकत दिन रहे आ लोक कवि रहले.

एही बीच ऊ आकाशवाणी के आडिशनो पास करिके ओहिजो आपन डफली बजा के "रइ-रइ-रइ-रइ" गुहारत दू गो गाना रिकार्ड करवा आइल रहले. उनुका जिनिगी से बेशउरी आ बेतरतीबी अब धीरे-धीरे उतार पर रहे. ऊ अब गावतो रहलन, "फगुनवा में रंग रसे-रसे बरसे !"

देखते-देखत लोक कवि का लगे कार्यक्रम के बाढ आ गइल. सरकारी कार्यक्रम, शादी-बियाह के

कार्यक्रम, आकाशवाणी के कार्यक्रम. अब लोक कवि आपन एगो बिरहा पार्टियो बना लिहले रहले.

लोक कवि बेसी पढल-लिखल ना रहले. ऊ खुदे कहसु, "सातवाँ दर्जा पास हई, आठवीं फेल." तबो उनुकर खासियत इहे रहे कि अपना खातिर गाये वाला गाना ऊ अपनही जोड़ गाँठ के लिखसु आ अधिकतर गाना के कँहरवा धुन में गूँथसु आ गावत त उहे उनुकर खास बन जाव. ऊ कई बेर पारंपरिक धुनो वाला गाना में जोड़ गाँठ के कुछ अइसन नया चीज, कवनो बहुते टटका मसला गूँथ देसु त लोग वाह वाह कर उठे. गारी, सोहर, कजरी, लचारी सभे गावसु बाकिर अपने निराला अंदाज में. अब उनुकर नाम लखनऊ से पसरत पूर्वी उत्तर प्रदेश के सिवान लाँघत बिहार के छूवे लागल रहे. एही बीच उनुकर जोड़ गाँठ रंग ले आइल आ ओह शोमैन एनाउंसर का कृपा से उनुकर एगो ना दू-दू गो एल.पी. रिकार्ड एच.एम.वी. जइसन कंपनी रिलीज कर दिहलसि. साथही अनुबंध करा लिहलसि कि अगिला दस बरीस ले ऊ कवनो दोसरा कंपनी खातिर ना गइहें. अब लोक कवि के धूम रहे. अब ले त ऊ सिर्फ रेडियो पर जब-तब गावत रहले. बाकिर अब त शादी-बियाह, मेला-हाट हर जगहे उनुकर गाना जे चाहत रहे बजवा लेत रहे. उनुकर एह रिकार्डन के चरचा कुछ छिटपुट अखबारनो में भइल. छुटभइया कलाकार लोक कवि के नकल कइल शुरु कर दिहले. लेकिन अब लोक कवि का नाम पर कहीं-कहीं टिकट शो आ "नाइट" होखे लागल रहे. गरज ई कि अब लोक कवि कला से निकसि के बाजारि के रुख करत रहले. बाजार के समुझत तउलत रहले आ बाजारो लोक कवि के तउलत रहे. एही नाप तउल में ऊ समुझ गइलन कि अब सिर्फ पारंपरिक गाना आ बिरहा का बूते बेसी से बेसी रेडियो भा इक्का दुक्का प्रोग्रामे हो सकेला, बाजार के बहार ना मिल सके. से लोक कवि पैतरा बदललन आ डबल मीनिंग गाना के घाल-मेल शुरु कर दिहलन, "कटहर के कोवा तू खइबू त मोटका मुअइवा के खाई" जइसन डबल मीनिंग गीत लोक कवि के बाजार में अइसन चढवलसि कि बड़हन-बड़हन गायक उनुका पीछे छूटे लगलन. लोक कवि के बाजार त ई गाना दे दिहली सँ बाकिर उनका "लोक कवि" के छविओ तनि झँउसाइये दिहली सँ. पर छवि के एह झँउसला के परवाह उनका तनिको ना भइल. उनुका पर त बाजार के नशा चढल रहे. "सफलता" के घोड़ा पर सवार लोक कवि अब पाछा मुड के ताकहू ना चाहत रहले.

विधायक निवासो में उनका साथे आसानी हो गइल रहे. उनकर गायक वाली छवि का चलते उनुका के टेलीफोन इयूटी दे दिहल गइल. ई "इयूटिओ" लोक कवि के बड़ा कामे आइल. उनकर तार जुड़े लागल. "सर" कहलो लोक कवि एहिजे सिखले. अधिकारियन के फोन विधायकन के आवे, विधायकन के फोन अधिकारियन के जाव. दुनु सूरत में लोक कवि माध्यम बनसु. पी.बी.एक्सचेंज में टेलीफोन आपरेटरी करत-करत ऊ "संबंध" बनावे में माहिर होइये गइल रहले, केकर गोटी कहवाँ बा आ केकर समीकरण कहवाँ बनत बा इहो जाने लागल रहले. अब उनुका एगो दोसरा विधायक निवास में सरकारी आवासो अलॉट हो गइल रहे. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियन वाला टाइप-वन के. लेकिन तबले उनुकर मेलजोल

अपने एगो सहकर्मी मिसरा जी से बेसी हो गइल रहे. मिसरोजी से बेसी मिसिराइन से. एह चलते ऊ आपन आवास ओहि लोग के दे दिहले. मिसरा मिसिराइन रहे लागल, साथही लोको कवि. कबो आवसु-जासु, कबो रुक जासु, फेरु रियाज, कलाकारन से भेंट घाट में उनुका दिक्कत होखे लागल त एगो अधिकारी के चिरौरी कर के ऊ ओहिजे विधायक निवास में एगो गैराजो अलॉट करवा लिहले. अब रिहर्सल, रियाज, कलाकारन से भेंट घाट, शराब, कबाब गैराजे में होखे लागल. एक तरह से ऊ उनुकर अस्थायी निवास बनि गइल. एही बीच ऊ आपन परिवारो लखनऊ ले अइले. अतना पइसा हो गइल रहे कि जमीन खरीद के एगो छोटहन घर बनवा लेस. से एगो घर बनवा के परिवार के ओहिजे राखि दिहले. बाकिर सरकारी क्वार्टर में मिसरा-मिसिराइने रह गइले. मिसिराइन के परिवारो के ऊ आपने परिवार मानत रहले.

बाकिर लोक कवि के दायरा अब बढे लागल रहे. सरकारी, गैर-सरकारी कार्यक्रमन में त उनुकर दुकान चलिये निकलल रहे, चुनावी बयारो में उनुकर झोंका तेज बहे लागल रहे. एक से दू, दू से चार, चार से छह, नेता लोग के संख्या लगातारे बढ़त जात रहे. बाति विधायक लोग से मंत्री लोग तक जाये लागल. एगो केंद्रीय मंत्री, जे लोक कवि के जवारे के रहले, त लोक कवि के बिना चुनावी त का कवनो सभा ना करत रहसु. एकरा बदले में ऊ लोक कवि के पइसा, सम्मान, शाल वगैरह गाहे बगाहे देत रहसु. लोक कवि अब चारो ओरि रहले. अगर ना रहले त कैसेट कंपनियन का कैसेटन में. एच.एम.वी. लोक कवि के दुअर्थी गाना वाला छवि हो गइला का चलते उनुकर कवनो नया रिकार्ड निकाले से पहिलही कतरात रहवे, कैसेटो का जमाना में ऊ आपन गाँठ बान्हले रखलसि. लोक कवि जब संपर्क करसु त उनुका के आश्वासन दे के टरका दिहल जात रहे. ई तब रहे जब लोक कवि का लगे गाना के अंबार लाग गइल रहे. उनुकर समकालीनन के का कहल जाव, नवसिखीया लॉंडन तक के कैसेट आवे लागल रहे बाकिर लोक कवि एह बाजार से गायब रहले. जबकि ओहू घरी उनुकर गाना के किताब बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन पर बिकात रहे. उनुकर टिकट शो होखत रहे. बाकिर लोक कवि परेशान रहले. उनुका बुझाव जइसे बाजार उनुका हाथ से सरकल जात बा. ऊ जइसे अफना गइले. संघर्ष के एगो नया दौर उनुका सामने रहवे जवना के ऊ हर केहू से बतावलो ना चाहत रहले. खाये के नइखे, पेन्हे के नइखे, रोजी रोजगार नइखे, का बारे में ऊ पहिले केहू से मौका मिलते कह-सुन लेत रहन. बाकिर सफलता के एह पायदान पर खड़ा ऊ केकरा से कहसु कि हमरा लगे कैसेट नइखे, हमार कैसेट निकलवा दीं. कबो कबो यारे-दोस्त लोग भा समकालीनो बड़ा मुलायमित से लोक कवि पर टोंट मारत पूछ देव, राउर कैसेट कब आवस्ता? लोक कवि एह टोंट के मर्म समुझतो हँस के टाल देसु. कहत, कैसेटवो आ जाई. कवन जल्दी बा ? फेर जइसे मुँह छुपावत जोड़ देसु, अबही किताब बिकाये दीं.

बाकिर कैसेट ना अइला से उनुका मनोबल पर त जवन असर पड़त रहवे से त पड़ते रहवे, मेलो-

ठेला, शादी-बियाह में ऊ अब ना बाजत रहले. काहे कि अब हर जगहा कैसेट बाजत रहे, एल.पी.रिकार्ड चलन से बहरी जात रहुवे. आ लोक कवि का लगे हिट गाना रहे, दू दू गो एल.पी.रिकार्ड रहे, बाकिर कैसेट ना रहे. एच.एम.वी. के अनुबंध उनुका के बन्हले रहुवे आ ओकर टरकावल उनुका के खड़ले जात रहे. आ अभ त उनुकर संगियो-साथी आ शुभचिंतको, धीरही सही, टोक देसु, "गुरुजी, कुछ करीं. ना त अइसे में त मार्केट से बाहर हो जायब."

"कइसे बाहर हो जायब !" ऊ डपटसि, "हई कार्यक्रम सब जवन कर रहल बानी, त का ई मार्केट ना ह ?" डपट के उहे रोआइन हो जासु. साथही एह उधेड़बुन में लाग जासु कि का ऊ सचहू बाजार से बहरी जाये का राह पर बाइन ? लोक कवि के समस्ये असल में ईहे रहे कि कैसेट बाजारी से निकलि के घरो में बाजल लागल रहे आ ऊ नदारद रहले. लोग एल. पी. रिकार्ड बजावल करीब करीब बन्द कर दिहले रहे. ऊ इहो महसूस करसु कि उनकर संगी-साथी आ शुभचिंतक, जे उनुका से बाजार से बाहर होखे के सवाल पूछत रहसु, गलत ना रहे लोग. बाकिर ई सवाल उनुका के पुलकावत ना रहे पिनकावत रहे. दिन-राति ऊ इहे सब सोचसु. सोचत-सोचत ऊ विषाद आ अवसाद से भर जासय. बाकिर उनका जवाब ना मिले. जवाब ना मिले त ऊ पी के मिसिराइन का साथे सूत जासु. बाकिर सूतियो कहाँ पावत रहले ? कैसेट मार्केट के डंक उनुका के सूतही ना देव. ऊ मिसिराइन के बाँहि में दबोचले छटपटात रहसु. पानी से बाहर फेंकाइल मछरी का तरह ऊ भाग के फेर अपना मेहरारू का लगे जासु. ओहिजो चैन ना मिले. भाग आवसु विधायक निवास के ओह गैराज में जवन उनका आवंटित रहे. गैराज में रह के कवनो नया गाना का तइयारी में लाग जासु. आ सोचसु कि कबहियो त कैसेट में ईहो गाना समइहे सँ. फेरु गइहन गली-मुहल्ला, घर का अँगना-दालानन में, मेला, हाट-बाजारन में.

बरास्ता कैसेट.

फिलहाल कैसेट के एह गम के गलत करे खातिर लोक कवि एगो म्यूजिकल पार्टी बना लिहले. अब ले उनुका लगे बिरहा पार्टी रहे. एह बिरहा पार्टी में साथ में तीन गो कोरस गावे वालन आ संगत करे वालन में हारमोनियम, ढोलक, तबला, आ करताल बजावे वाला रहले. बाकिर एह म्यूजिकल पार्टी में ओह तीन गो कोरस गावे वालन का अलावा एगो लड़की साथ में युगल गीत गावे खातिर, दू गो लड़की मिल-जुल के भा अकेले गावे खातिर, आ तीन गो लड़की डांस करे खातिर बढ गइली. एही तरह इन्स्ट्रुमेंटो बढ गइल. बेंजो, गिटार, बाँसुरी, ड्रम ताल, कांगो, वगैरहो ढोलक, हारमोनियम, तबला, आ करताल का साथे जुड गइले. लोक कवि के म्यूजिकल पार्टी चल निकलल. से ओहमें निम्न हिंदी बोले वाला एगो उद्धोषको, जवना के ऊ अनाउंसर कहसु, के शामिल कर लिहले. ऊ अनाउंसर हेलो, लेडीज एंड जेंटिलमैन जइसन गिनल-चुनल अंगरेजी शब्द त बोलबे करे, जब-तब संस्कृतो के श्लोक उचारे का, ठोक देत रहे. लोक कवि के स्टेज के ग्रेस बढि जाव. एह तरह धीरे-धीरे लोक कवि के म्यूजिकल पार्टी लगभग आर्केस्ट्रा में तबदील हो गइल रहे. त लोक कवि के एकर फायदो भरपूर मिलल. प्रसिद्धि आ पइसा दुनु ऊ कमात रहले आ भरपूर. अब बाजार उनुका दुनु हाथ में रहे. जे केहू कबो टोकबो करे कि, "ई का कर रहे हैं कवि जी ?" त लगभग ओकरा के गुरेरत ऊ कहसु, "का चाहते हैं जिनिगी भर कान में अगुरी डाल के बिरहे गावत रहें ?" लोग चुप लगा जाव. बाकिर लोक कवि त गावसु, "अपने त भइलऽ पुजारी ए राजा, हमार कजरा के निहारी ए राजा !" हँ, साँच इहे रहे कि लोक कवि के मशहूरी के ग्राफ अइसन गाना का चलते उफान मारत रहे जवन उनुका टीम के लड़की सभ नाचत गावें. ऊ गाना जवन लोक कवि के लिखल आ संगीत में बुनल रहत रहे. आ केहू अब जवन कहे, एह गानन का बदौलत लोक कवि बाजार पर चढल रहसु.

आखिर उहो दिन आ गइल जब लोक कवि कैसेट का बाजार पर चढ गइले. एगो नया आइल कैसेट कंपनी उनुका से खुदे संपर्क कइलसि. लोक कवि पहिलका रिकार्ड कंपनी से अपना अनुबंध के लाचारी जतवले. बाकिर आखिर में तय भइल कि अनुबंध तूडला पर जवन मुकदमा होखी ओकर खर्चा ई नयका कंपनी उठाई. आ लोक कवि के धड़ाधर चार-पाँच गो कैसेट साले भर में बाजार में आइये ना गइल, छाड़यो गइल. एने उनुकर चेलो-चाटी गावत झूमसु, "ससुरे से आइल बा सगुनवा हो, हे भउजी गुनवा बता दऽ."

अब होखे ई कि लोक कवि सरकारी कार्यक्रम में त देवी गीत, निर्गुन आ पारंपरिक गीत गावसु आ

एकाध गाना ऊ जवना के ऊ "शृंगार" कहसु, उहो लजात सकुचात गा-गवा देसु. बाकिर कैसेटन में ऊ खालि शृंगारे ना भयंकर शृंगार "भरसु" आ अपना म्यूजिकल टीम का मार्फत मंचन पर ऊ "सगरी कुछ" लड़कियन से ओकनी का नाच में परोसवा देस जवन कि जनता "चाहत" रहे. अब खालि उनुकर कैसेटे धड़ाधड़ बाजार में ना आवे लागल रहे, बलुक लोको कवि अब बंबई, आसाम, कलकत्ता से आगा थाईलैंड, सूरीनाम, हालैण्ड, मारीशस जइसन विदेशनो में साल दू साल में जाये लगले. अतने ना, अब उनुका के कुछ ठीक-ठाक "सम्मान" दे के कुछ संस्था-समिति सम्मानितो कइलसि. ई सगरी सम्मान आ कुछ लोक कवि के जोड़-गाँठ रंग देखवलसि आ ऊ राष्ट्रपति का साथे भारत महोत्सव का जलसन में अमेरिका, इंगलैण्ड जइसन कई गो देश में आपन कार्यक्रम पेश कर अइले. ई सब खालि उनुके खातिर अकल्पनीय ना रहे उनुका प्रतिद्वंद्वियनो खातिर रहे. प्रतिद्वंद्वियन के विश्वासे ना होखे कि लोक कवि एहिजा ओहिजा हो अइलन आ उहो राष्ट्रपति का संगे. बाकिर लोक कवि बड़ा शालीनता से कहसु, "ई हमार ना, भोजपुरी के सम्मान हs." सुन के उनुका प्रतिद्वंद्वियन का छाती पर साँप लोट जाव. बाकिर लोक कवि पी-पा के सुंदरियन का बीचे सूत जासु. बलुक अब त ई हो गइल रहे कि बिना सुंदरियन का बीचे पी-पा के लेटले उनुका नींदे ना आवे. कम से कम दू गो सुंदरी त जरूरे रहे एगो आजू, एगो बाजू, आ उहो नया-नवेली टाइप. लोक कवि सुंदरियन का नदी में नहात बाइन ई बाति अतना फइलल कि लोग कहहू लागल कि लोक कवि त ऐय्याश हो गइल बाइन. बाकिर लोक कवि एह "आलतू-फालतू" टाइप बातन पर धेयाने ना देसु. ऊ त नया गाना "बनावे" आ पुरान गाना "सुपर हिट" बनावे का धुन में छटकत रहसु. एह ओह अफसर के, जवन तवन नेता के साधत रहसु. कबो दावत दे के, कबो ओकरा घरे जा के त कबो कार्यक्रम वगैरह "पेश" करि के. एहिजा उनुकर विधायक निवास में टेलीफोन ड्यूटी वाला संपर्क साथे के तजुर्बा बहुते कामे आवे. से लोग सधत रहसु, आ लोक कवि छटकत-बहकत रहसु.

एगो ऊ दिन रहे जब लोक कवि बहुते आगा रहले आ उनुका पीछे दूर दूर ले केहू ना रहे.

अइसनो ना रहे कि लोक कवि का आगा उनुका ले बढिया भोजपुरी गावे वाला केहू ना रहे. बलुक लोक कवि से निमन भोजपुरी गावे वाला बहुत त ना बाकिर चार छह जने त शिखरो पर रहले. बाकिर ऊ लोग संपर्क साथे आ जुगाड़ बान्हे में पारंगत ना रहे. उलटे लोक कवि ना सिर्फ पारंगते रहले बलुक एहू से आगहू के कई गो कला में ऊ प्रवीणता हासिल कर चुकल रहले. ऊ गावतो रहले, "जोगाड़ होना चाहिये" भा "बेचे वाला चाहीं, इहाँ सब कुछ बिकाला". लोक कवि के आवाज के खुलापन आ ओहूमें घोराइल मिसिरी जइसन मिठास में जब कबो कवनो नया-पुरान मुहावरा मुँह पावे त लोक कवि के लोहा मान लिहल जाव. आ जब ऊ "समधिनिया के पेट जइसे इंडिया के गेट" धीरे से उठावत पूरा सुर में छोड़सु त महफिल लूट ले जासु. ओहि दिनन में लोक कवि अपना कैसेटनो में थोड़ बहुत राजनीतिक आहट वाला गीत "भरल" शुरू कर दिहले. ऊ गावसु, "ए सखी ! मोर पिया एम.पी. एम.एल.ए. से बड़का,

दिल्ली लखनऊ में वो ही क डंका", आ जब जोड़ देसु, "वोट में बदल देला वोटर क बक्सा, मोर पिया एम.पी. एम.एल.ए. से बड़का" त लोग झूम जाव.

अबले लोक कवि के ढेरहन समकालीन गायक बाजार से ना जाने कब के विदाई ले चुकल रहन त कुछ जने दुनिये से विदा हो गइल रहन. बाकिर लोक कवि पूरा मजबूती से बाजार में जमल रहले आ एने त उनुकर राजनीतिक संपर्को कुछ बेसिये "प्रगाढ़" हो गइल रहे. अब ऊ एक दू ना, कई-कई गो पार्टियन के नेतवन खातिर गावे लागल रहले. चुनावो में आ बिना चुनावो में. ऊ एके सुर में लगभग सभही के गुणगान गा देसु. कई बेर त बस नाम बदले भर के रहत रहूवे. जइसे एक गाना में ऊ गावसु, "उस चाँद में दागी है दागी, पर मिसरा जी में दागी नहीं है" भलही मिसरा जी में दाग के भंडार भरल होखे. एही तरह वर्मा, यादव, तिवारी वगैरह कवनो नाम अपना सुविधा से लोक कवि फिलर का तरह भर लेसु आ गा देसु. बिना उ जनले कि ई सब कर के उहो फिलर बने का राह पर लाग रहल बाड़े. बाकिर अबही ई दूर के राह रहे. अबही त उनुकर दिन सोना के रहे आ राति चाँदी के.

बाजार में लोककवि के कैसेटन के बहार रहे आ उनुकर म्यूजिकल पार्टी चारो ओर छवले रहे. उनुकर नाम बिकाव. गरज ई कि ऊ "मार्केट" में रहले. बाकिर मार्केट के साधत-साधत लोक कवि में ढेरे अंतर्विरोधो उपजे लागल रहे. ई अंतर्विरोध उनुकर गायकियो के ना छोड़लसि. लेकिन लोक कवि हाल-फिलहाल हिट आ फिट चलत रहले से कवनो सवालो उठे-उठावे वाला ना रहूवे. हँ कबो-कबो उनुकर उद्धोषक उनुका के जरुरे टोक देव. बाकिर जइसे धरती पानी के असहीं सोख ले ले, वइसहीं लोको कवि अपना उद्धोषक के जब तब के टोका-टाकी घोंट जासु. जब कबही टोका-टोकी बेसी हो जाव त लोक कवि "पंडित हई नू रउरा" जइसन जुमला उछाल देस. आ जब उद्धोषक कहसु कि, "हई तs" तब लोक कवि कहसु, "तबहिये अतना असंतुष्ट रहीले." आ ई कहि के लोक कवि ओह उद्धोषक के लोक लेसु. दोसर लोग हें हें हीं हीं कर के हँसे लागे. उद्धोषक, जिनका के सभे दुबे जी कहे, से अपने त कवनो नौकरी ना करत रहले बाकिर उनुकर पत्नी डी.एस.पी. रहली आ कबो कबो मुख्यमंत्री के सुरक्षो में तैनात हो जात रहली, खास कर के एगो महिला मुख्यमंत्री का सुरक्षा में. लोक कवि जब-तब मंच पर उद्धोषक दुबे जी के तारीफ करत एहु बात के घोषणा कर देसु त दुबे जी बिदक जासु. अनसा के पूछसु, "का हमार कवनो आपन पहिचान नइखे ?" ऊ बिफरसु "हमार पत्नी डी.एस.पी. हई, का इहे हमार पहिचान बा ?" पूछसु, "का हम बढिया उद्धोषक ना हई ?" लोक कवि, "हई भाई हई" कह के बला टार देसु. दुबे जी उद्धोषक साचहू बहुते बढिया रहलन बाकिर एकरो से बेसी किस्मतवाला रहलन. बाद में उनुकर एकलौता बेटो आई.ए.एस. हो गइल त लोक कवि उद्धोषक दुबे जी का तारीफ में पत्नी डी.एस.पी. का साथे आई.ए.एस. बेटो के पुल बान्ह देसु. शुरु-शुरु में बेटा के उपलब्धि के बात दुबे जी हाथ में माइक लिहले एगो खास अंदाज में मुडी झुका के सकार लेसु. बाकिर बाद का दिन में दुबे जी के एहू पर एतराज होखे लागल. एह तरह गँवे-गँवे दुबेजी के एतराज के ग्राफ उपर चढते गइल. लोक कवि का टीम में कुछ "संदिग्ध" लडकियन के मौजूदगी पर उनुकर एतराज बेसी गहिरा गइल आ एतराज ओहु ले बेसी गहिराइल लोक कवि के गायकी पर. एतराज एह पर रहे कि लोक कवि भोजपुरी अवधी के मिलावे का नाम पर दुनो के

बरबाद करत बाड़न. बाद में त ऊ लोक कवि से कहे लगलन, "अब आप अपना के भोजपुरी के गायक त मते कहल करी." फेर जोड़सु, "कम से कम हमरा से ई एलान मत करवावल करीं."

"काहे भाई काहे ?" लोक कवि आधा सुरे में रहसु आ पूछसु, "हम भोजपुरी गायक नहीं हुं त का हूं ?"

"रहनी कबो आप !" दुबे जी किचकिचासु, "कबो भोजपुरी गायक ! अब त आप खड़ी बोली लिखत गावत बानी." पूछसु, "कहीं-कहीं भोजपुरी शब्द टूस दिहला भर से, भोजपुरी कहावत ठोंक दिहला से, आ सँवरको, गोरको गूँथ दिहला भर से गाना भोजपुरी हो जाला ?"

"भला भोजपुरी जानबो करीले का आप ?" लोक कवि आधा सुरे में भुनभुनासु. साँच ई रहे कि दुबे जी के भोजपुरी से ओतने वास्ता रहे जतना मंच पर भा रिहर्सल में ऊ सुनसु. उनुकर मातृभाषा भोजपुरी ना रहे. लेकिन तबहियो ऊ लोक कवि के ना छोड़सु. कहसु, "मातृभाषा हमार भोजपुरी ना ह", एह बात के ऊ पहिले अंगरेजी में कहसु, फेर संस्कृत में, आ फेर जोड़सु, "बाकिर बाति त हम एह अनपढ़ से करत बानी." फेर ऊ हिन्दी में आ जासु, "लेकिन एकर मतलब ई ना भइल कि एगो औरत जवन हमार महतारी ना हिय ओकरा साथे हो रहल बलात्कार देखतो हम चुप रहीं कि ई हमार महतारी त ना हिय !" कहसु, "देखीं लोक कवि जी, अपना तई त हम ई ना होखे देब. हम त एह बाति के पुरजोर विरोध करबे करब."

"ठीक बा ब्राह्मण देवता !" कहि के लोक कवि उनुकर गोड़ छू लेसु. कहसु, "आजुवे बनावत बानी भोजपुरी में दू गो गाना, फेर आपके सुनावत बानी." लोक कवि आगा जोड़सु, "बाकिर बजरियो में त रहे के बा ! खाली भोजपुरी गायब, कान में अँगुरी डालि के बिरहा गायब, त पब्लिक भाग खड़ा होई." पूछसु, "के सुनी खालिस भोजपुरी ? अब घर में बेटअ त महतारी से भोजपुरी में बतियावे ना, अंगरेजी बूकेला त हमार खाँटी भोजपुरी गाना के सुनी ?" ऊ कहसु, "दुबे जी, हमहू जानतानी कि का करत बानी. बाकिर खालिस भोजपुरी गायब त केहू ना सुनी. बाजार से फेंका जायब. तब राउर अनाउंसरीओ बहि-गलि जाई आ हई बीस पचीस लोग जे हमरा बहाने रोजी-रोजगार पवले बा सभकर रोजगार बन्द हो जाई. तब का खाई ई लोग ? एह लोग के परिवार कहाँ जाई ?"

"जवनो होखे, अपना तई त ई पाप हम ना करब." कहिके दुबेजी उठ खड़ा होखसु. बहरा निकलि के अपना स्कूटड के अइसे किक मारसु कि मानो लोके कवि के "किक" मारत बाड़न. एह तरह दुबे जी के असंतोष बढ़ते रहल. लोक कवि आ उनुकर वाद-विवाद-संवाद बढ़ते रहल. कवनो फोड़ा का तरह पाकत रहल. अतना कि कबोवकबो लोक कवि बोलसु, "ई दुबवा त जीउ माठा कर दिहले बा." आ आखिरकार एक समय उहो आइल जब लोक कवि दुबे जी के "किक" कर दिहले. बाकिर अचके में ना.

गँवे-गँवे.

होखे ई कि लोक कवि कहीं से प्रोग्राम करि के आवसु त दुबेजी शिकायत दर्ज करावत कहसु, "आप हमरा के त बतवनी ना ?"

"फोन त कइले रहीं. पर आपका फोनवा इंगेज चलत रहे." लोक कवि कहसु, "आ प्रोग्रामो अचानके में लाग गइल रहे. जल्दी रहे से हमनी का निकल गइनी. बाकिर अगिला हफ्ता बनारस चले के बा, आप

तइयार रहब." कहि के लोक कवि उनुका के एगो दूगो प्रोग्राम में ले जासु आ फेर आठ-दस प्रोग्राम में काट देसु. बाद में त कई बेर लोक कवि दुबे जी के लोकलो प्रोग्राम से "कट" कर देसु. कबो "अचानक" बता के त एकाध बेर "बजट कम रहे" कहि के. संघतियन से लोक कवि कहसु, "लोग नाच गाना देखे-सुने आवेला. अनाउंसिंग सुने ना !" फेर त गँवे-गँवे दुबे जी लोक कवि से प्रोग्रामन का बाबत पूछलो बन्द कर दिहले बाकिर लोक कवि के पोस्टमार्टम ना बंद कइले. हँ, लेकिन एगो साँच इहो रहे कि दुबेजी "मार्केट" में अब लगभग नाहिये रहि गइल रहन. छिटपुट लोकल प्रोग्रामन में, कबो-कभार सरकारी कार्यक्रम में लउक जासु. लोक कवि त दिल खोल के कहसु, "दुबे जी के मार्केट आउट कर दिहलसि. असल में ऊ पिंगल ढेरे झाड़त रहले."

बाकिर जवने होखो कुछ बढ़िया कार्यक्रमन में दुबेजी के कमी लोक कवि के जरुरे अखरल करे. कार्यक्रम का बाद कहसु, "दुबवा रहता त एकरा के अइसे पेश करीत !" बाकिर दुबेजी त आखिर लोके कवि का चलते "मार्केट" से आउट रहले. आ लोक कवि के जब-तब खुदे अनाउंसिंग सम्हारे पड़े. ऊ एगो बढ़िया अनाउंसर का तलाश करत रहले. बीच-बीच में कई गो अनाउंसरन के अजमवलन. बाकिर दुबे जी जइसन संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी, उर्दू ठोंके वाला केहू मिलत ना रहे. लोक कवि कहसु, "कवनो में सलीका सहुर नइखे." फेर एगो बाँसुरी बजावे वाला के ऊ ई काम सिखवलन बाकिर उहो ना चलल. ऊ बाँसुरियो से गइल आ अनाउंसिंगो से. लोक कवि के एगो अनाउंसर अइसनो मिलल जवना के आवाजो नीमन रहे, हिंदीओ अंगरेजी जानत रहे. बाकिर दिक्कत ई रहे कि ऊ कार्यक्रम से बेसी अनाउंसिंग करे. दस मिनट के कार्यक्रम खातिर ऊ पन्द्रह मिनट के अनाउंसिंग कर डाले. में-में करत ऊ पाँच छह गो शेर ठोंक देव आ तब हम ई कइनी, तब ऊ कइनी कहि-कहि के अपने के प्रोजेक्ट करे में लागल रहे. आखिरकार लोक कवि ओकरो के हटा दिहले. कहलन कि, "ई त कार्यक्रम के गोबर-लीद सगरी निकाल देला." ओहि घरी लोक कवि के एगो टी.वी. सीरियल बनावे वाला भँटा गइल. लोक कवि के गाना चूँकि कुछ फिलिमो में पहिलही आ चुकल रहे, कुछ चोरी-चकारी का मार्फत त कुछ सीधे से ऊ टीवी सीरियल बनावे वाला के ग्लैमर में त ना अझूरइले बाकिर ओकरा राय में आ गइले. ऊ एगो लड़की के प्रोजेक्ट कइलसि जवन हिन्दी अंगरेजी दुनु जानत रहवे. "लेडीज एड जेन्टिलमेन" वाली अंगरेजिओ "हेलो सिस्टर्स एंड ब्रदर्स" कहिके बोलत रहे आ बेसी करिके अनाउंसिंग अंगरेजिये में ठोकत रहवे.

आखिरकार ऊ लोक कवि के मंच के एनाउंसर बन गइल. गँवे-गँवे ऊ "डाँड़ उछालू" डांसो जान गइल. से एक पंथ दू काज. एनाउंसर-सह-डांसर ओह लड़की से लोक कवि के म्यूजिकल पार्टी के भाव बढ़ि गइल.

एक बेर केहू लोक कवि से कहबो कइल कि, "भोजपुरी के मंच पर अंगरेजी एनाउंसिंग ! ई ठीक नइखे."

"काहें ठीक नइखे ?" लोक कवि बिदकत गरजले.

"अच्छा चलीं, शहर में त ई अंगरेजी एनाउंसिंग चलियो जाला बाकिर गाँवन में भोजपुरी गाना सुने वाला का समुझिहें ई अंगरेजी एनाउंसिंग ?"

"खूब समुझेले !" लोक कवि फइल गइले, "अउर समुझें ना समुझें, मुँह आँख दुनु बा के देखे

लागेलें."

"का देखे लागे लें ?"

"लड़िकी ! अउर का ?" लोक कवि बोलले, "अंगरेजी बोलत लड़िकी. सब कहले कि अब लोक कवि हाई लेबिल हो गइल बाड़े. लड़िकी अंगरेजी बोलेले."

"अच्छा जवन ऊ लड़िकी बोलेले अंगरेजी में, आप समुझिलें ?"

"हँ समुझिलें." लोक कवि बहुते सर्द आवाज में कहले.

"का ? आप अब अंगरेजियो समुझे लगनी ?" पूछे वाला भौंचकिया गइल. बोलल. "कब अंगरेजीओ पढ लिहनी लोक कवि जी रउरा ?"

"कब्बो ना पढनी अंगरेजी !" लोक कवि बोलले, "हिंदी त हम पढ ना पवनी, अंगरेजी का पढब !"

"बाकिर अबहिये त आप बोलत रहीं जे अंगरेजी समुझिलें ?"

"पइसा समुझिलें." लोक कवि कहले, "अउर ई अंगरेजी अनाउंसर हमार रेट हाई कर दिहले बिया, त अंगरेजी हम ना समुझब त के समुझी ?" ऊ बोलले, "का चाहत बानी जिनिगी भर बुरबके बनल रहीं. पिछड़े बनल रहीं. अइसहीं भोजपुरिओ हरदम भदेसे बनल रहे ?" लोक कवि चालू रहले, "संस्कृत का नाटक में लोग अंगरेजी सुन सकेला. कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, मणिपुरी में त लोग अंगरेजी सुन सकेला. गजल, तबला, सितार, संतूर, शहनाई पर अंगरेजी सुन सकेला त भोजपुरी का मंच पर लोग अंगरेजी सुनत बा त का खराबी बा भाई ? तनि हमहूँ के बताई !" लोक कवि के एकालाप चालू रहल, "जानीले आप, भोजपुरी का हस?" ऊ तनिका अउरी कड़कड़इले, "मरत भासा हियस. हम ओकरा के लखनऊ जइसन जगहा में गा बजा के जिंदा रखले बानी आ आप सवाल घोंपत बानी. ऊ भोजपुरी जवन अब घरो में से बहरिया रहल बिया." लोक कवि खिसियाइलो रहले आ दुखिओ रहले. कहे लगले, "अबहीं त जबले हम जिंदा हई अपना मातृभाषा के सेवा करब, मरे ना देब. कुछ चेलो-चाटी तइयार करा दिहले बानी उहो भोजपुरी गा-बजा के खात-कमात बाड़े. बाकिर अगिला पीढी भोजपुरी के का गत बनाई ई सोचिये के हम परेशान रहीले." ऊ बोलत गइले, "अबहीं त मंच पर पॉप गाना बजवा के डांस करवावत बानी, इहो लोग के चुभसता, भोजपुरी में खड़ी बोली मिलावत बानी त लोग गरियावत बा, आ अब अंगरेजी अनाउंसिंग के सवाल घोंपल जा रहल बा." ऊ कहत गइले, "बताई हम का करीं ? बाजारू टोटका ना अपनाई त बाजारे से गायब हो जाई. अरे, नौच डाली लोग. हमार हड्डियो ना मिली." कहत ऊ छटकत खाइ हो गइले. शराब के बोतल खोलत कहे लगले, "छोड़ी ई सब. शराब पीहीं, मस्त हो जाई. एह सब में कुछ नइखे धराइल. बाजार में रहब त चार लोग चीन्ही, नमस्कार करी, जवना दिने बाजार से बहरिया जायब त केहू बातो ना पूछी. ई बाति हम नीमना से जानत बानी. रउरो सभे जान लीं."

लोक कवि अबले पियत-पियत टुन्न हो गइल रहले त लोग जाये लागल. लोग जान गइल अब रुकला के मतलब बा कि लोक कवि के गारी सुनल. दरअसल दिक्कत इहे रहल कि लोक कवि अब खटाखट लेसु आ जल्दिये टुन्न हो जासु. फेरु या त ऊ "प्रणाम" उचारसु भा गायन भरल गारियन के वाचन भा फेरु सुंदरियन के ब्यसन खातिर बउरा जासु. दरअसल, एह सगरी कामन के मकसदे रहत रहे कि "तखलिया !" माने कि एकांत ! "प्रणाम" ओह आदरणीय लोग खातिर होखे जे उनुका संगीत मंडली

से अलग के मेहमान (नेता, अफसर, पत्रकार) रहसु भा जजमान होखस. अब्यस्त लोग लोक कवि के "प्रणाम" के संकेत समुझत रहे आ उठ चलत रहे. जे लोग नया रहत रहे ऊ ना समुझत रहे आ बइठल रहि जाव. लोक कवि ओह लोग के रह-रह के हाथ जोड़-जोड़ के दू चार बेर अउरी प्रणाम करत रहले. बात तबहियो ना बने त ऊ अदबे से सही कह देत रहले "त अब चलीं ना !" बावजूद लोक कवि के तमाम अदब के एहसे कुछ नादान टाइप लोग आहत आ नाराज हो जाव. बाकिर लोक कवि के एह सब से कुछ फरक ना पड़े.

कहल जाला कि अर्जुन द्रोपदी के एहीसे जीत पवले कि उनुका बस मछरी के आँख लउकत रहे. जबकि बाकी योद्धा पूरा मछरी देखत रहले आ एह चलते मछरी के आँख ना भेद पवले. से द्रोपदियो के ना जीत पवले. बाकिर केहू के जीते के अपना लोक कवि के स्टाइल कुछ दोसरे रहे. ना त ऊ अर्जुन रहले ना अपना के अर्जुन का भूमिका में देखत रहले तबहियो ऊ जीतत जरूर रहले. एह मामिला में ऊ अर्जुनो से दू डेग आगा रहले काहे कि लोक कवि मछरी आ मछरी का आँख से पहिले द्रोपदी के देखसु. बलुक कई बेर त ऊ बस द्रोपदिये के देखसु. काहे कि उनुका निशाना पर मछरी के आँख ना द्रोपदी रहत रहे. मछरी भा मछरी के आँख त बस साधन रहुवे द्रोपदी के जीते के. साध्य त द्रोपदिये रहुवी. से ऊ द्रोपदी के साधसु, मछरी भा मछरी के आँख नाहियो सधे त उनुका कवनो फरक ना पड़त रहे. ऊ गावतो रहन, "बिगड़ल काम बनि जाई, जोगाड़ चाहीं". एहसे केहू हत होखता कि आहत, एहसे उनुका कवनो सरोकार ना रहत रहुवे. उनुका त बस अपना द्रोपदी से सरोकार रहत रहुवे. ऊ द्रोपदी शराबो हो सकत रहे, सफलतो. लड़कियो हो सकत रहे, पड़सो. सम्मान, यश, कार्यक्रम भा जवन कुछ होखो. उनुकर संगी साथी कहबो करसु कि, "आपन भला, भला जगमाहीं !" बाकिर लोक कवि के एहसे कवनो फरक ना पड़त रहे. हँ, कभी कभार फरक पड़ियो जाव. तब जब उनुकर कवनो द्रोपदी उनुका ना भँटात रहे. बाकिर एह बाति के गाँठ बन्हले ऊ घुमतो ना रहले कि "हऊ वाली द्रोपदी ना मिलल !" बलुक ऊ त अइसन अहसास करावसु जइसे कुछ भइले ना होखे. दरअसल दंद-फंद आ अनुभव उनुका के बहुते पकिया बना दिहले रहुवे.

एक बेरि के बाति ह. लोक कवि के एगो विदेश दौरा तय हो गइल रहे. एडवांसो मिल गइल रहे, तारीख तय ना भइल रहे. दिन पर दिन गुजरत रहे बाकिर तारीख तय ना हो पावे. लोक कवि के एगो शुभचिन्तक बहुते उतावला रहले. एक दिन लोक कवि से कहले, "चिट्ठी लिखीं."

"हम का चिट्ठी लिखीं. जाए दीं." लोक कवि कहले, "जे अतने चिट्ठी लिखल जनती त गवैये बनतीं ? अरे साटा पर आपन नाम आ तारीख लिख दिहिलें, उहे बहुत बा." ऊ कहे लगले "कहीं कुछ गलत सलत हो गइल त ठीक ना रही. जाए दीं मामिला गड़बड़ा जाई."

"त फोन करीं." शुभचिन्तक के उतावली गइल ना रहे.

"नाहीं. फोन रहे दीं."

"काहे ?"

"का है कि बेसी कसला पर पेंच टूट जाला." लोक कवि शुभचिन्तक के समुझावत कहले.

शुभचिन्तक एह लगबग अपढ़ गायक के ई बाति सुनके हकबका गइले. बाकिर लोक कवि त

अइसने रहले.

सगरी चतुराई, सगरी होशियारी, ढेर सगरी गणित आ जुगाड का बावजूद ऊ बोलत बेधडक रहले. ई शायद उनुकर भोजपुरी के माटी के रवायत रहुवे कि अदा, जानल मुश्किल रहे. आ ऊ अनजाने ही सही एकाध बेर नुकसानो का कीमत पर कर जासु आ कुछऊ बोल जासु. आ जे कहल जाला कि "जवन कह दिहनी से कह दिहनी" पर अडिगो रह जासु.

अइसने एक बेर एगो कार्यक्रम ले के लोक कवि का गैराज वाला डेरा पर चिकचिक चलत रहुवे. लोक कवि लगातार पइसा बढ़ावे आ कुछ एडवांस लेबे का जिद्द पर अइल रहुवन. आ क्लायंट जे बा से कि पइसा ना बढ़ावे आ एडवांस का बजाय सिर्फ बयाना दे के साटा लिखवावल पर अइल रहुवे. क्लायंट का सिफारिश में कवनो कार्पोरेशन के एगो चेयरमैनो साहब लागल रहलें. काहे कि एगो केन्द्रीय मंत्री के चचेरा भाई होखला का नाते चेयरमैन साहब चलता पूजा वाला रहले. आ लोक कवि के जनपद के मूल निवासिओ. ऊ लोक कवि से हमेशा लगभग अफसरी-सामंती अंदाज में बतियावसु. ओहू दिन "मान जो, मान जो" कहत रहले. फेर लोक कवि के तनिका इज्जत देबे का गरज से ऊ हिन्दी पर आ गइले, "मान जाओ, मैं कह रहा हूँ."

"कइसे मान जाई चेयरमैन साहिब ?" लोक कवि कहले, "रउरा त सब जानीले. खाली हमही रहतीं त बात चल जाइत. हमरा साथे अउरियो कलाकार बाड़े. आ ईहाँ के पूरा पार्टियो चाहीं."

"सब हो जाई. तू घबरात काहे बाइस ?" कहत चेयरमैन साहब लोक कवि के धीरे से मटकी मरले आ फेर कहले, "मान जो, मान जो !" फेरु अपना जेब से एक रुपिया के सिक्का निकालत चेयरमैन साहब उठ खड़ा भइले. लोक कवि के ऊ सिक्का देत कहले, "हई ले आ मिसिराइन के "हियां" हमरा ओरि से साटि दीहे."

"का चेयरमैन साहिब, रउरो ?" कहके लोक कवि तनी खिसियइले. बाकिर चेयरमैन साहब के एह फूहड़ टिप्पड़ी के जवाब ऊ चाहियो के ना दे पवले आ बाति टालि गइले. चेयरमैनो साहब क्लाइंट का साथे चल गइले.

चेयरमैन साहब के जातही लोक कवि का गैराज में बइठल उनुकर एगो अफसर दोस्त लोक कवि के टोकले, "रउरा जब ई कार्यक्रम नइखे करे के त साफ मान काहे ना कर दिहनी ?"

"रउरा कइसे मालूम कि हम ई कार्यक्रम ना करब ?" लोक कवि तनी हमलावर होत पूछले.

"रउरा बातचीत से." ऊ अफसर बोलले.

"अइसे अफसरी करीं ले रउरा ?" लोक कवि बिदकले, "अइसहीं बातचीत के गलत सलत नतीजा निकालब ?"

"त ?"

"त का. कार्यक्रम त करही के बा चाहे ई लोग एक्को पइसा ना देव तबहियो." लोक कवि भावुक हो गइले. कहले, "अरे भाई, ई चेयरमैन साहिब कहत बानी त कार्यक्रम त करही के बा."

"काहे ? अइसन का बा एह दू कौड़ी के चेयरमैन में ?" अफसर बोलल. "मंत्री एकर चचेरा भाई ह नू ! का बिगाड़ लीहि. तेह पर रउरा से फूहड़ आ बेइज्जत करे वाला टिप्पणी करत बा. के हई ई मिसिराइन ?"

"जाए दीं ई सब. का करब रउरा जानि के ?" लोक कवि कहले, "ई जे चेयरमैन साहिब हउवें नू, हमरा के बहुते कुरता पायजामा पहिरवले बाइन एह लखनऊ में. भूखे सूतत रहीं त खाना खिअवले बाइन. जब हम शुरु शुरु में लखनऊ आइल रहीं त बड़ सहारा दिहले. त कार्यक्रम त करही के बा." कहि के लोक कवि अउरी भावुक हो गइले. कहे लगले, "आजु त हम इनका के शराब पियाइले त पी लेले. हम उनुका बरोबर में बइठ जानी त खराब ना मानसु आ हमार गानो खूब सुनेलें. आ एहिजा ओहिजा से परोगराम दिलवा के पइसो खूब कमवावेले. त एकाध गो फ्री परोगरामो कर लेब त का बिगड़ जाई ?"

"त अतना नाटक काहे ला कइले रहीं?"

"एहसे कि ऊ जवन क्लायंट आइल रहे ऊ पुलिस में डीएसपी बा. दोसरे एकरा लड़िकी के शादी. शादी का बाद विदाई में रोआरोहट मचल रही. के माँगी पइसा अइसनका में ? दोसरे, पुलिस वाला हs. तीसरे ठाकुर हs. जे कहीं गरमा गइल आ गोली बंदूक चलि गइल, त ?" लोक कवि कहले, "एही नाते सोचत रहली कि जवन मिलत बा एहीजे मिल जाव. कलाकारनो भर के ना त आवही जाए भर के सही."

"ओह त ई बाति बा." कहिके ऊ अफसर महोदय भउँचकिया गइलन.

चेयरमैन प्रसंग पर अफसरके सवाल लोक कवि के भावुक बना दिहले रहे. अफसर त चल गइल बाकिर लोक कवि के भावुकता उनकरा पर सवारे रहे.

चेयरमैन साहब !

चेयरमैन साहब के हालांकि लोक कवि बहुते मान देसु बाकिर मिसिराइन पर अबहीं अबहीं उनुकर टोंट उनुका के आहत कर दिहले रहवे. एह आहत भाव के धोवे का लिहाज से ऊ भरल दुपहरिये में शराब पियल शुरु कर दिहले. दू गो कलाकार लड़िकिओ उनुकर साथ देबे संजोग से तबले आ गइल रहीं सँ. लोक कवि लड़िकियन के देखते सोचले कि नीमने भइल कि चेयरमैन साहिब चलि गइले. ना त एह लड़िकियन के देखते ऊ खुल्लमखुल्ला फूहड़ टिप्पणी कइल शुरु कर देतन आ जल्दी जइबो ना करतन. लड़िकियन के अलूना जाँघ पर बइठावल, ओकनी के गाल मीसल, छाती भा हिप दिहल जइसन ओछ हरकत उनुका खातिर रूटीन हरकत रहे. ऊ कबहियो कुछऊ कर सकत रहले. अइसन कभी-कभार का, अकसरहे लोको कवि करत रहले. बाकिर उनुका एह कइला में लड़िकियनो के मजबूरे सहमति सही, सहमति रहत रहवे. बाकिर चेयरमैन साहब के एह ओछ हरकतन पर लड़िकियन के खाली असहमतिये ना रहत रहे, ऊ सब बिलबिलाइयो जात रही सँ.

बाकिर चेयरमैन साहब बाज ना आवसु. अंत में लोके कवि के पहल करे के पड़त रहवे, "त अब चलीं चेयरमैन साहब !" चेयरमैन साहब लोक कवि के बात के तबो अनुसना करसु त लोक कवि हिन्दी पर आ जासु, "बड़ी देर हो गई, जायेंगे नहीं चेयरमैन साहब ?" लोक कवि के हिन्दी बोलला के मतलब समुझत रहले चेयरमैन साहब से उठ खड़ा होखसु. कहसु, "चलत हईं रे, तैं मउज कर."

"नाहीं चेयरमैन साहिब, बुरा जिन मानीं." लोक कवि कहसु, "असल में कैसेट पर डॉस के रिहर्सल करवावे के रहे."

"ठीक है रे, ठीक है." कहत चेयरमैन साहब चल देसु. चल देसु कवनो दोसरा "अइडा" पर.

चेयरमैन साहब साठ बरीस के उमिर छूवत रहले बाकिर उनुकर कद काठी अबहियो उनुका के पचासे का आसपास के आभास दिआवत रहे. ऊ रहबो कइलन छिनार किसिम के रसिक. सबसे कहबो करसु कि, "शराब आ लौंडिया खींचत रहs, हमरे लेखा जवान बनल रहबs".

चेयरमैन साहब के अदा आ आदत कई गो अइसनो रहे जे उनुका के सरेआम जूता खिया देव बाकिर ऊ अपना बुजुर्गियत के भरपूर फायदे ना उठावसु बलुक कई बेर त ऊ अउरी सहानुभूति बिटोर ले जासु. जइसे ऊ कवनो बाजार में खड़ा-खड़ा अचके में बेवजह अइसे चिचियासु कि सभकर नजर उनुका ओरि उठ जाव. सभ उनुका के देखे लागे. जाहिर बा कि अइसनका में बहुते मेहरारुवो रहत रहली

सँ. अब जब मेहरारू उनुका ओरि देखऽ सँ त फूहड़पन पर उतर जासु. चिल्लाईये के अधबूझ आवाज मे कहसु, "... दे !" मेहरारू सकुचा के किनारे हो के दोसरा तरफ चल दे सँ. कई बेर कवनो सुन्दर मेहरारू भा लड़िकी देखसु त ओकरा अगल-बगल में चक्कर काटत-काटत ओकरा पर भहरा के गिर जासु. एह गिर पड़ला का बहाने ऊ ओह मेहरारू के भर अंकवारी पकड़ि लेसु. एही दौरान ऊ औरत के हिप, कमर, छाती आ गाल छू लेसु पूरा बेहूदगी आ बेहाया तरीका से. मेहरारू अमूमन संकोचवश भा लोक लाज का फेर में चेयरमैन साहब से तुरते छूटकारा पा के ओहिजा से खिसक जा सँ. एकाध गो औरत अगर उनुका एह तरे गिरला पर नाराजगी देखाव सँ त चेयरमैन साहब फट से पैतरा बदलि लेसु. कहसु, "अरे बच्चा, खिसयाव जनि. बूढ़ हई नू, तनी चक्कर आ गइल रहुवे से गिर गइल रहीं." ऊ "सॉरी"ओ कहसु आ फेरु ओह मेहरारू का कान्ह पर झूकल-झूकल ओकरा छातियन के उठत-बइठत देखत रहसु. तबहियो औरत उनुका पर दया खात उनुका के सम्हारे लागऽ सँ त ऊ फेर बहुते लापरवाह अंदाज में हिप पर हाथ फेर देसु. आ जे कहीं दू तीन गो औरत मिल के उनुका के सम्हारे लागऽ सँ त उनुकर त पौ बारह हो जाव. ऊ अकसरहाँ अइसन करसु बाकिर हर जगहा ना. जगह आ मौका देखि के. तवना पर कलफ लागल चमकत खदर के कुरता पायजामा, उनुकर उमिर से एह सब अएब पर बिना मेहनते पानी पड़ जाव. तवना पर ऊ हाँफे, चक्कर आवे के दू चार आना एक्टिंगो फेंक देसु. बावजूद एह सब के ऊ कभी कभार फजीहत फेज में घेराइये जासु. तबो ऊ एहसे उबरे के पैतरा बखूबी जानत रहलें.

एकदिन ऊ लोक कवि का लगे अइले, कहले, "२६ दिसंबर के तू कहाँ रहऽ भाई ?"

"एहीजे त. रिहर्सल करत रहीं." लोक कवि जवाब दिहले.

"त हजरतगंज ना गइल रहऽ २५ के ?"

"काहे ? का भइल ?"

"त मतलब कि ना गइलऽ ?"

"त अभागा बाइऽ".

"अरे भइल का ?"

"चेयरमैन साहब औरत के एगो खास अंग के उच्चारत बोलले, "अतना बड़हन औरतन के क मेला हम ना देखले रहीं. !" ऊ बोलते जात रहले, "हम त भाई पागल हो गइल रहीं. कवनो कहे एने दबाव कवनो कहे एने सुघुरावऽ." ऊ कहले, "हम त भाई दबावत सुघुरावत थाक गइनी."

"चक्कर वक्कर आइल कि नाहीं ?" लोक कवि पूछले.

"आइल नू."

"कव हाली ?"

"इहे करीब १५ - २० राउण्ड त अइबे कइल." कहत चेयरमैन साहब खुदे हँसे लगलन.

लेकिन चेयरमैन साहब का साथे अइसने रहे.

ऊ खुद अंबेसडर में होखसु आ जे अचानके कवनो सुंदर मेहरारू के सड़क पर देखि लेसु, भा दू चार गौ कायदा के औरत देखि लेसु त ड्राइवर के डाँटत तुरते काशन दे, "ऐ देखत का बाड़े ? गाड़ी होने

घुमाव." झाड़वरो अतना पारंगत रहवे कि काशन पावते ऊ फौरन गाड़ी मोड़ देव, बिना एकर परवाह कइले कि अइसे में एक्सीडेंटो हो सकेला. चेयरमैन साहब कबो दिल्ली जासु त दू तीन दिन डी.टी.सी. का बसन खातिर जरूर निकालसु. कवनो बस स्टैंड पर खड़ा होके बस में चढ़े खातिर ओहिजा खड़ा औरतन के मुआयना करसु आ फेरु जवना बस में बेसी औरत चधऽ सँ, जवना बस में बेसी भीड़ होखे, ओहि में चढ़ि जासु. झाड़वर के कहसु, "तू कार ले के पाछा पाछा आवऽ." कई बेर झाड़वर अतना बाति बिना कहले जानत रहे. त चेयरमैन साहब डी.टी.सी. का बस में जवने तवने मेहरारू के छूवला के सुख लेसु, उनुकर अंबेसडर कार बस का पीछे पीछे उनुका के फालो करत आ चेयरमैन साहब औरतन के फालो करत. ऊँघसु, गिरसु, चक्कर खासु. "फालो आन" के सरहद छूवत.

चेयरमैन साहब के अइसनका तमाम किस्सा लोके कवि का कई लोग जानत रहे. बाकिर चेयरमैन साहब के लोक कवि के झेलते भर ना रहसु बलुका उनुका के पूरा तरह जियत रहसु. जियत एहसे रहसु कि "द्रोपदी" के जीते खातिर चेयरमैन साहब लोक कवि ला एगो काम के पायदान रहलें. एगो जरूरी औजार रहलें. आ एहसान त उनुकर लोक कवि पर रहले रहवे. हालांकि ओह एहसान के चेयरमैन साहब किहाँ एक बेर ना कई-कई बेर लोक कवि उतार का चढ़ा चुकल रहले तबहियो उनुकर मूल एहसान लोक कवि कबो भुलासु ना आ एहसे बेसी ऊ जानत रहले कि चेयरमैन साहब द्रोपदी जीते के कामिल पायदान आ औजारो हउवन. से कभी-कभार उनुकर अएब वाली अदा-आदतन के ऊ आँख मूँद के टाल जासु. मिसिराइल पर यदा-कदा के टोंटो के ऊ आहत होइयो के कडुवा घूँट का तरह पी जासु आ खिसियाइल हँसी हँस के मन हलुक कर लेसु. केहु कुछ टोके, कहे त लोक कवि कहसु, "अरे मीर मालिक हउवन, जमींदार हउवन, बड़का आदमी हउवन. हमनी का छोटका हई जा, जाए दीं !"

"काहे के जमींदार ? अब त जमींदारी खतम हो चुकल बा. कइसन छोटका बड़का ? प्रजातंत्र हऽ." टोके वाला कही.

"प्रजातंत्र ह नू !" लोक कवि बोलसु, "त उनुकर बड़का भाई केन्द्र में मंत्री हवे आ मंत्री लोग जमींदार से बढ़के होला. ई जानीलें कि ना ?" ऊ कहसु, "अइसहू आ वइसहू. दूनो तरह से ऊ हमरा खातिर जमींदारे हउवें. तब उनुकर जुलुमो सहही के बा, उनुकर प्यारो दुलार सहे के बा आ उनुकर अएबो आदत."

अर्जुन के त बस एगो द्रोपदी जीते के रहे बाकिर लोक कवि के हरदम कवनो ना कवनो द्रोपदी जीते के रहत रहे. यश के द्रोपदी, धन के द्रोपदी आ सम्मान के द्रोपदी त उनुका चाहले चाहत रहवे. एह बीचे ऊ राजनीतिओ के द्रोपदी के बिया मन में बो चुकल रहले. बाकिर ई बिया अबही उनुका मन का धरतिये में दफन रहे. ठीक वइसहीं जइसे उनुकर कला के द्रोपदी उनुका बाजारु दबाव में दफन रहवे. अतना कि कई बेर उनुकर प्रशंसक आ शुभचिंतको, दबले जुबान से सही, कहत जरूर रहलें कि अगर लोक कवि बाजार का रंग में अतना ना रंगाइल रहतन आ बाजार का दबाव में अपना आर्कस्ट्रा कंपनी वाला शार्टकट का जगहा अपना बिरहे पार्टी के तवज्जो दिहले रहतन त तय तौर पर ऊ राष्ट्रीय कलाकार रहतन. ना त कम से कम तीजन बाई, बिस्मिल्लाह खान, गिरिजा देवी के स्तर के कलाकार त रहबे करतन. एहसे कम पर त उनुका के केहू रोकिये ना पवले रहीत. साँच इहे रहे कि बिरहा में लोक कवि के

आजुवो कवनो जवाब ना रहे. उनुकर मिसिरी जइसन आवाज के जादू आजुवो ढेर सगरी असंगति आ विसंगति का बावजूद सिर चढ़ के बोलत रहे. आ एहू ले बड़ बाति ई रहे कि कवनो दोसर लोक गायक बाजार में तब उनुका मुकाबिले दूर दराज तक ना रहे. लेकिन अइसनो ना रहे कि लोक कवि से बढ़िया बिरहा भा लोक गीत वाला दोसर ना रहले. आ लोक कवि से बढ़िया गावे वाला लोग दू चारे गो सही बाकिर रहले जरूर. लेकिन ऊ लोग बाजार त दूर बाजार के बिसातो ना जानत रहले. लोको कवि एह बाति के सकारसु. ऊ कहबो करसु कि "बाकिर ऊ लोग मार्केट से आउट बा." लोक कवि एकर फायदे का उठावत रहले बलुक भरपूर दुरुपयोगो करत रहले. दूरदर्शन, आकाशवाणी, कैसेट, कार्यक्रम, आर्केस्ट्रा हर जगहा उनुकरे बहार रहे. पइसा जइसे उनुका के अपना पँजरा बोलावत रहे. जाने ई पइसे के प्रताप रहे कि का रहे बाकिर गाना अब उनुका से बिसरत रहे. कार्यक्रमो में उनुकर साथी कलाकार हालांकि उनुके लिखल गाना गावसु बाकिर लोक कवि ना जाने काहे बीच बीच में दू चार गाना अपनहू गावल करसु. अइसे जइसे कवनो रस्म पूरा करत होखसु. गँवे-गँवे लोक कवि के भूमिका बदलल जात रहे. ऊ गायकी के राह छोड़ के आर्केस्ट्रा पार्टी के कैप्टन-कम-मैनेजर के भूमिका ओढ़ले जात रहसु. बहुत पहिले लोक कवि के कार्यक्रमन के उद्घोषक रहल दुबे जी उनुका के आगाहो कइले रहले कि, "अइसे त एक दिन आप आर्केस्ट्रा पार्टी के मैनेजर बनि के रह जाएब." बाकिर लोक कवि तब दुबे जी के ई बात मनले ना रहले. दुबे जी जवन खतरा बरीसन पहिले भाँप लिहले रहले ओही खतरा के भँवर अब लोक कवि के लीलत रहुवे. बाकिर बीच-बीच के विदेशी दौरा, कार्यक्रमन के अफरा-तफरी लोक कवि के नजर के अइसे तोपले रहुवे कि ऊ एह खतरनाक भँवर से उबरल त दूर एकरा के देखियो ना सकत रहले. पहिचानो ना पावत रहले. बाकिर ई भँवर लोक कवि के लीलत जात बा, ई उनुकर पुरनका संगी साथी देखत रहले. लेकिन टीम का बहरी हो जाये का डर से ऊ सब लोक कवि से कुछ कहत ना रहले, पीठ पाछा बुदबुदा के रह जासु.

आ लोक कवि ?

लोक कवि अब किसिम-किसिम के लड़िकियन के छाँटे बीने में लागल रहस. पहिले त बस ओकनी के गनवे डबल मीनिंग के डगर थामत रहुवे, अब ओकनी के परोगरामो में डबल मीनिंग डायलाग, कच्वाली मार्का शैरो-शायरी आ कामुक नाचन के बहार रहे. कैसेटवो में ऊ गाना पर कम, लड़िकियन के सेक्सी आवाज भरे पर बेसी मेहनत करे लागल रहले. केहू टोके त कहसु, "एकरा से सेल बढ़ि जाले." लोक कवि कोरियोग्राफर ना रहले, शायद एह शब्दो के ना जानत रहले. बाकिर कवनो बोल का कवना लाइन पर कतना डाँड़ मटकावे के बा, कतना छाती आ कतना आँखि, अब ऊ ईहो "गुन" लड़िकियन के रिहर्सल करवा-करवा के सिखावत का रहले घुट्टी पियावत रहले. आ बाकायदा कूल्हा, कमर पकड़ि-पकड़ के गनवो में ऊ लड़िकियन से गायकी के आरोह-अवरोह से बेसी एह पर जोर मारत रहले कि ऊ अपना आवाज के कतना सेक्सी बना सकत रहीं सँ, शोखी से इतरा सकत रहीं सँ. जेहसे कि लोग मर मिटे. ओकनी के गनवो के बोल अब बेसी "खुल" गइल रहुवे. "अँखिया बता रही है, लूटी कहीं गई हैं" तक ले त गनीमत रहुवे लेकिन ऊ त अउरी आगा बढ़ि जासु, "लाली बता रही है चूसी कहीं गई

हैं" से ले के "साड़ी बता रही है, खींची कहीं गई है" तकले चहुँप जात रहले. एह डबल मीनिंग बोल के इतिहा एहिजे ना रहवे. एक बेर फगुआ पहिला तारीख के पडल त लोक कवि एकरो ब्यौरा एगो युगल गीत में परोस दिहलन, "पहली को "पे" लूंगा फिर दुसरी को होली खेलूंगा". फेर सिसिकारी भरि-भरि गावल एह गाना के उनुकर कैसेटो खूब बिकाइल.

नीमन गावे वाली एकाध लड़िकी अइसनका गाना गावे से बाचे का फेर में पड़े त लोक कवि ओकरा के अपना टीम से "आउट" करि देसु. कवनो लड़िकी बेसी कामुक नाच करे में ईफ-बट करे त उहो "आउट" हो जाव. जवन लड़िकी ई सब कर लेव आ लोक कवि का साथे शराब पी के सूतियो लेव तब त ऊ लड़िकी उनुका टीम के कलाकार ना त बेकार अउर आउट ! एक बेर एगो लड़िकी जवन कामुक डांस बहुते बढ़िया करत रहवे, पी के बहकि गइल. लोक कवि का बेडरूम में घुसल आ साथ में लोक कवि का बगल में जब एगो अउरी लड़िकी कपड़ा उतारि के लेट गइल त ऊ उचकि के खड़ा हो गइल. लँगटे-उघारे. चिचियाये लागल, "गुरुजी, एहिजा या त ई रहि भा हम."

"तू दुनु रहबू !" लोको कवि टुन्न रहले बाकिर पुचकारत बोलले.

"ना गुरुजी !" ऊ आपन छितराइल केश आ लँगटा देहि पर कपड़ा बान्हत कहलसि.

"तू त जानेलू कि हमार काम एगो लड़िकी से ना चले !"

"ना गुरुजी, हम एकरा साथे एहिजा ना सूतब. रउरा तय कर लीं कि एहिजा ई रहि कि हम ?"

"एकरा पहिले त तोहरा एतराज ना रहवे." लोक कवि ओकर मनुहार करत कहले.

"बाकिर आजु एतराज बा." ऊ चिचियाइल.

"लागत बा तूं बेसी पी लिहले बाड़ू." लोक कवि तनी कडुवइलन.

"पियवनी त रउरे गुरुजी !" ऊ इतराइल.

"बहक जनि, आ जो !" खीस पियत लोक कवि ओकरा के फेर पुचकरले आ ओठँघल छोड़ उठि के बइठ गइले.

"कह दिहनी नू कि ना !" कपड़ा पहिरत ऊ फेर चिचियाइल.

"त भाग जो एहिजा से !" लोक कवि गँवे से बुदबुदइले.

"पहिले एकरा के भगाईं !" ऊ चहकल, "आजु हम अकेले रहब."

"ना, एहिजा से अब तूं जा."

"नीचे बड़ा भीड़ बा गुरुजी." ऊ बोलल, "फेर सभे समुझी कि गुरुजी भगा दिहलन."

"भगावत नइखी. नीचे जाके रुखसाना के भेज द."

"हम ना जाइब." ऊ फेरु इठलाइल बाकिर लोक कवि ओकरा इठलइला पर पघिरले ना. उलटे उफना पडलन, "भाग एहिजा से ! तबे से किच्च-पिच्च, भिन-भिन कइले बिया. सगरी दारु उतारि

दिहलसि." ऊ अब पुरा सुर में रहले, "भागऽतारीस कि भगाई ?"

"जाये दीं गुरुजी !" लोक कवि का दोसरा तरफ सूतल लड़िकी जवन लँगटे-उघारे त रहवे बाकिर चादर ओढले रहे, बोललसि, "अतना रात में कहवाँ जाई, आ फेर हमहीं जात बानी आ रुखसाना के बोला ले आवत बानी."

"बड़ हमदर्द बाडू एकर ?" लोक कवि ओकरा के तरेरत कहलन, "जा दुनु जानी जा एहिजा से आ तुरते जा." लोक कवि भन्नात बोलले. तबले पहिले वाली लड़िकी समुझ गइल रहवे कि गइबइ बेसी हो गइल बा. से गुरुजी का गोड़ पर गिर पड़ल. बोललसि, "माफ कर दीं गुरुजी." ऊ तनी रोआइन होखे के अभिनय कइलसि आ कहलसि, "साचहू चढ गइल रहवे गुरुजी ! माफ कर दीं."

"त अब उतर गइल ?" लोक कवि सगरी मलाल धो पौँछ के कहले.

"हँ गुरुजी !" लड़िकी बोलल.

"बाकिर हमार दारू त उतर गइल !" लोक कवि सहज होत दोसरकी से कहलन, "चल उठ !" त ऊ लड़िकी सकपकाइल कि कहीं बाहर भागे के ओकर नंबर त ना आ गइल. बाकिर तबहिये लोक कवि ओकर शंका धो दिहले. कहलें, "अरे हऊ शराब के बोतल उठाव." फेर दोसरकी का तरफ देखले आ कहले, "गिलास पानी ले आवऽ." ऊ तनिका मुसुकइले, "एकहएक पेग तुहू लोग ले लऽ. ना त काम कइसे चली ?"

"हम त ना लेब गुरुजी." ऊ लड़िकी पानी आ गिलास बेंड का कगरी राखल मेज पर राखत सरकावत कहलसि.

"चलऽ आधे पेग ले लऽ!" लोक कवि आँख मारत कहले त लड़िकी मान गइल.

लोक कवि खटाखट दू पेग चढवले आ टुन्न होखतन ओकरा पहिलही आधा पेग पिये वाली लड़िकी के अपना ओरि खींच लिहले. चूमले चटले आ ओकरा माथा पर हाथ राख के ओकरा के आशीष दिहले आ कहले, "एक दिन तू बहुते बड़ कलाकार बनबू." आ ओकरा के अपना अँकवारी में भर लिहलन. लोक कवि का साथे ई आ अइसन घटना रोजमर्रा के बात रहवे. बदलत रहे त बस लड़िकी भा जगहा. कार्यक्रम चाहे जवने शहर में होखे लोक कवि का साथे अकसर ई सब बिल्कुल अइसही-अइसही ना सही एह भा ओह तरहे से सही, बाकिर अइसनका कुछ हो जरूर जात रहवे. अकसर त कवनो ना कवनो डांसर उनुका साथे बतौर "पटरानी" रहते रहवे आ ऊ पटरानी हफ्तो भर के हो सकत रहवे, एको दिन के भा घंटो भर के. महीना छह महीना भा बरिस दू बरिसो वाली एकाध डांसर भा गायिका बतौर "पटरानी" उनुका टीम में रहली सँ आ ओकनी खातिर लोक कविओ सर्वस्व त ना बाकिर बहुते कुछ लुटा देत रहले.

बात-बेबात !

बीच कार्यक्रमे में ऊ ग्रीन रूम में लड़कियन के शराब पियावल शुरू कर देसु. कवनो नया लड़की आना कानी करे त ओकरा के डपटसि, "शराब ना पियबू त कलाकार कइसे बनबू ?" ऊ उकसावसु आ पुचकारसु, "चलऽ तनिके सा चिख लऽ !" फेर ऊ स्टेज पर से कार्यक्रम पेश क के लवटर लड़कियन के लिपटा-चिपटा के आशीर्वाद देसु. कवनो लड़की पर बहुत खुश हो जासु त ओकर छाती भा चूतड़ दबा खोदिया देस. ऊ कई बेर स्टेजो पर ई आशीर्वाद कार्यक्रम चला देसु. ए फेर कई बेर ऊ बीच कार्यक्रम में कवनो चेला टाइप आदमी के बोला के बता देसु कि कवन-कवन लड़की आजु उपर सूती. कई-कई बेर ऊ दू का बजाय तीन-तीन गो लड़कियन के उपर सूते के शेड्यूल बता देसु. महीना पन्दरहिया ऊ अपनहू आदिम रूप में आ जासु आ संभोग सुख लूटस. लेकिन अकसरहा उनुका से ई संभव ना बन पावत रहवे.

कबो-कबो त गजबे हो जाव. का रहे कि लोक कवि का टीम में कभीकदार डांसर लड़कियन के संख्या बेसी हो जाव आ ओकनी का मुकाबिले जवान कलाकारन भा संगत करे वालन के संख्या कम हो जाव. बाकी पुरुष संगत करे वाला भा गायक अधेड़ भा बूढ़ रहस जिनकर दिलचस्पी गावे बजावे आ हद से हद शराब तक रहत रहे. बाकी सेक्स गेम्स में ना त ऊ अपना के लायक पावसु ना ही लोक कवि का तरह उनकर दिलचस्पी रहे. आ एगो-दू गो जवान कलाकार आखिर कतना लोग के आग बुतावसु भला ? एके-दू गो में ऊ टैं बोल जासु. बाकिर लोक कवि के आर्कस्ट्रा टीम के लड़की सभ अतना बिगड़ गइल रहवीं सँ कि गाना बजाना आ मयकशी का बाद देह के भूख ओकनी के पागल बना देव. अधरतिया में ऊ झूमत-बहकत बेधड़क टीम के कवनो मरद से "याचना" कर बईठऽ सँ आ जे बात ना बने त होटल का कमरा में मचलत ऊ बेकल हो जा सँ आ जइसे फरियाद करे लागऽ सँ कि "त कहीं से कवनो मरद बोलवा दऽ!" एह कहला में कुछ शराब, कुछ माहौल, कुछ बिगड़ल आदत, त कुछ देहि के भूख सभकर खुमारी मिलल जुलल रहत रहे. आ अइसन बाति आ जानकारी लोक कवि तक लगभग चहुँपतो ना रहे. अधिकतर टीम के लोगे खुसुर-फुसुर करत रहे. छनाइल बिनाइल बिखरल बाति कबो-कभार लोक कवि तक चहुँप जाव त ऊ खदके लागसु आ ओह लड़की के फौरन टीम से "आउट" कर देसु. बहुते कठकरेजी बनि के.

एह सब का बावजूद लोक कवि का टीम में इन्ट्री पावे खातिर लड़कियन के लाइन लागल रहत रहे. कई बेर ठीक-ठाक पढल-लिखल लड़कियो एह लाइन में रहत रहीं सँ. गावे के शौकीन कुछ अफसरन के बीबीओ लोग लोक गायक का साथे गावे खातिर छछनात रहे आ लोक कवि का गैराज में मय सिफारिश चहुँप जाव लोग. बाकिर लोक कवि बहुते मुलायमियत से हाथ जोड़ि लेसु. कहसु, "हम हूँ अनपढ़ गँवार गवैया. गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमत रहीले, नाचत-गावत रहीले. होटल मिल जाव, धर्मशाला मिल जाव, स्कूल, स्टेशन कहवों जगहा मिल जाव त सूत रहीले. कतहीं जगह ना मिले त जीपो मोटर में सूत लिहीले. फेरु हाथ जोड़ के कहसु, "आप सभे हाई-फाई हई. आपके व्यवस्था हम ना कर पाइब. माफ

करीं."

त लोक कवि अपना आर्कस्ट्रा टीम में अमूमन हाई-फाई किसिम के लड़कियन, औरतन के एंटी ना देत रहले. आम तौर पर निम्न मध्यम वर्ग भा निम्ने वर्ग के लड़कियन के ऊ अपना टीम में एंटी देसु आ बाद में ओकनी के "हाई-फाई" बता बनवा देसु. पहिले जइसे ऊ अपना पुरान उद्धोषक दुबे जी के परिचय में उनुका डी.एस.पी. मेहरारू आ आई.ए.एस. बेटा के बखान जरूर करत रहले, ठीक वइसहीं ऊ अब पढल-लिखल लड़कियन के परिचय फलां यूनिवर्सिटी से एम.ए. करत बाड़ी, भा बी.ए. पास हई, भा फेर ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, बी.एस.सी. वगैरह जुमला लगा के करे लगले. बाकिर एह फेर में कुछ कम पढल-लिखल लड़कियन के "मनोबल" गिरे लागे. त जल्दिये एकरो दवाई लोक कवि खोज निकलले. लड़िकी चाहे कम पढल-लिखल होखे भा बेसी, कवनो लड़िकी के ऊ स्टेज पर ग्रेजुएट से कम ना बतावसु आ ई सब ऊ सायास लेकिन अनायास "अर्थ" में पेश करसु. बाद में ऊ अधिकतर लड़कियन के कहीं ना कहीं पढत बता देस. बतावसु कि "एम.ए. में पढऽतारी बाकिर भोजपुरी में गावे के शौक बा से हमरा संगे आ के गावे के शौक पुरावत बाड़ी. ऊ जोइसु, "आप सभे इनका के आशीर्वाद दीं." एहिजा तकले कि ऊ अपना उद्धोषिका लड़िकीओ के खुदे पेश करसु, "लखनऊ यूनिवर्सिटी में बी.एस.सी. करत बाड़ी…" त उद्धोषिका त साचहू बी.एस.सी. करत रही लेकिन कुछ शौक, कुछ घर के मजबूरी उनुका के लोक कवि का टीम में हिंदी, अंगरेजी अउर भोजपुरी में एनाउंसिंग करे आ जब तब कूल्हा मटकाऊ डांस करे खातिर विवश बना रखले रहवे. बाद में उनुका अंगरेजी एनाउंसिंग का चलते जब लोक कवि के "मार्केट" बढल त लोक कवि उनुका के कबो एक हजार त कबो डेढ़ हजार रुपिया एक प्रोग्राम के देबे लगले. जबकि बाकी लड़कियन के पाँच सौ, सात सौ भा बेसी से बेसी एके हजार रुपिया नाइट के दिहल करसु. आ ओही में शामिल रहे नाच-गाना के मशक्कत का बाद कबो-कबो जवन "सेवा सुश्रुषा" करे के पड़े सेहू.

खैर एनाउंसर लड़िकी त साचो पढत रहे बाकिर कुछ लड़िकी आठवीं, दसवीं भा बारहवीं तकले पढल रहत रहीं सँ, आ नाहियो रहत रही सँ तबहियो लोक कवि ओकनी के स्टेज पर यूनिवर्सिटी में पढत बता देसु. एगो लड़िकी त दसवीं फेल रहे आ ओकर महतारी सब्जी बेचत रहे लेकिन एक समय ऊ जबलपुर यूनिवर्सिटी में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी रह चुकल रहे आ मरद से झगडा का बाद जबलपुर शहर आ नौकरी छोड़ के लखनऊ आइल रहे. बाकिर लोक कवि ओह लड़िकी के यूनिवर्सिटी में पढत बतावसु आ ओकरा महतारी के जबलपुर यूनिवर्सिटी के रिटायर्ड प्रोफेसर बता देसु त संगी साथी कलाकार सुन के फिस्स से हँस देत रहे. डा. हरिवंश राय बच्चन अपना मधुशाला में जइसे कहत रहले कि, "मंदिर मस्जिद बैर बढाते, मेल कराती मधुशाला" कुछ-कुछ ओही तर्ज पर लोको कवि कीहां कलाकारन में हिन्दू-मुस्लिम के भेद खतम हो जाव. कई गो मुसलमान लड़कियन के ऊ हिन्दू नाम

रख दिहले रहुवन आ हिन्दू लड़िकियन के मुस्लिम नाम. आ लड़िकियो सब एकरा के खुशी खुशी मान लेत रहीं सँ. लेकिन तमाम एह सब के लोक कवि का मन में पता ना काहे अपना पिछड़ी जाति के होखे के ग्रन्थि तबहियो बनल रहत रहे. एह ग्रन्थि के तोपे-ढापे खातिर ऊ पिछड़ी जाति के लड़िकियन के नाम का आगा शुक्ला, द्विवेदी, तिवारी, सिंह, चौहान वगैरह जातीय संबोधन एह गरज से जोड़ देसु कि लोग का लागो कि उनुका साथ बड़ो घर के, ऊँचो जाति के लड़िकी नाचे गावेली सँ.

लोक कवि में एने अउरियो बहुते बदलाव आ गइल रहे. कबो एगो कुर्ता पायजामा खातिर तरसे वाला, एक टाइम खाए का जुगाड़ में भटके वाला लोक कवि अब मिनरले वाटर पियत रहले. पानी के बोतल हमेशा उनुका साथ रहे. ऊ लोग से बताइबो करसु कि "खरचा बढ़ि गइल बा. दू तीन सौ रुपिया के त रोज पानिये पी जाइले." ऊ जोड़सु, "दारू-शारू, खाये-पिये के अरचा अलग बा." अलग बाति रहे कि अब ऊ भोजन का नाम पर सूप पर बेसी धेयान देत रहले. चिकन सूप, फ्रूट सूप, वेजिटेबि सूप ऊ बोलसु. कई बेर त ऊ शराबो के सूपे बता के पियस-पियावसु. कहसु, "सूप पियला से ताकत बेसी आवेला." एही बीच लोक कवि एगो एयरकंडीशन कार खरीद लिहले. अब ऊ एही कार से चलसु. बाकायदा ड्राइवर राख के. लेकिन बाद में ऊ अपना ड्राइवर का मनमानी से जब तब परेशानो हो जासु. बाकिर ओकरा के नौकरी से हटाइबो ना करसु. अपना संगी साथियन से कहबो करसु, "तनी आप लोग एकरा के समुझा दीं."

"आप खुदे काहे नाहीं टाइट कर देते हैं गुरुजी ?" लोग पूछे.

"अरे, ई माली हम राजभर ! का टाइट करब एकरा के." कहत लोक कवि बेचारगी में जइसे कि धँस जासु.

एह बीच चेयरमैन साहब का सौजन्य से लोक कवि के परिचय एगो पत्रकार से हो गइल. पत्रकार जाति के ठाकुर रहे आ लोक कवि के पड़ोसी जिला के रहवईया. लोक कवि के गाना के रसियो रहे. राजनीतिक हलका आ ब्यूरोक्रेसी में ओकर निकहा पड़सार रहे. पहिले त लोककवि ओह पत्रकार से बतियावे में हिचकिचासु. संकोच से ना डर से. कि का जाने उनुको बारे में कुछ अंट-शंट लिख देव त ! आ ऊ लिखबो कइलसि एगो लेख उनुका बारे में. उहो दिल्ली के एगो अखबार में जवना के ऊ खबरची रहुवे. बाकिर लोक कवि जइसन कुछ अंट-शंट लिखला से डेरात रहले तइसन ना. ओह लेख का बाद लोक कवि के डर गँवे-गँवे मेटाये लागल. फेर त लोक कवि आ ओह पत्रकार में अकसरहाँ छनाये लागल. जाम से जाम टकराये लागल. अतना कि दुनु "हम प्याला, हमनिवाला" बन गइले. जल्दिये दुनु एक दोसरा के साधहु लगले. पत्रकार के "मनोरंजन" आ शराब के एगो ठिकाना भँटा गइल रहे आ लोक कवि के मिल गइल रहे सम्मान आ प्रचार के द्रोपदी जीते के एगो कुशल औजार. दुनु एक दोसरा के पूरक बन बाकायदा "गिव एंड टेक" के सही साबित करे लागल रहले.

लोक कवि पत्रकार के रोज भरपेट शराब पियावल करसु आ कई बेर ई दुनु सबेरही से शुरु हो जाव लोग. अइसे जइसे कि बेड टी ले रहल होखे लोग. त पत्रकार लोक कवि खातिर अकसर छोट मोट सरकारी कार्यक्रमन से ले के प्राइवेट प्रोग्रामन तक के पुल बनत रहुवे. पत्रकार उनुका सरकारी कार्यक्रमन के फीसो ढेरे बढ़वा दिहलसि ब्यूरोक्रेसी पर जोर डाल के. अतने ना, बाद में जब पिछड़ी जाति के एगो नेता मुख्यमंत्री बनलन त पत्रकार अपना जान-पहिचान का बल पर ओहिजो लोक कवि के एंट्री करवा दिहलसि. लोक कवि खुदहु पिछड़ी जाति के रहले आ मुख्यमंत्री पिछड़ा जाति के. से दुनु के ट्यूनिंग अतना बेसी जुड गइल कि लोक कवि के पहिचान मुख्यमंत्री के उपजाति वाला बने लागल. तब जबकि लोक कवि ओह जाति के रहले ना. लेकिन चूंकि ऊ पहिलही से अपना नाम का आगा आपन सरनेम ना लिखत रहले, से मुख्यमंत्री वाला सरनेम जब उनुका नाम का आगा लागे लागल त केहू के उजूर ना भइल. उजूर जेकरा होखल चाहत रहे ऊ लोक कविए रहलन बाकिर उनुका कवनो उजूर ना रहे. गाहे-बगाहे उनुकर सरनेम जाने वाला केहू उनुका के टोके कि, "का भाई, यादव कब से हो गइल?" त लोक कवि हँस के बात टार देसु. टार एहसे देसु कि ऊ यादव ना होइयो के "यादव" के भँजावत रहलन. यादव मुख्यमंत्री के करीबी होखला के सुख लूटत रहले. अतने ना यादवो समाज में अब लोके कवि के बोलहटा होखल करे अधिकतर कार्यक्रमन में. आ बैनर, पोस्टरन पर लोक कवि के नाम का साथे यादवो ओही तरह टहकार लिखल रहत रहे. यादव समाज में लोक कवि खातिर एगो भावुकता भरल अपनापन उमड़े लागल रहे. यादव समाज के कर्मचारी, पुलिस वाले त आके गोड़ छूवें आ छाती फूला के कहें कि, "अपने त हमनी के बिरादरी के नाम रोशन कर दिहनी." जबाब में लोक कवि बहुते विनम्र भाव से मुसकिया बस देसु. यादव समाज के बहुते अफसरानो लोक कवि के ओही भावुक आँखिन देखसु आ उनुकर हर संभव मदद करसु, उनकर काम करवा देसु.

कुछुए दिन में लोक कवि के रुतबा अतना बढ़ गइल कि ऊ तमाम तरह के लोगन के मुख्यमंत्री से भेंट करवावे के पुल बन गइलन. छुटभईया नेता, अफसर, ठेकेदार आ इहाँ तकले कि यादवो समाज के लोग मुख्यमंत्री से भेंट करे खातिर, मुख्यमंत्री से काम करवावे खातिर लोक कवि के आपन जोगाड बना लिहले. अफसरन के पोस्टिंग, ठेकेदारन के ठीका त ऊ दिलवाइये देसु, कुछ नेता लोग के चुनाव में पार्टी के टिकटो दिलवावे के ऊ भरोसा देबे लगले. आ जाहिर बा कि ई सब कुछ लोक कवि के बुद्धि भा बँवत से बहरी के रहे. परदा के बाहर ई सब जरूर लोक कवि करत रहले बाकिर परदा का पाछा से त उनुका पड़ोसी जिला के ऊ पत्रकार रहे जवना के चेयरमैन साहब लोक कवि से भेंट करवले रहले. आ ई सब कइलो पर लोक कवि वास्तव में मुख्यमंत्री का ओतना करीब ना हो पावल रहले जतना कि उनुका बारे में हल्ला हो गइल रहे. असल में ई सब करके मुख्यमंत्री के बेसी करीब ऊ पत्रकारे भइल रहे.

लोक कवि त बस मुखौटा भर बन के रह गइल रहलन.

इहे मुख्यमंत्री सगरी विधा के कलाकारन में आपन पैठ बनावे खातिर, ओह लोग के उपकृत करे खातिर एगो नया लखटकिया सम्मान के एलान कइलन जवना में दू, पाँच आ पचास लाख तक के नकद इनाम तक के व्यवस्था रहे. इहो प्रावधान राखल गइल रहे कि संबंधित कलाकार के गृह जनपद भा जहवों ओकरा के सम्मानित कइल जाव ओहिजा के कवनो सड़क के नाम ओह कलाकार का नाम पर राखल जाव. एह सम्मान से कई गो नामी-गिरामी फिल्मी कलाकार, निर्देशक, अभिनेता, गायक त नवाजले गइले एगो सुपर स्टार के अपना जिला में ले जा के मुख्यमंत्री उनुका के पचास लाख के पुरस्कार से सम्मानितो कइले. एह सम्मान समारोह में लोको कवि आपन कार्यक्रम पेश कइले. उनुकर एगो गाना "हीरो बंबे वाला लमका झूठ बोलेला" सबका पसन्द आइल आ उनुकर खूबे वाह-वाह भइल.

बाकिर लोक कवि खुश ना रहले.

लोक कवि के एह बात के गम रहे कि ऊ मुख्यमंत्री के करीबी मानल जाले, उनुका बिरादरी के नाहियो हो के उनुका बिरादरी के मानल जाले आ एहूले बड़हन बात तई रहे कि ऊ कलाकारो खराब ना रहले. मुख्य मंत्री के बहुते सभा लोक कवि के गायन बिना शुरु ना होखल करे. तबहियो ऊ एह लखटकिया सम्मान से वंचित रहले. तब जबकि एगो मशहूर फिल्म निर्देशक त मुख्यमंत्री के बाकायदा चिट्ठी लिख के भेजलसि कि फलां तारीख के हमार जनमदिन ह, आ हम चाहब कि रउरा एह मौका पर हमरो के सम्मान से नवाज दीं. आ मुख्यमंत्री ओह निर्देशक के बात मान लिहले रहले. ओकरा के सम्मानित कइल गइल रहे. कहल गइल रहे कि ई मुस्लिम तुष्टिकरण ह. ऊ निर्देशक मुसलमान रहूवे. बाकिर ई सब बात कहे-सुने के रहे. साँच बात इहे रहे कि ओह निर्देशक में असल में काबिलियत रहे आ ऊ कम से कम दू गो लैंडमार्क फिल्म जरूरे बनवले रहूवे. हँ, लेकिन मुख्यमंत्री के चिट्ठी लिख के ओह फिल्मनिर्देशक के अपना के सम्मानित करवावे वाला बात के जरूरे निंदा भइल रहे. एगो साँझी अखबार में फिल्म निर्देशक के एह चिट्ठी के फोटो कापी छप गइला से ई किरकिरी भइलो रहे. लेकिन गनीमत

रहे कि ई चिट्ठी एगो साँझी अखबार में छपल रहे एहसे बात बेसी ना फइलल. लेकिन एह सब से खाली ओह निर्देशके के थूथू ना भइल. बलुक एह लखटकिया पुरस्कारो के बहुते छीछालेदर हो गइल.

लेकिन लोक कवि के एह सब से कुछ लेबे-देबे के ना रहे. उनुका त बस एह बात के चिंता रहे की ऊ एह सम्मान से वंचित काहे बाड़न.

बाद में कुछ लोग टोके भा कुछ लोग तंज करे वाला अंदाज में लोक कवि से पूछहु लागल, "रउरा कब सम्मानित हो रहल बानी ?" त लोक कवि खिसियाइल हँसी हँस के टार देसु. कहसु, "अरे हम त बहुत छोट कलाकार हईं !" बाकिर मन ही मन जर जासु.

आखिर एह जरहट के बयाब एक दिन शराब पियत घरी ओह पत्रकार के दिहले. पत्रकार तब ले टुन्न होखे जात रहे. सब कुछ सुन के ऊ उछलत कहलसि, "त आप पहिलहीं ई इच्छा काहे ना बतवली ?"

"त ई सब अब हमरे बतावे के पड़ी " लोक कवि शिकायत का अंदाज में कहलें, "राउर कवनो जिम्मेवारी नइखे ? रउरा त ई खुदे करा दिहल चाहत रहे !" लोक कवि तुनकत कहले.

"हँ भाई करा देब. दुखी मत होखीं." कह के पत्रकार लोक कवि के भरोसा दिअवले. फेर कहले, "बाकिर एगो काम हमरो करवा देम."

"राउर कवनो काम रुकलो बा का " लोक कवि तरेरत कहले. ऊ तनाव में रहबो कइले.

"लेकिन ई काम तनी दोसरा किसिम के बा !"

"का हऽ ?" लोक कवि के तनाव धीरे धीरे छँटे लागल रहे.

"आप किहाँ एगो डांसर है." पत्रकार आह भरले आ जोड़ले "बड़ कटीली हियऽ. ओकर कट्सो गजब के बा. बिल्कुले नस तड़का देबेले."

"अलीशा नू ?" लोक कवि पत्रकार के नस पकड़ले.

"ना, ना !"

"त अउर कवन बिया हमरा किहाँ अइसन कटीली डांसर जवन आपके नस तड़का देत बिया ?"

"ऊ जवन निशा तिवारी हियऽ नु !" पत्रकार सिसकारी भरल आह लेत कहले.

"त ओकरा के त भुलाइये जाईं."

"का ?"

"हँ."

"त आपहू लोक कवि, ई सम्मान भुला जाईं."

"खिसियात काहे बानी !" लोक कवि पुचकारत कहले, "अउरियो त कई गो हसीन लड़िकी बाड़ी

सँ."

"ना लोक कवि, हमरा त उहे चार्हीं." पत्रकार पूरा रुआब आ शराब में रहले.

"का बा ओकरा में ? ओकरा ले निमन त अलीशा बिया." लोक कवि मनावत कहले.

"अलीशा ना लोक कवि, निशा ! निशा कहीं, निशा तिवारी."

"चलीं हम त मान गइनी बाकिर ऊ मानी ना." लोक कवि मन मसोसत कहले. आखिर लखटकिया सम्मान के द्रोपदी जीते के सवाल रहे.

"काहे ना मानी ? रउरा त अबहिये से काटे में लाग गइनी." पत्रकार भडकल.

"काटत नइखीं, हकीकत बतावत बानी."

"चलीं रउरा ओर से ओ.के. बा नू ?"

"हँ भाई ओ.के. बा."

"त फेर एनियो इन बा."

"का इन बा ?" लोक कवि के अंगरेजी बुझाइल ना रहे.

"अरे मतलब कि राउर सम्मान हो गइल."

"कहाँ भइल, कब भइल सम्मान " लोक कवि घबरात बोलले, "सब जबानी-जबानी हो गइल ! जब आपके चढ जाले त अइसहीं इकट्ठे दस ठो ताजमहल खड़ा कर देबेनी." लोक कवि बुदबुदइले. बाकिर साँच इहो रहे कि लोको कवि के चढ चुकल रहे.

"कहें घबरात बानी लोक कवि !" पत्रकार बोललसि, "इन कह दिहनी त हो गइल. मतलब आपके काम हो गइल. हो गइल समुझीं. अब ई हमरा इज्जति के बाति बा कि रउरा के ई सम्मान दिलवाई. मुख्यमंत्री सार से काल्हुवे बतियावत बानी."

"गाली जिन दीं"

"काहे ना दीं ? बंबई से आ के सारे सम्मान पइसा ढो ले जात बाइन सँ आ एहिजे बइठल हमरा लोक कवि के पूछलो नइखे जात." ऊ बहकत कहलसि, "आजु त गरियाएब, काल्हु भलही ना गरियाई."

"देखम कहीं गाली-गलौज से काम बिगड़ मत जाव." लोक कवि आगाह कइलन.

"कहीं काम ना बिगड़ी. अब आप सम्मानित होखे के तइयारी करीं आ कवनो दिने निशा के इंतजामो के तइयारी मत भुलायब !" कह के पत्रकार गिलास में बाचल शराब खटाक से देह में ढकेललन आ उठ खड़ा भइले.

"अच्छा त प्रणाम ! लोक कवि सम्मान मिलला का खुशी में भावुक होत कहले.

"हम त जाते बानी त "प्रणाम" काहे कहत बानी ?" पत्रकार बिदक के बोललसि. दरअसल पत्रकार अबले लोक कवि के "प्रणाम" के निहितार्थ जान चुकल रहे कि लोक कवि अमूमन केहू के टरकावे भगावे का गरज से "प्रणाम" कहेले.

"गलती हो गइल." कह के लोक कवि ओह पत्रकार के गोड़ छू लिहले आ कहले, "पालागी."

"त ठीक बा, काल्ह परसो ले मुख्यमंत्री से संपर्क साधत बानी आ बात करत बानी. लेकिन आप एकरा के इन समुझीं." पत्रकार जात जात कहले.

"इन ? मतलब का बतवले रहीं आप ?"

"मतलब काम हो गइल समुझीं."

"आप के कृपा बा." लोक कवि फेर उनकर पाँव छू लिहले.

काल्ह परसो में त जइसन कि पत्रकार लोक कवि के भरोसा दिहले रहलन बात ना बनल लेकिन बरीसो ना लागल. कुछ महीना लागल. लोक कवि के एह खातिर बाकायदा दरखास्त देबे के पड़ल. फाइलबाजी आ ढेर सगरी गैर जरूरी औपचारिकता के सुरंग, खोह आ नदियन से लोक कवि के गुजरे के पड़ल. बाकी चीजन के त जइसे आदत हो गइल रहे बाकिर जब पहिले आवेदन देबे के बात आइल त लोक कवि बुदबुदइबो कइले कि, "ई सम्मान त जइसे कि नौकरी हो गइल बा." फेर उनुका आकाशवाणी वाला आडिशन टेस्ट के दिन याद आ गइल. जवना में ऊ कई बेर फेल हो चुकल रहले. ओह घरी के बात याद कर के ऊ कई बेर घबड़इबो कइले कि कहीं एह सम्मानो से आउट हो गइलन तब ? फेर फेल हो गइलन तब ? तब त समाज में बहुते फजीहत हो जाई आ बाजारो पर एकर असर पड़ी. लेकिन उनुका अपना किस्मत पर गुमान रहे आ पत्रकार पर भरोसा. पत्रकार पूरा मन से लागलो रहे. बाद में त ऊ एकरा के अपना इज्जति के सवाल बना लिहलसि.

आ आखिरकार लोक कवि के सम्मान के घोषणा हो गइल. बाकिर तारीख, दिन, समय आ जगहा के घोषणा बाकी रहे. एहमें बड़ दिक्कत सामने आइल. लोक कवि एक रात शराब पी के होस आ धीरज दुनु गवाँ दिहलन. कहे लगले, "जहाँ कलाकार बानी तहाँ बानी. मुख्यमंत्री किहाँ त भडुवो से गइल गुजरल हालत हो गइल बा हमार." ऊ भड़कले, "बताई सम्मान खातिर अप्लीकेशन देबे पड़ल, जइसे सम्मान ना नौकरी माँगत होखी. चलीं अप्लिकेशनो दे दिहली. अउरीओ जवन करम करवइलन कर दिहनी. सम्मान "एलाउंस" हो गइल. अब डेट एलाउंस करावे खातिर पापड़ बेल रहल बानी. हमहू आ पत्रकारो. ऊ अउरी जोर से भड़कलन, "बताई, ई हमार सम्मान हऽ कि बेइज्जति ? बताई रउरे लोगिन बताई." ऊ दारू महफिल में बइठल लोगन से सवाल पूछत रहले. बाकिर एकरो जबाब में सभे खामोश रहे. लोक कवि के पीर पर्वत बनत देख सबही लोग दुखी रहे. चुप रहे. बाकिर लोक कवि चुप ना रहलन. ऊ त चालू रहलन, "बताई लोग समुझत बा कि हम मुख्यमंत्री के करीबी हईं, हमरा गाना का बिना उनुकर भाषण ना होला अउरीओ ना जाने का का !" ऊ रुकले आ गिलास के शराब देह में ढकेलत कहले, "लेकिन लोग का जाने कि जवन सम्मान बंबई के भडुआ एहिजा से बेभाव बिटोर ले जात बाइन सँ उहे सम्मान पावे खातिर एहिजा के लोग अप्लिकेशन दे रहल बा. नाक रगड़त बा." एह दारू महफिल में संजोग से लोक कवि के

एकालाप सुनत चेयरमैनो साहब मौजूद रहलें लेकिन ऊ शुरु से खामोश रहले. दुखी रहले लोक कवि के दुख से. लोक कवि अचानके भावुक हो गइले आ चेयरमैन साहब का तरफ मुखातिब भइले, "जानतानी चेयरमैन साहब, ई अपमान हमरे अपमान ना हs सगरी भोजपुरिहा के अपमान हs". बोलत बोलत लोक कवि अचानके बिलख के रोवे लगले. रोवते रोवत ऊ जोड़लन, "एह नाते जे ई मुख्यमंत्री भोजपुरिहा ना हs."

"अइसन नइखे." कहत कहत चेयरमैन साहब, जे बड़ी देर से चुपी सधले लोक कवि के दुख में दुखी बइठल रहले, उठ खड़ा भइले. ऊ लोक कवि का लगे अइले. खड़े खड़े लोक कवि के माथ पर हाथ फेरले, केश सहरवले, उनका गरदन के हौले से अपना काँख में भरले, लोक कवि के गाल पर उतरल लोर के बड़ा प्यार से अपना हाथे पोछले आ पुचकरलन. फेर आह भर के कहले, "का बताई अब हमरा पार्टी के सरकार ना रहल, ना एहिजा ना दिल्ली में. बाकिर घबराये आ रोवे के बात नइखे. काल्हवे हम पत्रकार के हड़कावत बानी. दू-एगो अफसरन से बतियावत बानी कि डेट डिक्लेयर करो !" ऊ तनी अकड़ले आ जोड़ले, "खाली सम्मान डिक्लेयर कर दिहला से का होखे के बा ?" फेर ऊ लोक कवि का लगही आपन कुरसी खींच के बइठ गइलन आ लोक कवि से कहले, "लेकिन तू धीरज काहे गँवावत बाइs ? सम्मान डिक्लेयर भइल बा त डेटो डिक्लेयर होखबे करी. सम्मानो मिली."

"लेकिन कब ? दुई महीना त हो गइल." लोक कवि अकूलइले.

"देख, बेसी अगुताइल ठीक नइखे. तूही त कहल करेले कि बेसी कसला से पेंच टूट जाला त का होई ? जइसे दू महीना बीतल चार छह महीना अउरी सही." चेयरमैन साहब कहले.

"चार छह महीना !" लोक कवि भइकले.

"हँ भाई बेसी से बेसी. एहसे बेसी का सतइहें साले." चेयरमैन साहब बोललन.

"इहे त दिक्कत बा चेयरमैन साहब."

"का दिक्कत बा ? बतावs त ?

"आपे कहत बानी नू कि बेसी से बेसी चार छह महीना !"

"हँ, कहत त बानी." चेयरमैन साहब सिगरेट धरावत कहलन.

"त इहे डर बा कि पता ना छह महीना ई सरकार रहबो करी कि ना. कहीं गिर-गिरा गइल त ?"

"बड़ा दूर के सोचत बाइs तू भाई." चेयरमैन साहब दोसर सिगरेट धरावत कहले, "कहत त तू ठीक बाइs. ई साला रोज त अखाड़ा खोलत बाड़े. कब गिर जाय सरकार कुछ ठीक नइखे. तोहार चिंता जायज बा कि ई सरकार गिर जाव आ अगिला सरकार जवने केहू के आवे का गारंटी बा कि एह सरकार के फैसला के ऊ मानबे करी !"

"त ?

"त का ! काल्हुवे कुछ करत बानी." कह के घड़ी देखत चेयरमैन साहब उठ गइलन. बहरी अइलन. लोक कवि का साथे अउरियो लोग आ गइल.

चेयरमैन साहब के एंबेसडर स्टार्ट हो गइ आ एने दारू महफिल बर्खास्त.

दोसरा दिने चेयरमैन साहब पत्रकार से एह बारे में बात कइलन, रणनीति के दू-तीन गो गणित समुझवलन आ कहलन, "छत्रिय होइयो के तू एह अहिर मुख्यमंत्री के मुँहलगा हउवस, अफसरन के ट्रांसफर पोस्टिंग करवा सकेलस, लोक कवि खातिर सम्मान डिक्लेयर करवा सकेलस, पचासन अउरियो दोसर काम करवा सकेलस बाकिर लोक कवि के सम्मान के डेट डिक्लेयर ना करवा सकस ?"

"का बात करत बानी चेयरमैन साहब ! बात चलवले त बानी डेटो खातिर. डेटो जल्दिये एनाउंस हो जाई." पत्रकार निश्चित भाव से बोलल.

"कब एनाउंस होखी डेट ? जब सरकार गिर जाई तब ? ओने लोक कवि अलगे अफनाइल बा." चेयरमैनो साहब अफनाइले कहले.

"सरकार त अबही ना गिरी." पत्रकार गहिर साँस लेत कहलसि, "अबही त चेयरमैन साहब, ई सरकार चली. बाकिर लोक कवि के सम्मान के डेट एनाउंसमेट खातिर कुछ करत बानी."

"जवने करे के होखे करस भाई, जल्दी करस." चेयरमैन साहब कहले, "ई भोजपुरियन के आन के बाति बा. आ फेर काल्हु इहे बात कहत लोक कवि रो दिहले रहे. आ इहे सही बा कि ई अहिर मुख्यमंत्री अबही ले कवनो भोजपुरिहा के त ई सम्मान दिहले नइखे. तोहरा कहला सुनला से लोक कवि के अहिर मानत, जे कि ऊ हवे ना, कवनो तरह सम्मान त डिक्लेयर कर दिहलसि लेकिन डेट डिक्लेयर करे में ओकर फाटत काहे बा ?"

"अइसन नइखे चेयरमैन साहब." ऊ बोलल, "हम जल्दिये कुछ करत बानी."

"हँ भई, जल्दिये कुछ करस-करावस. आखिर भोजपुरियन के आन-मान के बाति हस !"

"बिल्कुल चेयरमैन साहब !"

अब चेयरमैन साहब के के बताईत कि एह पत्रकार बाऊ साहब खातिरो लोक कवि के सम्मान के बात उनुका जरूरत आ उनुका आनो के बात रहे. ई बात चेयरमैनो साहब के ना, सिर्फ लोके कवि के मालूम रहे आ पत्रकार बाऊ साहब के. पत्रकार फेर एह बात के कहीं अउर चरचा ना कइलन आ लोको कवि एहबात के केहू के बतवलन ना. बतवतन त भला कइसे ? लोक कवि खुदे एह बात के भुला गइल रहले.

डांसर निशा तिवारी के बात !

लेकिन पत्रकार के त ई बात याद रहे. चेयरमैन साहब से फोन पर बात कइला का बाद पत्रकार के नस फेर निशा तिवारी खातिर तड़क गइल नस-नस में निशा के नशा दउड गइल. आ दिमाग के

भोजपुरी के आन के सवाल डंस लिहलसि.

पत्रकार चहले रहित त जइसे मुख्यमंत्री से कह के लोक कवि खातिर सम्मान घोषित करवले रहवै, वइसहीं उनुका से कहि के तारीखो घोषित करवा सकत रहे. बाकिर जाने काहे अइसन करे में ओकरा आपन हेठी बुझाइल. से चैयरमैन साहब के बतावल रणनीति के ध्यान में राखतो खुद आपनो एगो रणनीति बनवलसि. एह रणनीति का तहत ऊ कुछ नेतवन से फोने पर बतियवलसि आ बाते बात में लोक कवि के सम्मान के जिक्र चलवलसि आ कहलसि कि आप अपने इलाका में एकर आयोजन काहे नइखीं करवा लेत ? कमोबेस हर नेता से ओकरा इलाका मुताबिक जोड़ घटाव बान्ह के लगभग अपने बाति नेता का मुँह में डलवा के ओह नेता से प्रतिक्रियात्मक टिप्पणी ले लिहलसि. एगो मंत्री से कहलसि कि बताई ओकर गृह-जनपद आ आपके इलाका त सटले-सटल है त काहे नहीं सम्मान समारोह आप अपने इलाका में करवावत ? आपहु के धाक बढ़ी. एगो किसान नेता से कहलसि कि बताई लोक कवि त अपना गाना में किसाने आ ओकरा माटी के बात गावल करेले आ सही मायने में लोक कवि के सुननिहारो किसाने लोग बा. किसानन में, मंड-खेत-खरिहानन में अपना गाना का मार्फत लोक कवि के जतना पैठ बनल बा ओतना पैठ बा केहू के ? ना नू ? त आप एहमें पाछा काहे बानी ? आ साँच पूछीं त एह सम्मान समारोह के आयोजन के संचालन सूत्र सही मायने में रउरे हाथ में रहे के चाही. जबकि मजदूर के एगो बड़हन महिला नेता, जे सांसदो रही, से कहलसि कि साँझ के थाक-हार के लवटल मजदूर लोके कवि के गाना से आपन थकान मेटावेला त मजदूरन के भावना समुझे वाला गायक के सम्मान मजदूरने का शहर में होखे क चाहीं कि ना ? आ जाहिर बा कि सगरी नेता लोक कवि के सम्मान के क्रेडिट लेबे खातिर, आपन वोट बैंक पकिया करे का फेर में लोक कवि के सम्मान अपने-अपने इलाका में करावे के गणित बइठावत बयान मारत गइले. बस पत्रकार के काम हो गइल रहे. ऊ दू एक दिन अउरी एह चरचा के हवा दिहलसि आ हवा जब चिंगारी के शोला बनावल शुरु कर दिहलसि तबहिये पत्रकार अपना अखबार में एगो स्टोरी फाइल कर दिहलसि कि लोक कवि के सम्मान के तारीख एहसे फाइनल नइखे हो पावत कि ढेरे नेता लोग में होइ लागल बा. हर नेता अपना-अपना इलाका में लोक कवि के सम्मान करवावल चाहत बा. तब जबकि पत्रकार के मालूम रहे कि योजना के मुताबिक लोक कवि के सम्मान उनुके गृह-जनपद में संभव हो सकेला, सगरी नेतवन के टिपणी वर्बेटम कोट कर के लिखल एह स्टोरी से ना सिर्फ लोक कवि के सम्मान के तारीखे घोषित हो गइल बलुक उनुका गृह-जनपद के जगहो के एलान हो गइल. साथ ही लोक कवि के "लोकप्रियता" के प्रचारो हो गइल.

लोक कवि के लय अब कार्यक्रमन में देखते बनत रहे. अइसने एगो कार्यक्रम में पत्रकारो चहुँप गइल. ग्रीन रूम में बइठ के शराब पियत ऊ बेर-बेर कपड़ा बदलत लडिकियन के देह के कबो कनखी से त कबो सोझे तिकवत रहल. पत्रकार के एह मयकशी में मंच से आवत-जात लोको कवि शरीक हो जात

रहलन. दू-तीन गो लड़कियनो के पत्रकार दू-एक पेग पिया दिहलसि. एगो लड़की पर दू चार बेर हाथो फेरलस. एह फेर में ऊ डांसर निशा तिवारिओ के अपना लगे बोलवलसि बाकिर ऊ पत्रकार का लगे फटकल ना. उलुटे आँख तरेरे लागल. पत्रकार कवनो प्रतिक्रिया ना दिहलन आ चुप चाप शराब पियत गइले. जाने ओकर ठकुराई उफना गइल कि शराब के नशा चढ़ गइल कि निशा के देह के ललक ? चादर ओढ़ के कपड़ा बदलत निशा के पत्रकार अचके में पाछा से दबोच लिहले. ऊ ओकरा के ओहिजे लेटावे का फेर में रहलन तबले निशा सम्हर गइल रहे आ पलटि के ठाकुर साहब के दू-तीन झाँपड़ धड़ाधड़ रसीद कर दिहलसि आ दुनु हाथ से पूरा ताकत लगा के पाछा ढकेलत कहलसि, "कुकुर तोर ई हिम्मत !" ठाकुर साहब पियले त रहबे कइलन निशा के ढकेलते ऊ भड़भड़ा के गिर पड़ले. निशा गोड़ में से सैंडिल निकललसि आ ले के बाबू साहब का ओरि लपकले रहल कि मंच पर ई खबर सुन के लोक कवि भागत ग्रीन रूम में अइले आ निशा के सैंडिल वाला हाथ पाछा से धर लिहलन. कहले, "ई का करत बाड़िस ?" ऊ ओकरा पर बिगड़बो कइले आ कहलें, "चल, गोड़ छू के माफी माँग !"

"माफी हम ना, ई हमरा से माँगसु गुरुजी !" निशा बिफरल, "हमरा से बदतमीजी ई कइले बाड़न."

"धीरे बोल, धीरे." लोक कवि खुद आधा सुर में कहलें, "हम कहत बानी माफी माँगस."

"ना गुरुजी !"

"माँग लस. हम कहत बानी. इहो तोहरा ला गुरुजी हउवन." लोक कवि कहलें.

"ना गुरुजी !"

"जइसन कहत बानी फौरन कर ! तमाशा मत बनाव. आ जइसन ई करें करे दे." लोक कवि बुदबुदइले आ गँवे से कहले, "जइसन कहें वइसन करस."

"ना !" निशा बोललसि त धीरे बाकिर पूरा सख्ती से. लोक कवि इहो गौर कइलें कि अबकी ऊ "ना" का साथे "गुरुजी" संबोधनो ना लगवलसि. एह बीचे पत्रकार बाबू साहब त लुढकले पटाइल रहले बाकिर आँखिन में उनका आगि खौलत रहुवे. ग्रीन रूम में मौजूद बाकी लड़की, कलाकारो सकता में रहीं सँ बाकिर खामोशी भरल खीस सबका आँखिन में सुलगत देखि के लोक कवि असमंसज में पड़ गइले. ऊ अपना एगो "लेफ्टिनेट" लड़की के आँखे-आँखि में निशा के सम्हारे के इशारा कइलम आ खुदे पत्रकार का ओर बढ़ चललन. एगो कलाकार का मदद से ऊ पत्रकार के उठवले. कहले, "आपो ई सब का कर देते हैं बाबू साहब ?"

"देखीं लोक कवि, हम अठरी बेइज्जति नइखीं बरदाशत कर सकत." बाबू साहब दहड़लन, "तनी पकड़ का लिहनी एह छिनार के त एकर ई हिम्मत !"

"धीरे बोलीं बाबू साहब." लोक कवि बुबुदइलन, "बाहर हजारन पब्लिक बइठल बा. का कही लोग ?"

"चाहे जवन कहें, हम आजु माने वाला नइखीं." बाबू साहब कहलें, "आजु ई हमरा नीचे सूती. बस ! हम अतने जानत बानी." नशा में ऊ बोललन, "हमरा नीचे सूती आ हमरा के डिस्चार्ज कराई. एकरा से कम पर कुछुवो ना !"

"अइसहीं बात करब ?" लोक कवि बाबू साहब के गोड़ छूवत कहलें, "आप बुद्धिजीवी हईं. ई सब शोभा नइखे देत आप के."

"आपके शोभा देत बा ?" बाबू साहब बहकत कहलें, "आपके हमार सौदा पहिलही हो चुकल बा. आपके काम त इन हो गइल आ हमार काम ?"

बाबू साहब के बात सुन के लोक कवि के पसीना आ गइल. तबहियो ऊ बुदबुदइले, "अब इहाँ इहे सब चिल्लायब ?" ऊ भुनभुनइलन, "ई सब घरे चल के बतियाएब."

"घरे काहे "एहिजे काहे ना ?" बाबू साहब लोक कवि पर बिगड़ पड़लन, "बोलीं आजु ई हमरा के डिस्चार्ज करी कि ना ? हमरा नीचे सूती कि ना ?"

"ई का बोलत बानी ?" लोक कवि हाथ जोड़त फुसफुसइलन.

"कवनो खुसफुस ना. क्लियर-क्लियर बता दीं हँ कि ना ?" बाबू साहब के कहना रहे.

"चुपाइबो करब कि अइसहीं बेइज्जति कराएब ?"

"हम समुझ गइनी आप अपना वायदा से मुकरत बानी."

लोक कवि चुपा गइलन.

"खामोशी बतावत बा कि वादा टूट गइल बा." बाबू साहब लोक कवि के फेर कुरेदलन.

लेकिन लोक कवि तबहियो चुप रहलन.

"त सम्मान कैसिल !" बाबू साहब उहे बार फेर जोर से दोहरवलन, "लोक कवि आपका सम्मान कैसिल ! मुख्यमंत्री के बापो अब आपके सम्मान ना दे पाई."

"चुप रहीं बाबू साहब !" लोक कवि के एगो साथी कलाकार हाथ जोड़त कहलसि, "बहरी बडहन पब्लिक बिया."

"कुछ नइखे सुने के हमरा !" बाबू साहब कहलें, "लोक कवि निशा कैसिल कइलें आ हम सम्मान कैसिल कइनि. बात खतम." कह के बाबू साहब शराब के बोतल आ गिलास एक-एक हाथ में लिहले उठ खड़ा भइलन. कहलें, "हम चलतानी." आ ऊ साँचहु ग्रीन रूम से बहरी निकल गइलन. माथे हाथ धइले लोक कवि चैन के साँस लिहलन. कलाकारन के हाथ का इशारा से आश्वस्त कइलन. निशा का माथ पर हाथ राख के ओकरा के आशीर्वाद दिहलन, "जियत रहs" फेर बुदबुदइलन, "माफ करीह !"

"कवनो बाति ना गुरुजी !" कह के निशा अपनो ओर से बात खतम कर दिहली बाकिर लोक कवि रो दिहलें. भरभर-भरभर. लेकिन जल्दिये ऊ कान्ह पर राखल गमछा से आँखि पोंछलें, धोती के

निचला कोर उठवले, हाथ में तुलसी के माला लिहले मंच पर चहुँप गइले. उनुकरे लिखल युगल गीत उनुकर साथी कलाकार गावत रहलें, "आँखिया बता रहीं हैं लुटी कहीं गई हैं." लोक कवि अपना गोड़ के गति देत तनी थिरके के कोशिश कइलें आ एनाउंसर के इशारा कइलें कि उनुका के मंच पर बोलावो.

एनाउंसर वइसने कइले. लोक कवि मंच पर चहुँपले आ साजिन्दा लोगन के इशारा कर के कहरवा धुन पकड़ लिहले. फेर भरल गला से गावे लगले, "नाचे न नचावै केहू पइसा नचावेला." गावत-गावत गोड़ के गति दिहले बाकिर गोड़ त का मनो साथ ना दिहलसि. अबहीं पहिलके अंतरा पर रहले कि उनुका आँखिन से फेर लोर ढरके लागल. लेकिन ऊ गावते रहलन, "नाचे न नचावै केहू पइसा नचावेला". एह समय उनुका गायकी में लये में ना, उनका गोड़ के थिरकलो में एगो अजबे करुणा, लाचारी आ बेचारगी समा गइल रहे. ओहिजा मौजूद सुननिहार-देखनिहार एहू सब के लोक कवि के गायकी के एगो अविरल अंदाज समुझले बाकिर लोक कवि के संगी-साथी भउँचको रहले आ ठकुआइलो. लेकिन लोक कवि असहज रहतो गायकी के सधले रहलन. हालांकि सगरी रियाज रिहर्सल धराइल रहि गइल रहे संगत दे रहल साजिन्दन के. लेकिन जइसे कि लोक कवि के गायकी बेचारगी के लय थाम लिहले रहुवे संगतकारो "फास्ट" का जगहा "स्लो" हो गइल रहलें बिना संकेत, बिना कहले. अउर ई गाना "नाचे न नचावै केहू पइसा नचावेला" साँचहू विरले ना यादगारो बनि गइल रहे. खास कर के तब अउर जब ऊ ठेका दे के गावसु, "हमरी न मानो..." बिल्कुल दादरा के रंग टच दे के तकलीफ के जवन दंश ऊ बोवत रहले अपना गायकी का मार्फत ऊ भुलाये जोग ना रहलो ना रहे. ऊ जइसे सबकुछ से बेखबर गावत रहले आ रोवत रहले. लेकिन लोग उनुकर रोवल ना देख पावत रहे. कुछ लोर माइक तोप लेव त कुछ लोर उनुका मिसरी जइसन मीठ आवाज में बहल जात रहे. कुछ सुधी सुननिहार उछल के बोलबो कइलें, "आजु त लोक कवि कलेजा निकाल के राखि दिहलें !" उनुकर गायकी साँचहू बहुते मार्मिक हो गइल रहे.

ई गाना अबही खतमो ना भइल रहे कि लोक कवि दोसरा गाना पर आ गइले, "माला ए माला, बीस आना के माला !" फेरु कई देवी-देवता, भगवान से होखत ऊ कुछ महापुरुषन तक माला महिमा के बखान करत एह गाना में तंह, करुणा आ सम्मान के कोलाज रचे लगलन. कोलाज रचते-रचत अचानक ऊ फेरु से पहिले वाला गाना, "नाचे न नचावै केहू पइसा नचावेला" पर आ गइलन. सुधि लोग के बुझाइल कि लोक कवि एक गाना से दोसरा गाना में कुछ फ्यूजन जइसन करत बाइन, भा कवनो नया प्रयोग, नया स्टाइल गढत बाइन. लेकिन साँच ई रहे कि लोक कवि माला के सम्मान के प्रतीक बतावत ओकरा के पइसा से जोड़ के अपना अपमान के रूपक रचत रहलें. अनजानही. अपना मन के मलाल के धोवत रहले.

कुछ दिन बाद चेयरमैन साहब बाबू साहब आ लोक कवि के बीच बातचीत करवावल चहले

बाकिर दुनु में से केहू तइयार ना भइल. दुनु का बीच तनाव बनल रहल. तबहियो घोषित तारीख पर जब लोक कवि सम्मान लेबे अपना गृहनगर जात रहले त एक दिन पहिले ऊ बाबू साहब से फोन करके बहुते विनय से चले के कहलन. लेकिन बाबू साहब सगरी फजीहत का बावजूद निशा के भुलाइल ना रहले. छूटते लोक कवि से पूछ लिहलें, "निशा भैंटाई ओहिजा ? साथ चली ?"

"ना."

त बाबूओ साहिब "त फेर सवाले नइखे उठत" कहत फैसला सुना दिहलन, "निशा ना त हमहू ना आपहू ना." आ ऊ अउरी झनकत कहले "भाँड़ में जाई आप आ आपके सम्मान !" आ फोन राख दिहले.

लोक कवि मायूस हो गइलन.

निशा कलाकारन का टीम का साथ लोक कवि के गृहनगर जाये वाला रहे. लेकिन बहुत सोच-विचरला का बाद लोक कवि अंतिम समय में निशा के जाये से मना कर दिहलें. निशा पूछबो कइलसि, "काहे " का बाति बा गुरुजी ?"

"समुझल करऽ" कहके लोक कवि ओकरा के टरकावे चहलें बाकिर ऊ मानल ना अइल रहल. बेर-बेर ओकरा पूछला से लोक कवि ओकरा पर बिगड़ गइलें, "अबहीं त ना कह दिहले बाइन, लेकिन अगरी कहीं ओहिजा आ गइलन तब ?"

"के गुरुजी ?"

"बाबू साहब. अउर के ?" लोक कवि बुदबुदइले, "का चाहत बाइ ओहिजो वितंडा खड़ा होखे, रंग में भंग हो जाव सम्मान समारोह में" कह के निशा के ओकर मेहनताना देत कहले, "हई लऽ आ घरे चलि जा."

"घर में लोग पूछी त का कहब कि कार्यक्रम में काहे ना गइनी ?" ऊ मायूस हो के बोलल.

"कह दीहऽ कि तबियत खराब हो गइल. दूई-चार ठो दर्द बोखार के गोली खरीद के बैग में राख लीहऽ." लोक कवि कहलें आ कुछ रुक के बोललें, "अब तुरते एहिजा से निकल जा."

फेर लोक कवि मय दल बल का साथ अपना गृह नगर खातिर चल दिहलें.

मुख्यमंत्री लोक कवि के समारोहपूर्वक पाँच लाख रुपिया के चेक, स्मृति चिह्न, शाल आ स्मृतिपत्र दे के सम्मानित कइले. महामहिम राज्यपाल का अध्यक्षता में. तीन गो कैबिनेट मंत्री आ पाँच गो राज्यो मंत्री समारोह में बहुते मुस्तैदी का साथ मौजूद रहले. कई गो बड़का अधिकारियो. सम्मान पावते लोक कवि एने ओने देखले आ बेबस रो पड़ले. हँ, एह सम्मान के सूत्रधार बाबू साहब ना आइल रहले. लोग समुझल कि खुशी के लोर हऽ लेकिन लोक कवि के आँखि मंच पर, मंच का आसपास आ भीड़ में बाबू साहब के बेर-बेर खोजत रहल. बाबू साहब हालांकि ना कह चुकल रहलन तबहियो लोक कवि के बहुते उमेद रहे कि बाबू साहब ओह समारोह में उनुकर हौसला बढ़ावे, बधाई देबे अइहन जरूर. आ लोक कवि

बाजार के वशीभूत होके भा दबाव में अइसन ना सोचत रहलन, बलुक दिल का गहराई से श्रद्धा में डूबल भावुक हो के सोचत रहले. आ हिरनी जस आकुल उनुकर आँखि बेर-बेर बाबू साहब के हेरत रहल. भीड़ो में, भीड़ से बहरो. आगा-पाछा, दाँया-बाँया दशो दिशाई में देखसु आ बाबू साहब के ना पा के बेकल हो जासु. एकदमे असहाय हो जासु. बिल्कुल वइसहीं जइसे कि भोलानाथ गहमरी के एगो गीत के नायक के विरह लोक कवि के एगो समकालीन गायक मुहम्मद खलील गावल करसु, "मन में दूँदली, जन में दूँदली दूँदली बीच बजारे हिया-हिया में पइठ के दूँदली दूँदली विरह के मारे कवने सुगना पर मोहइलू आहि हो बालम चिरई." लोक कवि खुदो एह गाना के आकुलता के सोखत रहले, "छंद-छंद लय-ताल से पूछलीं पूछलीं स्वर के मन से किरन-किरन से जा के पूछलीं पूछलीं नील गगन से धरती आ पाताल से पूछलीं पूछलीं मस्त पवन से कवने अतरे में समइलू आहि हो बालम चिरई." ऊ कुछ बुदबुदातो रहले मन ही मन फुसुर-फुसुर. बहुते लोग समुझल कि लोक कवि ई सम्मान पा के विहल हो गइल बाड़े. बाकिर उनुकर संगी-साथी उनुका मर्म के कुछ-कुछ समुझत रहले. समुझत रहले सम्मान समारोह में मौजूद चेरमैनो साहब लोक कवि के आँखिन में समाईल खोज, खीझ आ सुलगन के. लोक कवि के आँख बाबू साहब के खोजत बाड़ी सँ एह आकुलता के चेरमैन साहब ठीक-ठीक बाँचत रहलन. बाँचत रहलन आ आँखे-आँखि में तोसो देत रहलन कि "घबरा जिन, हम बानी नू !" चेरमैन साहब जे मंच का नीचे आगा राखल कुर्सियन पर बइठल रहले आ बगल के दोसरका कुरसी खाली रखले रहलन ई सोच के कि का पता बाबू सहबवा साला पहुँचिये आवे लोक कवि के एह सम्मान समारोह में.

लेकिन बाबू साहब ना अइले.

तबहिये संचालक लोक कवि के गावे खातिर नेवत दिहलने. लोक कवि कुछ-कुछ मेहराइल, कुछ-कुछ खुशी मन से उठलन आ माइक धइलन. ढपली लिहलन आ एगो देवी गीत गावे लगलन आ बाद में गावे लगलन, "मेला बीच बलमा बिलाइल सजनी". एह गाना के नायिका का विषादे में ऊ आपनो अवसाद धोवे लगलन.

कार्यक्रम का अंत में मुख्यमंत्री लोक कवि के जनपद के एगो सड़क के नाम उनुका नाम पर राखे के घोषणा कइलन त लोग थपड़ी बजा के खुशी जतावल. कार्यक्रम खतम भइल त लोक कवि मंच से नीचे उतरले आ ओहिजा चेरमैन साहब के गोड़ छुवले. कहलें, "आशीर्वाद दीं !" चेरमैन साहब लोक कवि के उठा के अँकवारी बान्ह लिहलन आ भावुक हो के कहलन, "घबरा मत, हम बानी नू. सब ठीक हो जाई." ऊ दिलासा देत कहले.

कार्यक्रम से निबट के ऊ कलाकारन के बिदा कइलन आ खुद तीन चार गो गाड़ियन का काफिला संगे अपना गाँवे चहुँपलन. आजु ऊ सरकार से दिहल सरकारी लालबती वाला गाड़ी में गाँवे आइल रहलन. साथ में चेरमैनो साहब रहले अपना अंबेसडर समेत. बाकिर अंबेसडर छोड़ ऊ लोक कवि

का साथ लोक कवि के लाल बत्ती वाला गाड़ी में बइठलन. कार्यक्रम में लोक कवि के गाँव के कई लोग, नाते-रिश्तेदार आइल रहले तबहियो ऊ गाँवे अइलन. गाँव के डीह बाबा के पूजा अर्चना कइलन. गाँव के शिवमंदिरो में गइले. शिवजी के अक्षत जल चढवलन. पूजा पाठ का बाद बड़ बुजुर्गन के गोड़ छूवले आ अपना घर "बिरहा-भवन", जवना के ऊ बहुते रुपिया खरच कर के बनववले रहलन, जा के चौकी बिछा के बइठ गइलन. चेयरमैन साहब खातिर अलगा से कुरसी लगवलन. संगी-साथियन खातिर दोसर चौकी बिछवले. ऊ लोग अबही जर-जलपान करते रहल कि धीरे-धीरे लोक कविका घरे पूरा गाँव उमड़ पडल. बड़-बूढ़, लड़िका-जवान, औरत-मरद सभे. लोक कवि के दुनु छोट भाईयन के छाती फूला गइल. तबहिये चेयरमैन साहब लोक कवि के एगो भाई के बोलवलन आ दस हजार रुपिया के एगो गड्डी निकाल के दिहले. कहलन कि, "पूरा गाँव में लड्डू बँटवा दs."

"अतना पइसा के !" लोक कवि के छोट भाई के मुँह बवा गइल रहे.

"हँ सगरी पइसा के." चेयरमैन साहब कहले, "हमार अंबेसडर ओहिजा खड़ा बिया, ड्राइवर के बोलस कलि हम कहले बानी. ओकरे से शहर चलि जा आ लड्डू ले के तुरते आवs." फेर चेयरमैन साहब बुदबुदइले, "लागत बा ई सार अतना पइसा एकबेर में देखले नइखे." फेर घबरइले आ अपना गनर से कहले, "जा, तुहँ साथे चलि जा, ना त एकरा से कवनो छीन झपटि लीहि !"

गाँव के लोगन के आवाजाही बढ़ले जात रहुवे. एह भीड़ में कुछ बड़को जाति के लोग रहुवे. गाँव के प्राइमरी स्कूल में स्पेशल छुट्टी हो गइल त स्कूल के लड़िको चिल्ल-पों हल्ला करत आ धमकले सँ. साथही मास्टरो साहब लोग. एगो मास्टर साहब लोक कवि से कहले, "गाँव के नाम त आपके नाम के नाते पहिलहीं से बड़ रहल ह एह जवार में लेकिन आजु अपने गाँवो के नाम रोशन करा दिहलनी." कह के मास्टर साहब गदगद हो गइले. तबहिये कुछ नवही सभ काका-काका कहि के लोक कवि से गावे के फरमाईश कर दिहले. लोक कवि लाचार हो गइलन. कहले, "जरूरे गवतीं. एहिजा अपना मातृभूमि पर ना गायब त कहाँ गाएब ?" फेर आगा जोड़ले, "बाकिर बिना बाजा-गाजा के हम गा ना पाएब. रउरो सभे के मजा ना आई." ऊ हाथ जोड़त कहले, "फेर कबो गा देब. आजु खातिर माफ करीं."

लोक कवि के ई जबाब सुनि के कुछ शोहदा बिदकलें. एगो शोहदा भुनभुनाइल, "नेतवन खातिर गावत-गावत नेता बनि गइल बा साला. नेतागिरी झाड़त बा."

अबही भीड़ में ई आ कुछ अइसने खुसुर-फुसुर चलते रहल कि एगो बुजुर्ग जइसन बाकिर गदराइल देह वाली औरत एक हाथ में लोटा आ दोसरा में थरिया लिहले कुछ अउरी औरतन का साथे लोक कवि का लगे चहुँपल आ चुहुल करत गोहरलसि, "का ए बाबू !"

लोक कवि उनुका के देखते ठठा के हँस पडले आ उनुके सुर में सुर मिलावत बिल्कुल उनुके लय में कहले, "हँ हो भउजी !" कह के लोक कवि लपक के निहुरले आ उनुकर गोड़ छू लिहले.

"जीयस ! भगवान बनवले रहें" कहि के भउजी थरिया में राखल दही-अक्षत, हल्दी दूब आ रोली मिला के लोक कवि के टीका कइली. दही तनी एह गाल पर तनी ओह गाल लगावत लोक कवि से चुहल कइली. एही बहाने भउजी लोक कवि का गाल पर चिकोटीओ काटि लिहली आ फिस्स से अइसन हँसली कि भउजियो का गाल में गइहा बनि गइल. संगे आइल औरतो ई सब देखि के खिलखिला के हँस पड़ली. पल्लू मुँह में दबवले. जबाब में लोको कवि कुछ चुहल करतन, ठिठोली फोड़तन कि ओकरा पहिलही भउजी परिछावन के गाना, "मोहन बाबू के परीछबों..." गावल शुरु कर दिहली आ लोढा ले के लोक कवि के परीछे लगली. संगे आइल औरतो गाना गावत बढ-चढ के बारी-बारी से परीछत गइली.

लोक कवि एहसे पहिलहू दू बेर परिछाइल रहले, एही गाँव में. एक बेर अपना शादी में, दोसरका बेर गवना में. तब ऊ ठीक से जवानो ना भइल रहले. बच्चा रहले तब. आजु जमाना बाद ऊ फेर परिछात रहले. अपना मनपसंद भउजी का हाथे. अब जब ऊ बुढापा का गाँव में डेग धर दिहले रहलन. तब के बचपन के परिछावन में उनुका मन में एगो उत्तेजना रहे, एगो कसक रहे. बाकिर आजु का परिछावन में एगो स्वर्ग जइसन अनुभूति मिलत रहे, सम्मान आ आन के अनुभूति. अतना गौरव, अतना सुख त मुख्यमंत्री से मिलल पाँच लाख रुपिया वाला सम्मानो में आजु ना मिलल रहवे, जतना भउजी के एह परिछावन में उनुका मिलत रहवे. लोक कवि मूड़ी गोतले मुसुकात विनीत भाव से परिछात रहले. अइसे जइसे कि उनुकर राजतिलक होत होखे. ऊ लोक गायक ना लोक राजा होखसु. परीछे वाली औरत तनी तनी देर पर बदलत जात रहली आ उनुकर गिनती बढले जात रहवे. अबही परिछावन गीत का साथे परिछावन चलते रहल कि नगाडो बाजल शुरु हो गइल. गाँवे के कुछ उत्साही औरत गाँव का चमरौटी से लडिकन के भेज के ई नगाडा मँगवले रही. एकरा साथही लोक कवि के देखे ला चमरौटीओ के लोग उमडि आइल.

लोक कवि गदगद रहले. गदगद रहले अपना माटी में ई मान पा के.

नगाडा बाजत रहे आ परिछावनो होत रहे कि तबहिये एगो बूढाइल जस औरत खाँसत-भागत आ गइल. लोक कवि से तनिका फरदवला खडा हो के उनुका के अपलक निहारे लागल. लोक कवि तनी देरे से सही बाकिर जब देखले त विभोर हो गइले. बुदबुदइले, "का सखी !"

सखी लोक लाज से मुँह से त कुछ ना कहली बाकिर आँखिये-आँखि में बहुते कुछ बोल गइली. थोड़ देर ले दुनु जने एक दोसरा के बिना पलक झपकवले निहारत गइले. कवनो दोसर मौका रहीत त लोक कवि लपकि के सखी के अँकवारी भर लिहते. कस के चूम लिहते. लोक कवि अइसन सोचते रहलन कि सखी उनुका मनोभाव के बुझला ताड़ गइली. ऊ थथमलि आ माथ पर पडल आँचर सम्हरली आ गौर से देखली कि कहीं फिसलत त नइखे. सखी अबही एही उधेड़-बुन में रहली कि का करीं, तनी देर अउरी रुकीं कि चल दीं एहिजा से. तबहीं कुछ होशियार औरत सखी के देख लिहलीं. भउजियो सखी के

देख लिहली. सखी के देख के तनी नाक-भौंह सगरी सिकोइली सँ बाकिर मौका कुछ दोसर रहे से बात ना बढ़वली सँ. एहू चलते कि ई काकी-भउजी टाइप औरत जानत रहली सँ कि कुछ अइसन-वइसन कइला-कहला पर लोक कवि के दुख होई. आ ई मौका लोक कवि के दुख चहुँपावे वाला ना रहे. एगो औरत लपकि के सखी के हाथ धइलसि आ खींच ले आइल लोक कवि तकले, बहुते मनुहार से. बड़ा प्यार से सखी का हाथ में लोढा दिहलसि आ सखिओ ओही उछाह से लोक कवि के परीछली. सखी जब परीछत रहली त लोक कवि के एक बेर मन भइल कि छटक के ओइजे "रइ-रइ-रइ-रइ" करत गावे लागसु. लेकिन सामने सखी का साथे-साथ दुनियो रहे आ उनुका आँखिन के लाजो. से ऊ अइसन सोचिये के रहि गइलन. सोख गइलन लोच मारत अपना भावना के.

सखी खातिर !

सखी असल में लोक कवि के बाल सखी रहली. अमवारी में ढेला मार के टिकोरा, फेर कोइलासी खात आ खेलत सखी का साथे लोक कवि के बचपन गुजरल रहे. फेर सखी का साथे गलियन में, पुअरा में, अरहर के खेतन में, अमवारी-महुवारी में लुका-छिपी खेलत ऊ जवान भइल रहले. गाँव के लोग तब सखी आ लोक कवि के गुपचुप अपना चरचा के विषय बनवले रहुवे. तंज में तब लोग सखी के राधा आ लोक कवि के मोहन कहत रहे. लोक कवि के नाम त मोहने रहुवे बाकिर सखी के नाम राधा ना हो के धाना रहल. लोको कवि पहिले कहतो रहले ओकरा के धाना बाकिर बाद में जब बात बढ़ गइल त सखी कहे लगलन. आ लोग एह दुनु जने के राधा-मोहन कहे लागल. कई-कई बेर दुनु "रंगे हाथ" पकड़इबो कइले, फजीहतो भइल बाकिर एह लोग के जवानी के करार ना टूटल. कि तबहिये मोहना पर नौटंकी, बिदेसिया के "नकल" उतारे के भूत सवार हो गइल. मोहना के राह बदले लागल बाकिर सखी के ऊ तबहियो सधले रहल. सखीओ त रहली मोहने के तरह पिछड़ा जाति के लेकिन मोहना से उनुकार जाति तनी उपर के रहल. मोहना जाति के भर रहल त सखी यादव. गाँव में तब ई फरक बहुते बड़हन फरक रहल. लेकिन राधा मोहन का जोड़ी का आगा ई फरक मेटा जात रहुवे. बावजूद एकरा कि तब राधा के घर बहुते समृद्ध रहल आ मोहना के घर समृद्धि से कई कोस दूर. मोहना के अबही पाम्हीओ ठीक से ना फूटल रहल कि तबहिये जवन कहल जाला नू कि, "हाय गजब कहीं तारा टूटा !" आ उहे भइल. धाना के बिआह तय हो गइल. बिआह तय होखते धाना के "लगन" चढ़ि गइल. घर से बाहर-भीतर होखल बन्द हो गइल. मोहना बहुते अकुलाइल बाकिर भेंट भइल त दूर भर आँखि देखल त दूर, एक झलक पाइयो लिहल ओकरा खातिर दूभर हो गइल. ओह साल अमवारी में सखी का साथे ढेला मार के कोइलासी खाइल मोहना के नसीब ना भइल. तबे मोहना पहिलका ओरिजिनल गाना गवलसि. गुपचुप. जवन कवनो बिदेसिया भा नौटंकी के पैरोडी ना रहल. हँ धुन जरूर कहरवा रहल. गली-गली में ई गाना गात-गुनगुनात फिरत मोहना सबेर-साँझ भुला गइल रहे. पर केहू से कुछ कहि ना पावे. मोहना गावे, "आव चलीं ददरी के मेला, आ हो धाना!" ऊ इहे एक लाइन गावे, गुनगुनावे आ टूट जाव. कवनो पेड़ का नीचे बइठ के भर हिक रो लेव. राधा के बारात आके चल गइल बाकिर मोहना के भेंट अपना राधा से ना भइल. राधा लउकबो कइल त लगन उतरला का बाद. बाकिर बोलल ना अपना मोहनवा से. मुँह फेर के चलि गइल. पायल छमकावत छम-छम. माँगि में ढेरहन गम-गम लाल-लाल सेनूर देखावत. मोहन के जीव धक्क से रहि गइल. तबहियो ऊ "आवs चलीं ददरी के मेला, आ हो धाना !" गावत गुनगुनात अकेलही चहुँप गइल बलिया के ददरी के मेला में. घूमल-फिरल, खइलसि-पियलसि आ रात खानि ओह जमाना के मशहूर भोजपुरी गायका जयश्री यादव के परोगराम सुनलसि. उनुकर गायकी मोहना बहुते मीठ लागल. खास कर के "तोहरे बरफी ले मीठ मोर लबाही मितवा !" गाना त जइसे जान निकाल लिहलसि. ठीक परोगराम का बाद मोहन जयश्री यादव से मिललसि. उनुका से गाना सीखे, उनुका के आपन गुरु बनावे के कामना

रखलसि आ उनुकर गोड़ छू के आशीर्वाद मँगलसि. जयश्री यादव आशीर्वाद त दे दिहले बाकिर गाना सिखावे आ मोहन के चेला बनावे से साफे इंकार कर दिहलन. कहबो कइलन, "अबहीं बहुते टूटल बाइस त बात गाना गावे के करत बाइस बाकिर ई तोहरा वश के नइखे. अबहीं जवानी के जोश बा, जवानी उतरते हमरा के गरियइब. जा, हर जोतस, मजूरी धतूरी करस, भैंस चरावस." ऊ कहले, "काहे गवनई में जिनिगी खराब कइल चाहत बाइस ?"

मोहन मायूस हो के घरे लवटि आइल. बहुते कोशिश कइलसि कि गाना बजाना से छुट्टी मिल जाव. बाकिर भुला ना पावल. ऊ फेर गइल जयश्री यादव का लगे. फेर-फेर आवत-जात रहल. बेर-बेर जात रहल. बाकिर जयश्री यादव हर बेर ओकर मन तूडलन.

फेर ऊ भुला गइल जयश्री यादव के. बाकिर धाना ?

महीनों बीत गइल. मोहन फेर धाना के रुख ना कइलसि. धाना के ध्याने ना आइल मोहन के. ओकरा ध्यान में अब सिर्फ गाना आ बजाना रहे. ऊ आये दिन नया-नया गीत बनावे, गावे आ लोग के सुनावे. गवनई खातिर मोहन अपना गाँव में त मशहूर होइये गइल रजे, गाँव का आस-पास से होत हवात ऊ पूरा जवार में चिन्हाये लागल रहे. मोहन के आवाजो रहल मिसिरी जइसन मीठ आ पगाइल गुड जइसन सोन्ह सुगंध लिहले. अबले मोहन का हाथ में बजावे खातिर थरिया भा गगरा का जगहा एगो चंगो आ गइल रहे.

ऊ चंग बजावत-बजावत गावे आ गावत-गावत गाँव के कुरीतियन के ललकारे. ललकारे जर्मीदारन के अत्याचारन के, उनुका सामंती व्यवहारन के आ गरीब गुरबा के बन्हुआ मजदूर बनावे के साजिश के. गा के ललकारे, "अंगरेज भाग गइले तुहू भाग जा." भा फेर "गरीबन के सतावल बंद कर दस". एह फेर में मोहन के कई बेर पिटाईओ भइल आ बेईज्जतिओ. सीधे गाना के ले के ना, कवनो ना कवनो दोसरा बहाने. मोहना ई जानत रहे तबहियो ऊ गावल ना छोड़े. उलटे फेर एगो नया गाना के ले के खड़ा हो जाव कवनो बाजार, कवनो कस्बा, कवनो पेड़ का नीचे चंग बजावत, गावत.

एही बीच मोहना के बिआहो तय हो गइल. लगन लाग गइल. बाकिर गवना तीसरे में तय भइल. शादी का बहाने मोहना के औरतन का बीचे धानो लउकल. धाना के बिआह त तय हो गइल रहे बाकिर गवना पाँचवे में तय भइल रहे. माने कि शादी के पाँच बरीस का बाद. दू बरीस त बीत चुकल रहे, तीन बरीस बाकी रहे. एने मोहनो के गवना तिसरके में तय भइल. माने कि तीन बरीस बाद.

धाना गोर चिट्ट त पहिलही से रहूवे, अब घर से कम निकलला का चलते अउरी गोर हो गइल रहे. रंग का साथे साथ ओकर रूपो निखर आइल रहे. धानी चुनर पहिरले धाना के गठल देह अब कँटीलो हो चलल रहे. जब लमहर दिन बाद मोहना ओकरा के भर आँखि देखलसि त ऊ पहिले त सकुचाइल, फेर शरमाइल आ बरबस मुसुका दिहलसि. मुसुकइला से ओकरा गाल में बनल गइहा मोहना के कंठ भर

डूबा लिहलसि. बिबस मोहना ओकरा के बिना पलक झपकवले निहारते रहि गइल.

बारात जब बिआह खातिर गाँव से बिदा भइल त मोहना के लोढा ले के परीछे वाली तमाम औरतन में धानो एगो रहल. परिछावन में मोहना कवनो बहाने धाना के हाथ छू लिहलसि. छूअलसि त लागल जइसे कि दुनु के करंट लाग गइल. आ दुनु चिहुँक पड़ले. एक बेर एह वाकिया के जिक्र लोक कवि चैयरमैन साहब से पूरा संजीदगी से कइले त चैयरमैन साहब चुहल करत कहलें, "४४० वोल्ट के करंट लागल रहे का ?" लेकिन लोक कवि एह ४४० वोल्ट के तफसील तब बूझ ना पवले रहलन आ बाद में जब समुझवला पर समुझबो कइले त चहक के कहले, "एहू ले बेसी !"

खैर मोहन बिआह करे तब ससुराल चहुँपल डोली में बइठ के. नगाड़ा तुरही बजवावत. सेनूरदान के बेरा आइल त पंडित जी के मंत्रोच्चार का साथे मोहना के सखी के साथ लाग गइल. माँग त ऊ अपना मेहरारू के भरत रहल बाकिर याद ऊ करत रहल अपना सखी के. ध्यान में ओकरा धाना रहल. ओकरा लागल कि जइसे ऊ धाने के माँग भरत रहे. परीछन का समय धाना के हाथ के छूअन, छूअन से लागल करंट मोहना के मन पर सवार रहल.

मोहना के बिआह मे धोबिया नाच के सट्टा भइल रहे. जब नाच चलत रहे तबो मोहना के मन भइल कि उठे आ उहो खड़ा हो के दू तीन गो बिरहा, कहँरवा गा देव. अउर कुछ ना सही त "आवऽ चलीं ददरी के मेला, आ हो धाना !" गा देव. बाकिर ई मुमकिन ना भइल काहे कि ऊ दुलहा रहूवे.

खैर, बिआह कर के मोहना अपना गाँवे वापिस आइल. रस्म भइलीं स आ कुछ दिन बाद जब लगन उतर गइल त ऊ फेर गाँव के ताल आ बगइचा में गावत घूमल, "आवऽ चलीं ददरी के मेला, आ हो धाना !" बाकिर धाना कतहीं ना लउकल, सखी कतहीं ना भेटइली. जेकरा के मोहना संगी बनावे के आतुर रहल. हालांकि ओने सखिओ अब बेकरार रहली. बाकिर मोहना से मिले के राह ना लउकत रहल. तबहियो ऊ मोहना के ध्यान लगावे आ सखी सहेलियन का बीच छमकत झूम के गावे, "अब ना बचिहें मोरा इमनवा हम गवनवा जइबो ना !" ऊ जोड़े, "साया सरकै, चोली मसकै, हिल्ले दुनु जोबनवा. हम गवनवा जइबो ना." सखिओ सहेली तब धाना से ठिठोली करसु, "काहे मकलात बाड़ू. बउरा जिन, दिन धरवा ल. आ नाहीं त अलबेला मोहनवा से जी लगा ल. वोहू के गवना अबहिना नाई भइल बा. त कई देई तोहर गवना, बाकिर इमनवा ले के !" त कवनो सहेली ताना मारत पूछ देव, "कइसे जइबू गवनवा हे धाना !" आ तब के एगो मशहूर गाना ठेका ले के गावे, "ससुरा में पियवा बा नादान रे माई नइहर में सुनलीं !"

धत् ! कहत सकुचात धाना बातचीत से भाग खड़ा होखे. लेकिन सखी सोचत रहली साँचहू मोहनवे का बारे में. सपनो में ऊ मोहनवे का साथे होखसु. कबो चकई के चकवा खेलत कबो अमवारी में ढेला मार के कोइलासि खात. सपनो में ऊ आपन गवनो देखसु बाकिर डोली में अपना मरद का साथे ना

बलुक मोहनवे के साथे बईठल होखसु. बाकिर सब कुछ सपने भर में. अपना मरद के शकल त धाना के मालूमे ना रहल. बिआह में नाउनिया हाथ भर के घूँघट भर, चादर ओढा के अतना कस के पकड़ के बइठल रहूवे कि आँखि उठा के देखल त दूर धाना आँखो ना उठा पवले रहल. सगरी बिआह आँख बन्द कइले-कइल पूरा हो गइल रहे. सेनूर का समय त देह थरथर काँपत रहल धाना के आ आँखि रहल बन्द. बस सहेलियन का मार्फते जनलसि कि छाती चउड़ा बा, रंग साँवर बा आ पहलवानी देह बा. बस !

त सपनो वाला गवना में डोली में अपना मरद के छवि धाना देखबो करे त कइसे भला ?

हालांकि ऊ अपना मरद से बिना देखले सही प्यारो बहुत करत रहे. ओकरे नाम के सेनूर माँग में भरत रहल, तीज के व्रत करत रहे. अपना मरद से प्यार करे के ओकर कवनो थाह ना रहे. एक बेर त गाँवे में पट्टीदारी के एगो घर से एकदम नया स्वेटर चोरा के ऊ कई दिन लुकवले रखलसि आ फेर गाँवे के एगो नादान किसिम के लड़िका का हाथे अपना ओह बिना देखल मरद के पठावल चहलसि. चुपके चुपके कि केहू के पता ना चले. लेकिन स्वेटर ले जाये वाला ऊ लड़िका अतना नादान निकलल कि ओकरा गाँव से बहरी निकले का पहिलही बात खुल गइल कि धाना अपना मरद के कुछ पठावत बिया.

का पठावत बिया ?

उ चरचा गाँव में चिंगारी जइसन फइलल आ शोला बनि गइल. आखिर में हाथ से सी के सीलबन्द कइल ऊ झोरी खोलल गइल त उलटा सीधा इबारत में लिखल एगो चिट्ठी निकलल जवना में सिर्फ "पराननाथ, परनाम. धाना." लिखल रहे आ ऊ स्वेटर निकलल. लोग के आँखि फइल गइल आ फेर ई बात फइलतो देर ना लागल कि धाना त चोटिन निकलल. धाना पढल लिखल त रहल ना. त ई चिट्ठी के लिखल इहो सवाल निकल गइल आ पता चलल कि दर्जा चार में पढ़े वाला एगो लड़िका से धाना लिखववले रहल.

बड़ बुजुर्ग कहलें, "बच्ची हियस !" कहि के बात टरबो कइले बाकिर बेइज्जति बहुते भइल धाना के.

बेइज्जति धाना के भइल आ घवाहिल भइल मोहन. दू बात से. एक त ई कि धाना के कोमल मन के केहू ना समुझल, ओकरा मर्म आ प्रीति के पुकार के ना समुझल. उलुटे ओकरा के चोटिन घोषित कर दिहल. दोसरे ई कि अगर धाना के अपना मरद खातिर ई स्वेटर पठावही के रहल त ओह बकलोल लौंडा से भिजवावे के का जरूरत रहल. कवनो हुसियार आदमी से भेजीत. हमरा के कहले रहीं. हम जा के दे आइल रहतीं ओकरा मरद के स्वेटर. केहू के पतो ना लागीत आ परेम सनेसा चहुँपियो जाइत.

लेकिन अब त सगरी खेल बिगड़ गइल रहे. ओने धाना बेइज्जत रहल, एने मोहन आहत. गाँव में, जवार में घटल हरबात पर गाना बना देबे वाला मोहना से कुछ उज्जड टाइप के लोग धाना के एह

स्वेटर चोरावे वाली घटनो पर गाना बनावे के आग्रह बेर-बेर करिके तंज कसले. एहू बात के मोहना के बहुत खराब लागल आ बेर-बेर लागल. हर बेर ऊ अपना मन के चुप लगा देव. अपना आक्रोश के लगाम लगा देव धाना के आन का खातिर. नाहीं बेबात बात के बतंगड़ बन जाइत आ धाना के नाम उछलीत कि मोहनवा धनवा खातिर लड़ गइल. बहुते बेइज्जति होखीत. से मोहनवा खामोश रहि जाव एइसन तंजबाजन का बाति पर.

ऊ कहल जाला नू कि रात गइल, बात गइल. त धीरे-धीरे इहो बाति बिसर गइल. एक मौसम बीत के दोसर, दोसरका बीत के तिसरका मौसम आ गइल.

हँ, ऊ सावने के महीना रहल !

धाना सखी सहेलियन का साथे अमवारी में झुलुआ झूलत गावत रहली, "कइसे खेले जइबू सावन में कजरिया, बदरिया घेरि आइल ननदी !" जवना पेड़ पर धाना के झूला पड़ल रहे ओह पेड़ से तीन चार पेड़ छोड़ एगो पेड़ का डाढ़ पर पतइअन का अलोते बइठल मोहनवा धाना के टुकुर-टुकुर तकले जात रहे. ऊ खाली ताकते ना रहल, रहि-रहि के धाना के कुछ इशारो करत जात रहे. बाकिर धाना एह सब से बेखबर "ननदी" के गाना में मस्त रहली. होंठ आ गोड़ दुनु गुलाबी रंग से रंगाइल रहल. अँचरा छाती से हट गइल रहे त मोहना के आँखि ओहिजे अटकल का, टिकल पड़ल रहे. बड़ा देर ले इशारेबाजी का बादो जब धाना के नजर मोहनवा पर ना पड़ त मोहनवा आखिरकार एगो छोटहन ढेला धाना के टिकोरा से आम बन चलल जोबना पर साध के अइसन मरलसि कि झूला जब उपर से नीचे का ओर चले तब लागे. लेकिन ढेला ठीक ओहि तरह मरले रहे जइसे कबो ऊ आम का पेड़ पर ढेला मार के धाना के कोइलांसी खिआवत रहे. फरक बस अतने रहल कि तब ऊ ढेला नीचे से उपर ओर मारत रहे, आजु उपर से नीचे का ओर मरलसि. निशाना एकदम सही रहे. माटी के ऊ ढेला धाना के कड़ा आ बड़ा हो चलल जोबना का बीचे जा के तबहिये फँसल जब ऊ पेंग मारत झूला का साथे उपर से नीचे आवत रहे. निशाना के स्टाइल जानल-पहिचानल रहल से चिंहुक के ऊ उपर तकलसि आ आँखि मून लिहलसि. अइसे कि केहू दोसर ना जाने कि मोहनवा दोसरा पेर का डाढ़ पर बइठल बा. फेर जब झूला नीचे से उपर जाये लागल त ना सिर्फ भर आँखि मोहनवा के देखलसि, बलुक कसके आँखो मरलसि. कुछ देर ले अइसहीं दुनु का बीचे झूला चलत रहल आ आँख झूला झूलत रहली स.

बदरी त घेरलही रहली स, कि तबहिये झमाझम बरसहू लागल.

सावन के बादर !

झूला छोड़ के सगरी लड़िकी भगली स बाकिर धाना ना भागल. जल्दबाजी में गोड़ में चोट लागे का बहाबे ओहिजे बगल का पेड़ का नीचे भींजत-भागत गोड़ दबवले मोहन के देखत रहल. पेड़ भींच चुकल रहे. भींजल पेड़ से उतरे में खतरा रहे बाकिर ई खतरा मोहन उठवलसि धाना का खातिर. ओकरा

के पावे का खातिर. सगरी औरत भाग के आधा फर्लांग दूर एगो पलान में आसरा ले के बइठ गइली स. लेकिन धाना मोहन के आसरा लिहले एगो पेड़ का नीचे भीजत रहल. भीजत रहल भितरी से बहरी ले. एगो बरखा बाहर होत रहे आ एगो धाना का भीतर. बरसत रहवे मोहन धाना का भीतर. मोहन धाना के गालन के चूमत रहे आ ओकरा ओंठ पर लागल गुलाबी रंग के अपना जीभ से चाटत रहे. धाना के कड़ेर हो चलल जोबन जब मोहन छुअलसि त जइसे ओकरा देह में भारी करंट दउड़ पड़ल आ निर्वस्त्र धाना बेसुध हो के निशब्द हो गइल. आँख बन्द करके ऊ एगो जियत सपना में कैद होके परम सुख का छन में बहे लागल. आ जब मोहन ओकरा के लगभग निर्वस्त्र कर के ओकरा उपर झुक आइल त ऊ खूब कस के अपना से चिपका लिहलसि. झुलुआ के पीढा जइसे ओहनी के बिछवना बनि गइल रहे आ कवचो बनि गइल रहे कीचड़ से बाँचे के. अमवारी के हरियर घासो दुनु का साथे रहल. फेर जवन थोड़ बहुत कीचड़ छुवतो रहल दुनु के देह के, ओकरा के बरखा के बौछार धो देत रहल. संजोवले जात रहवे धाना आ मोहन के प्यार के पसीना के आपन पानी दे के. छनो भर ना लागल धाना के देहबंद लाँघे में मोहन के आ ऊ देह के प्राकृतिक खेल के भरल बरखा में खेले लागल. मोहन के पुरुष जइसहीं धाना के औरत के दरवाजा खटखटा के घुसल धाना सिहर उठल. चिहूँक के चीखल आ मोहन निढाल हो गइल. सावन के एगो अउर बदरी बरस गइल रहवे धाना में, बरिस गइल रहवे मोहन.

छने भर में.

दुनु मदमस्त पड़ल रहले. एक दोसरा के भींचत. भीजत रहले सावन के तेज बौछारन में. बौछार जब फुहार में बदले लागल त मोहन के पुरुष फेर जागल. धाना के औरतो सूतल ना रहे. एक देह के बरखा दोसरा देह में अउरी गाढ़ हो गइल. आ जब मोहन धाना का भीतर फेर बरसल त धाना ओकरा के दुलरावे लागल. तबहिये सावन के फुहार अउर धीमा हो गइल आ साथही बगल का मड़ई से हँसत खिलखिलात आवत औरतन के आवाजो मधिम-मधिम सुनाये लागल रहे. अचके में धाना छिटक के मोहन से अलगा भइल. पेड़ का अलोट में खिसक के जल्दी से पेटीकोट पहिरलस आ ब्लाउज पहिरत बोलल, "अब तू भाग मोहन जल्दी से !"

"काहें ?" मोहन मदहोशी में बोलल.

"सब आवत हई." ऊ कहलसि, "जल्दी से भाग." कहके ऊ जल्दी-जल्दी साड़ी बान्ह के गोड़ पकड़ पेड़ से सट के बइठ गइल. अइसे जइसे गोड़ के चोट अबहीं ठीक ना भइल होखे. तबहिये मोहन ओकरा के फेर से चूमे लागल त ऊ तनी खिसियाइल, "मरवा के मनबऽ का हो मोहन !"

मोहन धीरे से ओहिजा से भागल. अमवारी का दोसरा ओरि. छप छप छप छप.

औरत जुटली स आ तर-बतर धाना के सम्हारे में लाग गइली स. बेसी नादान टाइप सखी त ओप्फ-ओप्फ कर धाना का साथ, "बेसी गाव लाग गइल का ?" का सहानुभूति में पड़ गइली स बाकिर

पहुँचल आँखि वाली सखी ताड़ गइली स कि आजु एह अमवारी में सावन का बदरी का अलावहू कवनो बदरी बरिसल बा. अइसहीं ना रुक गइल रहे धाना सखी.

"का हो धाना सखी, आजु त तू नीक से भींजि गइलू हो." कहत एगो औरत, जेकर गवना हो चुकल रहुवे, पूछलसि, "इमनवा बचल कि ना !" फेर अपने जोड़लसि, "तोहार अँखिया बतावत बा कि ना बचल."

"का जहर भाखत बाड़ू !" धाना एतराज जतवलसि.

"मानऽ चाहे ना. गवनवा त हो गइल एह बरखा में. जाने इमनवा बचल कि ना !" ऊ औरत प्यार भरल तंज कसत बोललसि.

"अरे सीधे पूछ कि जोरनवा पड़ल कि ना ?" एगो तीसर सखी पड़ताल करत बोलल, "हई घसिया बतावति बा !" ऊ आँखि घुमावत होंठ गोल करत बोलल, "हई होठवा के उड़ल लाली बतावति बा, हई साड़ी क किनारी बतावति बा."

"का बतावति बा ?" धाना बिफर के बोलल.

"कि घाव बड़ा गहिर लागल बा हो धाना बहिनी !" एगो अउर हुसियार सखी बोलल.

बरखा रुक गइल रहल बाकिर धाना के सहेलियन के बात खतम ना होत रहे. आजिज आ के धाना एगो सखी के सहारा ले के उठ खड़ा भइल. ओकर कान्ह पकड़लसि आ घरे चले के आँखे-आँख में इशारा कइलसि. ऊ चले लागल तबहिये झूला के पीढा उठावत एगो सखी बोलल, "ई पीढा त झूलवा से उतरल बा हो."

"के उतारल ?" एगो दोसर सखी रस लेत पूछलसि.

"हई पायल जे उतरले होई." ऊ पीढा का लगे गिरल धाना के पायल देखावत बोलल.

"लावऽ पायल ! एहिजा जान जात बा आ तोहनी के मजाक लागल बा." सकुचात खिसियात धाना बोलल.

"राम-राम !" ऊ सखी बोलल, "ई तोहरे पायल ह का ?" ऊ फेर चुहल कइलसि, "केहू से बतायब ना, के उतारल ? बता द."

"हई दई उतरलें !" धाना बदरियन का ओर इशारा करत जान छोड़ावे के कोशिश कइलसि.

"का हो दई, इहै कुल करबऽ !" उपर बदरी का ओर देखत आ ठुमकत ऊ सहेली जइसे बदरिये से कहलसि, "लाज नइखे आवत, धाना के पायल उतारत !"

फेर त घर के रास्ता भर किसिम-किसिम के चुहल होत रहल. घर का लगे चहुँपते एगो सखी बोलल, "हई ल धाना के पायल दई का निकरलें कि इनकर चालो बदलि गइल !"

"काहे ना बदले भला. घाव जवन लागल बा." ऊ सहेली बोलल, "जानऽ करेजा में लागल बा कि

गोड़े में. बाकिर लागल त बा !"

धाना के ओकरा घरे छोड़त सखी धाना के महतारीओ से कहत गइली, "घाव बड़ा गहिर लागल बा. हरदी दूध ढेर पियइहस ए काकी !"

जवने होखे बाकिर धाना एह पूरा हालात, ताना-ओरहन अउर दिक्कतन के ब्योरा मोहन से अपना अगिला मुलाकात में, खुसुरे-फुसर करिये के सही, पूरा-पूरा बता दिहली. जवना के बाद में लोक कवि अपना एगो डबल मीनिंग गाना में बहुते बेकली से इस्तेमालो कइलन कि "अँखिया बता रही है लूटी कहीं गई है." फेर आगा दोसरा अंतरा में ऊ आवस, "लाली बता रही है चूसी कहीं गई है" आ फेर गावसु "साड़ी बता रही है खींची कहीं गई है."

बहरहाल बिना घावे के सही, हरदी दूध पियत घरी धाना के नजर अपना गोड़ के अँगुरी पर पड़ल त धक् रह गइली. देखली कि गोड़ के अँगुरी से बिछिया गायब रहे ! ऊ दबल जबान से माई के ई बात बतइबो कइलस त माई कवनो एतराज ना जतवली. माई बोलली, "कवनो बात नाई बछिया, तोहार जान-परान अउर गोड़ बचि गइल से कम बा का ? बिछिया फेर आ जाई."

गोड़ में चोट के बहाना तबहियो भारी पड़ल. एह बहाने कुछ दिन ले धाना घर से बाहर ना निकल पवलसि. आ तब जब ओकर अंग-अंग महुआ जस महकत रहूवे. ओकर मन होखे कि ऊ चोटी खोल, केश के खुला छोड़ खालिये गोड़ कोसो दउड़ जाव. दउड़ जाय मोहना का साथ. भाग जाय मोहना का साथ. फेर लवटि के घरे ना आए. ऊ बस दउड़त रहे. ऊ आ मोहना दउड़त रहें एक दोसरा के थमले, एक दोसरा से चिपटल. केहू देखे ना, केहू जाने ना.

लेकिन ई सब त सिर्फ सोचे आ सपना के बात रहे.

साँच में त ऊ मोहना से भेंट करे खातिर अकुलात रहे. अफनात रहे. गुनगुनात आ गावत रहे, "हे गंगा मईया तौहे पियरी चढ़इबों, मोहना से कई द मिलनवा हे राम !" सखी-सहेली समुझस सँ कि "सईया से कई द मिलनवा हो राम" गावत बाड़ी धाना. स्वेटर वाला सईया खातिर. बाकिर धाना त गावत रहे "मोहना से कई द मिलनवा हो राम." लेकिन "मोहना" अतना होसियारी से फिट करे कि केहू बूझ ना पावे. सिर्फ उहे बूझे. आ ऊ देखे कि मौका-बेमौका मोहनो कवनो गाना टेरत ओकरा घर का लगी से जल्दी-जल्दी गुजर जाव. कनखी से एने-ओने झाँके, देखे. लेकिन ऊ करे त का ? ओकरा गोड़ में "घाव" नू रहे !

"जल्दिये" ओकर "घाव" ठीक हो गइल आ ऊ कुलांचा मारत घर से निकले लागल. अइसे जइसे कवनो गाय के बछड़ा होखो. बाकिर मोहना के देखियो के ना देखे. अनजान बनि जाव. मोहना परेशान हो जाव, धानो. आ फेर रात में ऊ भेंट करे मोहना से चुपके-चुपके. बाकिर सपना में. साँच में ना. अमवारी, बरखा, झूला, मोहना आ ऊ. पाँचो एक साथ होखसु. सपना में बरखत ! भींजत, चिपटत आ फेर सिहर-

सिहर एक दोसरा के हेरत. एक दोसरा के जियत. बाकिर सब कुछ सपनवे में होखे.

साँच में ना.

सपना मोहनो देखल करे. धाना के सपना. अमवारी बरखा आ झूला के ना. सिर्फ धाना के. आ बहि जाव सपना के कवनो छोर पर जाँघिया खराब करत.

जल्दिये खतम भइल दुनु के सपना के सफर !

सच में मिलले.

भरल दुपहरिया धाना के भईसियन का धारी में. भईस चरे निकलल रही स. आ धाना मोहन धारी में. माछी, मच्छर आ गोबर का बीच एक दोसरा के चरत. जल्दिये दुनु छूट गइले. कैद से. तय भइल कि अब आगा से दिन में ना, राते में कबहू धारी, कबो खरिहानि, कबो अमवारी, कबो खेत भा जहँवे कहीं मौका मिल जाई मिलत रहल जाई. एहिजा-ओहिजा. बाकिर चुपे-चोरी. धाना जल्दी में रहल. धारी से सबसे पहिले भागल फेर मौका देख के मोहनो एने-ओने ताकत गँवे से निकलल.

फेर मौका बेमौका कबो अरहर का खेत में, कबो गन्ना के खेत में, कबो बगइचा त कबो धारी. बारी-बारी जगहा बदलत मिलत रहले धाना मोहन. बहुत बचाइयो के होखे वाली ई मुलाकात पीपर के पतई का तरह सरसराये लागल. लोग का जबान पर आवे लागल. मोहन-धाना भा धाना-मोहन का तौर पर ना. राधा-मोहन का तौर पर. धाना जइसे मोहन खातिर सखी रहे, वइसहीं चरचाकारन, टीकाकारन खातिर राधा बन चुकल रहे. कृष्ण वाली राधा ! त नाम चलल का दउड पडल. राधा-मोहना !

बाकिर राधा मोहना त बेखबर रहले. बेखबर रहले अपना आपो से. अपना खबर बन गइला का खबर से.

एक रात दुनु बड़ी देर ले एक दोसरा से चिपटल रहले. ओह रात मोहना कम धाना बेसी "हमलावर" रहे. मोहना जब-जब चले के बात करे तब-तब धाना कह देव, "ना, अबहीं ना." ऊ जोड़े, "तनिक अउरी रुक के." मोहना करे त का, धाना ओकरा उपरे पटाइल पडल रहे. अपना कड़ेर-कड़ेर जोबना से ओकरा के कचारत. आ मोहना नीचे से ओकरा चूतड़ के रहि-रहि के हाथ से थपकियावत कहे, "अब चलीं नू ?" आ ओकर जबाब रहे, "ना, अबही ना." ओह रात धीरही-धीरे सही, राधा मोहना से कहलसि, "बडा गवईया बनल घूमत फिरे लs, आजु हम गाइब !" आ धाना गइबो कइलसि खूब गमकि के, "ना चली तोर ना मोर / पिया होखे द भोर / मारल जइहें चकोर / आज पिया होखे द भोर." आ साँचहू ओह राति धाना भोर भइला का बादे छोडलसि मोहना के. तब ले मोहन धाना का साथे गुत्थम गुत्था हो के तीन चार फेरा निढाल हो चुकल रहे. चलत-चलत ऊ सिसकारी भरत मचल के बोलबो कइलसि, "लागता जे हमें मार डरबू ए धाना !"

"हँ, तोहरा के मार डारबि" धानो शोख होत बोलल रहे तब.

राधा मोहन के ई सिलसिला चलत रहल आ चरचो !

बात मोहना के घर ले चहुँप चुकल रहे बाकिर राधा रुपी धाना के घरे ना. केहू के हिम्मते ना पड़े. राधा के दू गो भाई पहलवान रहले आ लठइतो. जेही खबर चहुँपाइत ओकर खैर ना रहे. एही नाते गाँव में चरचा चलबो करे राधा-मोहन के त खुसुरे-फुसुर में. आ उहो गुपचुप.

बाकिर कब ले छुपीत ई खबर !

आखिर खबर चहुँपिये गइल धाना का घरे, जवन धाने चहुँपवलसि. धाना का, ओकर ओकाईल चहुँपवलसि. बाकिर धाना का घरे खबर चहुँप गइल ई बात धाना का घर वाला कानो कान केहू के खबर ना होखे दिहले. धाना के ढेरे यातना दिहल गइल. बाकिर इहो बाति बाहर ना निकलल. पचवें में गवना जावे वाली धाना के डेढ़ बरीस पहिलही गवना हो गइल. ई खबर जरूर चहुँपल सभका ले बाकिर चरचा एकरो ना भइल.

धाना यातना जरूर सहलसि आ बेहिसाब सहलसि बाकिर मोहना के नाम जुबान पर ना ले आइल.

बाकिर मोहना डेरा गइल रहे. डेरा गइल रहे पहलवानन का लाठी से. ऊ जान गइल रहल कि ऊंच नीच हो गइल बा. घबरा के शहर के राह धड़ लिहलसि. ओहिजे चंग ले के गावे बजावे लागल.

धाना का फेर में एने ऊ गवनइयो भुला दिहले रहल.

एक दिने ऊ जिला कचहरी के एगो मजमा में गावत रहल. कलक्टर के जुर्म पर बनावल हाना. बिना कलक्टर के नाम लिहले. तबहियो पुलिस पकड़ि के पीट दिहलसि मोहन के. गनीमत रहल कि जेलवेल ना भेजलसि. लेकिन ऊ ई कलक्टर के जुर्म वाला गाना गावत रहल. एक दिने राह चलते एगो कम्युनिष्ट नेता मोहन से ई गाना सुन लिहलन. ई कम्युनिष्ट नेता ओहिजा के विधायको रहलन. मोहना के बोलवलन. बात कइलन, चाय पियवलन आ ओकरा बारे में जनलन. ओकर पीठ थपथपवले आ पूछले कि "हमरा पार्टी खातिर गइब ?"

"जे कही ओकरे खातिर गाइब. बस गरीबन का खिलाफ ना गाइब." मोहन बेखौफ हो के बोलल.

"हमहन गरीबे, मजदूरन आ मजलूमे के लड़ाई लड़ीले जा." कम्युनिष्ट नेता मोहन के ई बात बता के ओकर मन साफ कइलन आ ओकरा के अपना साथ अपना टीम के मेंबर बना लिहलन. फेर ऊ पार्टी के मेंबरो बनल आ पार्टी खातिर गावे लागल.

बाकिर ऊ अपना सखी धाना के ना भुलाइल. धाना के खोज खबर लेत रहल. बाद में पता चलल कि धाना के बेटा भइल बा. ओकरा ई समझत देरी ना लागल कि ई बेटा ओकरे बेटा ह. मोहना आ धाना के बेटा. ऊ रोब से मूँछो अईठलसि. हालांकि ओकरा मूँछ के अबही ठीक-ठाक पतो ना रहल. हँ नाक का नीचे पातर मूँछ जइसन इबारत जरूर निकलत लउके.

बाद में ओकरा धाना के तकलीफ, "जल्दी" बच्चा पैदा हो गइला का चलते मिले वाला ताना आ तकलीफो के ब्योरा मिलत रहल. पर ऊ बेबस रहे. करबि करीत त का ? कवनो पहल भा दिलचस्पी देखवला के मतलब रहल धाना के अउरी कष्ट, बेइज्जति आ दिक्कत में डालल. से ऊ धाना के तकलीफन के ध्यान करिके अकेलही में रो गा के शांत हो जाव.

एही बीच मोहनो के गवना हो गइल. ऊ शहर से गाँव, गाँव से शहर गावत-बजावत भटकत रहल. बाकिर कवनो टिकाऊ राह ना मिलल. तब ले दू गो बच्चो हो गइल रहन स ओकर. लेकिन रोजी रोटी के ठिकाना दूर दूर ले ना लउकत रहल.

एही बीच ओकरा धाना फेर लउकल. रिक्शा से शहर के अस्पताल जात. ओकर मरदो ओकरा साथे रहल आ ओकर बेटो. रोक ना पवलसि मोहन अपना आप के. सगरी खतरा उठावत ऊ लपकल आ बोलल, "हे सखी !" सखी मोहन के आवाज सुनते सकुचइली बाकिर घबरइली ना. अपना मरद के खोदियवलसि, मोहन के देखवलसि आ बोलल, "का हो मोहन !" मोहन के मन के सगरी पाप मेटा गइल. सखी के मरद रहल त पहलवान बाकिर खिसियाह ना रहल. सखी के मानत जानत बहुते रहल. एक तरह से सखी के गुलाम रहल. ठीक वइसहीं जइसे जोरू के गुलाम ! सखी मरद से कहि के मिठाई मँगवलसि आ खुसफुसा के बतवलसि कि, "तोहरे बेटा के तबियत खराब हवे. सरकारी डक्टररी में देखावे वदे आइल हईं."

मोहन झट से कम्युनिष्ट नेता से संपर्क सधलसि जे पार्टी आफिस में भेंटा गइले. उनकर बात डाक्टर से करवलसि. डाक्टर लड़िका के ठीक से देखले परखले. निमोनिया बता के इलाज शुरू कइलन. लड़िका ठीक हो गइल, साथही मोहनो. धाना के मरद मोहन के मुरीद बन गइल. मोहन आ ओकर सखी धाना के रास्तो साफ हो गइल. दुनु फेर मिले जुले लगले. कबही धाना के मरद का सामनही त कबो चुपे-चोरी. धाना के अबही ले एके गो बेटा रहल, मोहन का कृपा से. मोहन के धाना से मिलल जुलल शुरु का भइल, धाना के गोड फेर भारी हो गइल. कोई आठ बरीस बाद !

कि तबहिये चुनाव के एलान हो गइल. मोहन के ऊ कम्युनिष्ट नेता फेर से चुनाव लड़लन. मोहना एह चुनाव में जान लगा दिहलसि. लोकल समस्या के ले के एक से एक गाना बनवलसि आ घवलसि कि दोसरा नेता लोग के छक्का छूट गइल. नेता लोग के भाषन से बेसी मोहन के गाना के धूम रहल. नेताजी के हर जलसा में त मोहन गवबे करे, जलसा का बाद जीप में बईठ के माइक लिहले गावे, गाँवे-गाँवे घूमे. एह फेर में ऊ गावत अपनो गाँवे गइल आ सखियो का गाँवे.

नेताजी चुनाव जीत गइलन त मोहन के एकर क्रेडीटे भर ना दिहले बलुक ओकरा के अपना साथे लखनऊओ लिवइले अइलन. आ मोहन के एगो नया नाम दिहले लोक कवि !

लोक कवि लखनऊ आ के बड़हन संघर्ष कइलन. फेर नाम आ पइसो खूब कमइले. लेकिन अपना

सखी के ऊ ना भुलइले. एह बीच मौका बेमौका सखी से मिलत रहलन. नतीजतन सखी उनुका तीन गो बच्चा के महतारी बन गइली. एक बेर एह बाति के चरचा लोक कवि चेरमैन साहब से चलवले त चेरमैन साहब लोक कवि से पूछले, "त ऊ पहलवान सार का करत रहे ?"

"पहलवानी !"

लोक कविओ अइसना स्टाइल में कहले कि चेरमैन साहब हँसत हँसत लोटपोट का, बेसुध जइसन हो गइलन.

बाद में सखी के पति पहलवान के माली हालत गइबड़ाइल तो लोक कवि तब त सम्हरबे कइलन, बादो में हमेशा कुछ ना कुछ आर्थिक सहायतो करत रहले. आ साथही में सखीओ के "मदद" में रहलन. बहुत बाद में सखी के "मदद" कइल त भुला दिहले बाकिर उनुका, उनुका परिवार के आर्थिक मदद जवह बेवजह करत रहलन. इ काम लोक कवि कबो ना भुलइले. पहिले पइसा कौड़ी ले के खुदे पहुँचत रहले बाद में केहु ना केहु से भिजवावे लगले. कहसु कि, "अरे, उहो आपने परिवार हऽ." इहाँ तक कि सखी के बेटन का बिआहो में शामिल भइले आ धूमधाम से शामिल भइले. खरव बरच कइले. अब जइसे लोक कवि नाती पोता वाला हो चलल रहले वइसहीं सखीओ नाती पोता वाली हो गइल रहली. बलुक सखी के परिवार त लोको कवि का परिवार से पहिले एह सुख वाला हो गइल रहे.

अब उहे सखी, मोहन के सखी, राधा मोहना के मीठ इयाद बोवत लोक कवि के परीछत रहली, पूरा मन, जतन अउर जान से. लोक कवि बुदबुदात रहले, "सखी !" आ सखी कहत रहली, "बड़ा उजियार कइले बाइऽ आपन आ अपना गाँव के नाम ए मोहन बाबू !" लेकिन लोक कवि गदगद रहले. सखी के परीछन से. ढेरहन औरतन का संसर्ग से गुजर चुकल लोक कवि के तमाम औरतन के भुला जाये के आदत बा बाकिर कुछ अइसनो औरत बाड़ी स लोक कवि का जिनिगी में जिनका के ऊ ऊ ना भुलासु ! भुलाइल चाहबो ना करसु. सखी, पत्नी, आ मिसिराइन अइसने औरतन में के तीन गो औरत रहली. एहमें से पहिला नम्बर पर रहली सखी. धाना सखी. राधा मोहना के नाम से कबहू का, अबहियो जानल जाये वाली सखी. लोक कवि के कभी का, अबहियो जिनिगी देबे वाली सखी. ऊ सखी जिनका विरह में लोक कवि के पहिला ओरिजिनल गाना फूटल रहे, "आवऽ चलीं सखी ददरी क मेला, आ हो धाना !"

ऊ सखी जे लोक कवि के जवानी के पहिलका भूख पियास मिटवले रहली. जे लोकलाज के परवाह छोड़ उनुका जिनिगी के ना सिरिफ पहिलका औरत बनली बलुक उनुका पहिला बेटा के महतारिओ बनली. भलही ओह बेटा के ऊ आपन नाम सामाजिक मर्यादा का चलते ना दे पवले, बाकिर समाज त जानेला, गुपचुपे सही. ऊ सखी जे कबहु उनुका से कुछ ना मँगली, कबो डिमांडिंग ना बनली, कवनो तकलीफ के गिरह, कवनो परत खोल के ना बतवली. खुद पिअत गइली सगरी तकलीफ, मुश्किल आ अपमान. ऊ ऊंच जाति के होखला का बादो, उनुका बनिस्बत समृद्ध होखतो एह गरीब से आँखि

लड़वली. ऊ सखी, ओह प्यार में नहाइल सखी के, जे एहू उमिर में अफनात चलि आइल बाड़ी, बिना सोचले कि बेटा, बहू, नाती, पोता भा ई गाँव, ई समाज कवनो पुरान गाँठ खोल के ओकरा पर तोहमतो लगा सकेला ! लोक कवि अबही अबही खुदे देखले ह कि उनुकर प्यारी भउजाई, जे सबले पहिले उनुका के परीछे अइली, सखी के देखते कइसन त मुँह बनवली आ आँख टेढ़ कर लिहली. दोसरो औरत सखी के ओही रहस्य से देखली त सखी त सकुचइली बाकिर लोक कवि लहक गइलन. गनीमत कि केहु साफ तौर पर कुछ ना कहल आ बात आइल गइल हो गइल. तबहियो सखी परीछत बाड़ी लोक कवि के, पूरा लाज से आ लोक मर्यादा के निबाहत. आ लोको कवि आँखिन में ओही मर्यादा के भाव लिहले देखत बाड़े सखी के बिना पलक झपकवले. सखी एक बेर अउरी परीछले रहली मोहन रूपी एही लोक कवि के. तब जब मोहना बियाह करे जात रहल, तब जब सखी के बियाह हो चुकल रहे. लोक कवि अपलक देखत बाड़न सखी के बेआवाज ! आ लोक कवि के एह देखला के देखत बाड़े चेरमैन साहब, ठकुआइल !

"परीछते रहबू कि केहु दोसरो के परीछे देबू ?" कहत बाड़ी भउजी तंज में आ के सखी से. आ सखी बाड़ी कि गावत गावत लोढ़ा फेरा अउरी घुमा देत बाड़ी लोक कवि का चेहरा पर, "मोहन बाबू के परीछबों !" आ चलत चलत उनुका गाल पर दही रोली मल देत बाड़ी.

"ई गाँव के बेटा हई कि दुलहिन हो ?" लोक कवि के एगो भउजाई टाइप बुढ़िया ई सब देखि के फुसफुसात बाड़ी.

"ना दुलहिन, ना बेटा. इन हई राधा" एगो दोसर भउजाई जोड़त बाड़ी, "मोहन के राधा."

एगो दोसर भउजाई खुसफुसात सबका के डपटत बाड़ी, "चुप्पो रहबू !" गरज ई कि कहीं रंग में भंग मत पड़ि जाव.

ई सगरी बात आ परीछन के दृश्य देखि के चेरमैन साहब तनिका भावुक होत बाड़े तबहियो लोक कवि से ठिठोली फोड़त नइखन भुला. पूछत बाड़े, "का रे, ई ४४० वाली रहलि का ?" बाकिर तनी धीरे से.

"हँ, हँ !" मुसुकात लोक कवि धीरे से कहत हाथ जोड़ लेत बाड़न चेरमैन साहब से आँखेआँख में इशारो करत बाड़े कि "बस चुपो रहों !"

"ठीक बा, ठीक बा ! तें मजा ले !" कहिके चेरमैनो साहब लोक कवि से हाथ जोड़ लेत बाड़न.

तनिका देर में औरतन के कार्यक्रम खतम हो गइल. सचमुच में खतम त तबहिये हो गइल रहल जब सखी परीछल बंद कर दिहले रही. बाकिर अब बाकायदा खतम हो गइल रहे. औरतन का बाद अब मरदन के लोक कवि से मिलल जुलल शुरु हो गइल रहे. लोक कवि के खुशी के ठिकान तब अउर ना रहल जब देखलन कि सखि के पति पहलवानो आइल बाड़े.

"आई पहलवान जी !" कहि के लोक कवि उनुका के अँकवारी भर लिहले.

"असल में औरतन के कार्यक्रम चलत रहल त हमनी का तनी दूरे खड़ा रहनी ह", पहलवान जी सफाई दिहले.

"ई पहलवान जी हई, चेयरमैन साहब !" कहिके लोक कवि उनुकर परिचय करवलन आ आँखि मरलनकि मजा लींही लेकिन साथही इहो इशारा कइले कि "कवनो खराब टिप्पणी करि के गुड-गोबर मत करीं."

मिलल जुलल जब खतम भइल आ धीरे-धीरे भीड़ छँटे लागल त लोक कवि अपना दुनु भाईयन के बोलववले. लेकिन एगो के त चेयरमैन साहब दस हजार रुपिया दे के लड्डू ले आवे खातिर भेज चुकल रहले. त सिर्फ एक जने अइले, "हँ भईया !" कहत.

ऊ ओकराके एक किनारा ले जा के कहले, "देखs, हमरा के आजु पाँच लाख रुपिया मिलल बा !"

"इनाम में ?" लोक कवि के बात काटत छोटका भाई पूछलसि.

"ना रे, सम्मान में !" लोक कवि बात शुरू कइले त ऊ फेर बोल पडल, "अच्छा अच्छा !" त लोक कवो ओकरा के डपटत कहले, "पिकिर-पिकिर जिन कर. पहिले पूरा बाति सुन ले."

"भईया !" कहत ऊ फेर बोल पडल.

"कहीं कवनो खेत तजबीज करs. खरीदे खातिर." लोक कवि कहले, "झगड़ा-झंझट वाला ना होखे. एक साथ पूरा चक होखे."

"ठीक भइया !"

"रजिस्ट्री कराएब तीनो भाईयन का नाम से !" लोक कवि गदगद हो के बोललन.

"ठीक भइया !" भाईओ ओही गदगद भाव से छलकल.

साँझ होखे चलल रहे लेकिन लड्डू आ गइल रहे आ गाँव में बँटाये लागल रहे. चेयरमैन दहाड़त रहले, "केहू छूटे ना. लड़िका-सयान सभका के बाँटs. बाँच जाय त बगल वाला गाँवो में बँटवा दs."

पूरा गाँव लड्डू खात रहे लोक कवि के चरचा में डूबल. हँ कुछेक घर आ लोग अइसनो रहले जे ई लड्डू ना लिहले. ऊ लोग लोक कवि पर भुनभुनात रहे, "भर साला लड्डू बँटवावत बा." एगो पंडित जी त खुलेआम बड़बडात रहले, "बताई, एह गाँव में एक दू ठो क्रांतिकारिओ भइल बाड़े. केहू ओह लोग के नाम लेवईया नइखे ! बाकिर हई नचनिया-पदनिया के आरती उतारल जा रहल बा. पाँच लाख रुपिया मुख्यमंत्री देत बा. सम्मान कर के." ऊ बोलत रहले, "उहो साला अहिर इहो साला भर ! जनता के गाढ़ कमाई साले भाड़ में डालत बाड़े आ केहू पूछेवाला नइखे." केहू टोकबो कइल कि, "चुप्पो रहीं !" तऊ अउरी भडकलन, "काहें चुप रहीं ? एह नचनिया-पदनिया के डर से ?"

"त तनी धीरे बोलीं !"

"काहें धीरे बोलीं जी ? एह नचनिया-पदनिया के हम लड्डू खइले बानी का ? कि सार के कर्जा

खड़ले बानी ?" कह के ऊ अउरी जोर से बोले लगले. पंडित जी के बात खुसुर-फुसुर में लोको कवि ले चहुँपावल गइल. त लोक कवि चेयरमैन साहब के बतवले. चेयरमैन साहब चिन्तित होत कहले, "ऊ पंडितो ठीके बोलत बा. लेकिन गलत समय पर बोलत बा." फेर चेयरमैन साहब लोक कवि के तुरते आगाहो कर दिहले कि, "कह दs कि कवनो रिएक्शन ना. पंडित के जबाब में केहू कुछ ना बोली."

"काहें साहब ? हमनी का केहू से कम बानी जा का !" लोक कवि के भाई बिदकत कहलसि.

"कम नइखs बेसी बाइs. एहीसे चुप रहs सभका के चुप राखs !" चेयरमैन साहब लोक कवि से मुखातिब होत कहले, "तू त जानते बाइs. देश में मंडल-कमंडल चल रहल बा. अगड़ा-पिछड़ा चलत बा त कहीं बात बढ़ के बिगड़ गइल त तोहार सगरी सम्मान माटी में मिल जाई. से लड़ाई रोकs." चेयरमैन साहब समुझावत कहले, "पंडित गरियावतो बा त चुपचाप पी जा."

बात लोक कवि का समझ में पूरा तरह आ गइल आ ऊ सभका के हिदायत दे दिहलन कि, "केहू जबाब मत देव." अतने ना, बात आगा जिन बढ़ो से एही गरज से खुदे पंडित जी का घरे जा के "पाँ लागी" कहत उनुकर गोड़ छूवले. पंडित जी पिघल गइले. लोक कवि के असीसे लगलन, "अउरी नाम कमा, खूब यश कमा, गाँव-जवार के नाम बढ़ावs !" बाकिर लगले हाथ आपनो बात कह दिहले, "सुनी ला कि मुख्यमंत्री के तू बहुते मुँहलगा हउवs ?"

"अपने के आशीर्वाद बा पंडित जी." कहत लोक कवि विनम्र भइलन आ फेर उनुकर गोड़ छू लिहले.

"त ओकरा से कहि के गाँवो के कुछ भला करा दs." पंडितजी कहलन, "गाँव में दू ठो क्रांतिकारी भइल बाड़े. धुरंधर क्रांतिकारी. ओह लोग के स्मारक, मूर्ति बनवावs." ऊ कहत गइले, "कि खाली नचनिये-पदनिये एह सरकारमें सम्मान पड़हें ?"

पंडित जी के ई बाति सुन के लोक कवि तनी विचलित भइले. कुछ बोलतन कि चेयरमैन साहब लोक कवि के कान्ह दबा के चुप रहे के इशारा दिहले. लोक कवि चुपे रहले. बोलले ना. लेकिन पंडित जी बोलत जात रहले, "गाँव में प्राइमरी स्कूल बा. पेड़ का नीचे मड़ई में चलेला. ओकर भवन बनवा द. प्राइमरी स्कूल के मिडिल स्कूल बनवा द. सड़क ठीक करवा द. सरकारी मोटर चलवा द. अउरियो जवन करि सकत होखs तवन करवा द. गाँव में नवही बेकार घूमत बाइन सँ, ओकनी के नौकरी, रोजगार दिलवा द !"

"ठीक बा पंडित जी. आशीष दीं." लोक कवि पंडित जी के फेर गोड़ छूवले आ कहलन कि, "कोशिश करब कि रउरा हुकुम के पालन हो जाव !"

"तोर नचनिया-पदनिया के बात मानी मुख्यमंत्री ?" पंडित जी फेर ना मनले आ घूम-फिर के अपना पुरनके बाति पर आ गइले. लेकिन लोक कवि भितरे-भीतर सुलगत उपर से मुसुकात चुपचाप

खाइ रहलन. फेर पंडित जी जइसे अपने सवाल के खुदही जबाब देत कहले,"का जाने, मुख्यमंत्री साला अहिर ह, नचनिये-पदनिये का सलाह से सरकार चलावत होखे. पढल-लिखल लोग, पंडित लोग ओकरा कहाँ भेंटइहें " बोलत-बोलत पंडित ही फेर पूछे लगलन लोक कवि से कि,"सुनले बानी तोर मुख्यमंत्री पंडित से बहुते चिढेला, बड़ा बेइज्जत करेला ?" ऊ तनी रुकलन आ पूछे लगले, "सही बात बा ?" केहू कुछ ना बोलल त उहे बोलले, "तुँहू त ओही जमात के हउवऽ. तुँहू उहे करत होखबऽ ?" फेर ऊ हँसे लगले,"हमरा बात के खराब जिन मनीहऽ. बाकिर समाज अइसने हो गइल बा. राजनीतिये अइसन हो गइल बिया. केही करबो करे त का करी ?" ऊ कहले, "बाकिर हमरा बाति पर रिसिअइहऽ जिन, पीठ पाछा गरियइहऽ जिन. बाकिर गाँव खातिर कुछ करवा सकऽ त करवइहऽ जरूर" ऊ फेर बोलले,"का जाने नचनिये-पदनिये से एह गाँव के उद्धार लिखल होखे !" कहि के ऊ फेर से लोक कवि के ढेर-सगरी आशीष, कामना वगैरह के बौछार कर दिहलन. बिलकुल खुला मन से. लेकिन बीच-बीच में नचनिया-पदनिया के पुट दे-दे के !

"ब्राह्मण देवता के जय !" कहि के लोक कवि फेर पंडित जी के गोड़ छूवले.

पंडित जी किहाँ से निकलि के लोक कवि चेरमैन साहब का साथे गाँव में दू चार अठरियो बड़का लोग का घरे गइलन. कुछ अठरीओ पंडितजी लोग किहाँ. फेरु बाबू साहब लोग किहाँ. बाकिर पंडित जी लोग में से कुछ लोग खुला मन से, कुछ आधा मन से, आ कुछ लोग बूताइले मन से सही बाकिर लोक कवि के स्वागत कइल, आशीष दिहल. लेकिन अधिकतर बाबू साहब लोग किहाँ लोक कवि के नोटिस ना लिहल गइ. ओह लोग का घर के नौकरे सा भा लड़िकने से मिल के लोक कवि अपना कर्तव्य के इतिश्री कर लिहले. हँ एगो बाबू साहब आधे मन से सही लोक कवि के सम्मानित होखे के बधाई दिहल, आ कहलन कि,"अब त तोहार बड़ नाम हो गइल बा. सुनत बानी जे लखनऊ में पइसा पीटत बाइऽ !"

"सब राउर आशीर्वाद बा." कहि के लोक कवि बबुआन टोला से निकल अइले. कुछ पहलवान-अहीरो लोग का घरे गइलन जहाँ उनुकर मिलल-जुलल आ भाव-विभोर स्वागत भइल. अपना बचपन के कुछ संघतियो लोग के खोज-हेर के लोक कवि भेंट कइले. उनुकर एगो हमउमरिया फेर चिकोटी लिहलसि, "सुननी ह गुरु कि रधवा फेर गाँवे आइल बिया आजु ?"

"कवन रधवा ?" लोक कवि टरलन त ऊ लोक कवि के हाथ दबावत कहलसि,"भुला गइलऽ राजा धाना के !"

लोक कवि कुछ कहले ना, मुसुका के टार गइले.

लोक कवि वापिस अपना टोला में आ गइले. अपना समाज में, जहाँ उनुकर स्वागत लोग दिल खोल के पहिलहू कर चुकल रहे, फेर करत रहे.

"पा लागी, पा लागी" करत हाथ जोड़त लोक कवि सभका दरवाजा पर गइलन. जेहसे केहू कहे वाला ना रहि जाव कि "हमरा घरे ना अइलस ?"

गदबेरा होत आवत रहे आ रात अपना आवे के राह बनावत रहे. चेयरमैन साहब लोक कवि से साफ-साफ पूछलन कि "रुकब एहिजा कि चलबस लखनऊ ?

"लखनऊ चलब. का करब एहिजा रुकि के ?" लोक कवि कहले, "जे कहीं हमरा रहला से मंडल-कमंडल खड़खड़ा गइल त बड़ी बेइज्जति हो जाई."

भाईयन आ बाकि परिवार जनो लोक कवि के रात में रुके के कहले. अहिर टोल से खास सनेस आइल कि सगरी लठैत आ बंदूकधारी पहरा दीहें. कवनो डकैत-चोर लोक कवि के पाँच लाख रुपिया छू ना पाई. आजु रात ऊ बेधड़क गाँव में रुकसु.

"सवाल पइसा चोरी भा डकैती हो जाये के नइखे." लोक कवि भाईयन आ परिवारवालन से बतवलन कि, "ऊ त चोर डकैत अइसहूँ ना छू पइहे काहे कि ऊ चेक में बा, नगद नइखे. बाकिर गइल जरूरी बा. काहें से कि लखनऊ में कुछ जरूरी काम बा. ओहिजो लोग अगोरत होई."

कुछ लोग गाँव में जानल चाहल कि "चेक में" के का मतलब ? का कवनो नया तिजोरी निकलल बा ? लोक कवि हँसत हँसत लोगन के समुझवले कि, "नाहीं, कागज हस." आ ओकरा के देखइबो कइलन.

त गाँव में एगो चरचा इहो चलल कि मुख्यमंत्री सरकार का ओर से लोक कवि के पुरनोट लिख के दिहले बाड़े. एगो बुजुर्ग सुनले त कहले, "त अइसे ! अरे बड़ा रसूख वाला हो गइलबा मोहना !"

चले का समय लोक कवि एक बेर फेर धाना का घरे गइलन. धाना आ धाना के मरद से भेंट करे. फेर निकल पड़लन ऊ गाँव से, डीह बाबा के हाथ जोड़त, गाँव का लोग आ सिवान के प्रणाम करत.

शहर चहुँप के चेयरमैन साहब शराब खरीदलन, साथ में कुछ खाये के लिहलन आ पानीओ के बोतल खरीद के लोक कवि का साथे खात-पियत चल दिहलन लखनऊ का ओर. लाल बत्ती वाला कार में. लोक कवि के कार, चेयरमैन साहब के एम्बेसडर, आ बाकी दुनु कार संगी साथियन के बइठवले पाछा-पाछा आवत रहे.

रास्ता में जब लोक कवि दू पेग पी चुकलन त बोललन, "चेयरमैन साहब, ई बताई कि हम कलाकार हूँ कि नहीं ?"

"त का भिखारी हउव ?" चेयरमैन साहब लोक कवि के सवाल के मर्म जनले बिना बिदक के कहले.

"त कलाकार हई नू ?" लोक कवि फेर बेचारगी में बोलले.

"बिल्कुल हउवs." चेयरमैन साहब ठसका का साथ कहले. "एहू में कवनो शक बा का ?"

"तब्बे नू पूछत बानी." लोक कवि एकदम असहाय हो के कहले.

"तहरा चढ गइल बा. सूत जा." चेयरमैन साहब लोक कवि का माथा पर थपकी देत कहले.

"चढल नइखे, चेयरमैन साहब !" लोक कवि तनी ऊँच आवाज में कहले, " त ई बताई कि हम कलाकार हई कि नचनिया-पदनिया ?"

"धीरे बोल साले ! हम कवनो बहिर हई का कि चिचिया के बोलत बाड़े." ऊ कहले, "पंडितवा के डंक तोहरा अब लागत बा ?" ऊ लोक कवि का ओर मुँह करके बोलले. "कवनो अंडित-पंडित के कहला से तू नचनिया-पदनिया ना हो जइबs. कलाकार हउवs कलाकार रहबs. ऊ पंडितवा साला का जाने कला आ कलाकार !" ई तुनकलन, "हम जानत बानी कला आ कलाकार. हम कहत बानी तू कलाकार हउवs. आ हमही का, कला के सगरी जानकार तोहरा के कलाकार मानेले. भगवान, प्रकृति तोहरा के कला दिहले बाड़े."

"से त ठीक बा." लोक कवि कहले, "बाकिर हमार गाँव आजु हमरा के हमार औकात बता

दिहलसि. बता दिहलसि कि हम नचनिया-पदनिया हई."

"राष्ट्रपति का साथे अमेरिका, सूरीनाम, फिजी, थाईलैण्ड जाने कहाँ कहाँ गइल बाइस. गइल बाइस कि ना ?" चेयरमैन साहब तल्ख हो के पूछले.

"गइल बानी." लोक कवि छोटहन जबाब दिहले.

"त का गाँइ मरावे गइल रहलस कि गाना गावे ?"

"गाना गावे."

"ठीक" चेयरमैन साहब कहले, "कैसेट तोहार बाजार में बा कि ना ?"

"बा."

"तोहार सरकारी गैरसरकारी कार्यक्रम होत रहेला कि ना ?"

"होला."

"मुख्यमंत्री तोहरा के आजु सम्मानित कइलन ह कि ना ?"

"कइले हँ, चेयरमैन साहब !" लोक कवि आजिज आ के कहले.

"त फेर काहें तबसे हमार मरले बाड़ीस ? सगरी नशा, सगरी मजा खराब करत बाइस तबहिये से." चेयरमैन साहब तनिका प्यार से लोक कवि के डपटत कहले.

"एह नाते कि हम नचनिया-पदनिया हई."

"देखस लोक कवि, मारे के बा त जा के ओह पंडितवा के मारस जवन तोहरा के ई नचनिया-पदनिया के डंक मरले बा. हमरा के बक्सस !" चेयरमैन साहब बात जारी रखले, "अच्छा चलस. ऊ पंडितवा तोहरा के नचनिया-पदनिया कहिये दिहलसि त ओकर माला काहे जपले बाइस ?" ऊ कार का खिड़की से सिगरेट के राख झाड़त कहले, "फेर नचनिया-पदनिया कवनो गारी त ह ना. आ फेर तूही बतावस, का नचनिया-पदनिया आदमी ना होला " आ इहो बतावस कि नचनियो कलाकार का खाता में आवेला कि ना ?" चेयरमैन साहब बिना रुकले बोलत जात रहले, "फेर तू जवन आर्कस्ट्रा चलावत-चलवावेलस ऊ का हस ? त तुहू नचनिया-पदनिया भइलस कि ना ?"

"बड़का जाति वाला लोग अइसन काहे सोचेला " लोक कवि हताश हो के कहले.

"रे साला, तू कहल का चाहत बाइस? का हम बड़का जाति वाला ना हई ? राय हई आ तबहियो तहरा गाँइ का पाछा-पाछा घूमत बानी. त केहू हमरो के त नचनिया-पदनिया कहि सकेला. आ केहू कहिये दी त हमरा खराब काहे लागी ? हम त हँस के मानि लेब कि चलस हमहू नचनिया-पदनिया हई." ऊ बोलत गइले, "एह बाति के गाँठ बान्हि के बा त बान्हस बाकिर दिल में मत बान्हस."

"चलीं रउरा कहत बानी त अइसने करत बानी"

"फेर देखस. लखनऊ में भा बाहरो कहीं तोहरा के जाति से तौल के त ना देखल जाला ?" ऊ

कहले,"ना नू देखल जाला ? त ओहिजा त बाभन, ठाकुर, लाला, बनिया, नेता, अफसर, हिंदू, मुसलमान सभे तहरा के कलाकारे नू देखेला. तोहरा जाति से त तोहरा के केहू ना आँके. बहुते लोग त तहार जाति जानबो ना करे."

"एही से, एही से." लोक कवि फेर उदास हो के कहले.

"एकदमै पलिहर हउवऽ का ?" चेयरमैन साहब कहले, "हम छेद बन्द करे में लागल बानी आ तू रहि-रहि के बढवले जात बाइऽ. हमरा से कुछ अउरी कहवावल चाहत बाइऽ का ?"

"कहि देई चेयरमैन साहब. आपहूँ कहि देई."

"त सुनऽ. हई मुख्यमंत्री आ ओकर समाज जे तोहरा के यादव-यादव लिखऽता पोस्टर आ बैनर पर आ अनाउंस करऽता यादव-यादव, त ई का हऽ ?" ऊ कहले, "एह पर त तोहार गाँड़ नइखे पसीजत " काहें भाई ? तू साँचहू यादव हउवऽ का ?"

"ई बाति के चरचा जनि करीं चेयरमैन साहब." हाथ जोड़त लोक कवि बोलले.

"त तू एकर विरोध काहें ना करेलऽ, एकहू बेर ?" ऊ कहत रहले, "ई बाति खराब ना लागे तोहरा आ नचनिया-पदनिया सुन लिहला पर खराब लाग जात बा ! डंक मार देत बा. अतना कि पूरा रास्ता खराब कर दिहलऽ, सगरी दारू उतार दिहलऽ आ अपना अतना बड़ सम्मान के सूखा दिहलऽ. अउर त अउर अपना ४४० वोल्ट वाली सखी से बरीसन बाद भइल मुलाकात के खुशीओ राख कर लिहलऽ !"

सखी के बात सुन के लोक कवि तनी मुसुकइले आ उनकर गम तनी फीका पड़ल. चेयरमैन साहब कहत रहले, "भूला द ई सब आ लखनऊ चहुँप के खुशी देखावऽ, खुश लउकऽ आ काल्हु एकरा के जम के सेलिब्रेट करऽ आ करवावऽ. कवनो छमक छल्लो बोला के भोगऽ !" कह के चेयरमैन साहब आँख मारत मुसुकइले आ दोसर सिगरेट जरावे लगलन.

लखनऊ चहुँप के लोक कवि साँस लिहले. चेयरमैन साहब का घरे उतरले. जाके उनुका पत्नी के प्रणाम कइले. चेयरमैन साहब से फेर काल्हु भेंट करे के कहत उनुको गोड़ छू लिहले त चेयरमैन साहब गदगद हो के लोक कवि के गले लगा लिहलन. कहलन, "जीयत रहऽ आ एही तरे यश कमात रहऽ." आगा जोड़लन, "लागल रहऽ एही तरे त एक दिन तोहरा के पद्मश्री, पद्मभूषणो में से कुछ ना कुछ भेंटा जाई." उ सुन के लोक कवि के चेहरा पर जइसे चमक आ गइल. लपक के फेर से चेयरमैन साहब के गोड़ छू लिहले. घर से बहरी निकलि के अपना कार में बइठ गइलन. चल दिहलन अपना संघतियन का साथे अपना घर का ओरि.

रात के एगारह बज गइल रहे.

ओने लोक कवि घरे चललन. एने चेयरमैन साहब लोक कवि का घरे फोन कइलन त लोक कवि के बड़का लड़िका फोन उठवलसि. चेयरमैन साहब ओकरा के बतवलन कि "लोक कवि घरे चहुँपते होखी.

हमरा किहाँ से चल दिहले बा."

"एतना देरी कइसे हो गइल ?" बेटा चिंता जतावत पूछलसि, "हमनी का साँझही से इन्तजार करत बानी सँ."

"चिंता के कवनो बाति नइखे. सम्मान समारोह का बाद तोहरा गाँवे चल गइल रहीं सँ. ओहिजा खूब स्वागत भइल लोक कवि के. मेहरारू सभ लोढा ले ले के परीछत रहली सँ. बिना कवनो तर तइयारी के बइहन स्वागत हो गइल. पूरा गाँव कइलसि." चेयरमैन साहब बोलत रहले, "फोन एहसे कइनी हँ कि एहिजा तूह लोग तनी टीका-मटीका करवा दीहस. आरती -वारती उतरवा दीहस."

"जी चेयरमैन साहब. "लोक कवि के बेटा कहलसि, "हमनी का पूरा तइयारी का साथे पहिलही से बानी सँ. बँड बाजा तक मँगवा लिहले बानी सँ. ऊ आवें त पहिले !"

"बक अप !" चेयरमैन साहब कहले, "त रूकस, हमहू आवतानी." फेर पूछलन, "केहू अउरी त ना नू आइल रहवे ?"

"कुछ अफसरान आइल रहले. कुछ प्रेसोवाला लोग आ के चल गइल. बाकिर मोहल्ला के लोग बा. कई जने कलाकारो लोग बा, बँड बाजा वाले बाइन सँ, घर के लोग बा."

"ठीक बा. तू बाजा बजवावल शुरू कर द. हमहू चहुँपते बानी. स्वागत में कवनो कोर कसर ना रहे के चाहीं !" ऊ कहले.

"ठीक बा चेयरमैन साहब." कहि के बेटा फोन रखलसि. बहरी आइल आ बँडवालन से कहलसि, "बजावल शुरू कर द लोग, बाबूजी आवत बाड़े."

बँड बाजा बाजे लागल.

फेर दउड़ के घर में जा के माई के चेयरमैन साहब के निर्देश बतवलसि आ इहो कि गाँवो में बइहन धूम-धड़ाका भइल बा से एहिजो कवनो कोर-कसर ना रहि जाव. लोक कवि जब अपना घर का लगे चहुँपलन त तनी चिहुँकलन कि बिना बरात के ई बाजा-गाजा ! लेकिन बँड वाले, "बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है" के धुन बजावत रहले आ मुहल्ला के चार छह गो लखैरा नाचत रहले.

ठीक अपना घर का सोझा उतरलन त बूझि गइलन कि माजरा का बा !

उनुकर धर्मपत्नी अपना दुनु पतोहियन आ मोहल्ला के कुछ औरतन का साथे सजल-धजल आरती के थरिया लिहले खाइ रहली लोक कवि के स्वागत खातिर. लोक कवि के चहुँपते ऊ चौखट पर नरियर फोइली, बड़ा आत्मीयता से लोक कवि के गोड़ छूवली आ उनुकर आरती उतारे लगली. मुहल्लो का लोगो छिटपुट बिटोराये लागल.

गाँव जइसन भावुक आ भव्य स्वागत र ना भइल बाकिर आत्मीयता जरूर झलकल.

लोक कवि के संगी-साथी कलाकार नाचे लगलन. घर में पहिलही से राखल मिठाई बँटाये लागल.

तबले चेयरमैनो साहब आ गइलन. लोक कवि के एगो पड़ोसी भागत-हाँफत अइलन, बधाई दे के बोललन, "बहुते बढ़िया रहल राउर सम्मान समारोह. हमार पूरा घर देखलसि. मुख्यमंत्री आ राज्यपाल का साथे रउरा के."

"का आपहू सभे आइल रहली ओहिजा ?" लोक कवि अचकचात पूछलन, "लेकिन कइसे ?"

"हमनी का टीवी पर न्यूज में देखनी जा. ओहिजा ना गइल रहीं सँ." पड़ोसी दाँत निपोरत कहले.

"रेडियो न्यूजो में रहल आपके समाचार." एगो दोसर पड़ोसी बहुते मसोसत बतवले.

रात बेसी हो गइल रहल से लोग जल्दी-जल्दी अपना घरे जाये लागल.

बैंडो-बाजा बन्द हो गइल.

खा-पी के पोता-पोती के दुलरावत लोको कवि सूते चल गइलन. धीरे से उनकर पत्त्रियो उनुका बिस्तर पर आ के बगल में लेट गइली. लोक कवि अन्हार में पूछबो कइलन, "के हs ?" त ऊ धीरे से फुसफुसइली, "केहू नाई, हम हईं." सुन के लोक कवि चुपा गइलन.

बरीसन बाद ऊ लोक कवि का बगल में आजु एह तरह लेटल रहली. लोक कवि गाँवे का बात शुरु कर दिहलन त पत्नी उठ के हाँ हूँ करत उनुकर गोड़ दबावे लगली. गोड़ दबवावत-दबवावत पता ना लोक कवि के का सूझल कि पत्नी के पकड़ के अपना नियरा खींच के सूता लिहलन. बहुते बरीस का बाद आजु ऊ पत्नी का साथ "सूतत" रहले. चुपके-चुपके. अइसे जइसे कि सुहागरात वाली रात होखे. गुरुवाइन के ऊ "सूतल" सुख देके संतुष्टे ना परम संतुष्ट कर दिहले. सगरी सुख, सगरी तनाव, सगरी सम्मान ऊ गुरुवाइन पर उतार दिहले आ गुरुवाइनो आपन सगरी दुलार, मान-प्यार, भूख-प्यास आत्मीयता में सान के उडेल दिहली. "सूतला" ला थोड़ देर बाद ऊ लोक कवि का बाँहन में पड़ल कसमसात आपन संकोच घोरत बोलली, "टीवी पर आजु हमहूँ आपके देखलीं." फेर जोड़ली, "बड़का बेटउआ देखवलसि !"

सबेरे गुरुवाइन उठली त उनुका चाल में गमक आ गइल रह. उनुकर दुनु पतोहिया जब उनुका के देखली सँ, उनुकर बदलल चाल देखली सँ स दुनु अपने में आँख मारत एक दोसरा के संदेश "दे" आ "ले" लिहली सँ. एगो पतोहिया मजा लेत बुदबुदइबो कइलसि, "लागत जे पाँच लाख रुपयवा इहे पवलीं हईं."

"मनो अउर का !" दोसरकी पतोह खुसफुसा के हामी भरलसि. बोलल, "पता ना कतना बरिस बाद जोरन पड़ल बा !"

सबेरे अउरियो कई लोग लोक कवि के घरे बधाई देबे अइले.

हिंदी अखबारो में पहिला पन्ना पर लोक कवि के मुख्यमंत्री आ राज्यपाल का साथे सम्मान लेत फोटो छपल रहे. दू गो अखबार में त रंगीन फोटो ! साथही रिपोर्टो. हँ अंगरेजी अखबारन में फोटो जरूर

भीतर का पन्ना पर रहल रिपोर्ट का बिना.

लोक कवि के फोनो दनादन घनघनात रहे.

लोक कवि नहा धोआ के निकललन. मिठाई खरीदलन आ पत्रकार बाबू साहब का घरे चहुँपलन. उनुका के मिठाई दिहलन, गोड़ छुवलन, आ कहलन, "सब आपही के आशीर्वाद से भइल बा." बाबू साहब घर पर रहले, पत्नी सोझा रहली से कुछ कटु ना बोललन. बस मुसुकात रहले.

लेकिना रास्ता पर ना अइलन, जइसन कि लोक कवि चाहत रहले.

लोक कवि त चाहत रहले कि एह सम्मान का बहाने एगो प्रेस कांफ्रेंस कर के पब्लिसिटी बिटोरल. चाहत रहलन स्पेशल इंटरव्यू छपवावल. सब पर पानी पड़ गइल रहे. चलत-चलत ऊ बाबू साहब से कहबो कइले, "त साँझी खा आई ना !"

"समय कहाँ बा ?" कहि के बाबू साहब टार दिहलन लोक कवि के. काहे कि निशा तिवारी के ऊ अपना मन से अबही ले टार ना पवले रहन.

लोक कवि चुपचाप चल अइलन.

बाद में आखिरकार चेरमैने साहब दुनु जने का बीच पैच अप करवले. बाबू साहब प्रेस कांफ्रेंस के सवाल त रद्द कर दिहलन, कहलन कि "बासी पड़ गइल बा इवेंट." लेकिन लोक कवि के एगो ठीक-ठाक इंटरव्यू जरूर कइलन.

रियलिस्टिक इंटरव्यू.

बहुते मीठ आ तीत सवाल पूछलन. आ पूरा विस्तार से पूछलन. कुछ सवाल साँचहू बड़ा मौलिक रहली सँ आ जबाब उनुका सवालो से बेसी मौलिक.

लोक कवि जानत रहले कि बाबू साहब उनुकर कुछ नुकसान ना करीहन से बेधड़क हो के जबाब देसु. फेर गोड़ छू के कहियो देसु कि "एकरा के छापब मत !"

जइसे कि बाबू साहब लोक कवि से पूछले कि "जब आप एतना बढ़िया लिखीले आ मौलिक तरीका से लिखीले त कवि सम्मेलनन में काहे ना जाई ? तब जबकि रउरा के लोक कवि कहल जाला."

"ई कवि सम्मेलन का होखेला ?" लोक कवि खुल के पूछलन.

"जहवाँ कवि लोग आपन कविता जनता का बीचे सुनावेले, गावेले." बाबू साहब बतवले.

"अच्छा अच्छा समुझ गइनी." लोक कवि कहले, "समुझ गइनी. ऊ रेडियो टीवीओ पर आवेला."

"त फेर काहे ना जाई आप ओहिजा ?" बाबू साहब के सवाल जारी रहे, "ओहिजा बेसी सम्मान, बेसी स्वीकृति मिलीत. खास कर के रउरा राजनितिक कवितन के."

"एक त एह चलते कि हम कविता नाहीं गीत लिखीले. एह मारे ना जाइले. दोसरे हमरा के कबो बोलावलो ना गइल ओहिजा." लोक कवि जोड़ले, "ओहिजा विद्वान लोग जाला, पढल-लिखल लोग जाला. हम विद्वान हई ना, पढलो-लिखल ना हई. एहू नाते जाये के ना सोचीला !"

"लेकिन रउरा लिखला में ताकत बा.बात बोलेला रउरा लिखले में."

"हमरे लिखले में ना, हमरे गवले में ताकत बा." लोक कवि साफ-साफ कहले, "हम कविता ना लिखीं, गाना बनाइले."

"तबो, का अगर रउरा के कवि सम्मेलन में बोलावल जाव त आप जाएब ?"

"नाहीं. कब्बो ना जाएब." लोक कवि हाथ हिलावत मना करत बोललन.

"काहे ?" पत्रकार पूछले, "काहे ना जाएब आखिर ?"

"ओहिजा पइसा बहुते थोड़ मिलेला." कहि के लोक कवि सवाल टारल चहले.

"मान लीं कि रउरा कार्यक्रमन से बेसी पइसा मिले तब ?"

"तबो ना जाएब।"

"काहे ?"

"एक त कार्यक्रम से बेसी पइसा मिली ना, दोसरे हम गवईया हई, कविता वाला विद्वान ना."

"चलीं मान लीं कि रउरा के विद्वानो मान लिहल जाव आ पइसो बेसी दिहल जाव तब ?"

"तबहियो ना."

"अतना भागत काहे बानी लोक कवि कवि सम्मेलनन से ?"

"एहसे कि हम देखले बानी कि ओहिजा अकेले गावे पड़ेला, त हमरो अकेले गावे के पड़ी. संगी साथी होखिहन ना, बाजा-गाजा होई ना. बिना संगी-साथी, बाजा-गाजा के त हम गाइये ना पाएब. आ जे कहीं गा दिहलीं अकेले बिना गाजा-बाजा त फ्लॉप हो जाएब. मार्केट खराब हो जाई." लोक कवि बाति अउरी साफ कइलन कि, "हम कविता नाहीं गाना गाइले. धुन में सान के, जइसे आटा सानल जाले पानी डाल के. वइसहीं हम धुन सानीले गाना डाल के. बिना एकरे त हम फ्लॉप हो जाएब."

"गजब ! का जबाब दिहले बानी लोक कवि रउरा." बाबू साहब लोक कवि से हाथ मिलावत कहले.

"लेकिन एकरा के छापब मत." लोक कवि बाबू साहब के गोड़ छुवत कहले.

"काहे ? एहमे का बुराई बा ? एहमें त कवनो विवादो नइखे."

"ठीक बा, बाकिर विद्वान लोग बिना मतलब नाराज हो जाई."

"काहे कि उहो लोग इहे करत बा जवन कि आप करत बानी एहसे ? एहसे कि ऊ लोग इहे काम कर के विद्वानन का पाँति में बइठ जात बा, आ इहे काम करि के रउरा गवईयन का पाँति में बइठ जातानी एहसे ?" बाबू साहब कहले, "लोक कवि राउर ई टिप्पणी एह कवियन के एगो कड़ेर झापड़ बा. झापड़ो ना बलुक जूता बा."

"अरे ना ! ई सब नाहीं." लोक कवि हाथ जोड़ के कहले, "ई सब छापब मत."

"अच्छा जे ई ढपोरशंखी विद्वान रउरा एह टिप्पणी से नाराजे हो जइहे त का बिगाड़ लीहें ?"

"ई हमरा नइखे मालूम. बाकिर विद्वान हवे लोग, बुद्धिजीवी हवे, समाज के इज्जतदार लोग हवे. ओह लोग के बेईज्जती ना होखे के चाहीं. ओह लोग के इज्जत कइल हमार धर्म ह."

"चलीं, छोड़ीं." कहि के पत्रकार बात आगा बढ़ा दिहले. लेकिन बात चलत चलत फेर कहीं ना कहीं फँस जाव आ लोक कवि हाथ जोड़त कहसु, "बाकिर ई छापब मत."

एही तरे चलते फँसत बात एक जगहा फेर दिलचस्प हो गइल.

सवाल रहुवे कि, "जब आप अतना स्थापित आ मशहूर गायक हईं त अपना साथे दुगाना गावे खातिर एतना लचर गायिका काहे राखेनी ? सधल गायकी में निपुण कवनो गायिका का साथे जोड़ी काहे ना बनाईं ?"

"अच्छा..!" लोक कवि तरेरत बोललन, "अपना ले नीमन गायिका का साथे दुगाना गाएब त हमरा के के सुनी भला ? फेर त ओह गायिका के बाजार बन जाई, हम त फ्लॉप हो जायब. हमरा के फेर के पूछी ?"

"चलीं नीमन गावे वाली ना सही. पर थोड़ बहुत ठीक ठाक गावे वाली बाकिर खूबसूरत लड़िकी त अपना साथे गावे खातिर रखिये सकीले आप ?"

"फेर उहे बाति !" लोक कवि मुसुकात तिड़कले, "देखत बानी जमाना एतना खराब हो गइल बा. टीम में लड़िकी ना राखीं त केहू हमार परोगराम ना देखी, ना सुनी. आ सोना पर सुहागा ई कर दीं कि अपना साथे गावे वाली कवनो सुन्दर लड़िकी राख लीं !" ऊ बोललन, "हम त फेर फ्लॉप हो जायब. हम बूढ़वा के के सुनी, सब लोग त ओह सुन्दरी के देखही में लाग जाई. बेसी भइल त गोली-बनूक चलावे लगीहें लोग !" ऊ कहले, "त चाहे देखे में सुन्दर भा गावे में बहुते जोग, हमरा साथे ना चल पाई. हमरा त दुनु मामिला में अपना से उनइसे राखे के बा."

कहे के त लोक कवि साफ-साफ कहि गइलन लेकिन फेरु पत्रकार के गोड़े पड़ गइलन. कहे लगलन, "एकरो के मत छापब."

"अब एहमें का हो जाई ?"

"का हो जाई ?" लोक कवि कहले, "अरे बड़हन बवाल हो जाई. सगरी लड़िकी नाराज हो जइहे सँ."

ऊ कहले, "अबहीं त सभका के हूर के परी बताइले. बताइले कि हमरा से नीमन गावे लू बाकिर जब सब असलियत जान जइहें सँ त कपार फोड़ि दीहें स हमार. टूट जाई हमार टीम. कवन लड़िकी भला तब आई हमरा टीम में ?" लोक कवि पत्रकार से कहले, "समुझल करीं. बिजनेस ह ई हमार ! टूट गइल त ?"

त एह तरह कुछ का तमाम कडुआ बाकिर दिलचस्प सवालन के जबाबन के काट-पीट के लोक कवि के इंटरव्यू छपल, फोटो का साथ.

एहसे लोक कवि के ग्रेसो बढ़ गइल आ बाजारो !

अब लोक कवि का कार पर उनुका सम्मान के नाम के प्लेट जवन ऊ पीतल के बनववले रहले, लाग गइल रहवे. बिल्कुल मंत्री, विधायक, सांसद, कमिश्नर, डीएम, भा एसपी के नेमप्लेट का तरह.

लोक कवि के कार्यक्रमो एने बढ़ गइल रहे. अतना कि ऊ सम्हार ना पावत रहले. कलाकारन में से एगो हुसियार लउण्डा के ऊ लगभग मैनेजर बना दिहले. सब इंतजाम, सट्टा-पट्टा, आइल-गइल, रहल-खाइल, कलाकारन के बुकिंग, ओकनी के पेमेंट लगभग सगरी काम ऊ ओहि कलाकार कम मैनेजर के सँउप दिहले रहन.

किस्मत सँवर गइल रहे लोक कवि के. एही बीच उनुका के बिहारो सरकार दू लाख रुपिया के सम्मान से सम्मानित करे के घोषणा कर दिहलसि. बिहारो में एगो यादव मुख्यमंत्री के राज रहल. यादव फैक्टर ओहिजो लोक कवि के कामे आइल. साथही बिहारो में उनुकर कार्यक्रमन के मांग बढ़ गइल.

चेयरमैन साहब अब लोक कवि के रिगड़बो करस कि, "साले, अब तू आपन नाम एक बेर फेर बदलि ल. मोहन से लोक कवि भइल रहऽ आ अब लोक कवि से यादव कवि बनि जा."

जबाब में लोक कवि कुछ कहसु ना बस भेद भरल मुसुकी फेंक के रहि जासय. एक दिन ओही पत्रकार से चेयरमैन साहब कहे लगलन कि "मान ल लोककविया के किस्मत अइसहीं चटकत रहल त एक ना एक दिन हो सकेला कि इनका पर रिसर्चो होखे लागो. यूनिवर्सिटी में पीएच.डी. होखे लागे इनका बारे में."

"हो सकेला, चेयरमैन साहब बिल्कुले हो सकेला." चेयरमैन साहब के मजाक के वजन बढ़ावत बाबू साहब कहले.

"त एगो विषय त एह लोक कवि पर पीएच.डी. में सबले बेसी पापुलर रही."

"कवन विषय ?"

"इहे कि लोक कवि का जीवन में यादवन के योगदान !" चेयरमैन साहब तनी तफसील में आवत बोलले, "एकर सबले पहिली ४४० वोल्ट वाली प्रेमिका यादव, एकर सबले पहिला गाना बनल यादव प्रेमिका पर, ई सबसे पहिले "सूतल" यादव लड़िकी का संगे, एकर पहिला लड़िका पैदा भइल यादव मेहरारू से." चेयरमैन साहब कहत गइले, "पुरस्कार त एकरा बहुते मिलल बाकिर सबले बड़ आ सरकारी

पुरस्कार मिलल त यादव मुख्यमंत्री का हाथे, फेर दोसरको सरकारी पुरस्कार यादवे मुख्यमंत्री का हाथे. अतने ना, आजुकाल्हु कार्यक्रमो जवन खूब काट रहल बा उहो यादवे समाज में." चेयरमैन साहब सिगरेट के लमहर कश खींचल कहले, "निष्कर्ष ई कि यादवन के मारतो ई यादवन के राजा बेटा बनि के बइठल बा."

"ई त बड़ले बा चेयरमैन साहब !" बाबू साहब मजा लेत कहले.

बाकिर लोक कवि हाथ जोड़ले आँखि मूंदले अइसन बइठल रहले कि मानो प्राणायाम करत होखसु.

जवने रहे बाकिर अब लोक कवि के चांदी रहुवे. बलुक कहीं कि उनुकर दिन सोना के आ रात चानी के हो गइल रहे. जइसे जइसे उनुकर उमिर बढ़ल जात रहे, लड़िकियन के व्यसनो उनुकर बढ़ल जात रहे. पहिले कवनो लड़िकी उनुकर पटरानी बन के महीनन का साल दू साल ले रहत रहे बाकिर अब महीना, दू महीना, चार महीना, बेसी से बेसी छह महीना में बदल दिहल जाव. केहू टोकबो करे त ऊ कहसु, "हम त कसाई हई कसाई." ऊ आगा जोड़सु, "बिजनेस करीला बिजनेसवाला हई, जवन जतना बेचाले ओतना बेचीले. कसाई मांस ना काटी बेची त खाई का ?"

पता ना काहे ऊ दिन-ब-दिन कलाकारन ला निर्दयीओ बनल जात रहले. पहिले उनुकर छांटल, निकालल कलाकारन में से कुछ लोग मिल जुल के साल दू साल में एक दू गो टीम अलग-अलग बना के गुजारा कर लेत रहे. लोक कविओ उनुका के टीम से भलही अलग कर देत रहले लेकिन अपना गानन के गावे से मना ना करत रहले. त उ नयका टीम अलगा भलही रहत रहे लेकिन रहत रहे लोक कवि के बी टीम बनिये के. लोके कवि के गाना गावत बजावत, लोक कवि के मान सम्मान करत.

बाकिर अब ?

अब त हर तीसरे चौमासे लोक कवि के छंटनीशुदा कलाकार एक दू गो टीम बना लेस. गावस-बजावस लोके कवि के गाना बाकिर उनुका के गरियवला का अंदाज में. शायद एहू चलते कि ई लोग एक त मेच्योर ना होत रहे, दोसरे ओह लोग के लागे कि लोक कवि उनुका साथे अन्याय कइले बाड़े. एहमें से कईजने त ईहाँ ले करसु कि गावस-बजावस सब लोके कवि के गाना पर गाना का आखिर में जहां लोक कवि के नाम आवे, ओहिजा आपन नाम लगा दिहल करसु. गोया कि ई गाना लोक कवि के लिखल ना, ओह कलाकार के आपन लिखल ह, जे गा रहल बा. कबो कभार ओरहन चहुँपावे का अंदाज में ई बात लोग लोक कवि का कानो तक चहुँपावल करे कि, "देखीं, अब फलनवो रउरा गाना में आपन नाम ठूस के गावत बा." त ई सब सुन के लोक कवि या त चुप लगा जासु भा बिना खिसियइल कहसु, "जाये दीहीं, खात कमात बा, खाये कमाये दीहीं !" ऊ कहसु, "मंचे पर नू गावऽता, कैसेट में नइखे नू गावत ? अरे जनता जानत बिया कि कवन गाना केकर ह. परेशान जिन होई." ओरहन ले के आइल

लोग के ऊ लगभग एही तरह चुप करा देसु.

आ अब त हद ई होखे लागल कि जवने कलाकार के लोक कवि आपन मैनेजर बनावसु उहे ना सिरिफ उनुका कलाकारन के तूड देव, बलुक उनुका पइसा रुपिया के हिसाबो में लमहर घपला कर देव. बात एहिजे ले रहीत त गनीमत होखीत, कई बेर त ऊ मैनेजर घपला कर के लोक कवि के कईगो सरकारी कार्यक्रमो चाट जाव. आ कई बेर पोरोगराम लोक कवि करसु बाकिर पेमेंट कवनो अउरे बैनर के नामे हो जाव जे आड़े तिरछे लोक कवि के मैनेजर के बैनर होखल रहे !

परेशान हो जासु लोक कवि अइसन घपल देख-देख के, भुगत-भुगत के ! ऊ पछतासु कि काहें ना ठीक से उहो पढले लिखले. ऊ कहबो करसु कि, "ठीक से पढल लिखल रहतीं त ई बदमाशी ना नू करीत कवनो हमरा साथे !"

नतीजा भइल कि उनुका इर्द-गिर्द अविश्वास के बड़-बड़ झाड़ झंखाड़ उग आइल रहे. ऊ अब जल्दी केहू दोसरा पर भरोसे ना करसु.

अविश्वास का ई उहे दौर रहल जब लोक कवि कभी कभार काफीओ हाऊस में बइठे लगले.

काफी हाऊस में लोक कवि का बड़ठलो हालांकि एगो शगले रहत रहे बाकिर बहुते दिलचस्प शगल. का रहे कि लोक कवि के पड़ोसी जनपद के एगो तपल तपावल स्वतंत्रता सेनानी रहले त्रिपाठी जी. खूब लमहर, खूब करिया. अपना समय के बड़का आदर्शवादी. एह आदर्शवादे का चलते शुरू-शुरू में त्रिपाठी जी देश के आजाद होखला का बादो, जब तमाम लोग चुनावी राजनीति के मलाई काटे लागल रहुवे, ऊ एकरा से फरके बनल रहले. तमाम फर्जी स्वतंत्रता सेनानी ना सिरिफ चुनावी बिसाते जीतले बलुक सरकार में मंत्रीओ बन गइले. तबहियो आदर्शवाद मे डूबल त्रिपाठी जी एह टोटकन से दूरे रहले. शुरू-शुरू में त सब कुछ चल गइल. बाद में दिक्कत बढ़े लागल. लड़िका फड़िका बड़ होखे लगले. पढ़ाई-लिखाई के खर्चो बढ़े लागल. ऊ एक बेर हार थाक के एगो चीनी मिल मालिक का भिरी गइले जे उनुका के उनुकर आदर्शवादी राजनीति का चलते जानत रहल. आपन तकलीफ बतवलन. मिल मालिक सरदार रहे. देश भक्ति के जज्बो अबही ओकरा में बाचल रहुवे. त्रिपाठी जी के दिक्कत में ऊ सहारा दिहलसि आ कहलसि कि जबले उनुकर सगरी बच्चा पढ़ लिख नइखन जात तबले ओकनी के पढ़ाई-लिखाई के सगरी खरचा के जिम्मेदारी उनुके रही. आ सरदार जी त्रिपाठी जी खातिर एगो सालाना फंड तुरते फिक्स कर दिहले कंपनी के वेलफेयर फंड से. त्रिपाठी जी के लड़िकन के पढ़ाई सुचारू रूप से होके लागल. लेकिन जइसे-जइसे लड़िकन के उमिर बढ़त गइल, ओकनी के क्लास बदलत गइल, ओकनी के पढ़ाई के खरचो बढ़त गइल. लेकिन चीनी मिल के वेलफेयर फंड से लड़िकन के पढ़ाई ला मिले वाल फंड में कवनो बढ़ोतरी ना भइल.

इहे रोगा एक दिन त्रिपाठी जी एगो दोसरा सरदार से रोवे लगलन. कहे लगलन कि, "पहिले चीनी मिल वाला सरदार आसानी से मिल लेत रहे, अब पचासन कर्मचारी बाड़े ओकरा से मिलवावे वाला. सगरी नया. कवनो हमरा के जानबेना करे जे हमरा के उनुका से मिलवा देव. मिलवा देव त

बताई कि भाई सारा खर्च, कापी किताब, फीस कहां से कहां निकल गइल लेकिन तोहर वेलफेयर फंड जस के तस बा !" जवना सरदार से ई रोना त्रिपाठी जी रोवत रहले ऊहो सरदार ट्रांसपोर्टर रहे आ ओह घरी ट्रक के टायरो के परमिट चलत रहे. त्रिपाठी जी के एगो आदत इहो रहे कि अकसरहा फउँकल करसु कि फलां मंत्री, फलां अफसर हमार चेला ह. से ट्रांसपोर्टर सरदार बोलल कि, "पंडित जी फलां मिनिस्टर त आप क चेला ह ?"

"हँ, हवे. बिलकुल हवे." त्रिपाठी जी पूरा ठसका से बोलले.

"त आप हमरा ला ट्रक के टायरन के परमिट के पक्का इंतजाम ओकरा से करवा दीं." सरदार बोला, "फेर हम अतना कुछ त बिटोरिये देब कि रउरा लडिकन के पढाई खातिर हर साल वेलफेयर फंड देखे के जरूरते ना पड़ी."

"त ?"

"त का जाई, रउरा परमिट ले आई. बाकी इंतजाम हम करत बानी."

त्रिपाठी जी छड़ी उठवले, गला खंखारले आ चहुँप गइले ओह चेला मिनिस्टर का लगे. ऊ बड़ा आदर सत्कार से त्रिपाठी जी के बईठवलन. फेर त्रिपाठी जी ने तनी घुमा फिरा के ट्रक के टायर के परमिट खातिर बात चला दिहले. उनुकर चेला मिनिस्टर बाति सुन के मुसुकाइल. कहलसि, "पंडित जी, रउरा लगे एगो साइकिल तकले त बा ना, उ ट्रक के टाय के का करब ?"

"पेट में डालब !" त्रिपाठी जी बम-बमा के कहले, "मिनिस्टर बन गइल बाइस त दिमाग खराब हो गइल बा. जानत नइखस कि ट्रक के टायर के का करब."

मिनिस्टर त्रिपाठी जी से माफी मांगलन आ उनुका परमिट खातिर आदेश दे दिहलन.

त्रिपाठी जी के काम बन गइल रहे.

लेकिन अब ई एगो काम एह तरह हो गइला से त्रिपाठी जी के मुँहे खून लाग गइल. अब ऊ अइसन काम खोजत चलसु आ कहत फिरु कि, "केहू के कवनो काम होई त बतइहस !" धीरे-धीरे त्रिपाठी जी दलाली खातिर मशहूर होखे लगले. एह फेर में ऊ फजिरही से घर छोड़ देसु आ देर रात घरे चहुँपसु. उनुकर पंडिताइन कबो कभार उनुका से दबल जबान से पूछबो करसु कि, "ए बड़कू क बाबू आखिर रउरा कवन नौकरीकरीले जे सबेरे के निकलल देर रात घरे आइले ?" ऊ अडोस पडोस के हवाला देत बतावसु कि, "फलांने फलांने क बाबू लोग एतने बजे जाला आ एतने बजे घर आइयो जाले ?" फेर ऊ पूछसु, "रउरा काहें सबसे पहिले जाइले आ सबले देर से आइले. आ फेर रउराकवनो छूटियो ना मिले. ई कवन नौकरी ह जे आप करीले !"

त्रिपाठी जी बेचाररू का बतसवतन ? का ई बतसवतन कि आदर्शवादी स्वतंत्रता सेनानी रहल तोहार ई पति अब दलाली खातिर घूमत रहेला, दिन रात एने-ओने ! ऊ पंडिताइन के घुडपत एतने

कहसु, "सूतऽ तू बुझबू ना !"

एक बार इहे त्रिपाठी जी लोक कवि के धर लिहलन. कहे लगलन, "सुनत बानी ई मुख्यमंत्री तोहार बाति बहुते मानेला. हमार एगो काम करवा द !"

"का काम हवे पंडित जी ?" गोड़ छूवत लोक कवि पूछले.

"बात ई बा कि बिजली विभाग के एगो असिस्टेंट इंजीनियर हवे ओकरे ट्रांसफर रोकवावल चाहऽतानी." ऊ कहले, "तू तनी मुख्यमंत्री से कह दऽ, बात बनि जाई. हमार इज्जत रहि जाई !"

"लेकिन मुख्यमंत्री जी के त आपहू निमना से जानीले. आपही सीधे कह देब त आपहू के कहल टरिये त नाहीं." लोक कवि कहले, "आपही कहि दीं !"

"अरे नालायक, अब तू हमरे के पहाड़ा पढ़ावे लगलऽ !" त्रिपाठी जी लोक कवि से कहले, "तू बात त ठीक कहऽतार. मुख्यमंत्री हमार बातो सुन लिहन. " ऊ कहले, "हम कहनी त ऊ सुनबो कइलन आ कामो कइलना बाकिर कह दिहलन कि अब एह विभाग के दोसर कवनो काम मत ले आएब !"

"हम कुछ समुझनी ना त्रिपाठी जी !" लोक कवि साचहू कुछ ना समुझले रहन.

"त सुन अभागा कहीं का !" त्रिपाठी जी उतावली में बोलत गइले, "एह बिजली विभाग के एगो जूनियर इंजीनियर आपन ट्रांसफर रोकवावे खातिर हमरा के दस हजार रुपया दिहलसि. हम मुख्यमंत्री से कह दिहनी त रुक गइल ओकर ट्रांसफर. अब ओह जूनियर इंजीनियर के ऊपर हवे ई असिस्टेंट इंजीनियर. एकरो ट्रांसफर हो गइल बा. जब जूनियर इंजीनियर के ट्रांसफर रुक गइल आ एकरा पता चलल कि हम रोकववनी त ईहो हमरा लगे आइल. कहलसि बीस हजार रुपिया देब, हमरो ट्रांसफर रोकवा दीं." त्रिपाठी जी अफनात कहले, "आ मुख्यमंत्रिया पहिलवें मना कर चुकल हवे !" फेर ऊ आपन किस्मत के कोसे लगले. कहे लगले, "ईहो साला अभागा रहल. ओह जूनियर इंजीनियर से पहिले इहे सार भेंटा गइल रहीत त एकरे काम हो गइल रहीत आ हमरो बेसी पइसा मिलल रहीत !" कह के ऊ आपन माथ ठोंके लगले. लोक कवि से कहले, "कह सुनि के तूही करा द !"

लोक कवि त्रिपाठी जी के दिक्कत समुझले आ उनुकर पैरवी खुद त ना कइले बाकिर करवा दिहलन तब उनुकर काम !

एही त्रिपाठी जी के एगो अउरी शगल रहे. पुरान शगल. ऊ अकसर काफी हाऊस में बइठ जासु. काफी पियसु, कुछ खइबो करसु. अउर केहू जे आपन परिचित लउक जाव त ओकरो के बोला लेसु, खियावसु पियावसु. तब जब कि पइसा उनुका जेब में धेलो ना रहत रहे. तबो उनुकर आदत रहे जब तब काफी हाऊस में बइठल, लोग के बोला के खियावल पियावल. अइसे जइसे कि ऊ कवनो बड़हन नवाब भा धन्ना सेठ हउवें. ऊ लोग के बोलावसु, काफी पियावसु आ पूछसु, "कुछ खइबो करबऽ ?" आ जे ऊ हामी भर दिहलसि त ओकरा के खियइबो करसु. फेर ओकरा से पुछसु, "तोहरा लगे पइसा कतना बा ?"

आ जे ओकरा लगे अबही तक के बिल के बराबर पड़सा होखे त त्रिपाठी जी कह देसु, "बिल भर द !"
अउर जे कहीं ओकरो लगे बिल भर के पड़सा ना होखे तबहियो त्रिपाठी जी पर कवनो फरक ना पड़े, ना ही उनुका चेहरा पर कवनो शिकन आवे. ऊ ओही फराखदिली से तब तक सबका के काफी पिआवत रहसु, कुछ ना कुछ खियावत रहसु, खात रहसु जबले केहू पूरा बिल जमा करे वाला उनुका काफी हाऊस में मिल ना जाव ! तबले ऊ खुदो ना उठसु, बइठल रहसु. एने-ओने के गपियावत रहसु. मजमा बन्हले रहसु. बेफिकिर ! काफी हाऊस के वेटर, मैनेजरो बेफिकर रहत रहले. उहो जानत रहले कि त्रिपाठी जी के खाता के पड़सा डूबी ना. केहू ना केहू से त ऊ पेमेंट करवाइये दीहें. अइसनो पेमेंट करे वालन में लोको कवि रहले. आ अकसरहे. कई बेर त लोक कवि जान बूझ के काफी हाऊस का राहे जासु आ भीतर घुस के झाँक लेसु कि त्रिपाठी जी के चौपाल लागल बा कि ना. त्रिपाठी जी ना होखसु त लोक कवि ओहिजा से फौरन निकल लेसु. आ जे त्रिपाठी जी ओहिजा भँटा जासु त लोक कवि जातही उनुकर गोड़ छू के "पालागी !" बोलसु. कहसु, "त्रिपाठी जी हमहू काफी पियब !"

"हँ, हँ, बिलकुल !" कह के त्रिपाठी जी, "लोको कवि ला काफी ले अइह भाई !" के हांक लगा देसु. लोक कवि जब काफी पी लेसु त त्रिपाठी जी ओही बेफिक्री से कहसु, "लोक कवि पड़सा वइसा रखले बाडs कि बइठब ? केहू दोसरा के आवे के इंतजार कइल जाव !"

अकसर लोक कवि कहसु, "कहां पंडित जी हमारे पास पड़सा कहां है ?" ऊ हंसत कहसु, "हमहू बइठब तनी देर रउरा लगे. अबहिये केहू ना केहू आ जाई. काहें फिकिर करsतानी !"

"हमरा काहें के फिकिर." कहत त्रिपाठी जी अपने ठहाका में भुला जासु. आ उनुकर पूरा महफिल. फेर धीरे से लोक कवि वेटर के बोला के सगरी बिल चुकता कर देसु. अइसही ओह साँझ काफी हाऊस में बइठल लोक कवि त्रिपाठी जी के ठहाकन के काफी के साथ पियत गप सड़ाका में लागल रहले कि उनुका एगो अइसन सूचना मिलल कि मिलते उनुका के ठकुआ मार दिहलसि. हरदम का तरह ओह दिन काफी हाऊस के पेमेंटो ना कइलन आ "माफ करब त्रिपाठी जी." कहत उठ खड़ा भइलन.

लोक कवि के छोट भाई के एगो लड़िका के एड्स हो गइल रहल.

ढेरे दिन से ऊ बेमार रहूवे. इलाज करावत-करावत घर के लोग हार गइल रहले. हार के ओकर इलाज ला लोक कवि का लगे लखनऊ भेज दिहले रहले घर वाले. एहिजो इलाज बेअसर होत रहल. डाक्टर पर डाक्टर बदलइले बाकिर इलाज कारगर ना पावत रहे. थाक हार के लोक कवि अपना एगो कलाकार का साथे ओकरा के मेडिकल कालेज भेजले. ओहिजा शुरुआती जांच पड़ताल में डाक्टर के शक भइल त खून के टेस्ट करवावल गइल. एच.आई.वी. पाजिटिव निकलल. कलाकार रिपोर्ट जान के घबरा गइल. भागत-भागत लोक कवि का घरे गइल. ओहिजा ना भेंटइले त विधायक निवास वाला गौराज पर गइल, मिसिराइन किहां गइल, फेर खोजत-खोजत काफी हाऊस आइल. काफी हाऊस में लोक कवि भेंटा गइले. ऊ आव न देखलसि न ताव. बीच काफी हाऊसे में लोक कवि का कान में बता दिहलसि कि, "कमलेश के एड्स हो गइल बा. डाक्टर बतवलसि ह."

ई सुनते लोक कवि झट से खड़ा हो गइलन. त्रिपाठी जी समेत अउरियो लोग घबरा के पूछबो कइल कि, "का भइल लोक कवि ?" लेकिन लोक कवि संयम बनवले रखले. कहले, "कुछ ना, कुछ घरेलू बाति ह. "

काफी हाऊस के बाहर निकलले आ ओह कलाकार के एक तरफ ले जा के गँवे से पूछले,
"ओकरा मालूम हो गइल बा ?"

"केकरा ?"

"कमलेश के !"

"नाहीं गुरु जी !"

"त अबही बतइबो मत करीहस. " लोक कवि बोलले, "केहू के मत बतइहस."

"लेकिन गुरु जी कबले छुपावल जाई ?" कलाकार बोलल, "कबो ना कबो त पता चलिये जाई !"

"कइसे पता चल जाई ?" लोक कवि ओकरा के डपटत बोलले, "ओकरा के आजुवे इलाज खातिर बंबई भेज देतानी. ठीक हो जाई आ नाहीं त ओहिजे मर खप जाई."

"के ले जाई ?"

"करत बानी कुछ इंतजाम. " लोक कवि बोलले, "लेकिन ई बाति भूलाइयो के केहू के बतइहस जिन. ना त बड़हन बदनामी हो जाई. " ऊ कहले, "इज्जत त जइबे करी मार्केटो चल का जाई इबिये जाई. कहीं मुंह देखावे लायक ना रह जाएब. से बेटा बात अपने ले रखीहस." लोक कवि ई बाति ओकरा से बहुते पुचकारत अउर ओकर पीठ ठोंकत बहुते मुलायमियत से कहले. फेर पाकिट से पांच सौ रुपए निकाल के ओकरा के देत कहले, "ल कुछ खर्चा-बर्चा रख ल. "

"अरे नाहीं गुरु जी, एकर का जरूरत रहल. " पइसा लेत, लोक कवि के गोड़ छूवत ऊ कहलसि.

"ई बतावस कि कमलेश कहां होखी एह घरी ?"

"घरही होखे के चाहीं भरसक !"

"ठीक बा तू चलस." कह के लोक कवि रिक्शा लिहले आ बइठ के घरे चल दिहले. ऊ अतना हडबड़ाइल आ घबराइल रहले कि एह अफरा तफरी में इहो याद ना रहल कि ओहिजा पासे में उनुकर कार मय ड्राइवर के खाइ बिया. खैर, ऊ घरे गइल. कमलेश पर खूब बिगड़लन. ओकर बहुते लानत मलामत कइलन. लेकिन ना त घर वाले समुझ पावत रहले, ना ही कमलेशे के बुझात रहल कि आखिर माजरा का बा ?

आखिर में उनुकर पत्नी बीच में कूदली कि, "आखिर बाति का ह ? का गलती हो गइल ?"

"तू ना समुझबू, चुप रहव आ भीतर जा. " लोक कवि खिसियइलन. बोलले, "बहुते बड़ पाप कइले बा. नाम डुबा दिहले बा परिवार के !"

"पाप ! परिवार के नाम डुबा दिहलसि !" लोक कवि के पत्नी बुदबुदइली, "का कह रहल बाड़ीं आप ?"

"कहनी नू कि तू भीतर जा !" लोक कवि पत्नी के डपटले.

"ई बेराम लड़िका, काहें डांटत बाड़ीं. "

"तू जा भितरी !" अब की लोक कवि पत्नी पर गुर्रा के कहले. त ऊ अंदर चल गइली. तेज-तेज कदम से. लगभग दउड़त.

"तू फौरन आपन बोरिया बिस्तर बान्हस. " कमलेश से लोक कवि बोलले.

"लेकिन त !" कमलेश सहमत-सहमत बोलल, "आखिर त !"

"कवनो लेकिन, कवनो आखिर वाखिर ना. " लोक कवि भुनभुनइले. फेर बोलले, "तोहरा के अब अइसन बेमारी पकड़ लिहले बा कि एहिजा इलाज ना हो सके. "

"त फिर ?"

"घबरा मत. " लोक कवि कमलेश के पुचकारत कहले, "तोहार इलाज तबहियो कराएब. लेकिन

एहिजा ना, बंबई में." ऊ कहले, "जतना पइसा खरच होखी सब करब. लेकिन बंबई में, एहिजा ना."

"लेकिन बीमारी का बा ?" कमलेश सहमत-सहमत बोलल.

"बेमारी के नाम बंबई के डाक्टर बताई. " लोक कवि रुकले आ किचकिचात बोलले, "जब पाप करत रहल तब ना बुझाइल. अब बेमारी के नाम पूछत बा ?"

"कब जाए क बा बंबई ?" कमलेश तनिका कड़क होत पूछलसि.

"अबहिये आ तुरते ! अबही एगो कलाकार के भेजत बानी. " लोक कवि बोलले, "बाद में तोरा बाप के भेजब." कह के लोक कवि एगो कलाकार के बोलवले. कहले कि, "फौरन बंबई चले के तइयारी करस !"

"रिकार्डिंग बा कि कार्यक्रम, गुरु जी ?" खुश हो के कलाकार बोलल.

"कुछू नइखे. " लोक कवि खीझियात कहले, "कमलेश के ओहिजा के अस्पताल में देखावे ले जाए के बा." कह के लोक कवि कमलेश के पांच हजार रुपए दिहले आ कहले कि, "फौरन निकल जा आ ई डाक्टरी पर्चा, रिपोर्ट ओहिजा के अस्पताल के डाक्टर के देखइहस, ऊ भर्ती कर ली."

"राउर नाम बता देब ?" कमलेश पूछलसि.

"केकरा के नाम बतइबस ?"

"डाक्टर के. "

"का ओहिजा के डाक्टर हमार रिश्तेदार लागेला ?" लोक कवि भड़कले, "ओहिजा के जानी हमरा के ? कवनो लखनऊ ह का !" ऊ कहले, "केहू के हमार नाम, गांव मत बतइहस. चुपचाप इलाज करवइहस. ई डाक्टरी पर्चे सोर्स ह. देखते डाक्टर भर्ती कर ली."

"कवना अस्पताल में भरती होखे के बा ?"

"जसलोक, फसलोक, टाटा, पाटा बहुते अस्पताल बाड़ी सँ. कतहीं भर्ती हो जइहे. " ऊ घबरात कहले, "बाकिर हमार नाम कतहीं भूलाइहो के मत लीहे." फेर लोक कवि ओह कलाकार के एगो कोना में ले जा के समुझवलनि कि, "एकरा के सम्हार के ले जइहस. अस्पताल में भर्ती करवा के चल अइहस. चपड़-चपड़ मत करीह." कह के ओकरा के जाए आवे खातिर किराया खर्चा कह के दिहलन आ कहले कि, "ओहिजा मौका पा के रंडियन का फेर में मत पड़ जइह." कुछ रुकले आ फेर कहले, "आ एह कमलेशवो से रपटीहस, चपटही मत. एकरा बड़ा खतरनाक बेमारी हो गइल बा."

"एड्स हो गइल बा का गुरु जी ?" कलाकार घबरा के बोलल.

"चुप साले !" लोक कवि बिगड़त बोलले, "तू डाक्टर हउव ?"

"ना गुरु जी. " कह के कलाकार उनुकर गोड़ छूवलसि.

"त अंट शंट मत बकल करस. " लोक कवि कहे, "तोहरा के आपन खास मान के बंबई भेजत

बानी." ऊ रुकले आ बोलले, "ट्रेन में एकरा दिक्कत ना होखे एह खातिर तोहरा के साथे भेजत बानी. आ ओहिजा अस्पताल में एकरा के छोड़ के तू तुरते चल अइहस." ओकर तुरते लवटल पक्का हो जाव एहला लोक कवि ओकरा के भरमइबो कइले, "रिकार्डिंग के तइयारी करे के बा आ एक दू ठो लोकल कार्यक्रमो बावे. एहसे डाक्टर फाक्टर के चक्कर में मत पड़ीह. तू फौरन ओही दिने ट्रेन पकड़ लीहस."

"अच्छा, गुरु जी." कह के ऊ रिक्शा बुलावे चल गइल. फेर रिक्शा से कमलेश के ले के स्टेशन चल दिहलसि.

एने लोक कवि अपना एगो बेटा के गांवे भेजलन कि ऊ कमलेश के बाप के लखनऊ बोला ले आवे. जेहसे समय से ओकरा के कमलेश का लगे बंबई भेजल जा सके. ऊ बुदबुदात रहले, "पता ना साला बाची कि मरी. अउर जे कहीं भेद खुल खुला गइल त हमार सगरी नाम, सगरी इज्जत माटी में मिला दी!" वह रुकले ना, बड़बड़इले, "अभागा साला !"

दरअसल लोक कवि के सगरी चिंता एहकर रहल कि अगर कहीं लोग के ई पता चलि गइल कि उनुका परिवार में केहू एड्स रोगी बा त बदनामी त होखबे करी, कलाकार भाग जइहें आ कार्यक्रमो खतम हो जाई. मारे डर के आ बदनामी के केहू बोलइबे ना करी. फेर अचानके खयाल आइल कि जवन कलाकार कमलेश का साथे गइल बा, कहीं ओह सार के पता चल गइल आ बात बेबात बात उड़ा दिहलसि तब का होई ?

यह सोचिये के ऊ घबरा गइले. भागत खुद स्टेशन गइले. ओह कलाकार आ कमलेश के बंबई जाये से रोक दिहले आ कमलेश से कहले कि अब तोहार बाग गांव से आई, तबहियर जइहस. ओकरा के बोलवा भेजले बानी. फेर ऊ विधायक निवास वाला गैराज पर चल गइले.

लोक कवि के परेशानी के कवनो पार ना रहल !

ऊ सोचे लगलन कि आखिर कहां फंस गइल ई ? बाहर दिल्ली, बंबई त दूर, गांव से बहरा नातेदारी, रिश्तेदारी छोड़ कहीं गइल ना ई रोग पवलसि कहवाँ से ई ? उनुका समुझ से बाहर रहल ई.

ओने भंवर में कमलेशो रहल.

लोक कवि के अफरा तफरी देख समुझ त उहो गइल रहे कि कवनो गंभीर बेमारी हो गइल बा आ यौन रोग. लेकिन एड्स हो गइल बा, अबही ले एकर अंदाज ओकरा ना रहल. तबहियो ऊ रह-रह के गांवे के एगो पंडित के बेटा के सरापे लागल.

भुल्लन पंडित के बेटा गोपाल !

एक समय भुल्लन पंडित गांव में न्यौता खाए खातिर मशहूर रहले. गरीबी में जियला का बावजूद ऊ बड़ा ईमानदार, निष्कपट, सोझठक, आ भोला रहले. उनुका दूइये गो दिक्कत रहल. एक त गरीबी, दोसर बुढ़िया खाये के ललक. गरीबी त जस के तस रहल उनुकर आ ऊ जइबे ना करे. बाकिर निमना खाये के उनुकर ललक न्यौते में जब तब पूरा हो लेव. चाहे शादी बिआह होखे, चाहे केहू के गृह प्रवेश, चाहे केहू के मरन होखे भा पैदाइश. उनुका कवनो फरक ना पड़त रहल. नाम उनुकर भलही भुल्लन तिवारी रहल बाकिर ई सब बाति ऊ भूलात ना रहले. कतहियों, कवनो प्रयोजन में न्यौता खाए खातिर ऊ आ उनुकर लोटा हरमेस तइयार रहत रहल.

बलुक उनुकर लोटा उनुका से बेसी मशहूर रहल. बहुते बड़, बहुते भारी. ऊ न्यौता खाए जासु त लवटति घरी लोटा में भरसक दही भरवा लेसु, अंगोछा में चिउड़ा, चीनी बन्हवा लेसु फेर पान चबावत न्यौता खाये वालन के नेतृत्व करत वापस घर किओर चल देसु. ई सोच के कि जल्दी चलीं जेहसे पंडिताइनो के भूख मिटे चिउड़ा-दही से जवन ऊ लोटा, अंगोछा में बन्हले रहसु. काहे कि न्यौता खाये जाये से पहिले भुल्लन पंडित अपना पंडिताइन के कड़ेर आदेश दे के जासु कि, 'चूल्हा मत जरइहे, खाए के हम ले आइब !' कह त जासु पंडित भुल्लन तिवारी पर जरूरी ना रहत रहे कि हर बेर वापसी में उनुका लोटा में दही आ अंगोछा में चिउड़ा-चीनी बान्हले होखे. जजमान-जजमान पर निर्भर करत रहे. से पंडिताइन लगभग कई बेर भूखे पेट सूतसु. भुल्लन पंडित आ उनुकर बेटा गोपाल त सोहारी, तरकारी आ चिउड़ा दही खा के आवसु. डकार भरसु. लेकिन पंडिताइन मारे भूख के पानी पी-पी के करवट बदलसु. लेकिन भुल्लन पंडित उनुका के चूल्हा जरावे ना देसु. कहसु 'भोजन अब बिहान बनी.' पंडिताइन एह तरह बार-बार पानी पी-पी के करवट बदलत-बदलत परेशान हो चुकल रहली से बाद का दिन में भुल्लन पंडित के गइला का बाद जल्दी-जल्दी चूल्हा जरा के चार रोटी सेंक के खा लेसु आ चूल्हा फेर से लीप पोत के राख देसु कि लागो कि जरले ना रहे. बाकिर भुल्लनो पंडित मामूली ना रहलन. न्यौता खा के लवटसि आ शक होखते चुल्हानी में जा के माटी के चूल्हा हाथ से छू-छू के देखसु. आ जे तनिको हलुका गरम मिल जाव त आ कई बेर त नाहियो मिले तबहियो चूल्हा छवत कहसु, 'लागत बा बुढ़िया चूल्हा जरवले रहवे !' आ अतना कहि के भुल्लन पंडित दू-तीन राउंड अपना बुढ़िया से लड़ झगड़ लेसु. खास कर के तब जब ऊ लोटा भर के दही आ अंगोछा भर के चिउड़ा-चीनी जजमान किहां से पा के

लवटल रहसु.

भुल्लन पंडित के विपन्नता के अंत इहें ले ना रहे. हालत ई रहे कि गांव काओरि से अगर केहू माथ मुडवले गुर जाव त ओकर खेत ना रहत रहवे. ओकरा के देखते भुल्लन पंडित ओह बाल मुडवला के रोकलेसु. रोक के ओकरा गाँव के नाम, के मरल, कब मरल, तेरही कब बा ? वगैरह के ब्यौरा पूछ बइठसु. अइसनका में कई बेर लोग नाराजो हो जासु. खास कर के तब जब केहू मरल ना रहत रहे आ तबो भुल्लन पंडित मरलका के जानकारी मांग लेसु. बाकिर केहू के नाराजगी से भुल्लन पंडित के कवनो सरोकार ना होखे, उनुका त अपना एह दरिद्रता में मधुर भोजने भर से दरकार होखे. मिल गइल त बहुत बढ़िया, ना मिलल त हरे राम !

भुल्लन पंडित का साथे अब उनुकर बेटा गोपालो न्यौता खाए में माहिर होखल जात रहे. भुल्लन पंडित आ उनुका बेटा गोपाल का बीच न्यौता खाए के एगो शुरुआती प्रसंग गांव त का ओह जवार भर में बतौर चुटकुला चल पड़ल रहवे. ई कि जइसे कवनो बाछा के 'कुटाई' का बाद हर जोते में बड़ पापड़ बेले के पड़ेला, ओकरा के 'काढ़े' के पड़ेला, माहिर बनावल पड़ेला, ठीक वइसहीं भुल्लन पंडित अपना इकलौता बेटा गोपाल के ओह जमाना में न्यौता खाए में माहिर बनावत रहले.

एक बेर कवनो जजमान किहाँ भोजन का समय जब अधिका पंडित लोग चिउड़ा दही सट-सट सटकत रहवे आ फेर सोहारी तरकारीओ सरियावत रहे, बिना पानी पियले त अइसनका में गोपाल बार-बार पानी पियत रहवे. गोपाल के बेर-बेर पानी पियला का चलते भुल्लन पंडित परेशान हो गइले. कबो खांस-खंखार के ओकरा के पानी ना पिये के इशारा करसु त कबो कोहनी मार-मार के. बाकिर गोपाल जे बा कि हर दू चार कौर का बाद पानी पी लेत रहवे. बावजूद भुल्लन पंडित के कोहनियवला, खँसला, खँखरला के. जजमान का घर से निकल के रास्ता में रोक के भुल्लन पंडित अपना बेटा गोपाल के एही बाति पर तीन चार थप्पड़ लगवले आ कहले कि, 'ससुरे ओहिजा पानी पिये गइल रहसु कि भोजन करे ?'

'भोजन करे !' गोपाल थप्पड़ खइला का बाद बिलबिला के भुल्लन पंडित के बतवलसि.

'त फेर बेर-बेर पानी काहे पियत रहले ?' भुल्लन पंडित विरोध जतवले'

'हम त तह जमा-जमा के खात रहलीं !' गोपाल बोलल. त भुल्लन पंडित फेरु ओकरा के मारे लगलन आ कहे लगले, 'जे ई बाति रहल त ससुरा हमरो के बतवले रहतिस, हमहू तह जमा-जमा के खइले रहतीं !' ई आ अइसनके तमाम किस्सा भुल्लन पंडित का गांव जवार में लोगन का जुबान पर चढ़ चुकल रहे.

बहरहाल, बाद का दिनन में भुल्लन पंडित के इहे बेटा गांव में चोरी चकारी खातिर मशहूर हो गइल. तब जब कि भुल्लन तिवारी न्यौता खइला का मामिला में चाहे जवन जसु अपजसु कमइले होखसु दोसरा मामिलन में उनुका नाम पर कवनो एको गो दाग लगवले ना लागत रहवे. उनुका

शराफतो के किस्सा उनुका न्यौता खाये वाला किस्सन के संगही चलल करे. भुल्लन पंडित अपना गडेर खेत के पतई जरइबे ना करसु, कहसु कि, 'पतई जराएब त साथे-साथ पता ना बेचारा कतना कीड़ो मकोड़ो जर जइहें सँ.' ऊ जोड़सु, 'कीड़ो मकोड़ा आखिर जीवे हउवन सँ. काहें जराई बेचारन के ?'

बाकिर समयो के अजीब चक्कर चलत रहले. एही भुल्लन पंडित के बेटा जस-जस बड़ होखल जात रहे, चोरी लुक्कड़ई में ओकर नाँव बढ़ले जात रहवे. पुलिसो केस होखल शुरू हो गइल रहे. ब्राह्मण के विपन्नता ओकरा के अपराधी अउर लंपट बनवले जात रहवे.

अतना कि भुल्लन पंडित परेशान हो गइलन. एही परेशानी में कुछ लोग उनुका के सलाह दिहलसि कि ऊ गोपाल के शादी करवा देसु. शायद शादी का बाद ऊ सुधर जाव. भुल्लन पंडित अइसने कइले. गोपाल के शादी करवा दिहलन. शादी का बाद साल छ महीना त गोपाल जवानी के मजा लूटे का बहाने सुधरल रहल, चोरी चकारी छूटल रहल. लेकिन जइसहिये ओकर मेहरारू पेट से भइल, सेक्स के पाठ लायक ना रह गइल, गोपाल फेरू अपराध के राह पर खड़ा हो गइल. हार थाक के भुल्लन पंडित कुछ खेत गिरवी रख के पइसा लिहलन आ पासपोर्ट वगैरह बनवा के गांवे के एगो आदमी का साथे गोपाल के बैंकाक भेज दिहलन. बैंकाक जाइयो के गोपाल के लुक्कड़ई वाला आदत त ना गइल बाकिर पइसा ऊ जरूर कमाये लागल आ खूब कमाये लागल.

कमलेश एही गोपाल के पकिया यार रहल. कमलेश गोपाल का साथ अपराध में त ना बाकिर लोफरई में जरूर हिस्सेदार रहत रहे. गोपाल ओह घरी बैंकाक से आइल रहवे. गांव में एगो बरई परिवार रहे जवन पान वगैरह के छिटपुट काम करत रहे. ओह बरई के एगो लड़िका दिल्ली के कवनो फैक्ट्री में काम करत रहवे आ ओकर बीबी गांवे में रहत रहे. खूबसूरत रहल आ दिलफेंको. कोइरी जाति के एगो लड़िका से गुपचुप फंस गइल.

ऊ कोइरी अकसर रात के ओकरा घर में घुस कर घंटनो पइल रहत रहे. घर छोटहन रहे से घर के सगरी लोग अमूमन घर के बाहर दुअरे पर सूतत रहे. ऊ कनिया अबही नया रहल से घर का भितरिये सूते. अधरतिया के ऊ जब-तब कँवाड़ खोल देव आ कोइरी भीतर चल जाव. दरवाजा बंद हो जाव आ फेर भोरही में खुले. ई बाति गोपाल तिवारी के कतहीं से पता चल गइल. से गोपालो अपना मौंछि पर कई बेर ताव फेरलसि. ओह बरईन के फेरा मरलसि, लालच दिहलसि. बैंकाक के झाँसा दिहलसि. बाकिर सब बेअसर रहल. बरईनिया गोपाल के बांह में आवे से कतरा गइल.

आखिर दिल के मामिला रहे आ ओकर दिल ओह कोइरी पर आइल रहे.

लेकिन गोपाल पर त बैंकाक के पइसा के नशा सवार रहे. हार माने के ऊ तइयार ना रहल. आखिरकार कमलेश का साथे मिल के ऊ एगो योजना बनवलसि, योजना मुताबिक एक रात सीढ़ी लेके गोपाल आ कमलेश बरई के घर का पिछवाड़े चहुंप गइले. कमलेश नीचे सीढ़ी पकड़लसि आ गोपाल

सीढ़ी चढ़ के बरई के अँगना में कूद गइल. बरईन सूतल रहे. गोपाल जा के ओकरा बगल में लेट गइल बाकिर ऊ अफना के उठल आ खाड़ हो गइल. गोपाल का साथे हमबिस्तर होखे से खुसफुसाइये के सही, हाथ जोड़िये के इंकार कर दिहलसि. गोपाल रुपिया पइसा के लालच दिहलसि. तबहियो ऊ ना मानल त कोइरी का साथे ओकर संबंध के भंडाफोड़ करे के धमकी दिहलसि गोपाल त ऊ तनिका सा डिगल. लेकिन मानल तबहियो ना आ कहलसि निकल जा ना त हल्का मचा देब. बाकिर गोपालो एके घाघ रहूवे. कहलसि, 'मचावऽ हल्ला, हमहू कहि देब कि तूहीं बोलवले रहू !' ऊ बोलल, 'फेर कोइरीओ वाला बात बता देब. गाँव में जी ना पड़बू !'

हार गइल ऊ एह धमकी का आगा. पटा गइल ऊ गोपाल तिवारी के देह का नीचा. फेर त गोपाल तिवारी अकसरहें बरई के घर सीढ़ी लगावे लागल. सीढ़ी पकड़त-पकड़त कमलेशवो के जवानी उफान मारे लागल. कहे लागल, 'गोपाल बाबा हमहू !' लेकिन गोपाल बाबा ओकरा के मना कर दिहले. कहलन कि, 'जब हम वापिस बैंकाक चल जाएब त तूं सीढ़ी चढ़ीहऽ !'

आ साँचहू गोपाल बाबा के बैंकाक गइला का बादे कमलेश सीढ़ी चढ़ल. ठीक गोपाले वाला हालात कमलेशो का साथे घटल. बरई के बीवी एकरो के मना कइलसि. बाकिर कमलेश गोपाल का तरह बेसी समय ना लगवलसि. सीधे प्वाइंट पर आ गइल कि, 'भेद खोल देब. भंडा फोड़ देब.'

फेर ऊ कमलेशो खातिर सूत गइल.

जइसे गोपाल के सीढ़ी नीचे कमलेश पकड़त रहूवे ठीक वइसहीं कमलेश के सीढ़ी एगो हरिजन रामू पकड़त रहे. रामू रहे त बिआहल आ अथेड़. हर जोतत रहे एगो पंडित जी के. एक गोड़ से भचकत रहे, लगभग लंगड़ा के चलल करे. बावजूद एह सब के ऊ रसिको रहल से कमलेश खातिर सीढ़ी पकड़ल करे, एह साथ में कि एक दिन ओकरो नंबर आइबे करी. ऊ अकसर कमलेश से चिरौरीओ करे, 'कमलेश बाबू आज हम !' ठीक वइसही जइसे कमलेश कबो गोपाल के चिरौरी करत रहे, 'गोपाल बाबा आज हमहू !' बाकिर जइसे गोपाल कमलेश के टार देव, वइसहीं कमलेश रामू के.

लेकिन एक दिन भइल का कि बरई के घर का पिछुवाड़ा सीढ़ी लागल रहे. लंगड़ा रामू मय सीढ़ी के रहे आ ओने कमलेश बरईन का साथे अँगना में "सूतत" रहे. एही बीच गांव के कवनो यादव परिवार के औरत बीच अधरतिया दिशा मैदान खातिर गांव का बगल के पोखरी किओर गइल. तबहिये ऊ बरई के घर के पीछे सीढ़ी लागल देखलसि. मारे डर के ओ बोलल ना. टट्टिओ ओकर रुक गइल आ भाग के घरे आ गइल. दुबक के सूत गइल बाकिर रात भर ओकरा नींद ना आइल.

सबेरे ऊ सोचलसि कि बरई के घर में चोरी के खबर सगरी गांव अपने आप जान जाई लेकिन चोरी के खबर त दूर चोरी के चर्चा ले ना भइल. गांव में त का बरईओ का घर ना रहल चोरी के चर्चा. मतलब चोरी भइबे ना कइल ? ऊ सोचलसि. लेकिन सीढ़ी त लागल रहूवे रात, बरई के घर का पिछूती. फेर ऊ सोचलसि जइसे ऊ डेरा के भागल, हो सकेला कि चोरो ओकरा के देखलें होखें स आ डेरा के भाग

गइल होखँ स. फेर ओकरा लागल कि मौका ताड़ के चोर फेरु चोरी कर सकेलें बरई का घर में. आखिर लड़िका दिल्ली में कमात बा. से बरई के त आगाह ऊ करिये देव, गांवो वालन के बता देव कि चोर गांव में आवत बाड़े सँ. से ऊ खुसुर-फुसुर स्टाइल में ई बाति गांव में चला दिहलसि. बात के धाह कमलेशो के कान ले चहुँपल. एहसे कुछ दिन ले ऊ सीढी के खेल भुलाइल रहल. कुछ दिन बीतल त ऊ सीढी लगवलसि बरई का घर का पिछुवाड़े बाकिर खुद ना चढ़ल. सोचलसि कि पहिले ट्राई करवावल जाव. से रामू लंगड़ा से कहलसि कि, 'बहुते परेशान रहले बेटा, आजु जो तें चढ़ !' रमुआ आव देखलसि ना ताव, भचकत सीढी चढ़ गइल. अबही ऊ सीढी चढ़ के खपरैल ले चहुँपले रहल कि केहू 'चोर-चोर' चिल्लाइल. देखते-देखत ई 'चोर-चोर' के आवाज एक से दू, दू से तीन अउर तीन से चार में बढ़ती गइल. कमलेश त माथ पर गोड़ राखत भाग लिहलसि. बाकिर रमुआ खपरैल पर बइठले-बइठल रंगे हाथ धरा गइल. ऊ लाख कहत रहल, 'हम नाहीं, कमलेश !' ऊ जोड़तो रहल, 'कमलेशे ना, गोपालो बाबा !' बाकिर ओकर सुने वाला केहू ना रहल. काहे कि गोपाल त गांवे में ना रहवे, बैंकाक चल गइल रहवे आ कमलेश अपना घरे 'गहीर नीने' सूतल मिलल. से सगरी बाति रमुआ पर आइल. बेचारा फोकटे में पिटा गइल. लेकिन चूँकि बरई के घर के कवनो 'सामान' ना गइल रहे से थाना पुलिस ले बाति ना गइल आ गाँवे में रमुआ के मार-पीट के मामिला सलटा दिहल गइल.

बाकिर मामिला तब सचहूँ निपटल कहाँ रहे भला ?

मामिला त अब उठल रहे. गांव में एके साथ सात-सात लोग एड्स से छटपटात रहवे. खुलम खुल्ला. एड्स के बीया गोपाल बोवलसि कि ऊ लड़िका जे दिल्ली में रहत रहे, एह पर मतभेद रहल. बाकिर एड्स बांटे के सेंटर बरई के पतोहु बनल एहमें कवनो दुराय ना रहल. तबहियो अधिकतर लोग के राय रहल कि गांव में एड्स के तार भुल्लन तिवारी के बेटा गोपाल तिवारी का मार्फत आइल.

बरास्ता बैंकाक।

फिलहाल त बैंकाक से गोपाल तिवारी के एड्स से मरला के खबर गांव में आ गइल रहल आ गोपाल तिवारी के मेहरारू एड्स से छटपटात रहवे. साथ ही बरई के पतोहु, बरई के बेटा, बरई के पतोहु से संबंध राखे वाला ऊ कोइरी, ओह कोइरी के मेहरारू आ एने कमलेश. सभही एड्स का चपेटा में रहवे. लोक कवि के गांव में बाकियो लोग जे बैंकाक, दिल्ली, बंबई भा जहवाँ कतहीं बाहर रहे, सब के सब शक का घेरा में रहल.

उनुका एड्स होखो, न होखो बाकिर एड्स का घेरे में त सभही रहे.

भुल्लन तिवारी पर त जइसे आफते आ गइल. बेटा एड्स के तोहमत ठाँक के मर चुकल रहे आ कहीं कीड़े मकोड़े मत जर जाँ सँ एह डर से ऊँख के पतईयो ना जरावे वाला भुल्लन तिवारी एह दिने जेल में नेवता खात रहले. पट्टीदार सभ उनुका के एगो हत्या में फंसा दिहले रहले.

लेकिन लोक कवि एड्स फेड्स का फेरे में फंसे वाला ना रहले. आखिरकार ऊ अपना छोटका भाई

के गांव से बोलवा के सब कुछ बहुते गँवे से समुझवले. मान मर्यादा के वास्ता दिहले. बतवले कि, 'बड़ी मुश्किल से नाम दाम कमइले बानी एकरा के एड्स का झोंका में मत डुबावऽ !' फेर रुपिया पइसा दे के बाप बेटे के बंबई भेज दिहलन, बता दिहलन कि, 'ठीक हो जाव भा मर खप जाव तबहिये अइहऽ. आ जे केहू पूछे कि का भइल, भा कइसे मरल ? त बता दीहऽ कि कैंसर रहे.' ऊ कहले, 'हम पता करवा लिहले बानी कि ई बेमारी आहिस्ता से आ जल्दिये से मार देले.' ऊ जोड़ले, 'बता दीहऽ ब्लड कैंसर ! एहमें केहू बाचे ना.'

आ आखिर तबले लोक कवि परेशान रहले, बेहद परेशान ! जबले कि कमलेश मर ना गइल. कमलेश बंबई में मरल त बिजली वाला शवदाह घर में फूंकल गइल. एही तरह बैंकाक में गोपालो तिवारी फूंकल गइल. लेकिन गांव में त विद्युत शवदाह गृह रहल ना. त जब कोइरी, बरई के परिवार वाले मरले ते लकड़ी से उनुका के फूंके के रहे. घर परिवार में जल्दी केहू तईयार ना रहल आगि देबे खातिर. डर रहे कि जे फूंकी ओकरो एड्स हो जाई. फूंकल त दूर के बात रहल, केहू लाशो उठावे भा छूवे के तइयार ना रहल. बाति आखिर में प्रशासन ले चहुँपल त जिला प्रशासन एह सब के बारी-बारी फूंके के इंतजाम करवलसि.

अबही ई सब निपटले रहल कि बैंकाक से लोक कवि के गांव के दू गो अउरी नौजवान एड्स ले के लवटले.

ई सब सुन के लोक कवि से ना रहाइल, ऊ माथा पीट लिहले. चेरमैन साहब से कहले, 'ई सब रोकल ना जा सके ?'

'का ?' चेरमैन साहब सिगरेट पियत अचकचा गइले.

'कि बैंकाक से आइल गइले बंद कर दिहल जाव हमरा गाँव के लोग के !'

'तू अपना गांव के राजदूत हउवऽ का ?' चेरमैन साहब कहले, 'कि तोहार गांव कवनो देश ह ? भारत से अलगा !'

'त का करें भला ?'

'चुप मार के बइठ जा !' वह बोले, 'अइसे जइसे कतहीं कुछ भइले ना होखे !'

'रउरा समुझत नइखीं चेरमैन साहब !'

'का नइखीं समुझते रे ?' सिगरेट के राख झाड़त लोक कवि के डपटत बोलले चेरमैन साहब.

'बात तनिको जे एने से ओने भइल त समुझीं कि मार्केट त गइल हमार !'

'का तू हर बाति में मार्केट पेलले रहेलऽ !' चेरमैन साहब बिदकत कहले, 'एह सब से मार्केट ना जाव. काहे कि भर गाँव के ठेका त तू लिहले नइखऽ. आ फेर पंडितवनो के त एड्स हो गइल. ई बीमारी ह, एहमें केहू का कर सकेला ? केहू के दोष दिहला से त कुछ होखे ना !'

'रउरा ना समुझब !' लोक कवि बोलले, 'आप काहें समुझब ? रउरा त राजनीतिओ कब्बो मेन धारा वाला ना कइनी. त राजनीतिये के दरद रउरा ना जानीं, त मार्केट के दरद का जानब भला ?'

‘सब जानीलें !’ चेयरमैन साहब बोलले, ‘अब तूं हमरा के राजनीति सिखइबऽ ?’ ऊ इचिका मुसुकात बोलले, ‘अरे चनरमा का बारे में जाने ला चनरमा पर जा के रहल जरूरी होला का ? भा फेर तोहार गाना जाने ला, गाना सुने ला गाना गावहू आवे जरूरी बा का ?’

‘ई हम कब कहनी !’

‘त ई का बोललऽ तू कि राजनीति का मेन धारा !’ ऊ कहले, ‘अब हमरी पार्टी के सरकार नइखे तबहियो हम चेयरमैन बानी कि ना ?’ ऊ खुद ही जवाबो दे दिहलें, ‘बानी नूं ? त ई राजनीति ना हऽ त का हऽ बे ?’

‘ई त हवे !’ कहत लोक कवि हाथ जोड़ लिहलन.

‘अब सुनऽ !’ चेयरमैन साहब बोलले, ‘जब-तब मार्केट-मार्केट पेलले रहेलऽ त जानऽ कि तोहार मार्केट कइसे खराब होखत बा ?’

‘कइसे ?’ लोक कवि हकबकइलन.

‘ई जे यादव राज में यादव मुख्यमंत्री का साथे तूं नत्थी हो गइल !’ ऊ कहले, ‘ठीक बा कि तोहरा बड़का सरकारी इनाम मिल गइल, पांच लाख रुपिया मिल गइल, तोहरा नाम पर सड़क हो गइल ! एहिजा ले त ठीक बा. बाकिर तू एगो जाति, एगो पार्टी खास के गवईया बनि के रह गइलऽ.’ ऊ उदास होत बोलले, ‘अरे, तोहार लोक गायक के मारे खातिर ई आर्केस्ट्रा कम पड़त रहल का कि तू ओहिजो नत्थी हो के मरे खातिर चल गइलऽ फतिंगा का तरह !’

‘हँ, ई नोकसान त हो गइल.’ लोक कवि बोलले, ‘मुख्यमंत्री जी के सरकार गइला का बाद त हमार पोरोगराम कम हो गइल बा. सरकारी पोरोगरामों में अब हमरा के उनुकर आदमी बता के हमार नाम उड़ा दिहल जा ता !’

‘तब ?’

‘त अब का करीं ?’

‘कुछ मत करऽ ! सब समय आ भगवान के हवाले छोड़ि दऽ !’

‘अब इहे करहीं के पड़ी !’ लोक कवि उनुकर गोड़ छुवत कहले.

‘अच्छा ई बतावऽ कि तोहार जवना भतीजा के एड्स भइल रहे ओकरा बाल बच्चा बाड़े सँ ?’

‘अरे नाहीं, ओकर त अबहीं बिआहो ना भइल रहे.’ ऊ हाथ जोड़त बोलले, ‘अब की साल तय भइल रहे. बाकिर ससुरा बिना बिअहले मरि गइल ! भगवान ई बड़का उपकार कइलन.’

‘आ ओह बरई के बच्चा बाड़े सँ ?’

‘हँ, एक ठो बेटा बा. घर वाला देखत बाड़े.’ लोक कवि बोलले, ‘अउर ओह कोइरीओ के दू गो बच्चा घर वाले देखत बाड़े.’

‘एह बचवन के त एड्स नइखे नू ?’

‘ना.’ लोक कवि बोलले, ‘एह सभ के मर मरा गइला का बाद शहर के डाक्टर आइल रहले. एह

बचवन के खून ले जा के जँचले रहले. सब सही निकलल. कवनो के एड्स नइखे.'

'आ ओह पंडितवा के लडिकन के ?'

'ओकनियो के ना.'

'पंडितवा के कतना बच्चा बाइन सँ ?'

'एगो बेटी, एगो बेटा.'

'पंडितवा के बाप त जेहल में बा आ पंडितवा अपना मेहरारू समेत मर गइल त ओकरा बचवन के देखभाल के करत बा ?'

'बूढ़ी !'

'कवन बूढ़ी ?'

'पंडित जी त बेचारे बुढ़ती में बेकसूर जेहल काटत बाइन, उनुकर बूढ़ी पंडिताइन बेचारी बचवन के जियावत बाड़ी.'

'ऊ नेवता खा के पेट जिआवे वाला पंडित के घर के खर्चा-बर्चा कइसे चलत बा ?'

'राम जाने !' लोक कवि सांस लेत कहले, 'कुछ समय ले बैंकाक के कमाई चलल ! अब सुनीं ला कि गांव में कब्बो काल्ह चंदा लाग जाला. केहू अनाज, केहू कपड़ा, केहू कुछ पइसा दे देला !' ऊ कहले, 'भीख समुझीं. केहू दान त देबे ना. दोसरे, लडिकिया अब बिआहे लायक हो गइल बिया ! राम जाने कइसे शादी होखी ओकर.' लोक कवि बोलले, 'जाने ओकर बिआह होइयो पाई कि बाप के राहे चलि के रंडी बनि जाई !' लोक कवि रुकले आ कहले, 'बताई बेचारा पंडित जी एतना धरम करम वाला रहले, एगो नेवता खाइल छोड़ी दोसर कवनो ऐब ना रहल. बाकिर जाने कवना जनम के पाप काटत बाइन. एह जनम में त कवनो पाप ऊ कइले ना. लेकिन लडिका एह गति मरल कलंक लगा के आ अपने बेकसूर रहतो जेहल काटत बाइन !'

'तू पाप-पुण्य माने लऽ ?'

'बिलकुल मानीं ला !'

'त एगो पुण्य कर लऽ !'

'का ?'

'ओह ब्राह्मण के बेटी के बिआह के खरचा उठा लऽ !'

'का ?'

'हँ, तोहरा कवनो बेटी हइयो नइखे.' चेंयरमैन साहब कहले, 'बेसी पैसा मत खरच करऽ. पचीस-पचास हजार जवन तोहरा श्रद्धा में रुचे जा के बुढ़िया पंडिताइन के दे आवऽ ई कहि के कि बिटिया के बिआह कर दीं !' ऊ इहो कहलन कि, 'हमहू कुछ दस-पांच हजार कर देब. हालांकि पचास साठ हजार में लडिकी के शादी त होत नइखे आजु काल्ह. लेकिन उत्तम मद्धिम कुछ त होइये जाई.' चेंयरमैन साहब कहत रहले, 'अबहीं तूहीं कहत रहवऽ कि बिआह ना भइल त बाप का राहे चलि के रंडी हो जाई ! तू

इहे सोच ल कि ओकरा के रंडी का राह नइखे जाये देबे के. कुछ तू करऽ, कुछ हमहूँ करऽतानी. दू चार अउरियो लोग से कहब, बाकी ओकर नसीब !'

'बाकिर गांव में एह तरे समाज सेवा करब त बिला जाएब.' लोक कवि संकोच घोरत कहले, 'हर घर में कवनो ना कवनो समस्या बा. त हम केकर-केकर मदद करब ? जेकर करब, ऊ त खुस हो जाई. जेकरा के मना करब ऊ दुसमन हो जाई ! एह तरे त सगरी गांव हमार दुसमन हो जाई !'

'एह पुण्य काम खातिर तू पूरा दुनिया के दुसमन बना लऽ.' चेयरमैन साहब कहले, 'आ फेर कवनो जरूरी बा का कि तू ई मदद डंका पीट के करऽ. चुपेचाप कर द. गुप-चुप ! केहू जाने ना !' ऊ कहले, 'दुनिया भर के रंडियन पर पइसा उड़ावेलेऽ त एगो लड़िकी के रंडी बनला से बचावे खातिर कुछ पइसा खरच कर के देखऽ.' चेयरमैन साहब लोक कवि के नस पकड़त कहले, 'का पता एह लड़िकी के आशीर्वाद से, एकरा पुण्ये से, तोहार लइखड़ात मार्केट सम्हरि जाव !' ऊ कहले, 'कर के देखऽ ! एहमें सुखो मिली आ मजो आई.' फेर ऊ तंज कसत कहले, 'ना होखे त 'मिसिराइनो' से मशविरा ले लऽ. देखीहऽ उहो एहला मना ना करी.'

लोक कवि मिसिराइन से त मशविरा ना कइलन बाकिर लगातार एह बारे में सोचत रहलन आ एक दिन अचानके चेयरमैन साहब के फोन मिला के कहले, 'चेयरमैन साहब हम पचास हजार रुपया खर्चा काट-काट के जोड़ लिहले बानी !'

'काहे खातिर बे ?'

'अरे, ओह ब्राह्मण के बेटी के रंडी बने से बचावे खातिर !' लोक कवि कहले, 'भूला गइनी का ? अरे, ओकरा शादी खातिर आप ही त बोलले रहीं !'

'अरे, हँ भाई. हम त भुलाइये गइल रहीं !' ऊ कहले, 'चलऽ तू पचास देत बाड़ऽ त पंद्रह हजार हमहूँ दे देब. दू एक अउरियो लोगन से दस बीस हजार दिलवा देब. कुछ अउरियो करतीं लेकिन हाथ एने तनी तंग बा, मेहरारू के बीमारी में खर्चा बेसी लाग गइल बा. तबहियो तू जहिया कहबऽ पइसा दे देब. एतना पइसा त अबही हमरा पासे बा. कवनो लौंडा के भेज के मंगवा लऽ !'

'ठीक बा चेयरमैन साहब !' कह के लोक कवि उनुका किहाँ से पंद्रह हजार रुपिया मंगवा लिहलन. दू जगह से पांच-पांच हजार अउर एक जगह से दस हजार रुपिया चेयरमैन साहब अउरी दिलवा दिहलन. एह तरह पैंतीस हजार रुपिया ऊ आ पचास हजार रुपिया आपन मिला के कुल पचासी हजार रुपिया ले जा के लोक कवि पंडिताइन के दिहलन. ई कहि के कि, 'पंडित जी के बड़ उपकार बा हमरा पर. नतिनी के बिआह खातिर ले लीं ! खूब धूमधाम से शादी करीं !'

बाकिर पंडिताइन अइ गइली. पइसा लेबे से मना कर दिहली. कहली कि पंडित जी तोहरा पर का उपकार कइलन हम नइखीं जानत. बाकिर ई तोहार एहसानो हम ना लेब. ऊ माथ पर पल्लू खींचत

कहली, 'गांव का कहीं भला ? केकर-केकर ताना सुनब ! बेटवा के कलंक क ताना अबहिन ले नइखै खत्म भइल. त अब नतिनी खातिर ताना हम नाई सुनब.' ऊ कहत रहली, 'ताना सुनले के पहिलवें कुआं में कूद के मरि जाइब !' कह के ऊ रोवे लगली. कहली, 'पंडित जी बेचारे जेल भले भुगत रहल बाटें बकिर उन के केहु कतली नइखै कहत. सब कहेला जे उनुका के गलत फंसावल गइल बा ! त उनुका इज्जत से हमरो इज्जत रहेले. बाकिर बेटा बट्टा लगा गइल त करम फूट गइल !' कह के पंडिताइन फेर रोवे लगली. कहली, 'एतना रुपया हम राखब कहां ? हम नाई लेब !'

'आखिर दिक्कत का बा ?'

'दिक्कत ई हवे कि सुनीलें तू लड़िकिन के कारोबार करेलेs अउर हमर नतिनी ई कारोबार नाहीं करी. ऊ नाई नाची कूदी तोहरे कारोबार में !'

सुनिके लोक कवि एक बेर त सकता में पड़ गइले. बाकिर कहले, 'आप के नतिनी के हम कहीं ना ले जाइब.' लोक कवि पंडिताइन के दिक्कर समुझत कहले, 'बिआहो आपे अपना मर्जी से जहां चाहीं, जइसे चाहीं तय कर के कर लेब. बाकिर ई पइसा रख लीहीं आप. कामे आई !' कह के लोक कवि पंडिताइन का गोड़ पर आपन माथा राख दिहलन, 'बस ब्राह्मण देवता क आशीर्वाद चाहीं !'

बाकिर पंडिताइन अइली त अइली रह गइली. पइसा लिहल त दूर, छुअबो ना कइली.

लोक कवि दुखी मन से वापिस लवटि अइलन.

चेयरमैन साहब के घरे जाके उनुका के उनुकर दिहल पैंतीस हजार वापिस करे लगलन त चेयरमैन साहब भइकले, 'ई का हो गइल रे तोरा !'

'कुछ नाहीं।' लोक कवि उदास होत कहले, 'दरअसल हमार गांव हमरा के समुझ ना पवलसि !'

'भइल का ?'

'तबकी सम्मान के बाद गइल रहीं त लोग नचनिया पदनिया कहे लागल रहे !'

'अबकी का भइल ?' चेयरमैन साहब लोक कवि के बात बीचे में काटत कहले.

'अबकी लड़िकियन के दलाल बन गइनी !' कह के लोक कवि रोवलें त बा बाकिर अनसा जरूर गइले.

'के बोलल तोरा के लड़िकियन के दलाल ? ओकर खून पी जाएब !' चेयरमैन साहब खिसियात कहले.

'नाहीं केहू एकदमै से दलाल शब्द नाहीं बोलल !'

'त ?'

'लेकिन ई कहल कि हम लड़िकियन के कारोबार करीलें ।' लोक कवि निढाल परत कहले, 'सीधे-सीधे एकर मतलब दलाले नू भइल ?'

'के बोलल कि तूं लड़िकियन के कारोबार करे ल ?' चेरमैन साहब के खीस फफनाइले रहल.

'अउर के !' लोक कवि कहलें, 'उहे पंडिताइन कहली आ ई पइसा लेबे से मना कर दिहली.'

'काहे ?'

'पंडिताइन कहली कि सुनले बानी कि तू लड़िकियन के कारोबार करे लs आ हमार नतिनी ई कारोबार नाहीं करी !' लोक कवि खीझियात कहले, 'बताई, हमनी का सोचले रहीं कि ओकरा के गरीबी के फेर में रंडी बने से बचावल जाव आ पंडिताइन उलटे हमरे पर आरोप लगा दिहली कि हम उनुका नतिनी के रंडी बना देब !' ऊ कहत रहले, 'तबहियो हम खराब ना मनलीं. ई सोच के कि पुण्य के काम में बाधा आई. त एकरा के बाधा मान के टार गइनी. फेर हम इहो बतवनी कि उनुका नतिनी के हम कहीं ना ले जायब आ कि बिआहो ऊ अपना मर्जी से जहां चाहसु करसु. हमरा से कवनो मतलब नइखे. उनुका गोड़ पर माथा राख के कहबो कइनी कि बस ब्राह्मण देवता क आशीर्वाद चाहीं !'

'एकमे बऊड़म हउव तू !' चेरमैन साहब कहले, 'देवी के देवता कहबs आ आशीर्वाद मँगबs त के दी ?'

'एहमें का गलत हो गइल ?' लोक कवि दरअसल चेरमैन साहब के देवी देवता वाली बात समुझले ना.

'चलs कुछऊ गलत ना कइलs तू !' ऊ कहले, 'गलती हमरा से हो गइल जे एह काम खातिर तोहरा के अकेले भेज दिहनी.'

'त का अब आप चलब ?'

'हँ हमहू चलब आ तूहू चलबs.' ऊ कहले, 'लेकिन दस बीस दिन रुक के.'

'हम तो नाहीं जाएब चेरमैन साहब !' लोक कवि कहले, 'जबे गांव जानीं बेइज्जत हो जाइले !'

'देखs, नेक काम ला बेइज्जत होखे में कवनो बुराई नइखे. एगो नेक काम हाथ में लिहले बाइस त ओकरा के पूरा कर के छोड़s.' ऊ कहले, 'फेर तू हर बाति में इज्जत बेइज्जत मत खोजल करs ! ओह बेर नचनिया पदनिया पर दुखी हो गइलs तू. सम्मान के सगरी मजा खराब कर दिहल.' तनिका रूक के ऊ फेर कहले, 'ई बतावs कि तू अमिताभ बच्चन के कलाकार माने लs ?'

'हँ, बहुते बड़हन कलाकार हउवन ऊ !'

'तोहरो ले बड़हन ?' चेरमैन साहब मजा लेत पूछलें.

'अरे कहां हम चेरमैन साहब, अउर कहां ऊ ! काहें मजाक उड़ावत बानीं.'

'चलs केहू के त तू अपना ले बड़हन कलाकार मनलs !' चेरमैन साहब कहलें, 'त इहे अमिताभ बच्चन जब 1984 में इलाहाबाद से चुनाव लड़ले बहुगुणा का खिलाफ त का अखबार, का नेता सबही इहे कहत रहल कि नचनिया पदनिया ह चुनाव का जीती ! हँ, थोड़ बहुत नाच कूद ली. लेकिन ऊ

बहुगुणा जइसन दिग्गज के जब धूडि चटा दिहले, चुनाव हरा दिहलन त लोग के मुँह बंद हो गइल.'
चेयरमैन साहब कहलें, 'त जब एतना बड़हन कलाकार के ई जमाना नचनिया पदनिया कह सकेला त तोहरा के काहे नाहीं कह सके ?' ऊ कहले, 'फेर ऊ इलाहाबाद जहवाँ अमिताभ बच्चन के घर बा, ऊ अपना के इलाहाबादी मानेला अउर इलाहाबाद वाले ओकरा के से नचनिया पदनिया. तबहियो ऊ बुरा ना मनलें. काहेकि ऊ बड़का कलाकार हउवें. सचमुच में बड़का कलाकार. ओकरा में बड़प्पन बा.' ऊ कहले, 'तूहूँ त अपना में बड़प्पन ले आवऽ आ तनिका मोलायमियत सीखऽ !'

'बाकिर पंडिताइन....!'

'कुछउ ना. पंडिताइन तोहरा के कुछ ना कहली. ऊ त अपना नतिनी के हिफाजत भर करत बाड़ी. ओहमें बुरा माने के बात नइखे.' ऊ कहले, 'दस बारह दिन बाद हम चलब तोहरा साथे. तब बात करीह. अबही घरे जा, आराम करऽ, रिहर्सल करऽ अउर ई सब भुला जा !'

अउर साचहु लोक कवि चेयरमैन साहब का साथ कुछ दिन बाद एह नेक अभियान पर एक बेर फेरु निकललन. चेयरमैन साहब तनिका तरीका से काम लिहलन. पहिले ऊ लोक कवि के साथे ले के जेल गइलन. ओहिजा पंडित भुल्लन तिवारी से मिललन. पंडित जेल में रहले जरूर पर माथा पर उनुका तेज मौजूद रहे. विपन्नता के चुगली उनुकर रोआं-रोआं करत रहुवे बाकिर ऊ कातिल ना हउवन, इहो उनुकर चेहरा बतावत रहे. ऊ कहे लगलन, 'दू जून भोजन खातिर हम जरूर एने-ओने जात रहीं बाकिर कवनो अन्यायी का सोझा, कवनो मतलब, कवनो छल खातिर मूड़ी गिरा दीं ई हमरा खून में नइखे, नाही हमरा संस्कार में !' ऊ कहत रहले, 'रहल अन्याय-न्याय के बात, त ई ऊपर वाला के हाथ में बा. हम खूनी हँई कि ना, एकर इंसाफ त अब ऊपरे का अदालत में होखी. बाकी रहल एह जेल के अपमान के बात त जरूर कहीं हमरा कवनो पापे के ई फल हऽ.' साथ ही ऊ इहो जोड़लन, 'अउर इहो जरूर हमरा कवनो पापे के कुफल रहे कि गोपला जइसन कुकलंकी हमरा वंश में जनमल !' ई कहत उनुकर आंख डबडबा गइल. गला रुंधिया गइल. फेर ऊ फफक पड़लन.

'मत रोई !' कह के लोक कवि उनुका के सांत्वना दिहलन आ हाथ जोड़ के कहलन कि, 'पंडित जी एक ठो विनती बा, हमार विनती मान लीं !'

'ई अभागा पंडित का तोहार मदद कर सकेला ?'

'आशीर्वाद दे सकीलें.'

'ऊ त हरमेस सभका साथे बा.' ऊ रुकलन आ कहले, 'बाकिर एह अभागा के आशीर्वाद से का तोहार बनि सकेला ?'

'बन सकेला पंडित जी !' लोक कवि कहले, 'पहिले बस अब आप हां कह दीं.'

'हँ बावे, बोलऽ !'

'पंडित जी एगो ब्राह्मण कन्या के बिआह करावे के पुण्य पावल चाहत बानी.' लोक कवि कहले, 'बिआह आप लोग अपने समाज में अपने मर्जी से तय करीं. बाकिर खरचा बरचा हमरा उपर छोड़ दीं.'

'ओह ! समझनी.' भुल्लन पंडित कहले, 'तू हमरा पर उपकार कइल चाहत बाइस !' ई कहत भुल्लन पंडित तल्लख हो गइले. कहले, 'बाकिर कवना खुशी में भाई ?'

'कुछ ना पंडित जी, ई मूरख हऽ !' चेयरमैन साहब कहले, 'नाच गा के त ई बड़ा नाम गांव कमा चुकल बा अउर अब कुछ समाज सेवा कइल चाहत बा. एक पंथ दू काज ! ब्राह्मण के आशीर्वाद आ पुण्य दुनु चाहत बा.' ऊ कहले, 'मना मत करब !'

'बाकिर ई त पंडिताइने बतइहें.' तौल-तौल के बोलत भुल्लन पंडित कहले, 'घर गृहस्थी त अब उहे देखत बाड़ी. हम त कैदी हो गइल बानी.'

'लेकिन मीर मालिक तो आप ही हईं पंडित जी !'

'रहनी.' ऊ कहले, 'अब नइखीं. अब कैदी हईं.'

मुलाकात के समयो खतम हो चुकल रहुवे. भुल्लन पंडित के गोड़ छू के दुनु जने जेल से बाहर अइलन.

'घर में भूजी भांग नाई, दुआरे हरि कीर्तन !'

'का भइल रे लोक कवि ?'

'कुछ नाई. ई पंडितवे एतना अडियाते काहें हैं ? हम आजु ले ना समुझ पवनी.' लोक कवि कहले, 'रसरी जर गइल बाकिर अईठन ना गइल. जेल में नरक भुगतत बाइन, पंडिताइन भूखीं मरत बाड़ी. खाए खातिर गांव में चंदा लागत बा. बाकिर हमार पइसा ना लीहें !' लोक कवि खीझियात कहले, "धीव दै बाभन नरियाय! कहां फंसा दिहनी चेयरमैन साहब। अब जाए दीं. ई पइसा कहीं अउर दान दे दिहल जाई. बहुते गरीबी बा. पइसा लेबे खातिर लोग मार कर दीहि."

'घबराते काहें बाइस !' चेयरमैन साहब कहले, 'तनिका धीरज राखऽ !'

फिर चेयरमैन साहब लोक कवि के घरे चहुँपले. लोक कवि के घर का रहे, पूरा सराय रहे. उहो लबे सड़क. दरअसल लोक कवि से गांव के लोग के जरतवाही के एगो कारन उनुकर ई पकवा मकानो रहल. छोट जाति के आदमी का लगे अइसन बड़हन पकवा मकान बड़ जाति के लोगन क त खटकते रहे, छोटको जाति के लोगन से हजम ना होत रहुवे. चेयरमैनो साहब एह बात पर अबकी दफा गौर कइलन. बहरहाल, थोड़ देर बाद ऊ लोक कवि के उनुका घरे छोड़ के अकेले उनुका गांव में निकललन. कुछ जिम्मेदार लोग से, जिनका ऊ जानतो ना रहले, भेंट कइलन. उनुकर मन टटोरलन. फेर आपन मकसद बतवलन. बतवलन कि एकरा पाछा कुछ अउर बा, बस मन में आइल मदद के मनसा बा. फेर एह लोगन के ले के लोक कवि का साथे ऊ भुल्लन तिवारी का घरे गइलन. पंडिताइन से मिललन.

उनुका खुदारी के मान दिहलन. बतवलन कि जेल में पंडितो जी से ऊ लोग मिलल रहे. आपन मनसा बतवले रहे त पंडित जी सब कुछ आपे पर छोड़ दिहलन. फेर उनुकर चिरोरी करत कहलन कि, 'रउरा मान जाई त समुझीं कि हमन के गंगा नहा लिहलीं.' पंडिताइन कुछ बोलली ना. थोड़ देर ले सोचली फेर बिन बोलले आंखे आंख में बात गांववाल न पर छोड़ दिहली. गांव के एगो बुजुर्ग कहले, 'पंडिताइन भौजी, एहमें कवनो हरज नइखे !'

'जइसन भगवान क मर्जी!' हाथ ऊपर उठावत पंडिताइन कहली, 'अब ई गांव भर क बेटी ह !'

लेकिन पइसा पंडिताइन ना लिहली. बतवली कि जब शादी तय हो जाई तबहिये पइसा का बारे में देखल जाई. फेर गांवही के दू लोग के सुपुर्दगी में ऊ पचासी हजार रुपिया रखवा दिहल गइल. दू तीन लोग शादी खोजे के जिम्मा लिहल. सब कुछ ठीक-ठाक करा लोक कवि अउर चेयरमैन साहब ओहिजा से उठले. चलत-चलत लोक कवि पंडिताइन के गोड़ छुअलन. कहलन कि, 'शादी में हमहूँ के बोलावल जाई !'

'अ काहें नाहीं!' पंडिताइन पल्लू ठीक करत कहली.

'एतने ले नाहीं. कुछ अउरियो उत्तम मद्धिम, घटल बढ़ल होई, उहो बतावल जाई !'

'अच्छा, मोहन बाबू!' पंडिताइन के आंखिन में कृतज्ञता झलकल.

लोक कवि अपना गांव से जब लखनऊ ला चललन त उनुका लागत रहे कि साचहु बड़हन पुण्य के काम हो गइल. ऊ अइसने कुछ चेयरमैन साहब से बुदबुदा के बोलबो कइलन, 'साचहु आजु बड़ा खुसी के दिन बा !'

'चलऽ भगवान का दया से सब कुछ ठीक-ठाक हो गइल !' चेयरमैन साहब कहले. आ ड्राइवर से कहलन, 'लखनऊ चलऽ भाई !'

लेकिन एह पूरा प्रसंग पर अगर कवनो एक आदमी सबसे अँउटाइल रहे, सबले बेसी दुखी रहे त ऊ रहल लोक कवि के छोटका भाई जे कमलेश के पिता रहे. कमलेश के पिता के लागत रहल कि कमलेश के मौत के अगर केहू एक आदमी जिम्मेदार रहल त ऊ गोपाल रहे. आ ओही गोपला के बेटी बियाहे के बेमतलब के खरचा ओकर बड़का भाई मोहन करत रहे जे अब लोक कवि बनल इतराइट चलत बा. कमलेश के पिता के ई सब फूटलो आँखे ना सुहात रहे. बाकिर ऊ बेबस रहे आ चुप रहल. आ ओकरे बड़ भाई ओकरा छाती पर मूँग दलत रहे. नाम गांव कमाए खातिर. बाकिर एने लोक कवि मगन रहले. मगन रहले अपना सफलता पर. कार में चलत ठेका ले-ले के ऊ आपने कवनो गानो गुनगुनात रहले. गदबेरे हो चलल रहे. डूबत सूरज के लाल गोला दूर आसमान में तिरात रहल.

लेकिन ऊ कहाला नू कि 'बड़-बड़ मार कोहबरे बाकी !'

उहे भइल.

सिरिफ पइसा भर से केहु के शादी ब्याह तय हो जाइत त फेर का बात रहीत ? लोक कवि आ चेयरमैन साहब पइसा दे के निश्चित हो गइलन. लेकिन बात साचहु में निश्चित होखे के रहल ना. भुल्लन पंडित के नतिनी के शादी एतना आसानी से होखे वाला ना रहल. बाप गोपाल के कलंक अब बेटी के माथे डोलत रहे. शादी खातिर वर पक्ष से सवाल शुरू होखे से पहिलहीं एड्स के सवाल दउड़त खड़ा हो जाव. कतहिओ लोग जाव, चाहे गांव के लोग होखे भा रिश्तेदार, उनुका से पूछाव कि, 'आप बेटी के पिता हई, भाई हई, के हई ?' लोग बतावे कि, 'ना, गाँव के हई, पट्टीदार हई, रिश्तेदार हई.' त सवाल उठे कि, 'भाई, पिता कहां बाड़ें ?' बतावल जाव कि पिता के निधन हो गइल बा आ कि! अबहीं बात पूरा ना होखे तबले वर पक्ष के लोग खुदही बोल पड़े, 'अच्छा-अच्छा ऊ एड्स वाला दोखी कलंकी गोपला के बेटी ह !' वर पक्ष के लोग जोड़े, 'ऊ गोपाल जेकर बापो कतल के जुर्म में जेल काटत बा ?'

रिश्तेदार, पट्टीदार जे ही होखे बेजवाब हो जाव. एकाध लोग तर्को देव कि एहमें लड़िकी के का दोष ? लेकिन एड्स जइसन भारी शब्द के आगा सगरी तर्क पानी हो जाव, आ वर पक्ष के लोग कसाई !

फेर गांव में एगो विलेज बैरिस्टर रहले. नाम रहे गणेश तिवारी. अइसन बाति जहां नाहियो पहुँचल रहो गणेश तिवारी पूरा चोखा चटनी लगा के चहुँपावे के पूरा हुनर राखत रहले. ना सिरिफ बतिये चहुँपावे के बलुक बिना सुई, बिना तलवार, बिना छुरी, बिना धार ऊ केहुओ के मूडी काट सकत रहले, ओकरा के जइमूल से बरबाद कर सकत रहले. आ अइसे कि कटे वाला तड़पियो ना सके, बरबाद होखे वाला उफ तकले ना कर सके. ऊ कहसु, 'वकील लोग वइसहीं थोड़े केहु के फांसी लगवा देला.' वकीलन का गरदन पर बान्हल फीता देखावत कहसु, 'अरे, पहले गटई में खुदे फंसरी बांन्हेले फेर फांसी

चढ़वावेले !' फेर गणेश तिवारी बियाह काटे में त अतना पारंगत रहले जतना केहु के प्राण लेबे में यमराज. ऊ कवनो "दुल्हा" के मिर्गी, दमा, टी.वी., जुआरी, शराबी वगैरह वगैरह गुण से विभूषित कर सकत रहले.अइसहीं ऊ कवनो "कन्या" के, भलही ओकर अबहीं महीनो ना शुरू भइल होखे त का, दू चार बेर पेट गिरवा सकत रहले. एह निरापद भाव, एह तटस्थता, एह कुशलता अउर एह निपुणता के साथ कि भले ऊ राउरे बेटी काहे ना होखो, एक बेर त रउरो मान लेब. एह मामिला में उनुकर दू चार गो ना, सैकड़न किस्सा गांव जवार में किंवदंती बन चलल रहे. एतना कि जइसे कवनो शुभ काम शुरू करे का पहिले लोग 'ॐ गणेशाय नमः' कर के श्री गणेश करेला जेहसे कि कवनो विघ्न बाधा ना पड़े ठीक वइसही एहीजा लोग शादी बिआह के लगन निकलवावे खातिर पंडित आ उनुकर पंचांग बाद में देखे, पहिले ई देखे कि गणेश तिवारी कवना तिथि के गांव में ना होखीहें !

तबहियो ना जाने लोग के दुर्भाग्य होखे कि गणेश तिवारी के गांव में आवे के दुर्निवार संयोग, ऊ अचके में ऐन मौका पर प्रकट हो जासु. अइसे कि लोग के दिल धकधका जाव. त गणेश तिवारी के दुर्निवार संयोग भुल्लन तिवारी के बेटा गोपला के बेटीओ के शादी काटे में खादी के जाकेट पहिरले, टोपी लगवले कूद पड़ल. खास करके तब उनुकर नथुना अउरी फड़फड़ा उठल जब उनुका पता चलल कि लोक कविया एहमें पइसा कौड़ी खरचा करत बा. लोक कविया के ऊ आपन चेला मानत रहले. एह लिहाज से कि गणेश तिवारी अपनहुँ गवईया रहले. एगो कुशल गवईया. अउर चूंकि गांव में ऊ सवर्ण रहले से श्रेष्ठो रहले. आ उमिरो में लोक कवि से बड़का रहले. लेकिन चूंकि जाति से ब्राह्मण रहलें से शुरु में ऊ गांवे-गांव, गलीए-गली घूम-घूम के ना गा पवलें. चुनावी मीटिंगो में ना जा पवले गाना गावे. जबकि लोक कवि खातिर अइसन कवनो पाबंदी ना पहिले रहे, ना अब रहवे. अउर अब त अइसन पाबंदी गणेशो तिवारी तूड दिहले रहवुन. रामलीला आ कीर्तन में गावत-बजावत अब ऊ ठाकुरन, ब्राह्मणन का बिआहो में महफिल सजावे लागल रहले. बाकायदा सट्टा लिखवा के. बाकिर बहुते बाद में. एतना कि जिला जवार से बहरा केहु उनुका के जानतो ना रहे. तब जबकि एहु उमिर में भगवान उनुका गला में सुर के मिठास, कशिश आ गुण बइठा रखले रहले. लोक कवि का तरह गणेश तिवारी का लगे कवनो आर्केस्ट्रा पार्टी ना रहवे, ना ही साजिंदन के भारी भरकम बेड़ा. ऊ त बस खुद हारमोनियम बजावसु आ ठेका लगावे खातिर एगो ढोलकहिया साथे राखसु. उहो ब्राह्मणे रहल. ऊ ढोलक बजावे आ बीच-बीच में गणेश तिवारी के 'रेस्ट' देबे का गरज से लतीफागोईओ करे. जवन अधिकतर नानवेज लतीफा होखत रहे धुर गंवई स्टाइल के. लेकिन ई लतीफा सीधे-सीधे अक्षीलता छूवे का बजाय सिरिफ संकेत भर देव से 'ब्राह्मण समाज' में 'खप-पच' जासु. जइसे कि एगो लतीफा ऊ अकसर सुनावल करसु, 'बलभदर तिवारी बहुते मजाकिया रहले. बाकलिर ऊ अपना छोटका साला से कबहियो मजाक ना करत रहले. छोटका साला के ई शिकायत हरदम बनल रहत रहे कि, 'जीजा हमरा से मजाक काहे ना करीं ?' बाकिर जीजाजी अकसर महटिया जासु. बाकिर जब ई ओरहन ढेरे बढि गइल त एक बेर रात खाँ खाए बेरा बलभदर तिवारी उ ओरहन खतम करा देबे के ठान लिहले. उनुकर दुआर बहुते बड़हन रहे आ सामने एगो इनारो रहवे. इनारे का लगे ऊ मरीचा रोप रखले रहले. से खाये से पहिले ऊ छोटका साला के बतवले कि, 'एगो बड़की समस्या बा एह मरीचा के रखवाली.'

‘काहे ?’ साला सवाल उठवलसि.

‘काहे कि एगो औरत परिकल बिया. जइसहीं हम राति खाँ खाये जाइलें उठ मरीचा तूड़े चहुँप जाले.’

‘ई त बड़ा गड़बड़ बा.’ साला बोललसि.

‘बाकिर आजु मरीचा बाँच सकेला आ तू जे साथ दे द त ओह औरतो के पकड़ल जा सकेला.’

‘कइसे भला?’

‘उ एइसे कि हमनी का आजु बारी-बारी से खाई.’ बलभदर तिवारी बोललन, ‘पहिले तू खा लीहस, फेर हम खाये जाएब.’

‘ठीक बा जीजा !’

‘बाकिर ऊ औरत बहुते सुन्दर हियस. ओकरा झाँसा में मत आ जइहस.’

‘अरे, ना जीजा !’

फेर तय बाति के मुताबिक साला पहिले खा लिहलसि. फेर बलभदर तिवारी खाना खाए गइलन. खाते-खात ऊ अपना मेहरारू से कहले कि, ‘तनी टटका हरियर मरीचा इनरा पर से तूड़ ले आवस.’

मेहरारू पहिले त भाई का रहला का बहाने टाल मटोल कइली त बलभदर तिवारी कहले, ‘पिछुआड़ी ओर से चलि जा.’

मेहरारू मान गइली आ चल दिहली पिछुआड़ी का राहे मरीचा तूड़े. एने उनुकर भाईओ ‘सुंदर’ औरत के पकड़े जा फेराक में अकुताइल बइठल रहले. मरीचा तूड़त औरत के देखते ऊ कूद पड़ले आ ओकरा के कस के पकड़ लिहले. ना सिरिफ पकड़िये लिहले ओह औरत के अंग के जहें तहें दबावे सुघरावहु लगले. दबावत सुघरावत चिल्लइलें, ‘जीजा-जीजा ! पकड़ लिहनी. पकड़ लिहनी चोटिन के.’

जीजो आराम से लालटेन लिहले चहुँपले. तबले साले साहब औरत के भरपूर दबा-वबा चुकल रहले. बाकिर लालटेन का अँजोर में अपना बहिन के चिह्नत उनुका पर कई घइला पानी पड़ चुकल रहवे. बहिनो लजाइल रहली बाकिर अतना जरूर समुझ गइली कि ई सगरी कारस्तानी उनुका मजाकिया पतिदेवे के हवे. ऊ तंज करत कहली, ‘रउरो ई सब का सूझत रहेला ?’ ऊ कहली, ‘भाईयो-बहिन के ना छोड़ी रउरा ?’

‘कइसे छोड़ती ?’ बलभदर तिवारी कहले, ‘तोहरा भाई के बड़हन शिकायत रहवे कि रउरा हमरा से कवनो मजाक काहे ना करीं त सोचनी कि सूखल-सूखल का करीं, प्रैक्टिकले मजाक कर दीं. से आजु इनकर शिकायतो दूर कर दिहनी.’ कहत ऊ साला का तरफ मुसुकात मुखातिब भइले, ‘दूर हो गइल नू कि कवनो कोर कसर बाकी रहि गइल बा ? रह गइल होखे त उहो पूरा करवा दीं.’

‘का जीजा!’ कहत साला बाबू ओहिजा से सरक लिहले.

ई लतीफा ढोलक मास्टर ठेंठ भोजपुरी में पूरा ड्रामाई अंदाज में ठोंकसु आ पूरा रस भर-भर के. से लोग अघा जाव. अउर एह अघइले में खइनी ठोंकत गणेश तिवारी के हारमोनियम बाज उठे आ ऊ गावे लागसु, ‘रात अंधियारी में कैसे आऊं बालम!’ ऊ सुर में अउरी मिठास घोरसु, ‘सास ननद मोरी जनम की दुश्मन कैसे आऊं बालम !’ फेर ऊ गावसु, ‘चदरिया में दगिया कइसे लागल/ना घरे रहलें बारे

बलमुआ, ना देवरा रहै जागल/फेर कइसे दगिया लागल चदरिया में दगिया कइसे लागल! ई आ अइसने गाना गा के ऊ लोगन के जइसे दीवाना बना देसु. का पढल-लिखल, का अनपढ. ऊ फिल्मी गानन के दुतकारबो करसु आ बहुते फरमाइश पर कबो कभार फिल्मीओ गा देसु पूरा भाष्य दे-दे के. जइसे कि जब ऊ "पाकीजा" फिल्म के गाना 'इन्हीं लोगों ने ले लीना दुपट्टा मोरा' गावसु त एह तोपाइल तकलीफ आ ओकर तंजो अपना वाचन में बांचसु आ कहसु कि, 'बाकिर लोग एह गाना में ओह औरत के तकलीफ ना देखसु, मजा लेबेलें. तब जब कि ऊ बजजवा, रंगरेजवा आ सिपहिया सभका के घेरा में लेले. ओकर दुपट्टा, दुपट्टा ना ओकर इज्जत हवे.' उनुका एह वाचन में डूब के एह गाना सुने के रंगे दोसर हो जाठ. अइसही तमाम निर्गुणो ऊ एही 'ठाठ' में सुनावसु आ रहि-रहि के जुमलेबाजीओ कसत रहसु. आ आखिर में तमाम क्षेपक कथा अपना गायकी में गूथत गावसु, 'अंत में निकला ये परिणाम राम से बड़ा राम का नाम.' कुछ पौराणिक कथो के ऊ अपना गायकी में ले आवसु. जइसे पांडवन के अज्ञातवास के एगो प्रसंग उठावसु जवना में अर्जुन आ उर्वशी प्रकरण आवे. ओहमें उर्वशी जब अर्जुन से एगो वर मांगत अर्जुन से एगो बेटा मांग बइठस त अर्जुन मान जासु. आ जवन युक्ति निकालस ओकरा के गणेश तिवारी अइसे लयकारी में गावसु, 'तू जो मेरी मां बन जा, मैं ही तेरा लाल बनूँ.' एह गायकी में ऊ जइसे एह प्रसंग के दृश्य-दर-दृश्य उपस्थित करा देसु त लोग लाजवाब हो जाव. ऊ अपना 'प्रोग्राम' में भोजपुरी के तमाम पारंपरिक लोकगीतो के थाती का तरह इस्तेमाल करसु. सोहर, लचारी, सावन, गारी कुछऊ ना छोड़सु आ पूरा 'पन' से गावसु. बाते बात में केहु लोक कवि के चर्चा चला देव त ऊ कहसु, 'अरे ऊ तो हमरा चेला है ! बहुते सिखाया पढ़ाया.' ऊ जइसे जोड़सु, 'पहिले बहुते बढ़िया गावत रहे. अतना कि कबो कबो हमरा लागे कि हमरो से बढ़िया मत निकल जाव ! आगे मत निकल जाव, हम ई सोच के जरत रहनी ओकरा से. बाकिर ससुरा छितरा गइल.' ऊ कहसु, 'अब त लखनऊ में आर्कस्ट्रा खोल के लौंडियन के नचा के कमात खात बा. एह लौंडियन के नचा के दू चार गो गाना अपनहु गा लेला.' कहत ओ आह भरे लागसि, 'बाकिर ससुरा भोजपुरी के बेंच दिहलसि. नेतवन के चाकरी करत नाम आ इनाम कमात बा त लौंडियन के नचा के रुपिया कमात बा. मोटर गाड़ी से चलेला. हवाई जहाज में उड़ेला. विदेश जाला. माने कुल्ह ई कि बड़का आदमी बन गइल बा. नसीब वाला बा. बाकिर कलाकार अब ना रहि गइल, व्यापारी बन गइल बा. तकलीफ एही बाति के बावे.' ऊ कहसु, 'हमार चेला ह से नाक हमरो कटेला.'

लेकिन लोक कवि?

लोक कवि ई य मानसु कि गणेश तिवारी उनुका से बहुते बढ़िया गावेलें आ कि बहुते मीठ गला हवे उनुकर. बाकिर 'चेला' के बाति आवते लोक कवि करीब बिदक जासु. कहसु, 'ब्राह्मण हउवें. पूजनीय हउवें बाकिर हम उनुकर चेला ना हईं. ऊ हमरा के कुछ सिखवले नइखन. उलुटे गांव में रहत रहीं त नान्ह जाति कहिके 'काटत' रहले. हँ, ई जरूर रहे कि हमरा के दुई चार गाना जरूर ऊ बतवले जवन हम ना जानत रहीं आ पीपर का फेंड का नीचे गाना बजाना में हमरो के गावे के मौका देत रहले.' ऊ जोड़सु, 'अब एह तरह ऊ अपना के हमार गुरु मानेलें त हमरो कवनो ऐतराज नइखे. बाकी गांव के बुजुर्ग हउवें, ब्राह्मण हउवें, हम आगे का कहीं ?'

लोक कवि त ई सब कुछ गणेश तिवारी का पीठ पाछा कहसु. सोझा रहसु त चुप रहसु. बलुक जब गणेश तिवारी लोक कवि के देखसु त देखते गोहारसु, 'का रे चेला!' आ लोक कवि उनुकर गोड़ छूवत कहसु, 'पालागी पंडित जी!' आ ऊ 'जियो चेला! जीते रहो खूब नाम और यश कमाओ!' कहि के आशीर्वाद दिहल करसु. लोक कवि अपना जेब का मुताबिक सौ-दू सौ, चार सौ पांच सौ रुपिया धीरे से उनुका गोड़ पर रख देसु जवना के गणेश तिवारी ओहि खामोशी से रख लेसु. बाति आइल गइल हो जाव.

एहसान फरामोशी के इहो एगो पराकाष्ठा रहवे.

बाकिर गणेश तिवारी त अइसने रहले, अइसहीं रहे वाला रहले. गांव में उनुका पट्टीदारी के एगो आदमी फौज में रहल. रिटायर भइला के कुछ समय पहिले ओकरा रंगरूट भरती के काम मिल गइल. खूब पइसा पीटलसि. गांव में आ के खूब बड़हन दू मंजिला घर बनवलसि. पइसा के गरमी साफे लउके. जीपो वगैरह खरीदलस. ओह फौजी के पत्नी खेत खरीदे के बाति चलवलसि त फौजी एही विलेज बैरिस्टर गणेश तिवारी से खेत खरीदे के चरचा कइले. काहेकि गणेश तिवारी के गांवे भर के का पूरा जवार के लोग के खसरा खतियौनी, रकबा, मालियत पुशत-दर-पुशत जबानी याद रहवे. एही बिना पर ऊ कब केकरा के लइवा देसु, केकरा के कवना में अइसुरा देसु, कुछ ठिकाना ना रहत रहवे. त फौजी के इहे सुरक्षित लागल कि गणेश तिवारी के अँगुरी पकड़ के खेत खरीदल जाव. गणेश तिवारी आनन फानन उनुका के पाँच लाख में पांच बिगहा खेत खरीदवाइयो दिहलें. रजिस्ट्री वगैरह हो गइल तबहियो फौजी गणेश तिवारी का मद में गांठ ना खोललसि. त फेर एक दिन गणेश तिवारी खुदही मुंह खोल दिहले, 'बेटा पचीस हजार रुपिया हमरो के दे द.'

'से त ठीक बा.' फौजी कहलसि, 'बाकिर कवना बाति के ?'

'कवना बाति के ?' गणेश तिवारी बिदकले, 'अरे कवनो भीख भा उधार थोड़े मांगत बानी. मेहनत कइले बानी. आपन सब काम बिलवा के, दुनिया भर के अकाज करिके दउड भाग कइले बानी त मेहनत के माँगत बानी.'

'त अब हमहीं रह गइल रहनी दलाली वसूले खातिर ? फौजी भइक के कहलसि, 'लाजो नइखे लागत पट्टीदारी में दलाली मांगत?'

'लजा तू जे मेहनताना के दलाली बतावत बाइस.'

'काहे के लाज करी ?'

'त चलस दलालिये समुझ के सही, पइसवा दे द !' गणेश तिवारी कहले, 'हमहीं बेशर्म हो जात बानी.'

'बेशर्म होई भा बेरहम. हम दलाली के मद में एको पइसा ना देब.'

'ना देबस त बाद में झँखबस.' गणेश तिवारी जोड़ले, 'रोअबस आ रोवलो पर रोआई ना आई !'

'धमकी मत दीं. फौजी आदमी हँई कवनो ऐरा गैरा ना.'

'फौजी ना, कलंक हउवस!' ऊ कहले, 'जवानन ला भरती में घूस कमा के आइल बाइस. गवर्मेट के बता देब त जेल में चक्की पीसबस.' ऊ एक बेर फेरु चेतवले कि, 'पइसा दे द ना त बहुते पछतइबस.'

बहुते रोअबस.’

‘ना देब.’ फौजी झिडकत कहलसि, ‘एक बेर ना, सौ बेर कहत बानी कि ना देब. रहल बाति गवर्मेट के त हम अब रिटायर हो गइल बानी. फंड-वंड सब ले चुकल बानी. गवर्मेट ना, गवर्मेट के बाप से कहि दऽ हमार कुछ बिगड़े वाला नइखे.’

‘गवर्मेट के छोडऽ, खेतवे में रो देबऽ.’

‘जाई जवन उखाड़े के होखे उखाड़ लीं. बाकिर हम एको पइसा नइखीं देबे वाला.’

‘पइसा कइसे देबऽ?’ ऊ हार के कहले, ‘तोहरा नसीब में रोवल जे लिखल बा.’ कहिके गणेश तिवारी चुपचाप चल अइले अपना घरे. खामोश रहले कुछ दिन. बाकिर साँच में खामोश ना रहले. एने फौजी अपना पुश्तैनी खेतन का साथही खरीदलो खेत के बड़ जोरदार तइयारी से बोआई करववलसि. खेत जब जोता बोआ गइल त गणेश तिवारी एक दिन खामोश नजर से खेत के देखिओ अइले. बाकिर जाहिरा तौर पर अबहियो कुछ ना कहले.

एक रात अचानक ऊ अपना हरवाहा के बोलववले. ऊ आइल त ओकरा के भेज के ओह आदमी के बोलववले जेकरा से फौजी खेत खरीदले रहल. ऊ आइओ गइल. आवते गणेश तिवारी के गोड छूवलसि आ किनारा जमीने पर उकडूं बइठ गइल.

‘का रे पोलदना का हाल बा तोर?’ तनि प्यार के चासनी घोरत आधे सुर में पूछलन गणेश तिवारी.

‘बस बाबा, राउर आशीर्वाद बा.’

‘अउर का होत बा?’

‘कुछ ना बाबा! अब तो खेतियो बारी ना रहल. का करबग भला? बइठल-बइठल दिन काटत बानी.’

‘काहें तोर लडिका बंबई से लवटि आइल का?’

‘ना बाबा, ऊ त ओहिजे बा.’

‘त तूहु काहे ना बंबई चल जात?’

‘का करब ओहिजा जा के बाबा ! उहँवा बहुते सांसत बा.’

‘कवने बाति के सांसत बा?’

‘रहे खाये के. हगे मूते के. पानी पीढा के. सगरी के सांसत बा.’

‘त एहिजा सांसत नइखे का?’

‘एह कुल्हि के सांसत त नहियै बा.’ ऊ रुकल आ फेर कहलसि, ‘बस खेतवा बेंच दिहला से काम काज कम हो गइल बा. निठल्ला हो गइल बानी.’

‘अच्छा पोलादन ई बताव कि जे तोर खेत तोरा फेरु वापसि मिल जाव त?’

‘अरे का कहत हई बाबा!’ ओ आंख सिकोडत कहलसि, ‘अबले त ढेरे पइसो चाट गइल बानी.’

‘का कइलिस रे?’

‘घर बनवा दिहनी.’ ऊ मुदुकात कहलसि, ‘पक्का घर बनवले बानी.’

‘त कुल्हि रुपिया घरही में फूंक दिहलिस ?’

‘नाहीं बाबा! दू ठो भईसियो खरीदले बानी.’

‘त कुच्छू पइसा नइखे बाँचल ?’ जइसे आह भरि के गणेश तिवारी पूछले, ‘कुच्छू ना !’

‘नाहीं बाबा तीस-चालीस हजार त अबहिनो हौ. बकिर ऊ नतिनी के बियाह खातिर बचवले बानी.’

‘बचवले बाइस नू ?’ जइसे गणेश तिवारी के सांस लवटि आइल. ऊ कहले, ‘तब त काम हो जाई.’

‘कवन काम हो जाई.’ अचकचा के पोलादन पूछलसि.

‘तें बुडबक हइस. तें ना समुझबे. ले, सुरती बनाव पहिले.’ कहके जोर से हवा खारिज कइलन गणेश तिवारी. पोलादन नीचे बइठल चूना लगा के सुरती मले लागल. आ गणेश तिवारी खटिया पर बइठले-बइठल बइठे के दिशा बदललन आ एक बेर फेरू हवा खारिज कइलन बाकिर अबकी तनिका धीरे से. फेर पोलादन से एक बीड़ा सुरती ले के मुँह में जीभ तर दबावत कहले, ‘अच्छा पोलादना ई बताव कि अगर तो खेतो तोरा वापिस मिल जाव आ तोरा पइसा वापिसो करे के ना पड़े त ?’

‘ई कइसे हो जाई बाबा?’ पूछत पोलादन हांफे लागल आ दउड के गणेश तिवारी के गोड पकड बइठल.

‘ठीक से बइठ, ठीक से.’ ऊ कहले, ‘घबराव जिन.’

‘लेकिन बाबा सहियै अइसन हो जाई.’

‘हो जाई बाकिर....!’

‘बाकिर का ?’ ऊ विहल हो गइल.

‘कुछ खर्चा-बर्चा लागी.’

‘केतना?’ कहत ऊ तनिका ढीला पड गइल.

‘घबरा मत.’ ओकरा के तोस देत ऊ अंगुरी पर गिनती गिनत धीरे से कहले, ‘इहे कवनो तीस चालीस हजार !’

‘एतना रुपया?’ कहत पोलादन निढाल हो के मुँह बा दिहलसि. पोलादन के ई चेहरा देख गणेश तिवारी ओकर मनोविज्ञान समुझ गइलन. आवाज तनिका अउर धीमा कइले. कहले, ‘सगरी पइसा एके साथ ना लागी.’ तनि रुकले आ फेर कहले, ‘अबहीं तू पचीस हजार रुपिया दे द. हाकिम हुक्काम के सुंघावत बानी. फेर बाकी तू काम भइला का बादे दीहस.’

‘बाकिर काम हो जाई?’ ओकरा सांस में जइसे सांस आ गइल. कहलसि, ‘खेतवा मिलि जाई?’

‘बिलकुल मिलि जाई.’ ऊ कहले, ‘बेफिकिर हो जा.’

‘नाई. मनो हम एह नाते कहत रहनी जे कि ऊ फौजी बाबा खेतवा जोत बो लिए हैं.’

‘खेतवा बोवले नू बाइन ?’

‘हँ, बाबा!’

‘कटले त नइखन ?’

‘अबहिन काटे लायक हईये नइखे.’

‘त जो. खेत बोवले जरूर बावे ऊ पागल फौजी, बाकिर कटबऽ तू.’ ऊ कुछ रुक के कहले, ‘बाकी पइसा तूं जल्दी से जल्दी ला के गिन जा !’

‘ठीक बा बाबा!’ ऊ तनि मेहराइल आवाज में कहलसि.

‘इ बतावऽ कि हमरा पर तोहरा भरोसा त बा नू ?’

‘पूरा-पूरा बाबा.’ ऊ कहलसि, ‘अपनहू से जियादा.’

‘तब इहां से जो! अउर हमरे साथे-साथे अपनहू पर विश्वास राख. तोर किस्मत बहुतै बुलंद बा.’ ऊ कहलें, ‘रातो बेसी हो गइल बा.’

रात साँचहु बेसी हो गइल रहे. ऊ उनुकर गोड़ छू के जाये लागल.

‘अरे पोलदना हे सुन!’ जात-जात अचानके गणेश तिवारी ओकरा के गोहरा पइले.

‘हँ, बाबा!’ ऊ पलटि के भागत आइल.

‘अब एह बाति पर कहीं गांजा पी के पंचाइत मत करे लगीहे !’

‘नाहीं बाबा!’

‘ना ही अपना मेहरारू, पतोह, नात-रिश्तेदार से राय बटोरे लगीहे.’

‘काहें बाबा!’

‘अब जेतना कहत बानी वोतने कर.’ ऊ कहले, ‘ई बाति हमरे तोरा बीचे रहल चाहीं . कवनो तिसरइत के एकर भनको जन लागे.’

‘ठीक बा बाबा!’

‘हँ, नाहीं त बनल बनावल काम बिगड़ जाई.’

‘नाहीं हम केहू से कुछ नाहीं कहब.’

‘त अब इहां से जो और जेतना जल्दी हो सकै पइसा दे जो!’ ऊ फेर चेतवले, ‘केहू से कवनो चर्चा नइखे करे के.’

‘जइसन हुकुम बाबा!’ कहि के ऊ फेर से गणेश तिवारी के दुनु गोड़ छूवलसि आ दबे पाँव चल गइल.

पोलादन चल त आइल गणेश तिवारी का घर से. लेकिन भर रास्ता उनुकर नीयत थाहता रहे. सोचत रहे कि कहीं अइसन ना होखे कि पइसवो चल जाव आ खेतवो ना मिले. ‘माया मिले न राम’ वाला मामिला मत हो जाव. ऊ एहु बाति पर बारहा सोचत रहे कि आखिर गणेश बाबा फौजी का जोतल बोअल खेत जवन ऊ खुदे बैनामा कइले बा पांच लाख रुपिया नकद ले कर, ओकरा वापिस कइसे मिल जाई भला ? ओ एही बिंदु पर बार-बार सोचता रहुवे. सोचता रहे लेकिन ओकरा कुछ बूझात ना रहुवे. आखिर में हार मान के ऊ सीधे-सीधे इहे मान लिहलसि कि गणेश बाबा के तिकडमी बुद्धिए कुछ कर देव त खेत मिली बिना पइसा दिहले. बाकिर ओकरा कवनो रास्ता ना लउकत रहे. एही उधेडबुन में ऊ घरे पहुंचल.

तीन चार दिन एही उधेडबुन में रहल. रातों में ओकरा आंखिं में नींद ना उतरे. इहे सब ऊ

सोचता रहि जाव. ओकरा लागल कि ऊ पागल हो जाई. बार-बार सोचे कि कहीं गणेश तिवारी ओकरा के ठगत त नइखन ? कि पइसवो ले लेसु आ खेतवो न मिलै? काहे से कि उनुका ठगी विद्या के कवनो पार ना रहे. एह विद्या का ओते कब ऊ केकरा के डँस लीहें एकर थाह ना लागत रहुवे. फेर ऊ इहो सोचे आ बार-बार सोचे कि आखिर कवना कानून से गणेश बाबा पइसा बिना वापिस दिहले फौजी बाबा के जोतल बोवल खेत काटे खातिर वापिस दिआ दीहें ? तब जब कि ऊ बाकायदा रंगीन फोटो लगा के रजिस्ट्री करवा चुकल बा. फेर ऊ सोचलसि कि का पता गणेश बाबा ओकरा बहाने फौजी बाबा के अपना ठगी विद्या से डंसत होखसु ? पट्टीदारी के कवनो हिसाब किताब बराबर करत होखसु ? हो न हो इहे बाति होखी ! ई ध्यान आवते ऊ उठ खड़ा भइल. अधरतिया हो चुकल रहे तबहियो ऊ अधरतिया के खयाल ना कइलसि. सूतल मेहरारू के जगवलसि, बक्सा खोलवलसि, बीस हजार रुपिया निकलवलसि आ ले के चहुँप गइल गणेश तिवारी का घरे.

पहुँच के कुंडा खटखटवलसि गँवे गँवे.

‘कौन ह रे?’ आधा जागल, आधा निंदिआइल तिवराइन जम्हाई लेत पूछली.

‘पालागी पँडाइन ! पोलादन हई.’

‘का ह रे पोलदना! ई आधी रात क का बाति परि गईल?’

‘बाबा से कुछ जरूरी बाति बा!’ ओ जोड़लसि, ‘बहुते जरूरी. जगा देई.’

‘अइसन कवन जरूरी बाति बा जे भोरे नइखे हो सकत. अधिए रात के होई?’ पल्लू आ अँछरा ठीक करत आंचल ठीक करत ऊ कहली.

‘काम अइसनै बा पँडाइन !’

‘त रुक, जगावत हई.’

कहि के पंडिताइन अपना पति के जगावे चल गइली. नींद टूटते गणेश तिवारी बउरइले, ‘कवन अभागा एह अधरतिया आइल बा ?’

‘पोलदना ह.’ सकुचात पंडिताइन कहली, ‘चिल्लात काहें हई ?’

‘अच्छा-अच्छा बइठाव सारे के बइठका में आ बत्ती जरा द.’ कहिके ऊ धोती ठीक करे लगले. फेर मारकीन के बनियाइन पहिरले, कुर्ता कान्हे रखले आ खांसत खंखारत बाहर अइले. बोली में तनि मिठास घोरत पूछले, ‘का रे पोलदना सारे, तोरा नींद ना आवेला का?’ तखत पर बइठत खंखारत ऊ धीरे से कहले, ‘हां, बोल कवन पहाड़ टूट गइल जवन तें आधी रात आ के जगा दिहले?’

‘कुछऊ नाहीं बाबा!’ गणेश तिवारी के दुनु गोड़ छूवत ऊंकडई बइठत बोलल, ‘ओही कमवा बदे आइल हई बाबा.’

‘अइसै फोकट में?’ गणेश तिवारी के बोली तनिका कड़ा भइल.

‘ना बाबा. हई पइसा ले आइल हई.’ धोती के फँट से रुपिया के गड्डी निकालत कहलसि.

‘बावे कतना?’ कुछ-कुछ टटोरत, कुछ-कुछ गुरेरत ऊ कहले.

‘बीस हजार रुपिया!’ ऊ खुसफुसाइल.

‘बस!’

‘बस धीरे-धीरे अउरो देब.’ ऊ आंखें मिचमिचात बोललसि, ‘जइसे-जइसे कमवा बढी, तइसे-तइसे.’

‘बनिया के दोकान बुझले बाड़े का ?’

‘नाहीं बाबा! राम-राम!’

‘त कवनो कर्जा खोज के देवे के बा ?’

‘नाहीं बाबा.’

‘त हमरा पर विश्वास नइखे का?’

‘राम-राम! अपनहू से जियादा!’

‘तब्बो नौटंकी फइलावत बाड़े !’ ऊ आंख तरेर के कहले, ‘फौजी पंडित के पांच लाख घोंटबे आ तीसो चालीस हजार खरचे में फाटत बा तोर !’

‘बाबा जइसन हुकुम देई.’

‘सबेरे दस हजार अउरी दे जो !’ ऊ कहले, ‘फेर हम बताएब. बाकिर बाकीओ पइसा तइयारे रखीहे !’

‘ठीक बा बाबा!’ ऊ मन मार के कहलसि.

‘अउर बाति एने-ओने मत करीहे.’

‘नाहीं-नाहीं. बिलकुले ना.’

‘ठीक बा. त जो!’

‘बाकिर बाबा काम हो जाई भला?’

‘काहें ना होई?’

‘मनो होई कइसे?’ ऊ थोड़का थाहे का गरज से बोलल.

‘इहै जान जइते घोड़न त पोलादन पासी काहें होखते?’ ऊ तनि मुसुकात, तनि इतरात कहले, ‘गणेश तिवारी हो जइते!’

‘राम-राम आप के हम कहां पाइब भला.’ ऊ उनुकर गोड़ धरत कहलसि.

‘जो अब घरे!’ ऊ हंसत कहले, ‘बुद्धि जेतना बा, वोतने में रह. जादा बुद्धि के घोड़ा मत दउडाव!’ ऊ कहले, ‘आखिर हम काहें खातिर बानी ?’

‘पालागी बाबा!’ कहि के ऊ गणेश तिवारी के गोड़ लगलसि आ चल गइल.

दोसरा दिन फजीरही फेर दस हजार रुपए लेके आइल त गणेश तिवारी तीन चार गो सादा कागज पर ओकरा अंगूठा के निशान लगवा लिहले. ऊ फेर घरे चल आइल. धकधकात मन लिहले कि का जाने का होखी. पइसा डूबी कि बाँची.

हफ्ता, दू हफ्ता बीतल. कुछ भइबे ना कइल. ऊ गणेश तिवारी का लगे जाव आ आंखे-आंखि में सवाल फेंके. त ओने से गणेशो तिवारी ओकरा के आंखे-आंखि में जइसे तसल्ली देसु. बोलत दुनु ना रहले. गणेश तिवारी के त ना मालूम रहे पोलादन का, बाकिर ऊ खुदे सुलगत रहल. मसोसत रहल कि काहें एतना पइसा दे दिहनी ? काहें गणेश तिवारी जइसन ठग आदमी का फेर में पड़ गइनी ? ऊ एही

उभचुभ में रहे कि एक राति गणेश तिवारी ओकरा घरे अइलन. खुसुर-फुसुर कइलन आ गांव छोड के कहीं चल गइले. ओही रात फौजी तिवारी का घर पर पुलिस के छापा पडल आ उनुका दुनु बेटा समेत उनुका के थाना उठा ले आइल. दोसरा दिने ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट का सोझा ऊ आ उनुकर दुनु बेटा पेश कइल गइले. उनुकर नाते रिश्तेदार, गोतिया पट्टीदार आ शुभचिंतक लोग बहुते दउड धूप कइल बाकिर जमानत ना मिलल काहे कि उनुका पर हरिजन एक्ट लाग गइल रहे. बड़का से बड़का वकील कुछ ना कर पवले ! कहल गइल कि अब त हाईये कोर्ट से जमानत मिल पाई. आ जाने जमानत मिली कि सजाय?

जेल जात-जात फौजी तिवारी रो पडले. रोवते-रोवत बोलले, "ई गणेश तिवारी गोहुवन सांप हवे. डंसले इहे बा. पोलदना तो बस इस्तेमाल भइल बा औजार का तरह." फेर ऊ एगो खराब गारी दिहलन गणेश तिवारी के. कहले, "भोसड़ी वाला के पचीस हजार के दलाली ना दिहनी त एह कमीनगी पर उतर आइल !"

"त दे दिहले होखतs दलाली !" फौजी तिवारी के साला बोलल, "हई दिन त ना देखे पडीत !"

"अब का बताई ?" कहिके फौजी तिवारी पहिले मूछ में ताव दिहले फेर फफक के रो पडले.

साँझ हो गइल रहे से उनुका आ उनुका बेटवन के पुलिस वाले पुलिस ट्रक में बइठा के जेहल ओरि चल दिहले. एह पूरा प्रसंग में फौजी तिवारी टूटल, रोआइन आ बेचारा जइसन कुछ ना कुछ बुदबुदात रहलन आ उनुकर बेटा निःशब्द रहले स. लेकिन ओकनी का चेहरा पर आग खउलत रहे आ आंखिन में शोला समाइल रहे.

जवने होखे बाकिर गांव भर का पूरा जवार के जानत देर ना लागल कि ई सब गणेश तिवारी के कइल धइल ह आ एही बहाने गांव जवार में एक बार फेरू गणेश तिवारी के आतंक पसर गइल, कवनो गुंडे भा कवनो आतंकवादी के आतंक का होखत होई जे गणेश तिवारी के आतंक होखत रहुवे. जवन आतंक ऊ खादी पहिर के , बिना हिंसा के आ खूब मीठ बोल के बरपावत रहले.

एह भा ओह तरह से लोग आतंक में जिये आ गणेश तिवारी के विलेज बैरिस्टरी चलत जात रहुवे.

कई बेर ऊ एह सभका बावजूद निठल्ला हो जासु. लगन ना होखे त गवनई के सट्टो ना होखे. मुकदमा ना होखे त कचहरीओ जा के का करीतें ? कबो-कभार मुकदमो कम पड़ जाव. त ऊ एगो खास तकनीक अपनावसु. पहिले ऊ ताइसु कि केकरा-केकरा में तनातनी चलत बा भा तनातनी के अनेसा बा भा उमेद हो सकेला. एहमे से कवनो एक फरीक से कई-कई बइठकी में मीठ-मीठ बोलि के, ओकर एक-एक नस तोल के ऊ ओकरा मन के पूरा थाह लेसु. कुछ "उकसाऊ" शब्द ओकरा कान में अइसहीं डालसु. बदला में ऊ दोसरा फरीक खातिर कडुआ शब्दन के भंडार खोल बइठे, कुछ राज अपना विरोधी पक्ष

के बता जाव आ आखिर में ओकर अइसन तइसन करे लागे. फेर गणेश तिवारी जब देखसु कि चिंगारी शोला बन गइल बा त ऊ बहुते "शांत" भाव से चुप करावसु आ ओकरा के बहुते धीरज आ ढाढस का संगे समुझावसु, "ऊ साला कुकुर ह त ओकरा से कुकुर बनि के लड़बऽ का ?" ऊ ओकरा के बिना मौका दिहले कहसु, "आदमी हउव आदमी का तरे रहऽ. कुता का साथे कुता बनल ठीक हवे का ?"

"त करीं का?" अगिला खीझियात पूछे.

"कुछु ना आदमी बनल रहऽ. अउर आदमी का पाले बुद्धि होले, सो बुद्धि से काम लऽ !"

"का करब बुद्धि ले के ?" अगिला अउड बउराव.

"बुद्धि के इस्तेमाल करऽ !" ऊ ओकरा के बहुते शांत भाव से समुझावसु, "खुद लड़े के का जरूरत बा ? तू खुद काहे लड़ऽतारऽ ?"

"त का चूड़ी पहिर के बइठ जाई ?"

"नाहीं भाई, चूड़ी पहिने के के कहत बा ?"

"त ?"

"त का !" ऊ गँवे से बोलसु, "खुद लड़ला ले नीमन बा कि ओकरे के लड़ा देत बानी."

"कइसे?"

"कइसे का?" ऊ पूछसु, "एकदम बुरबके हउव का ?" ऊ जोड़सु, "अरे कचहरी काहें बनल बा ! कर देत बानी एक ठो नालिश, दू ठो इस्तगासा !"

"हो जाई !" अगिला खुशी से उछलत पूछे.

"बिलकुल हो जाई." कहिके गणेश तिवारी दोसरा फरीक के टोहसु आ ओकरा खिलाफ पहिला फरीक के कइल कडुआ टिप्पणी, खोलल राज बतावसु त दोसरको फरीक लहकि जाव त ओकरो के धीरज धरावसु. धीरज धरावत-बन्हावत ओकरो के बतावसु कि, "खुद लड़े के का जरूरत बा ?" कहसु, "अइसन करत बानी कि ओकरे के लड़ा देत बानी."

एह तरे दुनु फरीक कचहरी जा के भिड़ जासु बरास्ता गणेश तिवारी. कचहरी में उनुकर "ताव" देखे लायक होके. सूट फाइल होखे, काउंटर, रिज्वाइंडरे में छ-आठ महीना गुजर जाव. साथ ही साथ दुनु फरीक के जोश खरोश अउर "तावो" उतरि जाव. नौबत तारीख के आ जाव. आ जइसन कि हमेशा कचहरियन में होला न्याय कहीं, फैसला कहीं मिले ना, तारीखे मिले. आ ई तारीखो पावे खातिर पइसा खरचे पड़े. एह पर पक्ष भा प्रतिपक्ष विरोध जतावे त गणेश तिवारी बहुते सफाई से ओकरा के "राज" के बात बतावसु कि, "अबकी के तारीख तोहर तारीख ह. तोहरा मिलल बा आ तोहरे तारीख पर ओकरो आवे के पड़ी !"

"अउर जे ऊ ना आइल त ?" अगिला असमंजस में पड़ल पूछे.

"आई नू !" ऊ बतावसु, "आखिर गवर्मेन्ट के कचहरी के तारीख हवे. आई कइसे ना. अउर जे ऊ ना आइल त गवर्मेन्ट बन्हवा के बोलवाई. अउर कुछ ना त ओकर वकिलवा त अइबे करी."

"आई नू !"

"बिलकुल आई !" कहि के गणेश तिवारी ओकरा के निश्चित करसु. आ भलही जेनरल डेट लागल होखे तबहियो गणेश तिवारी ओकरा के ओकर तारीख बतावसु आ ओकरा से आपन फीस वसूलसु. इहे काम आ संवाद ऊ दोसरको फरीक पर गाँठसु आ ओकरो से फीस वसूलसु. दुनु के वकीलन से कमीशन अलगा वसूलसु. कई बेर मुवक्किल उनुका मौजूदगी में वकील के पैसा देव त हालांकि ऊ अंगरेजी ना जानसु तबहियो मुवक्किल के सोझा ट्वेंटी फाइव फिफ्टी, हंडरेड, टू हंडरेड, फाइव हंडरेड, थाउजेंड वगैरह जइसन उनुकर जरूरत भा रेशियो जवने बने बोलि के आपन कमीशन तय करवा लेसु. बाद में अगिला पूछे कि, "वकील साहब से अऊर का बात भइल?" त ऊ बतावसु, "अरे कचहरी के खास भाषा ह, तू ना समुझभस." आ हालत ई हो जाव कि जइसे-जइसे मुकदमा पुरान पड़त जाव दुनु फरीक के "ताव" टूटत जाव आ ऊ लोग ढीला पड़ जाव. फेर एक दिन अइसन आवे कि कचहरी जाए का बजाय कचहरी के खरचा लोग गणेश तिवारी का घरे दे जाव. मुकदमा अउरी पुरान होखे त दुनु फरीक खुल्लमखुल्ला गणेश तिवारी के "खर्चा-बर्चा" देबे लागसु आ आखिरकार कचहरी में सिवाय तारीख के कुछ मिले ना से दुनु फरीक सुलह सफाई पर आ जासु आ एगो सुलहनामा पर दुनु फरीक दस्तखत करि के मुकदमा उठा लेसु. बहुते कम मुकदमा होखे जे एक कोर्ट से दूसरका कोर्ट, दूसरका कोर्ट से तिसरका कोर्ट ले चहुँपे. अमूमन त तहसीले में मामिला "निपट" जाव.

सौ दू सौ मुकदमन में से दसे पांच गो जिला जज तक चहुँपे बरास्ता अपील वगैरह. अउर एहिजो से दू चार सौ मुकदमन में से दसे पाँच गो हाइकोर्ट के रुख करि पावे. अमूमन त एहीजे दफन हो जाव. फेर गणेश तिवारी जइसन लोग नया क्लाइंट का तलाश में निकल पड़े. ई कहत कि, "खुदे लडला के का जरूरत बा, ओकरे के लडा दिहल जाव." आ "ओकरे के" लडावे का फेर में आदमी खुद लडे लागे.

लेकिन गणेश तिवारी का ई नयका शिकार पोलादन एकर अपवाद रहल. फौजी तिवारी के ऊ साचहु लडा दिहलसि काहे कि गणेश तिवारी ओकरा के हरिजन ऐक्ट के हथियार थमा दिहले रहन. हरिजन ऐक्ट अब उनुकर नया अस्त्र रहे आ साचहु उहे भइल जइसन कि गणेश तिवारी पोलादन से कहले रहले, "खेत बोवले जरूर फौजी पंडित बाकिर कटबस तूं." त पोलादन ऊ खेत कटलसि, बाकायदा पुलिस का मौजूदगी में. खेत कटला ले फौजी तिवारी आ उनुकर दुनु बेटा जमानत पर छूट के आ गइल रहले बाकिर दहशत का मारे ऊ खेत का ओरि झाँकहु ना गइले. खेत कटत रहल. काटत रहल पोलादन खुद. दू चार लोग फौजी तिवारी से आ के खुसुर फुसुर बतइबो कइल, "खेतवा कटात बा!" बाकिर फौजी

तिवारी कवनो प्रतिक्रिया ना दिहलन, ना ही उनुकर बेटा लोग.

एह पूरा प्रसंग पर लोक कवि एगो गानो लिखलन. गाना त ना चलल बाकिर लोक कवि के पिटाई जरूर हो गइल एह बुढौती में. फौजी तिवारी के छोटका बेटा पीटलसि. उहो फौज में रहल आ गणेश तिवारी अउर पोलादन के हथियार हरिजन एक्ट ओकर फौजी नौकरी दांव पर लगा दिहले रहे.

बहरहाल, जब खेत वगैरह कट कटा गइल, पोलादन पासी के बाकायदा कब्जा हो हवा गइल खेतन पर त एक रात गणेश तिवारी खांसत-खंखारत पोलादन पासी का घरे खुद चहुँपले. काहे कि ऊ त बोलवलो पर उनुका घरे ना आवत रहे. खैर, ऊ चहुँपले आ बाते बाति में दबल जबान से फौजी तिवारी मद में बाकी पइसा के जिक्र कर बइठले. तवना पर पोलादन दबल जबान से ना, खुला जबान गणेश तिवारी से प्रतिवाद कइलसि. बोलल, "कइसन पइसा ?" ऊ आंख तरेरलसि आ जोड़लसि, "बाबा चुपचाप बइठीं. नाई अब कानून हमहूँ जानि गइल हईं. कहीं आपहु के खिलाफ कलक्टर साहब के अंगूठा लगा के दरखास दे देब त मारल फिरल जाई."

सुन के गणेश तिवारी के दिल धक् हो गइल. आवाज मद्धिम हो गइल. बोलले, "राम-राम! ते त हमार चेला हऊवे! का बात करत बाड़े. भुला जो पइसा वइसा !" कहिके ऊ माथ पर गोड़ धइले ओहिजा से सरक लिहलन.

रास्ता भर ऊ कपार धुनत अइलन कि अब का करीहें ? बाकिर कुछ बुझात ना रहे उनुका. घरे अइलन. ठीक से खाइयो ना पवले. सूते गइलन त पंडिताइन गोड़ दबावे लगली. ऊ गँवे से कहलन, "गोड़ ना, कपार बथत बा." पंडिताइन कपार दबावे लगली. दबावत-दबावत दबले जुबान से पूछ बइठली, "आखिर का बात हो गइल?"

"बात ना, बड़हन बात हो गइल !" गणेश तिवारी बोलले, "एकठो भस्मासुर पैदा हो गइल हमरा से !"

"का कहत हई ?"

"कुछ नाहीं. तू ना समझबू दिक् मत करस. चुपचाप सुति जा !"

पंडिताइन मन मार के सूति गईली. लेकिन गणेश तिवारी का आंखिन में नींद ना रहे. ऊ लगातार सोचत रहलन कि भस्मासुर बनल पोलादन से कइसे निपटल जाव ! भगवान शंकर जइसन मति भा बँवत त रहे ना उनुका में बाकिर विलेज बैरिस्टर त ऊ रहबे कइलन. आ अब उनुकर इहे विलेज बैरिस्टरी दांव पर चल रहे. ओने उधर फौजी तिवारी के छोटका बेटा के फौज के नौकरी दांव पर रहुवे पोलादन पासी के हरिजन एक्ट के हथियार से. से ऊ ओकरे के साथे के ठनलन. गइलन ओकरा लगे मौका देखि के. बाकिर ऊ गणेश तिवारी का मुँह पर थूक दिहलसि आ अभद्वर गारी देबे लागल. कहलसि कि तोरा नरको में ठिकाना ना मिली. बाकिर गणेश तिवारी ओकरा कवनो बाति के खराब ना

मनलन. ओकर थूकल पौछ लिहलम. कहले, "अब गलती भइल बा त प्रायश्चितो करब. आ गलती कइला पर छोटको बड़का के दंड दे सकेला. हम दंड के भागी बानी." फेर अपना बोली में मिसिरी घोरत कहले, "हम अधम नीच बड़ले बानी एही लायक ! तबहियों तोहरा लोगन का साथे भारी अन्याय भइल बा. इंसाफो कराएब हमहीं. आखिर हमार खून हउव तू लोग. हमनी का नसन में आखिर एके खून दउडत बा. अब तनिका मतिभरम का चलते ई बदलि त ना जाई. आ ना ही ई चमार-सियारन भा पासियन-घासियन का कुटिलता से बदल सकेला. रहब त हमनी का एके खून. ऊ कहले, "त खून त बोली नू नाती !" एह तरह आखिरकार फौजी तिवारी के छोटका बेटा गणेश तिवारी के एह "एके खून" वाला पैंतरे में फंसिये गइल. भावुक हो गइल. फेर गणेश तिवारी आ ओकर छने लागल. उमिर के दीवर तूडत दुनु साथे-साथ घूमे लगले. गलबहियां डलले. पूरा गांव अवाक रहे कि ई का होखत बा ? विचलित पोलादन पासीओ भइल ई सब देखि सुनि के. ऊ तनिका सतर्को भइल ई सोचि के कहीं गणेश तिवारी पलट के ओकरे के ना डंस लेसु. बाकिर ओकरा फेर से हरिजन एक्ट, कलक्टर अउर पुलिस के याद आइल. त एह तरह हरिजन एक्ट के हथियार का गुमान में ऊ बेखबर हो गइल कि, "हमार का बिगाड़ लिहें गणेश तिवारी !"

दिन कटत रहल. एक मौसम बदल के दोसरका आ गइल बाकिर पोलादन पासी के गुमान ना गइल. ओह घरी ओकर बेटा बंबई से कमा के लवटल रहे. बिटिया के शादी बदे. शादी के तइयारी चलत रहे. पोलादन के नतिनी अपना सखियन का साथे फौजी तिवारी वाला ओही खेत क मेड़ पर गन्ना चूसत रहे कि फौजी तिवारी के छोटका बेटा ओने से गुजरल. ओकरा के देखि पोलादन के नतिनी ताना कसलसि, "रसरी जरि गइल, अईठन ना गइल !"

"का बोललिस ?" फौजी के बेटा डाँड में बान्हल लाइसेंसी रिवाल्वर निकाल के हाथ में लेत भइक के बोलल.

"जवन तू सुनलस ए बाबा !" पोलादन के नातिन ओही तंज में कहलसि आ खिलखिला के हँस दिहलसि. साथे ओकर सखियो हँसे लगली सँ.

"तनी एक बेर फेर से त कहु !" फौजी तिवारी के बेटा फेर भइकत ओही ऐंठ से बोलल.

"ई बंदूकिया में गोलियो बा कि बस खालिए भांजत हउव ए बाबा !"

एतना सुनल रहेकि फौजी तिवारी के बेटा "ठांय" से हवा में फायर कइलसि त सगरी लइकी डेरा के भागे लगली. ऊ दउड के पोलादन के नातिन के कस के पकड़ लिहलसि, "भागत काहे बाड़ी ? आव बताई कि बंदूक में केतना गोली बा !" कहिके ऊ ओहिजे खेत में लइकी को लेटा के निवस्तर कर दिहलसि. बाकी लइकी भाग चलली सँ. पोलादन के नातिन बहुते चीखल चिल्लाइल. हाथ गोड़ फँकत बहुते बचाव कइलसि बाकिर बाच ना पवलसि बेचारी. ओकर लाज लुटाइये गइल. फौजी तिवारी के बेटा

ओकरा देहि पर अबही ले झुकले रहला का बाद अबगे निढाले भइल रहुवे कि पोलादन पासी, ओकर बेटा आ नाती लाठी, भाला लिहले चिल्लात आवत लउकले. ऊ आव देखलसि ना ताव. बगल में पडल रिवाल्वर उठवलसि. रिवाल्वर उठवते लइकी सन्न हो गइल. बुदबदाइल "नाई बाबा, नाई, गोली नाहीं."

"चुप भोंसड़ी!" कहिके फौजी के बेटा रिवाल्वर ओकरा कपारे पर दे मरलसि, साथही निशाना साधलसि आ नियरा आवत पोलादन, ओकरा बेटा, ओकरा नाती पर बारी-बारी गोली दाग दिहलसि. फौजी तिवारी के बेटवो फौजी रहल से निशाना अचूक रहे. तीनों ओहिजे ढेर हो गइले.

अब तीनों के लहुलुहान लाश आ निवस्तर लइकी खेत में पडल रहे. एकनी के केहु तोपत रहुवे त बस सूरज के रोशनी !

पूरा गांव में सन्नाटा पसर गइल. गाय, बैल, भैंस, बकरी सब के सब खामोश हो गइले. पेड़ के पत्तो खड़खड़ाइल बंद कर दिहले. बयार जइसे थथम गइल रहे.

खामोशी टूटल फौजी तिवारी के जीप का गड़गड़ाहट से. फौजी तिवारी, उनुकर दुनु बेटा आ परिवार के सगरी बेकत घर में ताला लगा के जीप में बइठ गांव से बहरी चलि गइले. साथ में पइसा, रुपिया, जेवर-कपड़ा-लत्ता सगरी ले लिहलन. फौजी तिवारी के बेटा जइसे कि सब कुछ सोच लिहले रहुवे. शहर पहुंचिके ऊ अपना वकील से मिलल. पूरा वाकया सही-सही बतवलसि आ वकील के सलाह पर दोसरा दिने कोर्ट में सरेंडर कर दिहलसि.

ओने गांव में पसरल सन्नाटा फेर पुलिस तूडलसि. फौजी तिवारी के घर त भाग चुकल रहुवे. पुलिस तबहियो "सुरागरशी" कइलसि आ गणेश तिवारी को धर लिहलसि. लेकिन "हजूर-हजूर, माई-बाप" बोल-बोल के ऊ पुलिसिया मार पीट से अपना के बचवले रहले आ कुछ बोलले ना. जानत रहले कि थाना के पुलिस कुछ सुने वाली नइखे. हँ, जब एस.एस.पी. अइले तब ऊ उनुका गोड़ पर लोट गइले. बोलले, "हजूर आप त जानते हई कि हम गरीब गुरबा के साथी हईं." ऊ कहले, "ई पोलादन जी का साथे जब फौजी अन्याय कइलें तब हमही त दरखास ले-ले के आप हाकिम लोगन का लगे दउडत रहीं. आ आजु देखीं कि बेचारा खानदान समेत मार दिहल गइल !" कहि के ऊ रोवे लगले. कहले, "हम त ओकर मददगार रहनी हजूर आ दारोगा साहब हमहीं के बान्ह लिहलें." कहिके ऊ फेर एस.एस.पी. का गोड़ पर टोपी राखत पटा गइले.

"क्या बात है यादव?" एस.एस.पी. दारोगा से पूछले.

"कुछ नहीं सर ड्रामेबाज है." दारोगा बोलल, "सारी आग इसी की लगाई हुई है."

"कोई गवाह, कोई बयान वगैरह है इस के खिलाफ?"

"नो सर!" दारोगा बोलल, "गांव में इस की बड़ी दहशत है. बताते भी हैं इस के खिलाफ तो चुपके-चुपके, खुसुर-फुसुर. सामने आने को कोई तैयार नहीं है." ऊ बोलल, "पर मेरी पक्की इंफार्मेशन है कि

सारी आग, सारा जहर इस बुढ़े का ही फैलाया हुआ है."

"हजूर आप हाकिम हई जवन चाहीं करीं बाकिर कलंक मत लगाई." गणेश तिवारी फफक के रोवत बोलले, "गांव के एगो बच्चो हमरा खिलाफ कुछ ना कहि सके. राम कसम हजूर हम आजु ले एगो चिउँटिओ नइखीं मरले. हम त अहिंसा के पुजारी हईं सर, गांधी जी के अनुयायी हईं सर !"

"यादव तुम्हारे पास सिर्फ इंफार्मेशन ही है कि कोई फैक्ट भी है."

"अभी तो इंफार्मेशन ही है सर. पर फैक्ट भी मिल ही जाएगा." दारोगा बोलल, "थाने पहुंच कर सब कुछ खुद ही बक देगा सर !"

"शट अप, क्या बकते हो!" एस.एस.पी. बोलल, "इसे फौरन छोड़ दो."

"किरिपा हजूर, बड़ी किरिपा!" कहिके गणेश तिवारी एस.एस.पी. के गोड़ पर फेरु पटा गइले.

"चलो छोड़ो, हटो यहां से !" एस.एस.पी. गणेश तिवारी से गोड़ छोड़ावत कहले, "पर जब तक यह केस निपट नहीं जाता, गांव छोड़ कर कहीं जाना नहीं."

"जइसन हुकुम हजूर !" कहिके गणेश तिवारी ओहिजा से फौरन दफा हो गइले.

बाकिर गांव में सन्नाटा अउर तनाव जारी रहूवे. गणेश तिवारी समुझ गइले कि केस लमहर खिंचाइल त देर सबेर उहो फंसि सकेले. से ऊ बहुते चतुराई से पोलादन पासी, ओकरा बेटा आ नाती का लाशन का लगे से लाठी, भाला के बरामदगी दर्ज करवा दिहले. अउर फौजी तिवारी के वकील से मिलिके पेशबंदी कर लिहले. आ भइल उहे जे ऊ चाहत रहले. कोर्ट में ऊ साबित करवा लिहले कि हरिजन एक्ट का नाम पर पोलादन पासी वगैरह फौजी तिवारी आ उनुका परिवार के उत्पीड़न करत रहले. ई सगरी मामिला सवर्ण उत्पीड़न के ह. बाकिर चूंकि सवर्ण उत्पीड़न पर कवनो कानून नइखे से ऊ एकर ठीक से प्रतिरोध ना करि पवले आ हरिजन एक्ट का तहत पहिले जेहल में भेजा गइले. तब जब कि बाकायदा नकद पांच लाख रुपिया दे के होशोहवास में खेत के रजिस्ट्री करववले रहले. पोलादन के ई पांच लाख रुपिया देबे के सुबूतो गणेश तिवारी पेश करवा दिहलन आ खुदे गवाह बनि गइलन. बात हत्या के आइल त फौजी तिवारी के वकील ने एकरा के हत्या ना, अपना के बचावे के कार्रवाई स्टैब्लिश कर दिहलन. बतवलन कि तीन-तीन लोग लाठी भाला लिहले ओकरा के मारे आवत रहले त उनुका मुवक्किल के अपना रक्षा खातिर गोली चलावे के पडल. कई पेशी, तारीखन का बाद जिला जजो वकील के एह बात से "कनविंस" हो गइले. रहल बाति पोलादन के नातिन से बलात्कार के त जांच अउर परीक्षण में उहो "हैबीचुअल" पावल गइल. आ इहो मामिला ले दे के रफा दफा हो गइल. पोलादन के नातिनो चुपचाप "मुआवजा" पा के "खामोश" हो गइल.

बेचारी करबो करीत त का ?

सब कुछ निपट गइला पर एक दिन गणेश तिवारी चहुँपले फौजी तिवारी का घरे. खांसत-

खखारत. बाते बाति में गांधी टोपी ठीक करि के जाकेट में हाथ डालत कहले, "आखिर आपन खून आपने खून होला."

"चुप्प माधरचोद !" फौजी तिवारी के छोटका बेटा बोलल, "जिंदगी जहन्नुम बना दिहलs पचीस हजार रूपए के दलाली खातिर आ आपन खून, आपन खून के रट लगवले बइठल ना." ऊ खउलत कहलसि, "भागि जा माधरचोद बुढऊ नाहि त तोहरो के गोली मारि देब. तोहरा के मरला पर हरिजन एक्टो ना लागी."

"राम-राम! बच्चा बऊरा गइल बा. नादान हवे." कहत गणेश तिवारी मनुहार भरल आंखिन से फौजी तिवारी का ओरि देखलन. त फौजीओ तिवारी के आंख गणेश तिवारी के तरेरत रहल. से "नारायन-नारायन!" करत गणेश तिवारी बेआबरू होइये के सही ओहिजा से खिसकिये गइला में आपन भलाई सोचलन.

त ई आ अइसनके तमाम कथा कहानी के केंद्र में रहे वाला इहे गणेश तिवारी अब भुल्लन तिवारी के नतिनी का शादी में रोडा बने के भूमिका बान्हत रहले. कारण दू गो रहे. पहिला त ई कि भुल्लन तिवारी के नतिनी का शादी खातिर पट्टीदारी के लोगन में से चुनल "संभ्रांत" लोग का सूची में लोक कवि उनुकर नाम काहे ना रखले. आ नाम राखल त फरका भैंटो कइल जरूरी ना समुझले. तब जब कि ऊ उनुकर "चेला" हवे. दोसरका कारण ई रहे कि उनुकर जब एह शादी में कइसे किनारे रह गइल ? त एह तरह अहम आ पइसा दुनु के भूख उनुकर तुष्ट ना होत रहुवे. से ऊ चैन से कइसे बइठल रहतन भला ? खास कर तब आ जब लड़िकी के खानदान ऐबी होखो. बाप एइस से मरल रहुवे आ आज्ञा जेल में रहल ! तबहियो उनुका के पूछल ना गइल. त का उनुकर "प्रासंगिकता" गांव जवार में खतरा में पड़ गइल रहे ? का होखी उनुका विलेज बैरिस्टरी के ? का होखी उनुकर बियहकटवा वाला कलाकारी के ?

वइसे त हर गांव, हर जवार के हवा में शादी काटे वाला बियहकटवा बिचरते रहेले. कवनो नया रूप में, कवनो पुरान रूप में त कवनो बहुरूपिया रूप में. लेकिन एह सब कुछ का बावजूद गणेश तिवारी के कवनो सानी ना रहे. जवना सफाई, जवना सलीका, जवना सादगी से ऊ बियाह काटसु ओह पर नीमन-निमन लगो न्यौछावर हो जायं. लड़िकी होखो भा लड़िका सबकर ऐब ऊ एह चतुराई से उघाइसु आ लगभग तारीफ के पुल बान्हत कि लोग लाजवाब हो जाव. अउर उनुकर "काम" अनायासे हो जाव. अब कि जइसे कवनो लड़िकी के मसला होखे त ऊ बतावसु, "बहुते सुंदर, बहुते सुशील. पढ़े लिखे में अक्वल. हर काम में "निपुण". अइसन सुशील लड़िकी रउरा हजार वाट क बल्ब बार के खोजीं तबो ना मिली. आ सुंदर अतना कि बाप रे बाप पांच छ गो ल लौंडा पगला चुकल बाड़े."

"का मतलब?"

"अरे, दू ठो तो अबहिये मेंटल अस्पताल से वापिस आइल बाड़े"

"इ काहें?"

"अरे उनहन बेचारन के का दोष. ऊ लड़िकी हईये बिया एतना सुंदर." ऊ बतावसु, "बड़े-बड़े विश्वामित्र पगला जायँ."

"ओकरा सुंदरता से इनहन के पगलइला के का मतलब ?

"ए भाई, चार दिन आप से बतियाए आ पँचवा दिने दोसरा से बोले-बतियाए लागे, फेर तिसरा, चउथा से. त बकिया त पगलइबे नू करीहें !"

"ई का कहत बानी आप?" पूछे वाला के इशारा होखे कि, "आवारा हियऽ का?"

"बाकी लड़िकी गुण के खान हियऽ." गणेश तिवारी अगिला के सवाल अउर इशारा जानतबूझत पी जासु आ तारीफ के पुल बान्हत जासु. उनुकर काम हो जाव.

कहीं-कहीं ऊ लड़िकी के "हाई हील" के तारीफ कर बइठसु बाकिर इशारा साफ होखे कि नाटी हियऽ. त कहीं ऊ लड़िकी के मेकअप कला के तारीफ करत इशारा करसु कि लड़िकी सांवर हवे. बात अउर बढ़ावे के होखे त ऊ डाक्टर, चमइन, दाई, नर्स वगैरहो शब्द हवा में बेवजह उछाल देसु कवनो ना कवनो हवाले आ इशारा एबार्सन क होखे. भैंगी आंख, टेढ़ी चाल, मगरूर, घुईस, गोहुवन जइसन पुरनको टोटका ऊ सुरती ठोंकते खात आजमा जासु. उनका युक्तियन आ उक्तियन क कवनो एक चौहद्दी, कवनो एक फ्रेम, कवनो एक स्टाइल ना होखत रहे. ऊ त रोजे नया होत रहे. महतारी के झगडालू होखल, मामा के गुंडा होखल, बाप के शराबी होखल, भाई के लुक्कड भा लखैरा होखल वगैरहो ऊ "अनजानते" सुरती थूकत-खांसत परोस देसु. लेकिन साथ-साथ इहो संपुट जोड़त जासु कि, "लेकिन लड़िकी हियऽ गुण के खान." फेर अति सुशील, अति सुंदर समेत हर काम में निपुण, पढ़ाई-लिखाई में अक्वल, गृह कार्य में दक्ष वगैरह.

इहे-इहे आ अइसने-अइसन तरकीब ऊ लड़िकनो पर आजमावसु. "बहुते होनहार, बहुते वीर" कहत ओकरा "संगत" के बखान बघार जासु आ काम हो जाव.

एक बेर त गजबे हो गइल. एगो लड़िका के बाप बड़ा जतन से ओह दिन बेटा के तिलक के दिन निकलववलन जवना दिने का ओह दिन का आगहू-पाछा गांव में गणेश तिवारी के मौजूदगी के अनेसा ना रहल. बाकिर ना जाने कहाँ से ऐन तिलक चढ़े से कुछ समय पहिले ऊ गांव में ना सिरिफ प्रगट हो गइलें बलुक ओकरा घरे हाजिरो हो गइले. सिरिफ हाजिरे ना भइलन. जाकेट से हाथ निकालत गांधी टोपी ठीक करत-पहिनत तिलक चढ़ावे आइल तिलकहरुवने का बीचे जा के बइठ गइलन. उनुका ओहिजा बइठते घर भर के लोग के हाथ गोड़ फूल गइल. दिल धकधकाए लागल. लोगो तिलकहरुवन के आवभगत छोड़ के गणेश तिवारी के आवभगत शुरू कर दिहल. लड़िका के बाप आ बड़का भाई गणेश

तिवारी क आजू-बाजू आपन झूटी लगा लिहले. जेहसे उनुका सम्मान में कवनो कमी ना आवे आ दोसरे, उनुका मुंह से कहीं लड़िका के तारीफ मत शुरू हो जाव. गणेश तिवारी के नाश्ता अबहिन चलत रहल आ ऊ ठीक वइसहीं काबू में रहलें जइसे अखबारन में दंगा वगैरह का बाद खबरन के मथैला छपेला "स्थिति तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में." त "तनावपूर्ण लेकिन नियंत्रण में" वाला हालाते में लड़िका के बाप के एगो उपाय सूझल कि काहे ना बेटा के बोलवा के गणेश तिवारी के गोड़ छूआ के इनकर आशीर्वाद दिआ दिहल जाव. जेहसे गणेश तिवारी के अहं तुष्ट हो जाव आ तिलक बिआह बिना विघ्न-बाधा संपन्न हो जाव. आ ऊ इहे कइलन. तेजी से घर में गइले आ ओही फुर्ती से बेटा के लिहले चेहरा पर अधिके उत्साह आ मुसकान टांकत गणेश तिवारी का लगे ले गइलन जे बीच तिलकहरु स्पेशल नाश्ता पर जुटल रहले. लड़िका के देखते गणेश तिवारी धोती के एगो कोर उठवले आ मुंह पोंछत लड़िका के बापो से बेसी मुसकान आ उत्साह अपना चेहरा पर टांक लिहले आ आंख के कैमरा "क्लोज शाट" में लड़िका पर टिका दिहले. बाप के इशारा पर लड़िका झुकल आ दनुबु हाथे गणेश तिवारी के दुनु गोड़ दू दू बेर एके लाइन में छुवत चरण-स्पर्श करते रहल कि गणेश तिवारी आशीर्वाद के झड़ी लगा दिहले. सगरी विशेषण, सगरी आशीर्वाद देत आखिर में ऊ आपन ब्रह्मास्त्र फेंक दिहलन, "जियऽ बेटा! पढ़ाई लिखाई में त अक्वल रहबे कइलऽ, नौकरीओ तोहरा अक्वल मिल गइल, अब भगवान के आशीर्वाद से तोहार बिआहो होखत बा. बस भगवान क कृपा से तोहर मिरिगियो ठीक हो जाव त का कहे के!" ऊ कहलन, "चलऽ हमार पूरा-पूरा आशीर्वाद बा !" कहिके ऊ लड़िका के पीठ थपथपवले. तिलकहरुअन का ओर मुसुकात मुखातिब भइलन आ लगभग वीर रस में बोललन, "हमरा गांव, हमरा कुल के शान हउवन ई." ऊ आगे जोड़लन, "रतन हवे रतन. आप लोग बहुते खुशनसीब हईं जे अइसन योग्य आ होनहार लड़िका के आपन दामाद चुननी." कहिके ऊ उठ खड़ा होत कहले, "लमहर यात्रा से लवटल बानी. थाकल बानी. आराम कइल जरूरी बा. माफ करब, चलत बानी. आज्ञा दीं." कहिके दुनु हाथ ऊ जोड़लन आ ओहिजा से चल दिहलन.

गणेश तिवारी त ओहिजा से चल दिहले बाकिर तिलकहरुअन का आंखिन आ मन में सवालन के सागर छोड़ गइले. पहिले त आंखिये-आंखि में ई सवाल सुनुगल. फेर जल्दिये जबान पर भदके लागल इ सवाल कि, "लड़िका के मिर्गी आवेला ?" कि, "लड़िका त मिर्गी क रोगी ह?" कि, "मिर्गी के रोगी लड़िका से शादी कइसे हो सकेला?" कि, "लड़िका के जिनिगी खराब करे के बा का?" आ आखिरकार एह सवालन के आग लहकिए गइल. लड़िका के बाप, भाई, नात-रिश्तेदार आ गांव के लोगो सफाई देत रह गइल, कसम खात रह गइल कि, "लड़िका के मिर्गी ना आवे," कि "लड़िका के मिर्गी आइत त नौकरी कइसे मिलीत ?" कि "अगर शक होइए गइल बा त डाक्टर से जँचवा लीं!" आदि-आदि. बाकिर एह सफाइयन आ किरियन के असर तिलकहरुअन पर जरिको ना पड़ल. आ ऊ लोग जवन कहाला थरिया-

परात, फल-मिठाई, कपड़ा-लता, पड़सा वगैरह लिहले ओहिजा से उठ खड़ा भइले. फेर बिना तिलक चढ़वलही चल गइलन. ई कहत कि, "लड़िकी के जिनिगी बरबाद होखे से बाच गइल." साथही गणेश तिवारी ओरि इंगितो करत कि, "भला होखो ओह शरीफ आदमी के जे समय रहिते आँख खोल दिहलसि. नाहीं त हमनी का त फँसिये गइल रहीं सँ. लड़िकी के जिनिगी बरबाद हो जाइत!"

जइसे अनायासे आशीर्वाद दे के गणेश तिवारी एह लड़िका के निपटवले रहले वइसही भुल्लन तिवारी के नतिनी का शादीओ में ऊ अनायासे भाव में सायास निपटावे खातिर जुट गइल रहले. भुल्लन तिवारी के नातिन के कम लोक कवि के जेब के बहाने अपना गांठ के चिंता उनुका के बेसी तेज कइले रहवे. बाति वइसहीं बिगइल रहवे, गणेश तिवारी के तेजी आग में घीव के काम कइलसि. आखिरकार बात लोक कवि ले चहुँपल. पहुंचवलसि भुल्लन तिवारी के बेटा के साला लखनऊ में आ कहलसि कि, "बहिन के भाग में अभागे लिखल रहे लागत बा भगिनी का भाग में एहुसे बड़ अभाग लिखल बा."

"घबराई मत." लोक कवि उनुका के तोस दिहलन. कहलन कि, "सब ठीक हो जाई."

"कइसे ठीक हो जाई ?" साला बोलल, "जब गणेश तिवारी के जिन्न ओकरा बिआह का पाछा लाग गइल बा. जहँवे जाई आपसे पहिले गणेश तिवारी चोखा चटनी लगा के सब मामिला पहिलही बिगाड़ चुकल रहेलें !"

"देखीं अब हम का कहीं, आपो भी ब्राह्मण हई. हमरा ला देवता तुल्य हई बाकिर बुरा मत मानब." लोक कवि बोले, "गणेशो तिवारी ब्राह्मण हउवें. हमार आदरणीय हउवें. बाकिर हउवन कुत्ता. कुत्तो से बदतर!" लोक कवि जोड़लन, "कुत्ता के इलाज हम जानीलें. दू चार हजार मुँह पर मार देब त ई गुर्गाए, भूँके वाला कुत्ता दुम हिलावे लागी."

"लेकिन कब? जब सबहर जवार जान जाई तब? जब सब लोग थू-थू करे लागी तब?"

"नाहीं जल्दिए." लोक कवि बोलले, "अब इहै गणेश तिवारिए आप के भगिनी के तारीफ करी."

"तारीफ त करते बा." साला बोलल, "तारीफे कर के त ऊ काम बिगाड़त बा. कि लड़की सुंदर हवे, सुशील हवे. बाकिर बाप अघोड़ी रहल. एड्स से मर गइल आ आज्ञा खूनी ह. जेल में बंद बा."

"त ई बतिया कइसे छुपा लेब आप आ हम?"

"नाहीं बाति एहीं ले थोड़े बा." ऊ बोलल, "गणेश तिवारी प्रचारित करत बाड़े कि भुल्लन तिवारी के पूरा परिवार के एड्स हो गइल बा. साथ ही भगिनियो के नाम ऊ नत्थी कर देत बाड़े."

"भगिनिया के कइसे नत्थी कर लीहें?" लोक कवि भड़कले.

"ऊ अइसे कि..... साला बोलल, "जाए दीं ऊ बहुते गिरल बात कहत बाड़े."

"का कहतारें?" धीरे से बुदबुदइले लोक कवि, "अब हमरा से छुपवला से का फायदा? आखिर ऊ त कहते बाड़ब नू?"

"ऊ कहत बाड़े कि जीजा जी अघोड़ी रहलन बेटी तक के ना छोड़ले. से बेटीओ के एड्स हो गइल बा."

"बहुते कमीना बा!" कहत लोक कवि पुचच से मुंह में दबाइल सुरती थूकलें. बोलले, "आप चलीं, हम जल्दिए गणेश तिवारी के लाइन पर लेआवत बानी." वह बोलले, "ई बात रहल त पहिलवें बतवले रहीतs. एह कमीना कुता के इलाज हम कर दिहले रहतीं."

"ठीक बा त जइसे एतना देखें हैं आप तनी एतना अउर देख लीं." कहिके साला उठ खड़ा भइल.

"ठीक बा, त फेर प्रणाम!" कहिके लोक कवि दुनु हाथ जोड़ लिहले.

भुल्लन तिवारी के बेटा के साला के जाते लोक कवि चेयरमैन साहब के फोन मिलवलन आ सगरी रामकहानी बतवलन. चेयरमैन साहब छूटते कहले, "जवन पइसा तू ओकरा के दिहल चाहत बाड़s उहे पइसा कवनो लठैत भा गुंडा के दे के ओकर कुट्टम्मस करवा द. भर हीक कुटवा द, हाथ पैर तूडवा द. सगरी नारदपना भूला जाई."

"ई ठीक होखी भला?" लोक कवि ने पूछा.

"काहें खराब का होखी ? चेयरमैनो साहब पूछलन. कहलन, "अइसन कमीनन का साथे इहे करे के चाहीं."

"आप नइखीं जानत ऊ दलाल ह. हाथ गोड़ टूटला का बादो ऊ अइसन डरामा रच लीहि कि लेबे के देबे पड़ जाई." लोक कवि बोले, "जे अइसे मारपीट से ऊ सुधरे वाला रहीत त अबले कई राउंड ऊ पिट-पिटा चुकल रहीत. बड़ा तिकड़मी ह से आजु ले कब्बो नइखे पिटाइल." ऊ कहलन, "खादी वादी पहिर के अहिंसा-पहिंसा वइसै बोलत रहेला. कहीं पुलिस-फुलिस के फेर पड़ गइल त बदनामी हो जाई."

"त का कइल जाव? तूहीं बतावs !"

"बोले के का बा. चलि के कुछ पइसा ओकरा मुँह पर मार आवे के बा!"

"त एहमें हम का करीं?"

"तनी सथवां चलि चली. अउर का!"

"तोहार शैंडो त हई ना कि हरदम चलल चलीं तोहरा साथे!"

"का कहत बानी चेयरमैन साहब!" लोक कवि बोलले, "आप त हमरे गार्जियन हई."

"ई बात है?" फोने पर ठहाका मारत चेयरमैन साहब कहले, "त चलs कब चले के बा ?"

"नहीं, दू चार ठो पोरोगराम एने लागल बा, निपटा लीं त बतावत बानी." लोक कवि कहले, "असल में का बा कि एह तरे के बातचीत में आप के साथ होला से मामिला बैलेंस रहेला अउर बिगड़ल काम बनि जाला."

"ठीक बा, ठीक बा. अधिका चंपी मत करs. जब चले होखी त बतइहs." ऊ रुकले आ कहले, "अरे

हँ, आजु दुपहरिया में का करत बाइस?"

"कुछ नाई, तनी रिहर्सल करब कलाकारन का साथे."

"त ठीक बा. तनी बीयर-सीयर ठंडी-वंडा मंगवा लीहस हम आएब." ऊ कहलन, "तोहरा के आ तोहरा रिहर्सल के डिस्टर्ब ना करब. चुपचाप पीयत रहब आ तोहार रिहर्सल देखत रहब."

"हँ, बाकिर लडिकियन का साथे नोचा-नोची मत करब."

"का बेवकूफी बतियावत बाइस." ऊ कहले, "तू बस बीयर मंगवा रखीहस."

"ठीक बा आई!" लोक कवि बेमन से कहले.

चेयरमैन साहब बीच दुपहरिया लोक कवि किहाँ पहुँच गइले. रिहर्सल अबही शुरूओ ना भइल रहे लेकिन चेयरमैन साहब के बीयर शुरू हो गइल. बीयर का साथे लइया चना, मूंगफली आ पनीर के कुछ टुकड़ा मंगवा लिहल रहे. एक बोतल बीयर जब ऊ पी चुकले आ दोसरकी खोले लगले त बोतल खोलत-खोलत ऊ लोक कवि से बेलाग हो के कहले, "कुछ मटन-चिकन मंगवावस आ ह्विस्कीओ!" ऊ जोड़लें, "अब खाली बीयर-शीयर से दुपहरिया कटे वाली नइखे."

"अरे, लेकिन रिहर्सल होखल बाकी बा अबही." लोक कवि हिचकत संकोच घोरत कहले.

"रिहर्सल के रोकत बा?" चेयरमैन साहब कहले, "तू रिहर्सल करत-करवावत रह. हम खलल ना डालब. किचबिच-किचबिच मत करस, चुपचाप मंगवा ल." कहिके ऊ जेब से कुछ रुपिया निकाल लोक कवि ओर फेंक दिहले.

मन मार लोक कवि रुपिया उठवले, एगो चेला के बोलवले आ सब चीज ले आवे खातिर बाजार भेज दिहले. एही बीच रिहर्सलो शुरू हो गइल. तीन गो लडिकी मिल के नाचल गावल शुरू कर दिहली. हारमोनियम, ढोलक, बेंजो, गिटार, झाल, ड्रम बाजे लागल. लडिकिया सब नाचत गावत रहलीं, "लागसता जे फाटि जाई जवानी में झुल्ला/आलू, केला खइलीं त एतना मोटइलीं/दिनवा में खा लेहलीं, दू-दू रसगुल्ला!" अउर बाकायदा झुल्ला देखा-देखा, आंख मटका-मटका, कुल्हा अउर छातियन के स्पेशल मूवमेंट्स के साथे गावत रहलीं. अउर एने ह्विस्की के चुस्की ले-ले के चेयरमैन साहब भर-भर आंख "ई सब" देखत रहले. देखत का रहले पूरा-पूरा मजा लेत रहले. गाना के रिहर्सल खतम भइल त चेयरमैन साहब दू गो लडिकियन के अपना तरफ बोलवले. दुनु सकुचात चहुँपली सँ त ओहनी के आजू-बाजू कुर्सियन पर बइठवले. ओहनी के गायकी के तारीफ कइलन. फेर एने ओने के बतियावत ऊ एगो लडिकी के गाल सुहरावे लगलन. गाल सुहरावत-सुहरावत कहले, "एकरा के तनी चिकन आ सुंदर बनावस!" लडिकी लजाइल. सकुचात कहलसि, "प्रोग्राम में मेकअप कर लिहले. सब ठीक हो जाला."

"कुछ ना!" चेयरमैन साहब बोलले, "मेकअप से कब ले काम चली? जवानीए में मेकअप करत बाइ त बुढापा में का करबू" ऊ कहले, "कुछ जूस वगैरह पियस, फल फ्रूट खा!" कहत ऊ अचानके ओकर

ब्रेस्ट दबावे लगले, "इहो बहुत ढीला बा. एकरो के टाइट करऽ!" लड़की अफना के उठ खड़ा भइल त ओकर हिप के लगभग दबावत आ थपथपावत कहले, "इहो ढीला बा, एकरो के टाइट करऽ. कुछ इक्सरसाइज वगैरह कइल करऽ. अबही जवान बाइ, अबहिये से ई सब ढीला हो जाई त काम कइसे चली?" ऊ सिगरेट के एगो लमहर कश खींचत कहले, "सब टाइट राखऽ. जमाना टाइट के बा. अउर अफना के भागत कहाँ बाइ? बैठऽ एहिजा अबहीं तोहरा के कुछ अउर बतावे के बा." लेकिन ऊ लड़की "अबहीं अइनी!" कहत बाहर निकल गइल. त चेयरमैन साहब दोसरकी लड़की ओर मुखातिब भइलन जवन बइठल-बइठल मतलब भरल तरीका से मुसुकात रहुवे. त ओकरा के मुसुकात देख चेयरमैनो साहब मुसुकात कहले, "का हो तू काहें मुसुकात बाइ ?"

"ऊ लड़की अबही नया बिया चेयरमैन साहब!" ऊ इठलात कहलसि, "अबही रंग नइखे चढ़ल ओकरा पर!"

"बाकिर तू त रंगा गइल बाइ !" ओकर दुनु गाल मीसत चेयरमैन साहब बहकत बोलले.

"ई सब हमरहू साथे मत करीं चेयरमैन साहब." ऊ तनिका सकुचात, लजात अउर लगभग विरोध दर्ज करावत कहलसि, "हमार भाई अबहिये आए वाला बा. कहीं देख ली त मुश्किल हो जाई."

"का मुश्किल हो जाई?" ऊ ओकरा उरोज का तरफ एगो हाथ बढ़ावत कहले, "गोली मार दी का?"

"हां, मार दी गोली!" ऊ चेयरमैन साहब के हाथ बीचे में दुनु हाथे रोकत कहलसि, "झाड़ू, जूता, गोली जवने पाई मार दीहि!"

ई सुनते चेयरमैन साहब थथम गइले, "का गुंडा, मवाली ह का?"

"ह तो ना गुंडा मवाली पर जे आप सभे अइसहीं करब त बन जाई!" ऊ कहलसि, "ऊ त हमरा गवलो-नचला पर बहुते ऐतराज मचावेला. ऊ ना चाहे कि हम प्रोग्राम करीं."

"काहें?" चेयरमैन साहब के सनक अबले सुन्न पड़ गइल रहुवे. से ऊ दुनारा बहुते सर्द ढंग से बोलले, "काहें?"

"ऊ कहेला कि रेडियो, टी.वी. तकले त ठीक बा. ज्यादा से ज्यादा सरकारी कार्यक्रम कर ल बस. बाकी प्राइवेट कार्यक्रम से ऊ भइकेला."

"काहें?"

"ऊ कहेला भजन, गीत, गजल तक ले त ठीक बा बाकिर ई फिल्मी उल्मी गाना, छपरा हिले बलिया हिले टाइप गाना मत गावल करऽ." ऊ रुकल आ कहलसि, "ऊ तो हमरे के कहेला कि ना मनबू त एक दिन ऐन कार्यक्रम में गोली मार देब आ जेल चलि जाएब!"

"बड़ा डैजर है साला!" सिगरेट झाड़त चेयरमैन साहब उठ खड़ा भइले. खखारत ऊ लोक कवि के आवाज लगवलन आ कहले, "तोहार अइडा बहुते खतरनाक होखल जात बा. हम त जात बानी." कहिके

ऊ साचहू ओहिजा से चल दिहले. लोक कवि उनुका पीछे-पीछे लगबो कइलन कि, "खाना मंगवावत बानी खा-पी के जाएब." तबहियो ऊ ना मनले त लोक कवि कहलेले, "एक आध पेग दारू अउर हो जाव!" बाकिर चेयरमैन साहब बिन बोलले हाथ हिला के मना करत बाहर आ के अपना एंबेसडर में बइठ गइले आ ड्राइवर के इशारा कइलन कि बिना कवनो देरी कइले अब एहिजा से निकल चलस.

उनुकर एंबेसडर स्टार्ट हो गइल. चेयरमैन साहब चल गइले.

भीतर वापिस आ के लोक कवि ओह लडिकी से हंसत कहले, "मीनू तू त आजु चेयरमैन साहब के हवे टाइट कर दिहलू!"

"का करतीं गुरु जी अखिर!" ऊ तनिका संकोच में खुशी घोरत कहलसि, "ऊ त जब आप आंख मरनी तबहिये हम समझ गइनी कि अब चेयरमैन साहब के फुटावे के बा."

"ऊ त ठीक बा बाकिर ऊ तोहार कवन भाई ह जवन एतना बवाली ह?" लोक कवि पूछले, "ओकरा के एहिजा मत ले आइल करस. डेंजर लोग के एहिजा कलाकारन में जरूरत नइखे."

"का गुरु जी आपहू चेयरमैन साहब के तरे फोकट में घबरा गइनी." मीनू बोलल, "कहीं कवनो अइसन भाई हमारा बा? अरे, हमार भाई त एगो भाई बा जे भारी पियक्कड़ ह. हमेशा पी के मरल रहेला. ओकरा अपने बीवी बच्चा के फिकिर ना रहे त हमार फिकिर कहाँ से करी?" ऊ ककहलसि, "आ जे अइसही फिकिर करीत त म्यूजिक पार्टियन में घूम-घूम के प्रोग्रामे काहें करतीं?"

"तू त बइहन कलाकार हऊ." मीनू के हिप पर हलुके चिकोटी काटत, सुहरावत लोक कवि बोलले, "बिलकुल डरामा वाली."

"अब कहाँ हम कलाकार रह गइनी गुरु जी. हँ, पहिले रहीं. दू तीन गो नाटक रेडिअउयो पर हमार आइल रहे."

"त अब काहें ना जातू रेडियो पर?" लोक कवि तारीफ के स्वर में कहले, "रेडिअउवे पर काहें टी.वी. सीरियलो में जाइल करस!"

"कहाँ गुरु जी?" वह बोली, "अब के पूछी ओहिजा."

"काहें?"

"फिल्मी गाना गा-गा के फिल्मी कैसेटन पर नाच-नाच के ऐक्टिंग वैक्टिंग भूल-भुला गइल बानी." वह बोली, "आ फेर एहिजा तुरते-तुरते पइसो मिल जाला आ रेगुलर मिलेला. बाकिर ओहिजा पइसा कब मिली, काम देबहू वालन के मालूम ना रहे. आ पइसा के त अउरियो पता ना रहेला." ऊ रुकल आर बोलल, "ह, बाकिर लडिकियन के साथे सुतावे, लिपटावे-चिपटावे के बात सभका मालूम होला."

"का बेवकूफी के बात करत बाइ." लोक कवि कहले, "कुछ दोसर बात करस."

"काहें बाउर लाग गइल का गुरु जी?" मीनू ठिठोली फोड़त कहलसि.

"काहें नाहीं बाउर लागी?" लोक कवि कहले, "एकर मतलब बा कि जे कहीं अउर बाहर जात होखबू त अइसही हमरो बुराई बतियावत होखबू."

"अरे नाहीं गुरु जी! राम-राम!" कहि कर ऊ आपन दुनु कान पकड़त बोलल "आप के बारे में एह तरह क बात हम कतहीं ना करीं. हम काहें अइसन बात करब गुरु जी!" ऊ विनम्र होखत कहलसि, "आप हमें आसरा दिहनी गु जी. आ हम एहसान फरामोश ना हईं." कहिके ऊ हाथ जोड़ के लोक कवि के गोड़ छूवे लागल.

"ठीक बा, ठीक बा!" लोक कवि आश्वस्त होखत कहले, "चलऽ रिहर्सल शुरू करऽ!"

"जी गुरु जी!" कहि के ऊ हारमोनियम अपनी ओरि खींचलसि अउर ओह दोसरकी लड़िकी के, जे थोड़ दूर बइठल रहल, गोहरावत कहलसि, "तूहूँ आ जा भईं!" ऊ लड़िकीओ आ गइल त हारमोनियम पर ऊ दुनु गावे लगली सँ, "लागता जे फाटि जाई जवानी में झुल्ला." एकरा के दोहरवला का बाद दुसरकी टेर लिहलसि आ मीनू कोरस, "आलू केला खइली त एतना मोटइली, दिनवा में खा लेहलीं दू-दू रसगुल्ला, लागता जे फाटि जाई जवानी में झुल्ला." फेर दुबारो जब दुनु शुरू कइली सँ इ गाना कि, "लागता जे फाटि जाई जवानी में झुल्ला/आलू केला खइलीं....." तबहिये लोक कवि दुनु के डपट दिहले, "ई गावत बाइू जी तू लोग?" ऊ कहलन, "भजन गावत बाइू लोग कि देवी गीत कि गाना?"

"गाना गुरु जी." दुनु एके साथ बोल पड़ली.

"त एतना स्लो काहें गावत बाइू लोग?"

"स्लो ना गुरु जी, टेक ले के नू फास्ट होखब जा!"

"चोप्प साली." ओ कहलन, "टेक ले के काहें फास्ट होखबू लोग? जानत नइखू कि डबल मीनिंग गाना ह. शुरूवे से एकरा के फास्ट में डालऽ लोग."

"ठीक बा गुरु जी!" मीनू बोलल, "बस ऊ ढोलक, बेंजो वाला आ जइतं त शुरूवे से फास्ट हो लेतीं सँ. खाली हरमुनिया पर तुरंतै कइसे फास्ट हो जाई जा?" ऊ दिक्कत बतवलसि.

"ठीक बा, ठीक बा. रिहर्सल चालू राखऽ लोग!" कहिके लोक कवि चेररमैन साहब के छोड़ल बोलत से पेग बनावे लगले. शराब के चुस्की का साथे गाना के रिहर्सलो पर नजर रखले रहले. तीन चार गाना के रिहर्सल का बीचे ढोलक, गिटार, बेंजो, तबला, ड्रम, झाल वाला सब आ गइले. से सगरी गाना लोक कवि के मन मुताबिक "फास्ट" में फैंट के गावल गइल. एह बीच तीन गो लड़िकी अउरी आ गइली सँ. सजल-धजल, लिपाइल-पोताइल. देखते लोक कवि चहकलन. आ अचानके गाना-बजाना रोकत ऊ लगभग फरमान जारी कर दिहलन, "गाना-बजाना बंद कर के कैसेट लगावऽ जा. अब डांस के रिहर्सल होखी."

कैसेट बाजे लागल आ लड़िकिया नाचे लगलीं स. साथे-साथ लोको कवि एह डांस में छटके-फुदके

लगले. वइसे त लोक कवि मंचों पर छटकत, फुदकत, थिरकत रहले, नाचत रहले. एहिजा फरक अतने भर रहल कि मंच पर ऊ खुद के गावल गाने में छटकत फुदकत नाचसु. बाकिर एहिजा ऊ दलेर मेंहदी के गावल "बोल तररर" गाना वाला बाजत कैसेट पर छटकत फुदकत थिरकत रहले. ना सिरिफ थिरकत रहले बलुक लड़िकियन के कूल्हा, हिप, चेहरा आ छातियन के मूवमेंटो "पकड़-पकड़" के बतावत जात रहलन. एगो फरक इहो रहे कि मंच पर थिरकत घरी माइक का अलावा उनुका एक हाथ में तुलसी के मालो रहत रहे. बाकिर एहिजा उनुका हाथ में ना माइक रहे, ना माला. एहिजा उनुका हाथ में शराब के गिलास रहल जवना के कबो-कबो ऊ अगल बगल का कवनो कुरसी भा कवनो जगहा राख देत रहले, लड़िकियन के कूल्हा, छाती आ हिप्स के मूवमेंट बतावे खातिर. आंख, चेहरा अउर बालन के शिफत बतावे खातिर. लड़िकी त कई गो रहलीं सँ एह डांस रिहर्सल में आ लोक कवि लगभग सगरी पर "मेहरबान" रहले. बाकिर मीनू नाम के लड़िकी पर ऊ खास मेहरबान रहले. जब तब ऊ मूवमेंट्स सिखावत-सिखावत ओकरा के चिपटा लेसु, चूम लेसु, ओकरा बाल ओकरा गाल समेत ओकर "36" वाली हिप खास तौर पर सुहरा देसु. त उहो मादक मुसकान रहि-रहि के फेंक देव. बिलकुल अहसान माने वाला भाव में. जइसे कि लोक कवि ओकर बाल, गाल आ हिप सुहरा के ओकरा पर खास एहसान करत होखसु. आ जब ऊ मदाइल, मीठकस मुसुकान फेंके त ओहमें सिरिफ लोके कवि ना, ओहिजा मौजूद सभे लोग नहा जाव. मीनू दरअसल रहबे अइसन मदाइल कि ऊ मुसुकाव तबहियो. ना मुसुकाव तबहियो लोग ओकरा मदइला में उभ-चूभ होखत डूबिये जाव. मंचों पर कई बेर ओकरा एह मदइला से मार खाइल बाऊ साहब टाइप लोग भा बाँका शोहदन में गोली चले के नौबत आ जाव आ जब ऊ कुछ मादक फिल्मी गानन पर नाचे त सिर फुटव्वल मच जाव. "झूमेंगे गजल गाएंगे लहरा के पिएंगे, तुम हमको पिलाओ तो बल खा के पिएंगे...." अर्शी हैदराबादी के गावल गजल पर जब ऊ पानी भरल बोतल के "डबल मीनिंग" में हाथ में लिहले मंच से नीचे बइठल लोगन पर पानी उछाले तो बेसी लोग ओह पानी में भीजे खातिर पगला जाव. भलही सर्दी ओह लोग के सनकवले होखे तबो ऊ लोग पगलाइल कूदत भागत आगे आ जाव. कभी-कभार कुछ लोग एह हरकत के बाउरो मान जासु बाकिर जवानी के जोश में आइल लोग त "बल खा के पिएंगे" में बह जाव. बह जाव मीनू के बल खात, धकियावत "हिप मूवमेंट्स" के हिलकोरन मे. बढियाईल नदी का तरे उफनात छातियन का हिमालय में भुला जासु. भुला जासु ओकरा अलसाइल अलकन का जाल में. अउर जे एह पर कवनो केहू टू-टपर करे तो बाँहन के आस्तीन मुड जाव. छूरा, कट्टा निकल आवे. पिस्तौल, राइफल तना जाव. फेर दउड के आवसु पुलिस वाला, दउडत आवे कुछ "सभ्य, शरीफ अउर जिम्मेदार लोग" तब जा के ई जवानी के लहर बमुश्किल थथमे. बाकिर "झूमेंगे गजल गाएंगे लहरा के पिएंगे, तुम हमको पिलाओ तो बल खा के पिएंगे....." के बोखार ना उतरे.

एक बेर त अजबे हो गइल. कुछ बाँका अतना बऊरा गइलें कि मीनू के मादक डांस पर अइसे

हवाई फायरिंग करे लगले जइसे कि फायरिंग ना संगत करत होखसु. फायरिंग करत-करत ऊ बांका मंचो पर चढ़े लगलें त पुलिस दखल दिहलसि. पुलिसो मंच पर चढ़ गइल आ सभकर हथियार कब्जा में ले के ओह बांकन के मंच से नीचे उतार दिहलसि. तबहियों अफरा तफरी मचल रहल. डांसर मीनू के मंच पर एगो दारोगा भीड़ से बचवलसि. बचावते-बचावत आखिर में ऊ खुदही मीनू पर स्टार्ट हो गइल. हिप, ब्रेस्ट, गाल, बाल सभ पर रियाज मारे लागल. आ जब मीनू के लाग गइल कि भीड़ कुछ करे भा ना करे, ईई दारोगा एही मंचे पर, जहां ऊ अबही-अबही नचले रहे, ओकरा के जरुरे नंगा कर देही, त ऊ अफनाईल अकुताइल अचके जोर से चिचियाइल, भाई लोग एह दारोगा से हमरा के बचावs. फेर त बउखल भीड़ ओह दारोगा पर पिल पड़ल. मीनू तो बाच गइली ओह सार्वजनिक अपमान से बाकिर दारोगा के बड़ दुर्गति हो गइल. पहिलका राउंड में ओकर बिल्ला, बैज, टोपी गइल. फेर रिवाल्वर गइल आ आखिर में ओकरा देह से वर्दी से लगाइत बनियान तकले नोचा-चोथा के गायब हो गइल. अब ऊ रहल आ ओकर कच्छा, जवन ओकरा देह के तोपले रहुवे. तबहियो ऊ मुसुकात रहुवे. अइसे कि कवनो सिकंदर होखे. एहले कि ऊ खूब पियले रहुवे. ओकरा वर्दी, रिवाल्वर, बैज, बिल्ला, टोपी वगैरह के यादे ना रहल. काहे कि ऊ त मीनू के मादक देह छू के मने मन नहाइल मुसुकात अइसे खाइ रहुवे जइसे कि ऊ जियत जागत आदमी ना कवनो मूर्ति होखे.

एहिजा रिहर्सल में मीनू संगे लोक कविओ लगभग उहे करत रहले जवन मंच पर तब दारोगा कइले रहल. बाकिर मीनू ना त एहिजा अफनाइल लउकत रही, ना अकुताइल. खीझ आ खुशी के मिलल जुलल लकीर उनका चेहरा पर मौजूद रहल. एहु में खीझ कम रहे आ खुशी ज्यादा.

खुशी ग्लैमर आ पइसा के जवन लोक कवि के कृपे से ओकरा मयस्सर भइल रहे. हालां कि ई खुशी, पइसा आ ग्लैमर ओकरा ओकर कला के चलते ना, कला के दुरुपयोग के बल पर मिलल रहे. लोक कवि के टीम के ई "स्टार" अश्लील अउर कामुक डांस के रोजे नया नया कीर्तिमान रचत जात रहुवे. एतना कि ऊ अब औरत से डांसर, डांसर से सेक्स बम में बदल चलल रहुवे. एह हालात में ऊ खुद के ओह घुटन में घसीटत बाहर-बाहर चहचहात रहत रहे. चहचहाव आ जब तब चिहुंक पड़े. चिहुंके तब जब ओकरा अपना बेटा के याद आ जाव. बेटा के याद में कबो-कबो त ऊ बिलबिला के रोवे लागे. लोग बहुते समुझावे, चुप करावे बाकिर ऊ कवनो बढियाइल नदी जइसन बहत जाव. ऊ मरद, परिवार सब कुछ भूल भुला जाव बाकिर बेटा के ले के बेबस रहे. भूला ना पावे.

ई खुशी, पइसा अउर ग्लैमर मीनू बेटा से बिछड़ला के कीमत पर बिटोरले रहुवे.

बिछड़ल त ऊ मरदो से रहुवे बाकिर मरद के कमी, खास क के देह के स्तर पर पूरावे वाला मरद ढेरहन रहले मीनू का लगे. हालां कि मरद पति वाला भावनात्मक सुरक्षा के कमीओ ओकरा अखरत रहे, एतना कि कबो-कबो त ऊ बउराहिन जइसन हो जाव. तबहियो देह में शराब भर के ऊ ओह

कमी, अभाव के पूरा करे के कोशिश करे. कवनो -कवनो कार्यक्रम का बीच कभी-कभार ई तनाव अधिका हो जाव, शराब अधिका हो जाव, अधिका चढ़ जाव त ऊ होटल के अपना कमरा से छटपटात बाहर आ जाव आ डारमेट्री में जा के खुले आम कवनो "भुखाइल" साथी कलाकार के पकड़ बइठे. कहे, "हमरा के कस के रगड़ द, जवन चाहे क ल, जइसे चाह क ल बाकिर हमरा कोठरी में चलs!"

तबहियो ओकर देह के तोष ना मिले. ऊ दोसर, तिसर साथी खोजे. भावनात्मक सुरक्षा के सुख तबहियो ना मिल पावे. ऊ खोजत रहत रहे लगातार. बाकिर ना त देह के नेह पावे, ना मन के मेह. एगो अवसाद के दंश ओकरा के डाहत रहे.

मीनू मध्य प्रदेश से चल के लखनऊ आइल रहल. पिता ओकर बरीसन से लापता रहन. बड़ भाई पहिले लुक्कड़ भइल, फेर पियक्कड़ हो गइल. हार थाक के महतारी तरकारी बेचल शुरू कइलसि बाकिर मीनू के कलाकार बने के धुन ना गइल. ऊ रेडियो, टी.वी. में कार्यक्रम पावे खातिर चक्कर काटत-काटते एगो "कल्चरल ग्रुप" के हत्थे चढ़ गइल. ई कल्चरल ग्रुपो अजब रहल. सरकारी आयोजनन में एके साथ डांडिया, कुमायूनी, गढ़वाली, मणिपुरी, संथाली नाच का साथे-साथ भजन, गजल, कौटवाली जइसनो कार्यक्रम के डिमांड होखे तुरते परोस देत रहे. त ऊ संस्था मीनूओ के अपना "मीनू" में शुमार कर लिहलसि. ऊ जब-तब एह संस्था के कार्यक्रमन में बुक होखे लागल. बुक होत-होत ऊ उमेश के फेरा में आवत-आवत ओकरा अंकवारी में दुबके लागल. बाँह में दुबकत-दुबकत ओकरा साथे कब सुतहु लागल ई ऊ अपनहु ना नोट कर पवलसि. बाकिर ई जरूर रहल कि उमेश, जे ओह संस्था में गिटार बजावे, अब गिटार के संगे-संगे मीनूओ के साथे लागल. मीनू के उ बिछिलाइल कवनो पहिला बिछलाइल ना रहूवे. उमेश ओकरा जिनिगी में तिसरका आ कि चउथका रहल. तिसरका कि चउथा ऊ एह नाते तय ना कर पावे कि पहिला बेर जेकरा मोहपाश में ऊ बन्हाइल उ साचहु ओकर प्यार रहल. पहिले आंखें मिलल फेर उहो दुनु मिले लगले बाकिर कबो संभोग के स्तर तक ना गइले. चूमे चाटी तक रह गइले दुनु. अइसन ना कि संभोग मीनू खातिर कवनो वरजना रहल भा ऊ चाहत ना रहल. बलुक ऊ त आतुर रहल. बाकिर स्त्री सुलभ संकोच में कुछ कह ना पवलस आ उहो संकोची रहल. फेर कवनो जगहो ना भेंटाइल दुनु के एहसे ऊ देह का स्तर पर ना मिल पवले. मने का स्तर पर मिलते रह गइल. फेर ऊ "नौकरी" करे मुंबई चल गइल आ मीनू बिछुड़ के लखनऊ मे रह गइल. से ओकरे के ऊ अपना जिनिगी में आइल मरदन मानत रहूवे आ नाहियो. दुसरका मरद ओकरा जिनिगी में आकाशवाणी के एगो पैक्स रहल जे

ओकरा के ओहिजा ऑडीशन में पास हो के गावे के मौका दिहलसि. बाद में ऊ ओकर आर्थिको मदद करे लागल आ बदलइन में ओकरा देह के दुहे लागल. नियम से. एही बीच ऊ दु हाली गाभिनी भइल. दुनु हाली ओकरा एबॉर्शन करवावे पड़ल आ तकलीफ, तानो भुगते पड़ल से अलगा. बाद में ऊ पैक्स ओकरा के कापर टी लगवा लेबे के तजवीज दिहलसि. पहिले त ऊ ना नुकुर कइलस बाकिर बाद में मान गइल.

कापर टी लगवा लिहलसि.

शुरु में कुछ दिक्कत भइल बाकिर बाद में एह सुविधा के निश्चितता ओकरा के छुट्टा बना दिहलसि आ दूरदर्शनो में ऊ एही "दरवाजे" बतौर गायिका एंट्री ले लिहलसि. एहिजा एगो असिस्टेंट डायरेक्टर ओकर शोषक-पोषक बनल. लेकिन दूरदर्शन पर दू गो कार्यक्रम का बाद ओकर मार्केट रेट ठीक हो गइल कार्यक्रमन में. आ ऊ टी.वी. आर्टिस्ट कहाए लागल से अलग. बाद में एह असिस्टेंट डायरेक्टर के तबादला हो गइल त ऊ दूरदर्शन में अनाथ हो गइल. आकाशवाणी के क्रेज पहिलही खतम हो चुकल रहुवे से ऊ एह कल्चरल ग्रुप के हत्थे चढ़ गइल. आ एह कल्चरल ग्रुपो में ऊ अब उमेश से दिल आ देह दुनु निभावत रहे. कापर टी के साथ कबो दिक्कत ना होखे देव. तबहियो ऊ सपना ना जोड़े. देह सुख से अउरियो तेज सुख का आगा सपना जोड़ल ओकरा मने में ना आइल. उमेश हमउमरिया रहल, सुखो भरपूर देव. देह सुख में गोता ऊ पहिलहु लगा चुकल रहुवे बाकिर आकाशवाणी के ऊ पैक्स आ दूरदर्शन के ऊ असिस्टेंट डायरेक्टर ओकरा देह में नेह ना भर पावत रहलें, दोसरा ओकरा हरदम इहे लागे कि ई दुनु ओकरा के चूसत बाड़ें, ओकरा मजबूरी के फायदा उठावत बाड़ें. तिसर, ऊ दुनु ओकरा से उमिर में डेढा दुगुना रहलें, अघाइल रहलें, से ओहनी में खुदहु देह के उ ललक भा भूख ना रहुवे, त ऊ मीनू के भूख कहां से मिटवते? ऊ त ओहनी ला खाना में सलाद, अचार के कवनो एगो टुकड़ा जइसन रहल. बस ! फेर ऊ दुनु ओकरा के भोगे में समयो बहुत बरबाद करसु. मूड बनावे आ खड़ा होखही में ऊ अधिका समय लगा द सँ जब कि मीनू के जल्दी रहत रहे. बाकिर प्रोग्राम आ पइसा के ललक में ऊ ओहनी के बर्दाश्त कर लेव. लेकिन उमेश संगे अइसन ना रहल, ओकरा साथे ऊ कवनो स्वार्थ भा मजबूरी नाजियत रहुवे. हमउमिया त ऊ रहबे कइल से ओकरा ना मूड बनावे के पड़े, ना खड़ा होखे के फजीहत रहल. चांदिए चांदी रहल मीनू के. बाकिर हो ई गइल रहे कि मीनू के उमेश संगे रपटल देख अउरियो कई जने ओकर फेरा मारल शुरु कर दिहले रहन. उमेश के ई नागवार गुजरे. बाकिर उमेश के नागवार गुजरे भर से त केहु माने वाला रहल ना. दू चार लोग से एह फेर में ओकरा से कहासुनिओ हो गइल, तबहियो बात थमल ना. ऊ हार गइल आ मीनू के केहु दोसरो चाहे ई ओकरा मंजूर ना रहल. तब ऊ गनो गावल करे, "तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं, गैर के दिल को सराहोगी तो मुश्किल होगी." बाकिर मीनू त रहले रहल खिलंदड आ दिलफेंक. तवना पर ओकर

हुस्न, ओकर नजाकत, ओकर उमिर केहुओ के ओकरा लगे खींच ले आवे. ओकर कटोरा जइसन कजरारी मादक आंखि केहुओ के दीवाना बना देव आ ऊ हर कवनो दीवाना के लिफ्ट दे देव. साथे बइठ जाव, हंसे-बतियावे लागे. उमेश के गावल "गैर के दिल को सराहोगी तो मुश्किल होगी." ओकरा कान मे ना समाव.

आ उमेश पगला जाव.

आखिर एक दिन ऊ मीनू से शादी करे के प्रस्ताव रख दिहलसि. प्रस्ताव सुनते मीनू हकबका गइल. बात मम्मी पर डाल के टाले चहलसि. बाकिर उमेश मीनू को ले के ओकरा महतारिओ से मिलल आ मिलत-मिलत बात आखिर बनिए गइल. मीनूओ उमेश के चाहत रहे बाकिर शादी तुरते एहले ना चाहत रहुवे कि अबही ऊ कवनो बन्हन में बन्हाइल ना चाहत रहे. आजादी के थोड़िका दिन ऊ अउरी जियल चाहत रहुवे. ऊ जानत रहे कि आजु चाहे जतना दीवाना होखे उमेश ओकर, शादी का बाद त ई खुमारी टूटी आ जरुरे टूटी. अबहीं ई प्रेमी बा त आसमान से सितारा तूडत बा, काल्ह मरद बनते ऊ ढेरे बन्हन में बान्हत ई आसमानो छीन ली. सितारा कहीं तड़प-तड़प के दम तूड़ दीहें.

बाकिर उ सोचल सिर्फ ओकरा मन में रहल.

जमीनी सचाई ई रहे कि ओकरा शादी करे के रहे. ओकर महतारी राजी रहल. आ जल्दिओ दू कारन से रहल. कि एक त ई शादी बिना लेन देन के रहे. दोसरे, मीनू से तीन साल छोट ओकर एगो बहिन अउर रहे बीनू, ओकरो शादी के चिंता ओकरा महतारी के करे के रहल. मीनू त कलाकार हो गइल रहे, चार पैसे जइसहु सही कमात रहल, बाकिर बीनू ना त कमात रहे, ना कलाकार रहल से ओकरा महतारी के मीनू से अधिका चिन्ता बीनू के रहल.

से तुरते फुरत मीनू आ उमेश के बिआह हो गइल. उमेश के छोटका भाई दिनेशो शादी में आइल आ बीनू पर लट्टू हो गइल. जल्दिए बीनू आ दिनेशो के बिआह हो गइल.

शादी के बाद दिनेशो उमेश आ मीनू संगे प्रोग्राम में जाए लागल. उमेश गिटार बजावत रहे, दिनेशो धीरे-धीरे बैजो बजावे लागल. माइक, साउंड बाक्स के साज सम्हार, साउंड कंट्रोल वगैरहो समय बेसमय ऊ कर लेव. कुछ समय बाद ऊ बीनूओ के प्रोग्राम में ले जाए के शुरू कइलसि. बीनूओ कोरस में गावे लागल, समूह में नाचे लागल. लेकिन मीनू वाली लय, ललक, लोच आ लौ बीनू में नदारद रहे. सुरो ऊ ठीक से ना लगा पावे. तबहियों कुछ पइसा मिल जाव से ऊ प्रोग्रामन में जा के कुल्हा मटका के ठुमके लगा आवे. इहो अजब इत्तफाक रहल कि मीनू और बीनू के शक्ल त जरूरत से अधिका एख जइसन लगबे करे, उमेश आ दिनेशो के शक्ल आपस में बहुते मिलत जुलत रहुवे. एतना कि तनिका दूर से ई दुनु भाईओ एह दुनु बहिनन के देख के तय कइल कठिन पावत रहलें कि कौन वाली उनकर ह. इहे हाल मीनू आ बीनू उमेश दिनेश के तनिका दूर से देखसु त हो जाव. एह सब से सबले बेसी

नुकसान मीनू के होखे. काहे कि कई हाली बीनू के पेश कइल लचर डांस मीनू का खाता में दर्ज हो जाव. मीनू के एहसे अपना इमेज के चिंता त होखे बाकिर ऊ अनसाव तनिको ना.

अबही इ सब चलते रहल कि मीनू के दिन चढ़ गइल.

अइसन समय अमूमन औरत खुश होखेली सँ बाकिर मीनू उदास हो गइल. ओकरा अपना ग्लैमर समेत कैरियर डूबत लउकल. ऊ उमेश के तानो दिहलसि कि काहे ओकर कापर टी निकलवा दिहलसि ? फेर सीधे एबॉर्शन करवावे ला साथे चले के कहे लागल. बाकिर उमेश एबॉर्शन करवावे पर सख्त ऐतराज कइलसि. लगभग फरमान जारी करत कहलसि कि "बहुत हो चुकल नाचल गावल. अब घर गिरहस्थी सम्हारस !" तबहियो मीनू बहुते बवाल कइलसि. बाकिर मुद्दा अइसन रहल कि ओकर महतारी से लगाइत सासुओ के एह पर ओकर खिलाफत कइल. बेबस मीनू के चुप लगावे पड़ल. तबहियो ऊ प्रोग्रामन में गइल ना छोड़लसि. उलटी वगैरह बंद होखते ऊ जाए लागल. झूम के नाचल अब ऊ छोड़ दिहलसि. एहतियातन. ऊ हलुके से दू चार गो ठुमका लगावे आ बाकी काम ब्रेस्ट के अदा आ आँखिन के इसरार से चला लेव आ "मोरा बलमा आइल नैनीताल से" जइसन गाना झूम के गावे.

ऊ महतारी बने वाली बिया ई बात ऊ जाने, ओकर परिवार जाने. बाकी बाहर केहु ना.

बाकिर जब पेट बाहर लउके लागल त ऊ चोली घाघरा पहिरे लागल आ पेट पर ओढ़नी डाल लेव. लेकिन इ तरकीबो अधिका दिन ले ना चल पावल. फेर ऊ बइठ के गावे लागल आ आखिर में घरे बइठ गइल.

ओकरा बेटा पैदा भइल.

अब ऊ खुश ना, बेहद खुश रहुवे. बेटा जनमावल ओकरा के गुरुर दे गइल. अब ऊ उमेशो के डांटे-डपटे लागल. जब-तब. बेटा के संगे ऊ आपन ग्लैमर, प्रोग्राम सब कुछ भूल भाल गइल. बेसुध ओकरे में भुलाइल रहे. ओकर टट्टी-पेशाब, दूध पिआवल, मालिश, ओकरा के खिआवल, ओकरा से बतियावल, दुलरावले ओकर दुनिया रहे. गावल ओकर अबहियो ना छुटल रहे. अब ऊ बेटा ला लोरी गावे.

अब ऊ समपुरन महतारी रहल, दिलफेंक आ ग्लैमरस मेहरारू ना.

केहु देख के विश्वास ना करे कि ई उहे मीनू हिय. बाकिर इहो भरम जल्दिए टूटल. बेटा जसहीं साल भर के भइल ऊ प्रोग्रामन में पेंग मारल शुरू कर दिहलसि. अब ऐतराज सास क ओर से शुरू भइल बाकिर उमेश एह पर ध्यान ना दिहलसि. एहि बीच मीनू का देह पर तनिका चर्बी आ गइल बाकिर चेहरा पर दमक आ लाली निखार पर रहे. नाचत गात देह के चर्बीओ छंटे लागल बाकिर बेटा के दूध पिअवला से छाती ढरक गइल. एकर इलाज ऊ ब्यूटी क्लीनिक जा के इक्सरसाइज करे आ रबर पैड वाला ब्रा से कर लिहलसि. गरज ई रहे कि गंवे-गंवे ऊ फार्म पर आवत रहे. एही बीच ओकर "कल्चरल गुप" चलावे वाला कर्ता धर्ता से ठन गइल.

ऊ पहिला बेर सड़क पर रहल. बिना प्रोग्राम के.

ऊ फेरू दूरदर्शन आ आकाशवाणी के फेरा मारे लागल. एक दिन दूरदर्शन गइल त लोक कवि आपन प्रोग्राम रिकार्ड करवा के स्टूडियो से निकलत रहलें. मीन जब जनलस कि इहे लोक कवि हउवें त ऊ लपक के उनुका से मिलल आ आपन परिचय दे के उनुका से उनुकर ग्रुप ज्वाइन करे के इरादा जतवलसि. लोक कवि ओकरा के टारत कहलन, "बाहर ई सब बात ना करीलें. हमरा अड़्डा पर आवस. फुरसत से बतियाइब. अबहीं जल्दी में बानी."

लोक कवि के अड़्डा पर ऊ ओही साँझ चहुँप गइल. लोक कवि पहिले बातचीत में "अजमवलन" फेर ओकर नाच गाना देखलन. महीना भर तबहियों दउडवलन. आ आखिरकार एक दिन लोक कवि ओकरा पर सिर्फ पसीजिए ना गइलन बलुक ओकरा पर न्यौछावर हो गइलन. ओकरा के लेटवलन, चूमलन-चटलन आ संभोग सुख लूटला का बाद ओकरा से कहलन, "आवत रहस, मिलत रहस !" फेर ओकरा के अँकवारी में लेत चूमलन आ ओकरा कान में फुसफुसइलन, "तोरा के स्टार बना देब." फेर जोड़लन, "बहुत सुख देलु, अइसहीं देत रहीहस." फेर त लोक कवि किहाँ आवत-जात मीनू उनुका म्यूजिकल पार्टीओ में आ गइल आ गँवे-गँवे साचहुं ऊ उनुका टीम के स्टार कलाकार बन गइल. टीम के बाकी औरत, लड़िकी ओकरा से जरे लगलीं. बाकिर चूंकि ओकरा लोक कवि के "आशीर्वाद" प्राप्त रहे से सभकर जरतवाही भितरे भीतर रहे, मुखरित ना होखे. सिलसिला चलत रहल. एह बीच बीच लोक कवि ओकरा के शराबीओ बना दिहलन. शुरू-शुरू में जब लोक कवि एक रात सुरूर में ओकरा के शराब पिअवलन त पहिले त ऊ ना ना करत रहल. कहत रहल, "हम मेहरारू हईं. हमार शराब पियल शोभा ना दी."

"का बेवकूफी बतियावत बाड़ू ?" लोक कवि मनुहार करत बोलले, "अब तू मेहरारू आर्टिस्ट हउ. स्टार आर्टिस्ट" ऊ ओकरा के चूमत जोड़लें, "आ फेर शराब ना पियबू त आर्टिस्ट कइसे बनबू ?" कह के ओज रात ओकरा के जबरदस्ती दू पेग पिआ दिहलें. जवना के बाद में मीनू उलटी क के बाहर निकाल दिहली. ओह रात ऊ घरे ना गइली. लोक कवि के अँकवारी में बेसुध पड़ल रहली. ओह रात जब लोक कवि ओकरा योनि के जब अपना जीभ से नवजलन त ऊ एगो नया सुखलोक में चहुँप गइल.

दोसरा भोर जब ऊ घरे चहुँपल त उमेश रात में लोक कवि के अड़्डा पर रुकला पर बड़हन ऐतराज जतवलसि बाकिर मीनू ओह ऐतराज के कवनो खास नोटिस ना लिहली. कहली, "तबीयत खराब हो गइल त का करतीं ?"

फेर रात भर के जागल उ सूत गइल.

अब ले मीनू ना सिरिफ लोक कवि के म्यूजिक पार्टी के स्टार हो गइल रही. बलुक लोक कवि के आडियो कैसेटन के जाकेटो पर ओकर फोटो प्रमुखता से छपे लागल रहे. अब ऊ स्टेज आ कैसेट दुनु

बाजारमें रहल आ जाहिर बा कि बाजार में रहल त पइसो के कमी ना रह गइल रहे ओकरा लगे. रात-बिरात कबहियो लोक कवि ओकरा के रोक लेसु आ ऊ बिना ना नुकुर कइले मुसुका के रुक जाव. कई बेर लोक कवि मीनू का साथे-साथ कवनो अउरीओ लड़िकी के साथे सूता लेसु तबो ऊ खराब ना माने. उलटे "कोआपरेट" करे. ओकरा एह "कोआपरेट" के जिकिर लोक कवि खुदऊ कभी कभार मूड में कर जासु. एह तहर कवनो ना कवनो बहाने मीनू पर लोक कवि के "उपकार" बढ़त जाव. लोक कवि के एह उपकारन से मीनू के घर में समृद्धि आ गइल रहे बाकिर साथही ओकरा दांपत्य में ना सिरिफ खटासे आ गइल रहे, बलुक ओकर चूरो हिल गइल रहवे. हार के उमेश सोचलसि कि एगो अउर बच्चा पैदा कराईए के मीनू के गोड़ बान्हल जा सकेला. से एगो अउरी बच्चे के इच्छा जतावत मीनू से कापर टी निकलवावे के बात कवनो भावुक क्षण में उमेश कह दिहलसि त मीनू भइक गइल. बोलल, "एगो बेटा बा त."

"बाकिर अब ऊ पांच छः साल के हो गइल बा."

"त ?"

"अम्मो चाहत बाड़ी कि एगो बच्चा हो जाव जइसे दिनेश के दू गो बा, बइसहीं."

"त अपना अम्मे से कहऽ कि अपना साथे तोरा के सुता लेसु फेरु एगो बच्चा अउर जनमा लेसु ?"

"का बकत बाडू ?" कहत उमेश ओकरा के एगो जोर के झाँपड़ मरलसि. बोलल, "एतना बत्तमीज हो गइल बाडू !"

"एहमें बत्तमीजी के कवन बाति बा ?" पासा पलटत मीनू नरम आ भावुक हो के बोलल, "तू अपना अम्मा के बच्चा ना हउव ? आ उनुका साथे सूत जइबऽ त बच्चा ना रहबऽ ?"

"तू तब इहे कहत रहलू ?" उमेश बौखलाहट काबू करत बोलल.

"अउर नाहीं त का ?" ऊ कहलसि, "बात समुझलऽ ना आ झपड़िया दिहलऽ. आइंदा कबो हमरा पर हाथ जनि उठइहऽ. बता देत बानी." आंख तरेर के ऊ कहलसि आ बैग उठा के चलत-चलत बोलल, "रिहर्सल में जात बानी."

लेकिन उमेश ओह दिने कवनो घवाहिल शेर का तरह गांठ बान्ह लिहलसि कि मीनू के एक ना एक दिन लोक कवि का टीम से निकालिए के ऊ दम ली. चाहे जइसे. अनेके तरकीब, शिकायत ऊ भिड़वलसि बाकिर कामयाब ना भइल. कामयाब होखीत त भला कइसे ? लोक कवि किहां मीनू के गोठ अइसन सेट रहे कि कवनो शिकायत, कवनो राजनीति, ओकर कवनो खोटो लोक कवि के ना लउके. लउकीत भला कइसे ?

ऊ त एह घरी लोक कवि के पटरानी बन इतरात फिरे.

ऊ त घरहुं ना जाइत. बाकिर हार के जाए त सिरिफ बेटा के मोहे. बेटा ला. आ एही से ऊ दोसर बच्चा ना चाहत रहे कि फेरु फंसे के पड़ी, फेरु बन्हाए के पड़ी. ई ग्लैमर, ई पइसा फेर लवटि के मिले ना मिले का जाने ? ऊ सोचे आ दोसरका बच्चा के सवाल आ खयाल के टार जाव. बाकिर उमेश ई खयाल ना टरले रहे. एक रात चरम सुख लूटला का बाद ऊ आखिर फेरु ई बात धीरही-धीरे सही फेरु चला दिहलसि. पहिले त मीनू एह बाति के बिना कुछ बोलले अनसुन कर दिहलसि. तबहियो उमेश लगातार, "सुनत बाइ, सुनत बाइ" के संपुट का साथे बच्चा के पहाड़ा रटे लागल त ऊ अँउजा गइल. तबहियो बात टारत धीरे से बुदबुदाइल, "सूत जा, नीन लागत बा."

"जबे कवनो जरूरी बात करीले तोहरा नीन आवे लागेला."

"चलऽ सबेरे बतियाइब." ऊ अलसात बुदबुदाइल.

"सबेरे ना, अबहीं बात करे के बा." ऊ लगभग फैसला देत बोलल, "सबेरे त डाक्टर किहाँ चले के बा."

"सबेरे हमरा हावड़ा पकड़े के बा प्रोग्राम में जाए के बा." ऊ फेर बुदबुदाइल.

"हावड़ा नइखे पकड़े के, कवनो प्रोग्राम में नइखे जाए के."

"काहें ?"

"डाक्टर किहाँ चले के बा."

"डाक्टर किहाँ तू अकेहली हो अइहऽ."

"अकेले काहें ? काम ते तोहार बा."

"हमरा कवनो बेमारी नइखे. हम का करब डाक्टर किहाँ जा के ?" अबकी ऊ तनिका जोर से बोलल.

"बेमारी बा तोहरा." उमेश पूरा कड़ेर हो के बोलल.

"कवन बेमारी?" अब ले मीनूओ के आवाज कड़ेर हो गइल रहे.

"कापर टी के बेमारी."

"का ?"

"हँ !" उमेश बोलल, "उहे काल्हु सबेरे डाक्टर किहां निकलवावे के बा."

"काहें ?" ऊ तइक के बोलल, "का फेरु दोसरा बच्चा के सपना लउक गइल ?"

"हँ, आ हमरा ई सपना पूरावे के बा."

"काहें ?" ऊ पूछलसि, "केकरा दम पर?"

"तोहार पति होखे का दम पर!"

"कवना बात के पति?" ऊ गरजल, "कमा के ना ले आई त तोहरा घर में दुनु बेरा चूल्हा ना जरी,

आ हई कूलर, फ्रिज, कालीन, सोफा, डबल बेड इहाँ ले कि तोहार मोटर साइकिलो ना लउकी !"

"काहें ? हमहुँ कमाइलें."

"जेतना कमालऽ ओतना तुहुं जाने लऽ."

"एने-ओने गइला से तोहार बोली आ आदत अधिके बिगड़ गइल बा."

"काहें ना जाई ?" ऊ चमक के बोलल, "तोहरा वश के त अब हमहुं नइखीं. महीना में दू चार हाली आ जालऽ कांखत-पादत त समुझेलऽ क बड़ा भारी मरद हउव. आ बोलेल कि पति हउअ." ऊ रुकल ना बोलत रहल, "सुख हमके दे ना सकऽ, चूल्हा चउका चला ना सकऽ आ कहेलऽ कि पति हउअ. कवना बात के पति हउव जी ?" ऊ बोलल, "तोहार शराबो हमरे कमाई से चलेले. आउर का का कहीं ? का-का उलटीं-उघाड़ीं ?"

"लोक कवि तोरा के छिनार बना दिहले बा. कालहु से तोहार ओकरा किहां गइल बन्द !"

"काहें बंद? कवना बात ला बंद? फेर तू हउव के हमार कहीं आइल गइल बंद करे वाला ?"

"तोहार पति !"

"तू कतना हमार पति हउव, तनिका अपना दिल पर हाथ राख के पूछऽ."

"का कहल चाहत बाडू तू आखिर ?" उमेश बिगड़ के बोलल.

"इहे कि आपन गिटार बजावऽ. कहऽ त गुरु जी से कहि के उनुका टीम में फेरू रखवा दीं. चार पइसा मिलबे करी. आ तनिका अपना शराब पर काबू कर लऽ !"

"हमरा नइखे जाए के तोहरा ओह भड्डुआ गुरुजी किहां जे अफसरान आ नेतवन के लौडिया सप्लाई करेला. जवन सार हमार जिनिगी नरक कर दिहलसि. तोहरा के हमरा से छीन लिहलसि."

"हमनी के जिनिगी नरक नइखे कइलन गुरु जी. हमनी के जिनिगी बनवले बाड़न. ई कहऽ."

"ई तूहीं कहऽ !"

"काहे ना कहब." ऊ भावुक होखत बोलल, "हमरा त ई शोहरत, ई पइसा उनुके बदौलत मिलल बा. गुरु जी हमरा के कलाकार से स्टार कलाकार बना दिहलें."

"स्टार कलाकार ना, स्टार रंडी बनवले बा." उमेश गरजल, "ऊ कहऽ ना! कहऽ ना कि स्टार रखैल बनवले बा तोहरा के !"

"अपना जबान पर कंट्रोल करऽ !" मीनूओ गरजल, "का-का अनाप शनाप बकत जात बाड़ऽ ?"

"बकत नइखीं, ठीक कहत बानीं."

"त तू हमरा के रंडी, रखैल कहबऽ ?"

"हँ, रंडी, रखैल हऊ त कहब."

"हम तोहार बीबी हई." ऊ घाहिल भाव से बोलल, "तोहरा अइसन कहत लाज नइखे लागत ?"

"आवत बा. तबहिए नू कहत बानी." ओ कहलसि, "आ फेर केकरा-केकरा के लाज दिअइबू ?
केकर-केकर मुंह बंद करइबू ?"

"तू बहुते गिरल आदमी हउवs."

"हँ, हई." ओ कहलसि, "गिर त ओही दिन गइल रहीं जहिया तोहरा से शादी कइनी."

"त तोहरा हमरा से बिआह करे के पछतावा बा ?"

"बिलकुल बा."

"त छोड़ काहें नइखs देत ?"

"बेटा रोक लेता, ना त छोड़ देतीं."

"फेर कवनो पूछबो करी ?"

"हजारन बाड़ी सँ पूछे वाली?"

"अच्छा?"

"त?"

"तबहियों हमरा के रंडी कहत बाडs."

"कहत बानी."

"कुकुर हउवs."

"तें कुतिया हई." ऊ बोलल, "बेटा के चिंता ना रहीत रत एही छन छोड़ देतीं तोरा के."

"बेटा के बहुते चिंता बा?"

"आखिर हमार बेटा ह ?"

"ई कवन कुता कह दिहलसि कि ई तोहर बेटा ह ?"

"दुनिया जानत बिया कि हमार बेटा ह."

"बेटा तू जनमवलs कि हम ?" ऊ कहलसि, "त हम जानब कि एकर बाप के हs कि तूं?"

"का बकत बाड़ीस ?"

"ठीक बकत बानी."

"का ?"

"हँ, ई तोर बेटा ना हs." ऊ बोलल, "तू एकर बाप ना हइस."

"रे माधरचोद, त ई केकर पाप ह, जवन हमरा कपारे थोप दिहले ?" कहि के उमेश ओकरा पर कवनो गिद्ध अस टूट पडा. ओकर झोंटा पकड़ के खींचत लतियावे जूतिवाए लागल. जवाब में मीनूओ हाथ गोड़ चलवलसि बाकिर उमेश का आगे ऊ पासंगो ना पड़ल आ बहुते पिटा गइल. पति से तू-तडाम कइल मीनू के बहुते पड़ल. एह मार पीट से ओकर मुंह सूज गइल, होंठ से खून बहे लागल. हाथो गोड़

छिला गइल आ अउर त अउर ओही रात ओकरा घरो छोड़े पड़ गइल. आपन थोड़ बहुत कपड़ा लता बिटोरलसि, ब्रीफकेस में भरलसि, रिक्शा लिहलसि. मेन रोड पर आ के रिक्शा छोड़ टैंपो धड़लसि आ चहुँप गइल लोक कवि का कैंप रेजीडेंस पर. कई बेर काल बेल बजवला पर लोक कवि के नौकर बहादुर दरवाजा खोललसि. मीनू के देखते चिहँकल. बोलल, "अरे आप भी आ गई?"

"काहें ?" मरद के सगरी खीसि बहादुरे पर उतारत मीनू गरजल.

"अरे नहीं, हम तो इश लिए बोला कि दो मेमशाब लोग पहले ही से भीतर हैं।" मीनू का गरजला से सहम के बहादुर बोलल.

"त का भइल ?" तनिका मेहरात मीनू बहादुर से गँवे से पूछलसि, "के-के बा ?"

"शबनम मेमशाब और कपूर मेमशाब." बहादुर खुसफुसा के बोलल.

"कवनो बात ना." ब्रीफकेस बरामदा में पटकत मीनू बोलल.

"कवन ह रे बहादुर!" अपना कोठरिए से लोक कवि चिल्ला के पूछलन, "बहुते खड़बड़ मचवले बाड़ीस ?"

"हम हई गुरु जी!" मीनू कोठरी के दरवाजा लगे जा के गँवे से बोलल.

"के ?" औरत के आवाज सुन लोक कवि अचकचइले. ई सोच के कहीं उनुकर श्रीमति जी त ना आ गइली ? फेर सोचलन कि उनकर आवाज त बहुते कर्कश ह आ ई आवाज त कर्कश नइखे. ऊ अभी उहचुह में पड़ल इहे सब सोचत रहलन कि तबे ऊ फेर गँवे से बोलल, "हम हई, मीनू, गुरु जी!"

"मीनू?" लोक कवि फेरु अचकचइले आ कहलें, "तू आ अतना रात के ?"

"हँ, गुरु जी." ऊ दोष भाव से बोलल, "माफ करीं गुरु जी."

"अकेले बाड़ू कि केहु अउरो बा ?"

"अकेलहीं बानी गुरु जी."

"अच्छा रुकs अबहीं आवत बानी." कह के लोक कवि जांघिया खोजे लगलन. अन्हार में. ना मिलल त बड़बड़इलन, "ए शबनम! लाइट जराव !"

बाकिर शबनम मुख मैथुन का बाद उनुका गोड़तरिया लेटल पड़ल रहे. लेटले-लेटल मूडी हिलवलसि. बाकिर उठल ना. लोक कवि फेर भुनभुनइलें, "सुनत नइखू का ? अरे, उठ शबनम! देख मीनू आइल बाड़ी. बहरी खड़ा बाड़ी. लागत बा ओकरा पर कवनो आफत आइल बा !" शबनम लेकिन अधिके नशा में रहवे से ऊ उठल ना. कुनमुना के रह गइल. आखिरकार लोक कवि ओकरा के एक तरफ हटावत उठलन कि उनकर एक गोड़ नीता कपूर पर पड़ गइल. ऊ चिकरल, "हाय राम !" बाकिर गँवे से. लोक कवि फेर बड़बड़इले, "तू अबहियो एहिजे बाड़ू ? तू त कहत रहलू कि चल जाएब."

"ना गुरु जी का करीं. अलसा गइनी. ना गइनी. अब भोरे जाएब." ऊ अलसाइले बोलल.

"अच्छा चलऽ उठऽ!" लोक कवि कहले, "लाइट जराव !"

"काहें ?"

"मीनू आइल बाड़ी. बहरी खाइ बाड़ी !"

"मीनूओ के बोलवले रहीं ?" नीता पूछलसि, "अब आप कुछ करिओ पाएब ?"

"का जद-बद बकत रहेलु." ऊ कहले, "बोलवले ना रहीं, अपने से आइल बाड़ी. लागत बा कुछ झंझट में बाड़ी !"

"ते एही बिछऽना पर उहो सूतीहें का ?" नीता कपूर भुनभुनइली, "जगहा कहां बा ?"

"लाइट नइखे जरावत रंडी, तबे से बकबक-बकबक बहस करत बिया !" कहत लोक कवि भइभइ के उठलन आ लाइट जरा दिहलन. लाइट जरावते दुनु लड़िकी कुनमुनइली बाकिर नंग धडंग पटाइल रहली.

लोक कवि दुनु का देह पर चादर डललन, जांधिया ना मिलल त अंगवछा लपेटलन, कुरता पहिरलन आ कोठरी के दरवाजा खोललन. मीनू के देखते ऊ सन्न हो गइले. बोलले, "ई चेहरा कइसे सूज गइल ? कहीं चोट लागल कि कतहीं गिर गइलू ?"

"ना गुरु जी!" कहत मीनू रोआइन हो गइल.

"त केहु मारल ह का ?"

लोक कवि पूछलन त मीनू बोलल ना बाकिर मूड़ी हिला के सकार लिहलसि. त लोक कवि बोलले, "के ? का तोर मरद ?" मीनू अबकी फेरु ना बोलली, मूड़ीओ ना हिलवली आ फफके लगली. रोवते-रोवत लोक कवि से लपेटा गइली. रोवते-रोवत बतवली, "बहुते मरलसि."

"कवना बात पर?"

"हमरा के रंडी कहऽता." ऊ बोलल, "कहऽता कि राउर रखैल हईं." बोलते-बोलत ओकर गर अझूरा गइल आ ऊ फेर फफके लागल.

"बहुते लंठ बा." लोक कवि बिदकत बोलले. फेर ओकर घाव देखलन, ओकर बार सहलवलन, तोस दिहलन आ कहलन कि, "अब कवनो दवाई त एहिजा बा ना. घाव के शराब से धो देत बानी आ तूं दू तीन पेग पी ल, दरद कुछ कम हो जाई, नीन आ जाई. काल्ह दिन में डाक्टर से देखा लीहऽ. बहादुर के साथे ले लीहऽ." ऊ कहले, "हमनी का त सबेरे गाड़ी पकड़ के पोरोगराम में चल जाएब."

"हमहु आप के साथे चलब."

"अब ई सूजल फुटहा मुंह ले कर कहां चलबू ?" लोक कवि बोलले, "भद पिटाई. एहिजे आराम करऽ. पोरोगराम से वापिस आएब त बतियाएब." कह के ऊ शराब क बोतल उठा ले अइले आ मीनू के घाव शराब से धोवे लगले.

"गुरु जी, अब हम कुछ दिन एहिजे रुकब, जबले कवनो अउर इंतजाम नइखे हो जात." ऊ तनी मेहराइल जबान बोलली.

लोक कवि कुछ ना कहले. ओकर बात लगभग पी गइले.

"रउरा कवनो ऐतराज त नइखे गुरु जी?"

"हमरा काहें ऐतराज होखी?" लोक कवि बोलले, "ऐतराज तोहरा मरद के होखी."

"ऊ त हमरा के राउर रखैल कहते बा."

"का बेवकूफी बतियावत बाडू ?"

"हम कहत बानी कि रउरा हमरा के आपन रखैल बना लीं."

"तोहार दिमाग खराब हो गइल बा."

"काहें ?"

"काहें का ? हम केकरा-केकरा के रखैल बनावत चलब." ऊ बोलले, "लखनऊ में रहीलें त एकर का मतलब कि हम वाजिद अली शाह हई ?" ऊ कहले, "हरम थोड़े बनावे क बा. अइसहीं आत-जात रहऽ इहे ठीक बा. आज तोहरा के राख लीं, काल्हु ई दुनु जवन पटाइल बाड़ी स, एकनी के राख लीं, परसों अउरी राख लीं फेर त हम बरबाद हो जाएब. हम नवाब ना नू हई. मजूर हई. गा बजा के मजूरी करीले. आपन पेट चलाइले आ तोहनीओ लोग के. हँ तनिका मौजो मजा कर लीले त एकर मतलब ई थोड़े ह कि....?" सवाल अधूरा सुना के लोक कवि चुपा गइले.

"त एहीजा ना रहे देब हमरा के ?" मीनू लगभग गिड़गिड़ाइल.

"रहे के के मना कइल ?" ऊ बोलले, "तूं त रखैल बने के कहत रहू."

"हम ना गुरु जी, हमार मरद कहऽता त हम कहनी कि रखैल बनिए जाई."

"फालतू बात छोड़ऽ." लोक कवि बोलले, "कुछ दिन एहिजा रहि ल. फेर हो सके त अपना मरद से पटरी बइठा ल. ना त कतहीं अउर किराया पर कोठरी दिआ देब. सामान, बिस्तर करा देब. बाकिर एहिजा परमामिंट नइखे रहे के."

"ठीक बा गुरु जी! जइसन रउरा कहीं." मीनू बोलली, "बाकिर अब ओह हरामी का लगे ना जाएब."

"चलऽ सूत जा! सबेरे ट्रेन पकड़े के बा." कहके लोक कवि खुद बिस्तर पर पसर गइले. बोलले, "तुहं एहिजे कहीं पसर जा आ बिजली बंद क द."

लाइट बुता गइल लोक कवि के एह कैंप रेजीडेंस के.

ई कॅंप रेजिडेंस लोक कवि अबहीं नया नया बनवले रहलें. काहें कि उ गराज अब उनुका रहे आ रिहर्सल दुनु काम लायक ना रह गइल रहुवे आ घर बाकिर जवना "स्टाइल" अउर "शौक" से उ रहत रहलें, रह ना सकत रहलें. आ रिहर्सल त बिलकुले संभव ना रहे से ऊ ई तिमंजिला कॅंप रेजीडेंस बनवले रहलें. नीचे क एक हिस्सा लोग के आवे-जाए, मिले जुले ला रखलन. पहिला मंजिल रिहर्सल वगैरह खातिर आ दुसरका मंजिल बाकिर अपना रहे के इंतजाम कइलन. जब ई कॅंप रेजीडेंस ऊ बनवलें तब मुस्तकिल देख रेख ना कर पवलें. उनुकर लड़िका आ चेलाचाटी इंतजाम देखले सँ. कवनो आर्किटेक्ट, इंजीनियर वगैरहो ना रखलन. बस जइसे-जइसे राज मिस्त्री बतावत-बनावत गइल वइसहीं-वइसे बनल ई कॅंप रेजीडेंस. सुन्दरता के बोध त छोड़ीं, कोठरियन आ बाथरूम के साइजो बिगड़ गइल. ज्यादा से ज्यादा कमरा बनावे-निकाले का फेर में. से सगरी कुछ पहिला तल्ला, दूसरा तल्ला में बिखर-बिटुरा के रह गइल. नक्शा बिगड़ गइल मकान के. लोक कवि कहबो करसु कि, "एह बेवकूफन के चलते पइसा माटी में मिल गइल." लेकिन अब जवन रहे, से रहे आ एही में काम चलावे के रहल. लोक कवि बाहर आत जात बहुते कुछ देखले रहलें. वइसने में से बहुत कुछ ऊ अपना एह नयका रेजीडेंस में देखनल चाहत रहलें. जइसे कई होटलन में ऊ बाथटब के आनंद ले चुकल रहले, लेतो रहलें. चाहत रहलें कि बाथटब के ई आनंद ऊ अपना एह नयको घर में लेसु. बाकिर उनुकर ई सपना टूटल एहले कि बाथरूम एतना छोट बनले स कि ओहनी में बाथटब के फिटिंग होइए ना सकत रहल. आखिरकार ऊ बाथटब ले अइलें आ बाथरूम का बजाय ओकरा के छते पर खुला में रखवा दिहलें. ऊ ओहमें पहिले पाइल से पानी भरवावसु, फेर पटा जासु. लड़िकी भा चेला भा बहादुर भा जेही सुविधा से मिल जाव ऊ ओही में पटाइल-पटाइल ओकरा से आपन देह मलवावसु. लड़िकी होखे सँ त कई हाली ऊ ओकनियो के ओहमें खींच लेसु आ जल क्रीड़ा के आनंद लेबे लागसु. कई बेर रतियो में. एह खातिर परदेदारी का गरज से ऊ छत बाकिर रंग बिरंगा बाकिरदा टंगवा दिहलें. लाल, हरियर, आसमानी, पीयर. ठीक वइसने जइसन कुछ होटलन का सोझा कई रंग के झंडा टंगाइल होला.

बाकिर ई सुरूर ढेर दिन ले ना चलल. ऊ जल्दिए अपना देसीपन बाकिर आ गइले. आ भरल बाथटबो में बइठ के लोटा-लोटा अइसे नहासु कि लागे पानी बाथटब से ना बाल्टी से निकाल-निकाल के

नहात होखसु. लेकिन ई सुरूर उतरत-उतरत उनुका एगो नया शौक चर्चाइल, धूप में छतरी के नीचे बड़ठे के. साल दू साल ऊ सिरिफ एकर चरचा कइलन आ आखिरकार एगो छतरी मय प्लास्टिक के मेज समेत ले अइले. इहो शौक अबहीं उतरल ना रहे कि पेजर के दौर आ गइल. त ऊ पेजरो उनुका बहुत काम के ना निकलल. बाकिर ऊ सभका के बतावसु कि, "हमरा लगे पेजर बा. हमार पेजर नंबर नोट करीं." बाकिर अबहीं पेजर क खुमारी ठीक से चढबो ना कइल कि मोबाइल फोन आ धमकल. जहां-तहां ऊ एकर चर्चा सुनसु. कहीं-कहीं देखबो करसु. आखिर एक दिन अपना महफिल में एकर जिक्र ऊ चलाइए दिहलें. बोलले, "इ मोबाइल-फोबाइल के का चक्कर बा?" महफिल में दू तीन गो कलाकारो बइठल रहलें. कहलें स, "गुरु जी ले लीहीं. बड़ा मजा रही. जहें से चाहीं ओहिजे से बतियाई. ट्रेन में, कार में. आ पाकिट में धइले रहीं. जब चाहीं बतियाई, जब चाहीं काट दीं." एह महफिल में चेयरमैन साहब आ ऊ ठाकुर पत्रकारो जमल रहलें. बाकिर जतने मुँह ओतने बात रहल. चेयरमैन साहब "मोबाइल-मोबाइल" सुनत-सुनत अकुता गइलें. ऊ लोक कवि से मुखतिब भइलें. देखत घुरियात कहले, "अब तूं मोबाइल लेबस? का होखी तोहरा लगे ओकर?" ऊ कहलें, "पइसा बहुत काटे लागल बा का?" बाकिर लोक कवि चेयरमैन साहब के बात सुनिओ के अनसुन बन गइलें. कुछ कहले ना. त चेयरमैन साहबो चुप लगा गइले. हिस्की के चुस्की अउर सिगरेट के कश में भुला गइले. लेकिन तरह-तरह के बखान, टिप्पणी अउर मोबाइल के खरचा के चरचा चलत रह गइल. पत्रकार बतवलें कि, "बाकी खरचा त अपना जगह, एहमें सबले बड़का आफत बा कि जवन फोन काल आई ओकरो पर पइसा लागी, हर मिनट का हिसाब से." सभे हं में हँ मिलावल आ एह इनकमिंग काल के खरचा के सभे अइसे अरथियावल जइसे गोया हिमालय अस बोझा होखे. लोक कवि सभकर बात बहुते धेयान से सुनत रहल. सुनते-सुनत अचानक ऊ कूद के खड़ा हो गइले. हाथ कान पर अइसे लगवलन कि लागे कि हाथ में फोन होखे आ लइकन जइसन सुरूर आ ललक भर के कहले, "त हम ना कुछ कहब, ना कुछ सुनब. बस मोबाइल फोन पासे धइले राखब. तब त खरचा ना नू बढी?"

"मतलब ना काल करबस ना सुनबस?" चेयरमैन साहब भइकले, "तब का करे खातिर मोबाइल फोन रखबस जी?"

"सिरिफ एह मारे कि लोग जानें कि हमरो लगे मोबाइल बा. हमरो स्टेटस बनल रही. बस !"

"धत चूतिया कहीं के." चेयरमैन साहब के एह कहला का साथ ही महफिल उखड़ गइल. काहें कि चेयरमैन साहब सिगरेट झाड़त उठ खड़ा भइलन आ पत्रकारो.

तबहियो लोक कवि मनले ना. मोबाइल फोन के उधेडबुन में लागल रहले.

एगो वकील के बिगडैल लडिका रहल अनूप. लडिकीयन का फेर में ऊ लोक कवि के फेरा लगावल करे. बाहर के लडिकीयन के लालच देव कि लोक कवि किहाँ आर्टिस्ट बनवा देब आ लोक कवि किहाँ के लडिकीयन के लालच देव कि टी.वी.आर्टिस्ट बनवा देब. एह खातिर ऊ कुछ टेली फिल्म, टेली सीरियल बनावे के ढोंगो पसरले रहवे. किराया पर कैमरा ले के ऊ शूटिंग वगैरहो के ताम-झाम जब तब फइलावल करे. लोक कविओ ओकरा एह ताम-झाम में फंसल रहले. दरअसल अनूप लोक कवि के एगो कमजोर नस ध लिहले रहवे. लोक कवि जइसे शुरुआती दिनन में कैसेट मार्केट में आवे ला परेशान,

बेकरार, आ तबाह रहलें ठीक वइसही अब के दिन में उनुकर परेशानी सी.डी. आ वीडियो एलबम के रहल. एह बहाने ऊ टी.वी. चैनल पर छा गइल चाहसु. जइसे कि मान आ दलेर मेंहदी जइसन पंजाबी गायक ओह घरी अपना एलबमन से चैनल पर चैनल छपले रहसु. बाकिर भोजपुरी क सीमा, उनुकर जुगाड आ किस्मत तीनो उनुकर साथ ना देत रहे आ ऊ मन ही मन छटपटाइल करसु आ शांत ना हो पावसु. काहें कि सी.डी. आ एलबम के द्रौपदी ऊ हासिल ना कर पावत रहले. खुल के सार्वजनिक रूप से आपन छटपटाहट देखाइओ ना पावसु. लोक कवि के एही छटपटाहट के छांह दिहले रहुवे अनूप.

अनूप, जेकर बाप एडवोकेट पी.सी. वर्मा अपना जिला के मशहूर वकील रहल. आ ओकरा वकालत के एगो ना कई गो किस्सा रहल. लेकिन एगो ठकुराइन पर दफा 604 वाला किस्सा सगरी किस्सन पर भारी रहल.

मुख्तसर में ई कि एगो गांव के एगो ठकुराइन भरल जवानी में विधवा हो गइल. बाल बच्चो ना रहल. लेकिन जायदाद ज्यादा रहल आ सुंदरतो भरपूर रहल. उनुकर पढ़ाई लिखाई हालां कि हाईए स्कूल ले रहल तबो ससुराल आ नइहर में उनुका बराबर पढ़ल कवनो औरत उनुका घर में ना रहे. औरत त औरत कवनो मरदो हाई स्कूल पास ना रहल. से ठकुराइन में अपना अधीका पढ़ल लिखल होखे के गुमानो कपारे चढ़ के चिल्लाव. एहसे सुंदर त ऊ रहले रही तवना पर "पढ़लो लिखल". से नाक पर माछीओ ना बइठे देसु. लेकिन उनुकर दुर्भाग्य कि दुर्घटना में पति के मरला का बाद जल्दिए विधवा हो गइली. महतारी बने के सुखो उनुका ना मिल पावल. शुरू में त ऊ सुन्न पड़ल गुमसुम बनल रहसु. बाकिर धीरे-धीरे उनुकर सुन्न टूटल त उनुका लागल कि उनुका जेठ अउर देवर दुनु के नजर उनुका देह पर बा. देवर त मजाके मजाक में कई हाली उनुका के धर दबोचे. उनुका ई सब नीक ना लागे. ऊ अपना मर्यादा में रहत एकर विरोध करसु. लेकिन बोलसु ना. फेर एक दुपहरिया जब अचके उनुका कोठरी में जेठो आ धमकले त ऊ खउल पड़ली. हार के ऊ चिल्ला पड़ली आ जेठानी के आवाज दिहली. जेठ पर घइलन पानी पड़ गइल आ ऊ "दुलहिन-दुलहिन" बुदबुदात सरक लिहले. जेठ त मारे शरम सुधर गइले बाकिर देवर ना सुधरल. हार के ऊ सास आ जेठानी से ई समस्या बतवली. जेठानी तो समझ गइली आ अपना पति पर लगाम लगा दिहली लेकिन सास घुडप दिहली आ उलुटे उनुके पर छिनार होखे के अछरंग लगा दिहली. सास कहली, "एगो बेटा के डायन बन के खा गइल आ बकि दुनु के परी बन के मोहत बिया. कुलटा, कुलच्छनी!"

ठकुराइन सकता में आ गइली. बात लेकिन थमल ना. बढ़ते गइल. बाद के दिन में खाए, पहिरे, बोले बतियावहु में बेशऊरी आ छिनरपन छलके के अछरंग पोढ़ होखे लागल. हार मान के ठकुराइन अपना पिता आ भाई के बोलवली. बीच-बचाव रिश्तेदार, पट्टीदारो कइले-करवले. लेकिन ऊ जवन कहला नू कि, "मर्ज बढ़त गइल, जस जस दवा कइनी." आ आखिरकार ठकुराइन एक बेर फेरु अपना बाप भाई के बोलवली. फेर जमीन जायदाद आ मकान पर आपना कानूनी दावा ठोंक दिहली.

आखिरकार पूरा जायदाद में तिसरी अपना नांवे करवा के ऊ अलगा रहे लगली. अब जेठ आ देवर उनुका खिलाफ खुल के सामने आ गइले. उनुका के तरह-तरह से परेशान करसु, अपमानित करसु. लेकिन ऊ चुप लगा के सब कुछ पी जासु. लेकिन एक दिन ऊ चुप्पी तूडली आ अइसन तूडली कि पूरा

गांव हैरान रह गइल.

ऊ सगरी लाज-हया, परदा-लिहाज तूडली आ अपना पति के कुरता पायजामा पहिर लिहली. अपना पति के लाइसेंसी दुनाली बंदूक, जवन अब उनुका नांवे हो गइल रहे, उठवली आ घर से बहरि निकल के अपना जेठ आ देवर के ललकार दिहली. बाकिर जेठ, देवर घर से बहरी ना अइलें, घरे में दुबकल रहले. ठकुराइन के चीखल चिचियाइल सुन के एक बेर देवर तमतमा के उठबो कइल बाकिर महतारी हाथ जोड़ के ओकरा के रोक लिहली. कहली, "ऊ तो हाथी नीयर पगलाइल बिया, कहीं गोली, बोली दाग दी त का होई?" देवर अपना के रहि गइल. रह गइल घरही में.

ठकुराइन थोड़े देर ले चीखत चिल्लात रहली, हाथ में दुनाली बंदूक लहरावत रहली. सगरी गांव बिटोरा गइल. ठकुराआ मरले देखत रह गइल. बाकिर जेठ-देवर, सास-जेठानी घर से बहरी ना निकलले. घूँघट कढले कुछ बूढ़ अधेड़ औरत ठकुराइन के कवनो तरह समुझा बुझा के घर का भीतर कइली. कुरता पायजामा उतरवा के फेरु से साड़ी ब्लाउज पहिरवली. शील-संकोच, मान-मर्यादा जइसन कुछ हिदायत दिहली. आ जब ई हिदायत अधिका होखे लागल त ठकुराइन बोलली, "ई सब कुछ हमरे ला बा, ओह लोग खातिर कुछ ना ?" अतना कहि के एगो औरत के कान्ह धे बाकिर सिर रख कर उ फफक क रोवे लगली.

बाहर भीड़ छँटे लागल. भितरी भलही ठकुराइन रो पड़ल रही बाकिर बहरि एगो बूढ़ सभका से कहत रहे, "दुलहिन पर दुर्गा सवार हो गइल बाड़ी." जवन होखे अब ठकुराइन गांवे में ना जवारो में खबर रहली. उनका कुरता पायजामा आ बंदूक लहरावे के चरचा सगरो रहे. मिर्च-मसाला क साथे.

दिन फेर धीरे-धीरे गुजरे लागल. अब ठकुराइन के जेठ आ देवरो उनुका से घबरासु. आ कतहीं कवनो मोर्चा ना बांधसु. तबहियो उन का हिया के चोट अबहीं बाचल रहे. सास त खुले आम कहसु, "हमरा करेजा पर लिट्टी ठोंकत बिया." जेठ, देवरो एह बात के समुझस. फेर धीरे-धीरे ठकुराइन के खिलाफ व्यूह रचे में ऊ लोग लाग गइल. अबकी सीधे कुछ करे-करवावे का बजाय वाया-वाया खुराफात शुरू भइल. कवनो छोट जाति के आदमी के ठकुराइन का खिलाफ लगा दिहल, कवनो पट्टीदार के भडका दिहल वगैरह. ठकुराइन सब समुझस बाकिर पहिलहीं का तरह फेर चुपचाप सभ कुछ टार जासु. लेकिन जब उनुका हरवाह के जेठ, देवर भडकवले त ऊ एक हाली फेर खउल गइली. लेकिन अबकी पति के कुरता पायजामा ना पहिरली. नाही दोनाली बंदूकवे उठवली. अबकी ऊ कुछ ठोस कारवाई करे चहली.

लेकिन तबहिए उनकर दुर्भाग्य फेरु उनुका के घेर लिहलसि.

घर के अँगना में धोवल गेहूं सुखवावे खातिर पसरले रहुवी. बाहर के दरवाजा कवनो काम से खुलल रह गइल. कि तबहिए दू तीन गो बकरी दउड़त-कूदत घर में आ गइली सँ. आ आंगन में पड़ल गेहूं चबावे लगली सँ. ठकुराइन वइसही खदकत रहली, बकरियन के गेहूं में मुंह मारत देखली त भडक गइली. घर में राखल एगो डंडा उठवली बकरियन के मारे ला. बाकी बकरी त डंडा उठावते फुटुक के भाग गइली सँ. बाकिर एगो बकरी फंस गइल. ठकुराइन सगरी खीस, सगरी खदकल ओही बकरी पर उतार दिहली. डंडा के वार अतना मजगर रहल कि ऊ बकरी बेचारी ओहिजे छटपटा के छितरा गइल. थोड़िके देर में ओकर साँसो रुक गइल आ ओहिजे आंगने में दम तूड़ दिहलसि.

ठकुराइन डेरा गइली. माथ पकड़ के बइठ गइली. पहिला चिंता जीव हत्या के रहल. एह अपराध बोध में एह पाप बोध में त ऊ रहबे कइली दोसर आ ओहु ले बड़ चिंता रहल कि जाने केकर बकरी रहवे ई. आ जेकरे बकरी होखी ओकरा के जेठ, देवर चढ़ा भइका के जाने का-का करवाई ?

आ उनकर ई डर साचहु साँच साबित भइल. ऊ बकरी एगो खटिक के रहवे. ऊ आसमान कपारे उठा लिहलसि. ठकुराइन समुझ ना पावत रही कि का करसु ऊ. काहे कि ऊ खटिक अब छिटपुट गारिओ देबे लागल रहे. ऊ अपना जेठ आ देवर से ना त हार मानल चाहत रही ना ही ओह लोग का सोझा झुके ला तइयार रही. नइहरो में बार-बार ऊ लोर बहावत, शिकायत करत आजिज आ गइल रही. से हार मान के ऊ घर में ताला लगवली आ चुपचाप शहर के रास्ता धइली. शहर चहुँप के पता कइली कि सबले बइका वकील के ह? फेर ओह वकील के घर के पता लगा के ओहिजा चहुँपली. सुंदर रहबे कइली से से घर में एंट्री मिले में मुश्किल ना भइल, ना ही वकील से मिले में. वकील के चैंबर में गइली त कुछ अउरिओ लोग ओहिजा बइठल रहे. से ऊ तनिका संकोच घोरत कहली, "माफ करीं हम तनिका प्राइवेट में बतियावल चाहत बानी." सुंदर आ जवान औरत खुद ही प्राइवेट बतियावल चाहत होखे त भला कवन मरद मना कर पाई ? वकीलो साहब इंकार ना कर पवले. ओहिजा बइठल लोग के जतना जल्दी संभव भइल निपटवलन आ जब सब लोग चैंबर से बाहर निकल गइल त मुंशी के बोला के बता दिहलन कि, "थोड़ देर ले केहु के भितरी मत आवे दीहस." फेर ठकुराइन से कहले, "हँ, बताईं मैडम!" फेर मैडम बकरी वाली मुश्किल आ खटिक के पट्टीदारी के लोग के चढ़वला भइकवना के बात विस्तार से बतवली आ कहली, "जवन पइसा खरच होखी, हम करब." फेर ऊ हाथ जोड़ विनती करत कहली, "लेकिन हमरा के बचा लीं वकील साहब!" फेर अपना जगह से उठ के उनका लगे ले गइली आ गोड़ छूवत कहली, "हमरा के बचा लीं." फेर जोड़ली, "कवनो कीमत पर." वकील साहब मौका देख के उनुकर पीठ पर हाथ फेरलन, तोस दिहलन आ कहलन, "घबराईं जन, बइठीं कुछ सोचत बानी."

फेर थोड़ देर ले ऊ चिंतित मुद्रा में मौन रहलन. माथ पर दू-चार हाली हाथ फेरलन. कानून के दू चार गो किताब अलटन-पलटन आ लगभग परेशान हो गइलन. उनकर परेशानी देख ठकुराइन बेकल हो गइली. कहली, "का ना बच पाएब?"

"रउरा तनी शांत बइठीं." कहिके वकील साहब अपना लिलार पर परेशानी के कुछ अउर रेघारी गढलन. फेर कुछ अउर कानून के किताब अलटले-पलटले. आ अब उनुका अपना सोझा बइठल मेम साहिब के बुडबकाही भरल गंभीरता पर पूरा यकीन हो गइल आ इहो कि अब चूके के ना चाहीं. माथ पर हाथ फेरत कहलें, "दरअसल रउरा कवनो आदमी के हत्या कइले रहतीं त आसान रहीत, बचा लेतीं. काहें कि तब सिरिफ धारा तीन सई दूइए लागीत. लेकिन रउरा जीव हत्या कर दिहले बानी से मामिला डबल हो गइल बा आ 302 क बजाय मामिला दफा छह सई चार के हो गइल बा." वकील साहब तनिका अउर गंभीर भइलें, "दिवकत इहे होखत बा तवना पर ई बकरी खटिक के रहल. आ शायद रउरा नइखीं जानत कि खटिक अनुसूचित जाति में आवेला. से एगो पेंच इहो पड़ी."

ठकुराइन अब अउर घबरा गइली. कहली, "लेकिन हम त राउर बड़ा नाम सुनले बानी. तबहिए रउरा लगे आइल बानी." ऊ तनिका अउर खुलली, "जवने कीमत देबे होखी हम देब. खरचा-बरचा के रउरा

फिकिर मत करीं, हम सब करब. चाहीं त रउरा जज-वज सब सहेज लीं. " ऊ लगभग घिघियइली, "बस कइसहूं रउरा हमरा के बचा लीं. गांव में हमार बेइज्जती जन होखे, पट्टीदारन का सोझा मूडी ना नवे."

"घबराईं जन." वकील साहब भरपूर तोस देत कहलन, "अब रउरा हमरा लगे अतना भरोसा ले के आइल बानी त कुछ त करहीं के पड़ी." ऊ निशाना अउरी दुरुस्त करत कहलें, "अब समुझीं कि अगर रउरा के ना बचा पवनी त हमार वकालत त बेकारे गइल. हमारथू-थू होखी आ हम वकालत छोड़ देब." ऊ कहलें, "त रउरा निश्चित रहीं हम जी जान लगा देब. रउरा कुछ ना होखी. उलटे ओह खटिकवे के फंसवा देब. कि आखिर ओकर बकरी रउरा घर में घुसल कइसे? ओकर हिम्मत कइसे भइल एगो शरीफ आ इज्जतदार अकेल औरत के घर में बकरी घुसावे के."

ठकुराइन वकील साहब के एह कहला से बहुते आश्चस्त भइली. उनुका चेहरा पर खुशी के कुछ रेखा लउकल. ऊ बुदबुदइली "राउर बहुते कृपा." फेर वकील साहब कुछ स्टाम्प पेपर आ वकालतनामा पर उनुका से दस्तखत करवलें. खटिक के आ उनकर पूरा पता लिखलन. एक हजार रुपए फीस के वसूललन. आ कहलें, "मैडम रउरा निफिकिर रहीं. राउर इज्जत सम्हारल अब हमार काम बा." बाकिर एहतियातन उनुका से इहो कह दिहलन कि, "रउरा इज्जतदार आ प्रतिष्ठित औरत हई से रउरा के कचहरी, इजलास दउडहू धूपे से छुट्टी दिअवा देब जज साहब के दरखास्त दे के. नाहक ओहिजा अइला से बेइज्जती होखी. रउरा बस एहिजे आके सीधे हमरे से मिलत रहब." फेरु वकील साहब आगाह कइलन कि, "हमरा मुंशी भा कवनो जूनियर वकीलो से एह केस के चरचा मत करब. भूलाइओ के ना. ना त एक मुँह से दू, दू से चार, चार से चालीस मुँहे बात पसर जाई. खामखा जगहंसाई होखि आ केसो में हो सकेला कि नुकसान हो जाए. से धैयान राखब, ई बात हमरा रउरा बीचे प्राइवेटे रहे."

बिलकुल कवनो आज्ञाकारी बचवा जइसन ठकुराइन वकील साहब के सगरी बात मान गइली. आ निफिकिर भाव से खुशी-खुशी गांवे लवट गइली. गाँवे अइला पर खटिक फेरु हल्ला दंगा कइलस. बाकिर दोसरके दिन पुलिस आइल आ ओह खटिक के पकड़ ले गइल. भइल ई रहे कि वकील साहब ठकुराइन क ओर से पुलिस में खटिक के खिलाफ एगो दरखास्त दे के जान माल के खतरा बता दिहलन आ पुलिस वालन के पटिया के धारा 107 आ 151 में खटिक के बंद करवा दिहलन. अपने एगो जूनियर लगाके दोसरा दिने ओकरा के जमानत पर छुड़वाइओ दिहलन. ओकरा के कचहरी में अपना तख्ता पर बोलववलन, दू सौ रुपिया दिहलन आ आपन बात समुझवलन.

खटिक गांवे वापिस आइल आ ठकुराइन से माफी मांगे के बात कहलसि. ठकुराइन उलटे ओकरा के झाड़ दिहली. कहली, "जो कचहरी में नाक रगड़. माफी ओहिजे माँग." ठकुराइन बिलकुल वीर रस में रहली. खटिक चल गइल. लेकिन कुछ दिन बादे फेरु भाव खाए लागल. ठकुराइन भाग के शहर गइली. वकील से मिलली. वकील उनुका के तोस दिहलन, फीस लिहलन. बाद के दिन में त जइसे ई रूटीन बन गइल. खटिक ठकुराइन से कबो गिड़गिड़ाव, कबो भाव खा जाव. ठकुराइन फेरु शहर जासु आ बात खतम हो जाव. लेकिन फेरु कुछ दिन में उपट जाव. काहे कि होत इ रहे कि ठकुराइन के खिलाफ कवनो मुकदमा त असल में रहल ना बाकिर खटिक के खिलाफ 107 आ 151 क मुकदमा त रहबे कइल. से ऊ पेशी पर शहर जाव, वकील से मिले, सौ पचास रुपिया लेव आ वकील के कहे मुताबिक गांव में "रेक्ट"

करे. कबो कहे कि, "अबकी त हम फंस गइनी. लागत बा मुकदमा हमरा उलटा जाई." त कबो कहे, "अब त ठकुराइन बचीहें ना, सजा इनके होखी." काहे कि वकील साहब किहां से अइसने कुछ कहे के निर्देश होखे. जब जइसन इशारा मिले खटिक गांवे आ के वइसने ऐक्ट करे. ठकुराइन के जेठ, देवर, सासो मामिला का तह में गइले बिना ठकुराइन के फजीहत के आनंद लेसु.

ठकुराइन के अब शहर गइल बढे लागल रहे. वकील साहब उनुका से फीस त लेते रहले. फंसावतो रहले. ठकुराइन के ई सब ठीक ना लागे. बाकिर गांव में उनुकर इज्जत वकील साहब बचवले रहलन से ऊ एकरा के बेमने से सही शुरू-शुरू में बर्दाश्त करत गइली. लेकिन बाद में उनुको ई सन ठीक लागे लागल. वकील साहब के पुरुष गंध में उहो बहके लगली. शुरू-शुरू में त वकील साहब के चैम्बरे में प्राइवेट बातचीत के दौरान नैन मटक्का करसु, उनुका घरे में ठहरसु. लेकिन बाद में वकील साहब के घरे में महाभारत मचे लागल. ऊ कहल जाला नू कि लहसुन के खाइल आ दोसरा के नारी के सोहबत छुपवले ना छुपाए. से बात गँवे-गँवे खुले लागल. काहे कि ठकुराइन पहिले त सिर्फ मुवक्किल रहली, बाद में खास मुवक्किल बनली आ फेर अचानके खासमखास बन गइली वकील साहब के. हालांकि देह के सांकल ठकुराइन वकील साहब ला अबले खोलले बा रही बाकिर आँख का रस्ते मन के सांकल ले त वकील साहब आइए गइलन. ई बाति ठकुराइनो जान गइली. वकील साहब संगे सिनेमा-विनेमा, चाट, पकौड़ीओ ऊ करे लगली. लेकिन बाद में वकील साहब के घर में झंझट जब अधिका बढ गइल त वकील साहब उनुका के एगो होटल में टिकावे लगलन. कबो-कभार होटल पहुंच के हालो चाल ऊ ले लेसु. लेकिन जल्दिए मुख्य हाल चाल पर आ गइलन आ ठकुराइन के मीठ-मीठ ना नुकुर के बावजूद ऊ उनकर देहबंध आखिर लांघिए लिहलन. अब कई बेर वकील साहब होटले में ठकुराइन संगे दिन रंगीन कर लेसु. लेकिन कई हाली होटल दिक्कत होखे से ऊ ठकुराइन के शहरे में घर खरीदे के सलाह दिहलन. ठकुराइन घर खरीदली त ना बाकिर एगो अलग घर किराया पर ले लिहली. ई कहि के बाद में खरीदिओ लेब. बाद में ऊ आवास विकास के एगो एम.आई.जी. मकान खरीदबो कइली. एह बीच दू तीण बेर एबॉर्शनो क दिक्कत उठावे पड़ल ठकुराइन के. आखिरकार वकील साहब एगो प्राइवेट डाक्टर से उनुका के कापर टी लगवा दिहलन. अब कवनो दिक्कत ना रहे. वकील साहब गांव में ठकुराइन के इज्जत बचावे के फीस धन आ तन दुनु में वसूलत रहले. सिलसिला चलता रहल. खटिक के 107 आ 151 के मुकदमा कब के खतम हो गइल बाकिर ठकुराइन के खिलाफ दफा 604 के मुकदमा खतमे ना होत रहे.

लेकिन ठकुराइन के एकर फिकर ना रहे. ऊ त भर गरदन वकील साहब के जीयत रहली. हँ वकील साहब जरूर उनुका के जीयत ना रहले. ऊ त भोगत रहले. कबो-कबो कवनो बाति ला दुनु क बीच खटपटो होखे लेकिन कुछुए दिन के तनातनी के बाद वकील साहब उनुका के "मना" लेसु. हालां कि तनातनी के दिन में ठकुराइन गांव चल जासु. खेती बारी बटईया दे दिहले रही. बखरा में जवन अनाज मिले ओकरे के बेच बाच के खरचा चलावसु. कुछ आगा दिन ला बैंको में जमा करत रही. धीरे-धीरे समय बीतत गइल. ठकुराइन भले देह सुख में डूबल कुछ देखत सुनत ना रहली. बाकिर लोग त सब कुछ देखत सुनत रहे. गांव में जवना इज्जत के बचावे का फेर में ऊ एह फांस में फंसली ओहिजो लोग दबल जुबान आ फुसुरे फुसुर से सही जानिए चलल कि जेठ, देवर के धूर चटावे वाली ठकुराइन

शहर में एगो वकील के रखैल बन गइल बाड़ी. बात ठकुराइन के नइहरो ले चहुँपल. उनुकर भाई एकाधबेर ऐतराजो जतवलसि बाकिर बाद के दिन में ऊ सिंगापुर चल गइल कमाए. बाप के निधन हो गइल. देवर, जेठ के ऊ माछियो-मच्छर बराबर ना समुझत रहली. गांव में ज्यादातर रहबो ना करसु कि ताना सुनस. दोसरे, घर में काम धाम करे वाला, देखभाल करे वालन के पइसा, अनाज के मदद दे के एतना उपकृत कइले रहसु कि ऊ होंठ खोलल त दूर डट के आंख मूंद ल सँ. आ जे केहू ठकुराइन के गैरमौजूदगी में कबो कभार एहनी से चरचा चलइबो के त ई सब तरेर देसु. कहसु, "ठकुराइन मलकिन पर अइसन अछरंग के बात हमरा सोझा करबो मत करीहऽ ना त जीभ खींच लेब."

लोग प्रतिवाद करे, "त शहर में रहेली काहे ला?"

"इहां के नरक से ऊब के." आदमी जोड़सु, "फेर मलकिन के एहिजा सुविधो का बा ? शहर में बड़ी सुविधा बा. सड़क बा, बिजली बा, दुकान बा, सनीमा बा. आ एहूले बड़ बात कि ओहिजा फटीचर नइखन एहिजा जइसन छोट-टुच्च बात करे खातिर."

"हँ भई, जेकर खइबऽ ओकर त बजावहूँ के पड़ी." कह के लोग बात खतम कर देव.

लेकिन बात खतम कहाँ होखे भला?

दिन गुजरत गइल. अब ठकुराइन के चेहरा से चमक छुट्टी लेबे लागल. विधवा जीवन के अवसाद आ अनैतिक जीवन जीए के तनाव उनुका चेहरा पर झलके लागल. हालां कि शहर में ऊ पड़ोसियन से कवनो खास संपर्क ना रखत रही आ पूरा शिष्टता, भद्रता से माथ पर सलीके से पल्लू राखिए के घर से बाहर निकलस तबहियो ताड़े वाला आंख ताड़िए लेव. हालां कि घर में काम करे खातिर एगो बुढिया आ एगो छोट लइको के ऊ अपना नइहर से ले आइल रही तबहियो अकेल औरत लगे जब एगो मरद आवत जात रहे त केहू सवाल भले मत उठावे बाकिर उठिए जाला. फेर उनकर अकेला औरत के ठप्पा ! लोग कहे बे पतवार के नाव हवे जे चाहे, जेने चाहे चाहे बहा ले जाव. बाकिर अब दिक्कत ई रहे कि बढ़ती उमिर के साथे-साथ उनुकर अकेलापन अब उनुका साले लागल रहल. एह अकेलापन से उबिया के दू एक बेर वकील साहब से दबल जबान शादी कर लेबे के कहबो कइली. बाकिर वकील साहब टार दिहले. उनुकर दलील रहे कि, ऊ बाल बच्चेदार बाड़ें, शहर में उनुकर हैसियत आ रूतबा बा. से लोग का कही ? दोसर दलील उमिर के अंतर के रहल, तिसरका दलील ई कि रउरा क्षत्रिय जाति के हई आ हम कुर्मी. एहू पर समाज में बखेड़ा हो सकेला. एहसे जइसे चलत बा वइसहीं चले दीं. एही में हमनी दुनु के भलाई बा आ समाजो के. ठकुराइन जबान पर त लगाम लगा गइली बाकिर मने मन कसमसाहूँ लगली. ऊ सोचली कि अब वकील साहब से पूरा किनारा कर लेसु. बाकिर ऊ अबहीं सोचते रहली कि पइली कि अब वकील साहब खुद ही उनुका से किनारा करे लागल बाड़े. अब उनुका घर में आइलो गइल कम से कम हो गइल. ऊ सब कुछ छोड़ के अब गांवे वापिस जा के रहे के सोचे लगली. लेकिन उनुकर दफा 604 वाला बकरी के हत्या वाला केसो फंसल पड़ल रहे. ऊ इहो गौर कइली कि अब वकील साहब उनुका केसो पर खास धेयान ना देत रहलें. ना उनुका पर ना उनुका केस पर.

ठकुराइन के चिंता के अब कवनो पार ना रहवे.

बाद में ऊ जब एकरा तह में जा के पता लगवली त एक बात त साफ हो गइल कि एगो

लड़िकी वकील साहब के जूनियर बनके आ गइल रहे, वकील साहब के दिलचस्पी अब ओह जूनियर वकील में बढ़ गइल रहे. ई त ऊ समझली. बाकिर उनुका केस में ऊ कवनो दिलचस्पी नइखन लेत ई बात ना समझ पावत रहली. ऊ सोचली कि कवनो दोसरा वकील से एह बारे में दरियाफ्त करसु लेकिन उनुका वकील साहब के हिदायत याद पड़ल कि, "केही से एकर जिकिर मत करब ना त केस बिगड़ जाई."

से ऊ चुप लगा गइली.

लेकिन कब ले चुप लगवती भला? वकील साहब के चेंबर में उनुकर आना जाना बढ़ गइल. वकिलाइनो अब उनुका के देख नाराज ना होखसु ना ही कुढते रहसु. अब त कुढे खातिर उनुका ऊ जूनियर वकील मिल गइल रहुवे. अब वकील साहब चैम्बर में प्राइवेट में ओह जूनियर वकील से मिलस. एह फेर में कई बेर ठकुराइनो के बाहर बइठे पड़ जाव. उनुका ई सब बहुते अखरे बाकिर मन मारि के रह जासु.

अब जब ऊ चैम्बर के बाहर बइठसु त चाहे अनचाहे केहू ना केहू से बातोचीत शुरू हो जाव. एह तरह आवत जात अठरियो लोग से परिचय बढ़े लागल. हालां कि विधवा होखला का चलते ऊ सादा साड़ी पहिरसु. मेकअपो ना करसु. ऊ माथ पर आँचर रखले बहुते अदब से, सलीका अउर शऊर से बतियावसु, गंभीरो रहसु, आंखिन में शील संकोच सहेजले केहू से अधिका हँसबो मुसुकास ना तबहियो पहिले लेखा ऊ सभका के अनदेखीओ ना करसु. पहिले अपना सुंदरता आ जवानी के गुरुरो रहल. से सभके बेदेखले चलसु. बाकिर अब सुंदरता के उ गुरुरो उतार पर रहुवे. ऊ चालीस के उमिर चहुँपत रहली तबहियो ऊ जब रिक्शा से भा पैदल कइसहूँ चलसु, लोग मुड-मुड के उनुका के देखे जरूर. त उनुका लागे कि अबही जवानी बाकी बा. अबहीं उनका देहयष्टि में दम बा आ उनुका अपना पर गुरुर आ जाव.

एही गुरुर में ऊ एक दिन सड़क पर खड़ा होके रिक्शा खोजत रहली कि तबहिए वकील साहब के एगो पुरान जूनियर वकील मोटर साइकिल से ओने से गुजरल. ठकुराइन के देख के थथमल, नमस्कार कइलसि. रुकल आ हाल चाल पूछलसि. कहलसि, "जहां जाए होखे चलीं हम चहुँपा देत बानी." बाकिर ठकुराइन बहुते शालीनता से आँचर ठीक करत मना कर दिहली. कहली, "जी बहुत मेहरबानी बाकिर हम रिक्शा से चल जाएब. रउरा काहें तकलीफ करब ?" कह कर ऊ वकील के टाल गइली. बाकिर वकील गइल ना रुकल रहल. बोलल, "अच्छा रिक्शा मिले ले त राउर साथ दे सकीलें."

"हँ, हँ काहे ना ?" हलुका मुसुकात ठकुराइन कहली. वकील एनेर-ओने के बात करत अनायासे उनुका केस का बारे में बतियावे लागल. पूछते-पूछत जिरह करे लागल. हालां कि ठकुराइन ओकर हर जिरह टारत गइली. बाकिर जूनियर वकील जइसे ढिठाई पर उतर आइल, "आखिर कइसन केस ह राउर जे एतना बरीसन से खतमे नइखे होखत. एककै कोर्ट में अटकल पड़ल बा."

ठकुराइन तबहियो चुप रहली.

"अब ले त केस हाई कोर्ट में पहुंच जाला अपील में अतना बरीसन में आ राउर केस अबहीं डिस्ट्रिक्टो जज का लगे ना पहुंचल ? आखिर ह का ?"

"रउरा ना जानब वकील साहब! बहुत बड़ मामिला ह. उ त वर्मा जी वकील साहब बानी कि

बचवले बानी ना त हम त फंसिए गइल रहीं."

"लेकिन केस ह का?" ऊ जूनियर वकील बोलल, "राउर कवनो फाइलो नइखे चैम्बर में कि हमनी का देखतीं."

"केस बड़हन ह एहसे वकील साहब खुद देखीलें."

"अरे तबहियों फाइल कबो त कोर्ट जाई-आई. तारीख लागी." ऊ माथा के पसीना पोंछत बोलल, "आखिर केस ह का ?"

"दफा 604 के. " ठकुराइन आहिस्ता से बोलिए दिहली.

"दफा 604 ?" वकील भडकल, "इहे बतवनी ह नू रउरा कि दफा 604 ?"

"जी. " ठकुराइन अइसे बोलली जइसे ई बता के कवनो पाप कर दिहले होखसु. कहली, "जाए दीं. रउरा जाई."

"हम तो चल जात बानी मैडम बाकिर दस बारह साल से हमहूं एह कचहरी में प्रैक्टिस करत बानी. थाना, एस.पी.ओ देखत बानी. आ आई.पी.सी.ओ. त भारत के कानून में अइसन कवनो दफा त हइए नइखे अबहीं ले." ऊ जूनियर वकील बोलल, "बलुक आई.पी.सी. में जवन आखिरी दफा ह ऊ ह दफा 511 बस ! त 604 कहां से आ जाई?"

"लेकिन वर्मा जी त हमरा के इहे बतवले रहीं कि दफा 604 हो गइल." ठकुराइन हकबकात बोलली.

"हो सकेला कि रउरा सुने में गलती हो गइल होखे." जूनियर वकील बोलल, "खैर, छोड़ीं. मामिला रहल का ? भइल का रउरा से ?"

"मतलब?" असमंजस में पड़त ठकुराइन पूछली.

"मतलब ई कि रउरा से अपराध का भइल रहे ?"

"बकरी मर गइल रहे हमरा मरला से. एगो खटिक के रहल."

"ओ हो!" ताली बजावत जूनियर वकील बोलल, "मुलेसर खटिक के त ना?"

"हँ, लेकिन रउरा कइसे जानीलें ?" ठकुराइन फेर अफनइली.

"जानीले ? अरे पूरा कुंडली जानीले."

"कइसे?"

"कचहरी में तखता पर हमेशा आवेला." ऊ कहलसि, "मैडम माफ करब, वर्मा साहब रउरा के डंस लिहलन."

"का कहत बानी रउरा ?"

"बताई चैंबर में रउरा से फीस लेले तखता पर ओह मुलेसर खटिक के फीस देले त का फोकट में ?" ऊ कहलसि, "फेर रउरो मैडम अतना सिधवा बानी? घर में आगा पीछा केहू नइखे का?"

"काहें ना. सभे केहू बा."

"त फेर केहू ई ना बतावल कि बकरी मारल कवनो अपराध ना ह?"

"बाकिर खटिक के रहवे." ऊ कहली, "अइसने वकील साहब कहले रहले."

"अरे लाखन बकरी देश में हर घंटा कटाली सँ. खटिक के होखे भा जोलहा के. कवनो दफा बाकिर लागेला का?" ऊ बोलल, "चलीं गलती से केहू के नुकसान होइए गइल त ओकरा के ओकर खर्चा-मुआवजा आ अधिका से अधिका बकरी के दाम दे दीं. ई का कि फर्जी दफा 604 जवन कहीं हइयें नइखे, ओकरा के सालों साल वकील के चैंबर में लड़ीं." ओ कहलसि, "रउरा त मैडम फंस गइनी."

"का बोलत बानी रउरा ? सही-सही बोलीं." ठकुराइन जइसे अधमर हो गइली. कहली, "वकील साहब त कहले रहलन कि आदमी मारीले त दफा 302 लागेला, आदमी के बकरी मार दिहनी त डबल दफा लागेला दफा 604 आ हमरा के अबहीं ले बचवलहूं बानी उहाँ के."

"रउरा बहुते सोझबक बानी मैडम. रउरा के बचवले नइखन बेचले बाइन. रउरा के बरगलवले बाइन ऊ कानून के बाजार में. जवन दफा कहीं भारतीय कानून में हइए नइखे." ऊ कहलसि, "हमरा पर विश्वास ना होखे त आई कचहरी कवनो वकील, कवनो जज से दरियाफ्त कर लीं !"

"अब हम का बताई, कहां आई ?" बोल के ठकुराइन फफक के रो पड़ली. रोवते-रोवत ओहिजे सड़क पर माथा पकड़ के बइठ गइली.

"रउरा हमरा पर यकीन ना होखे त चैंबर में आ के वर्मे साहब से पूछ लीं कि ई दफा 604 आई.पी.सी. में कहां बा? आ कि राउर केस कवना कोर्ट में चलत बा? सब कुछ दूध के दूध पानी के पानी हो जाई." जूनियर वकील बोलल, "बस भगवान खातिर हमार नाम मत बोलब. मत बताएब कि हम ई सब बतवनी." ऊ बोलल, "हँ, जे हम झूठ साबित हो जाई त ओहिजे हमरा के अपना एह सैंडिल से मारब, हम कुछ ना बोलब." कह के ऊ चले लागल. बोलल, "मैडम माफ करब. रउरा साथे बहुते भारी अन्याय कर दिहले वर्मा साहब." बाकिर ठकुराइन कुछ ना कहली. उनुका मुँह में बकारे ना रह गइल रहे. लोग आसमान से जमीन पर अइसहीं गिरेला बाकिर उनुका लागल कि ऊ आसमान से सीधे पाताल में जा के डूब गइल बाड़ी. उनुका के गुमसुम देख के ऊ वकील बोलल, "हमरा साथे त आप मोटर साइकिल पर बइठब ना. रुकीं हम रउरा ला रिक्शा बोलावत बानी." कह के ऊ एगो रिक्शा बोला ले आइल. ठकुराइन सड़क से उठली, धूरा झाड़त रिक्शा पर बइठली. ऊ गौर कइली कि कलफ लागल उनुका क्रीम कलर के साड़ी जगह-जगह करिया पड़ गइल रहे, सड़क पर बइठ गइला से. ऊ वकील जात-जात उनुका के फेरू नमस्कार कइलस. बोलल, "मैडम नमस्कार!" बाकिर मैडम के मुँह से शब्द गायब रहे. ऊ भँँचक रहली. ऊ धीरे से दुनु हाथ जोड़ दिहली.

"वर्मा जी ने एतना बड़ धोखा दिहलन." रिक्शा जब चले लागल त ऊ अपना आपे से बुदबुदइली. ऊ निकलल रही बाजार जाए खातिर बाकिर वापिस घरे आ गइली. बुढिया महरी से पानी मँगली, पानी पी के ओठंग गइली. दू दिन ले ऊ घरे में पड़ल रहली. बेसुध!

तिसरा दिने ऊ अपना पति के उहे पुरनका कुर्ता पायजामा फेर से खोजली. मिलल त ऊ जगहे-जगह से कटा पिटा गइल रहे. बाजार गइली, एगो नया कुर्ता पायजामा आ अँगवछा खरीदली. घरे अइली. पहिरली. अँगवछा गरदन में लपेटली, दुनाली बंदूक उठवली आ रिक्शा ले के पहुंच गइली सीधे वर्मा वकील के चैंबर पर. धड़घड़ात घुसली. मुंशी उनुकर वेश देख के रोकबो कइलसि कि, "साहब प्राइवेट बात करत बानी." बाकिर ऊ मनली ना. बिना कुछ कहले चैंबर में घुस गइली. जब चैंबर में घुसली त सोफा

पर बड़ठल वर्मा वकील का गोदी में उनुकर जूनियर वकील बाल खोलले पटाइल पड़ल रहे आ ऊ ओकरा छाती, गाल से खेलत रहले. ठकुराइन के अचके देख के पहिले त चिन्हिओ ना पवले. दूर छटकत हड़बडात पूछले, "के ? के?"

"दफा 604 हई. चिन्हलs ना ?" ठकुराइन बिलबिलइली.

"अरे मैडम रउरा ?" ठकुराइन के हाथ में बंदूक देखते घबराइल वकील साहब के हलक सूख गइल. सूखल गला से बोलले, "बड़ठीं-बड़ठीं! बड़ठीं त पहिले."

"बड़ठे नइखीं आइल. दफा 604 का होला, कहां होला जाने आइल बानी." ऊ घुडकत कहली.

"बड़ठीं त." वकील साहब कहलें, "शरीफ इज्जतदार महिला हई आप. बड़ठीं त."

"शरीफ आ इज्जतदार ? हम ?" ऊ कहली, "ई रउरा कहत बानी ?"

"अरे बड़ठीं त!" ऊ कहले तब ले जूनियर वकील लड़की आपन कपड़ा लता ठीक-ठाक कर के धीरे से सरक चैंबर से बाहर निकल गइल. फेर चैंबर में मुंशी आ जूनियर वकीलो आ पहुंचले. हल्ला गुल्ला सुन के घरो के लोग आ गइल. वकिलाइनो. ठकुराइन के ई नया रूप देख उनको ठकुआ मार दिहलसि. बहुते मुशिकल से घर के औरत आ मुंशी मिल के ठकुराइन के काबू कइल. बाकिर ठकुराइन लगातार दफा 604 के किताब मांगत रहली, कवना कोर्ट में उनुकर केस चलत बा आ ओह कोर्ट आ जज के नाम पूछत रहली. बाकिर ठकुराइन के कवनो सवाल के जवाब वकील साहब का लगे ना रहुवे. ऊ कहे लगलन, "मैडम अबहीं रउरा खीसि में बानी. जाई घरे जा के आराम करीं, जब मन शांत हो जाव त आएब, तब बात कइल जाई."

"अच्छा छोड़ीं." ठकुराइन वकिलाइन के खींचत कहली, "रउरे इनका से पूछीं आ तनी शांति से पूछीं कि बकरी मरला के जुर्म का दफा 604 के जुर्म होला? आ ना त फेर का होला?"

"हम कानून ना जानीं." वकिलाइन डेराइल सहमल बोलली.

"अच्छा झूठही बहला फुसला के कवनो शरीफ औरत के रंडी बना दिहल जाव, रखैल बना लिहल जाव, एह अपराध के का कानून होला? ई त जानत होखब?" ठकुराइन सिसकतो में दहड़ली. बाकिर वकिलाइन सब कुछ समुझतो चुप रह गइली.

"हम हई एह वर्मा वकील के रखैल!" ठकुराइन कहली, "दफा 604 के मुजरिम जवन ई वर्मा बनवलसि आ हमरा के एह दफा से बचावत-बचावत एह बेवा औरत के रंडी बना दिहलसि, रखैल बना लिहलसि. आ हमरे खरचा पर. उपर से आपन फीसो लेत रहल दफा 604 से बचावे खातिर." ऊ बिफरत रहली, "बताई अतना साल से ई दोखी हमरा के लूटत रहल. हम का करीं? हे भगवान." कह के ऊ फफक के रो पड़ली. फेर बंदूक उठवली. ट्रिगर दबवली वर्मा वकील के निशाना बना के. सब लोग मारे डर के एक ओर हो लिहल. बाकिर गोली चलल ना. एह अफरा तफरी में केहू गँवे से गोली निकाल दिहले रहुवे बंदूक से. ठकुराइन हैरान रहली. ऊ तुरते बूझ गइली कि गोली निकल गइल बा. ऊ ना आव देखली ना ताव बंदूक पलटली आ ओकरा कुंदे से वर्मा वकील पर धड़ाधड़ प्रहार कइली. ओह बकरियो से अधिका जोर के प्रहार ! वर्मा जी के कपार फूट गइल आ मुंहो. दउड़ के लोग ठकुराइन के पकड़ल. वकील साहब के बचा के चैंबर से बाहर ले गइल लोग. ठकुराइन के समुझावल बुझावल लोग. उनुका के उनुका घरे

भेजल आ वकील साहब के अस्पताल.

डाक्टर लोग बतावल कि वकील साहब के हेड इंजरी हो गइल बा आ ऊ कोमा में चल गइल बाड़ें. अब वकिलाइन दहाड़ मार के रो पड़ली. डाक्टर लगो उनुका के तोस दिहल. दू दिन बाद वकील साहब होश में आ गइलें.

बाकिर ओने पता चलल कि ठकुराइन पगला गइल बाड़ी आ करिया कोट पहिरले गला में फीता बन्हले केहू के देखसु त पत्थर डंडा जवने मिले चला देसु. दस पंद्रह गो वकील एहमें घवाहिल हो चुकल रहले. इहो पता चलल कि खबर सुनते ठकुराइन के जेठ, देवर फौरन शहर आइल आ उनुका के मानसिक चिकित्सालय में भरती करा दिहल. आर उनुका इलाज पर त ओतना ध्यान ना दिहल जवना एह बात पर कि ऊ लोग उनुका जायदाद के वारिस बा. आ ठकुराइन के जेठ, देवर के एह कानूनी दाँव पैँचो में ठकुराइन का खिलाफ खड़ भइले इहे वर्मा वकील.

बाद के दिन में पागलपन के बिना पर ठकुराइन के जमीन जायदाद उनुकर जेठ, देवर अपना नाँवे करा लिहले आ ठकुराइन फेरु पागलखाने से बाहर आ गइली. कबो कुर्ता-पायजामा त कबो पैँट कमीज पहिरले ऊ शहर के सड़कन पर नजर आवसु आ जवने तवने वकील के पत्थर ईट मारत रहसु. लोग उनुका के देखते कहे लागे, "भागस भइया दफा 604 आ गइल." आ उहो केहू पर ईटा पत्थर चलावत चिल्लासु, "लस दफा 604 हो गइल!"

आ अब एही वर्मा वकील के बेटा अनूप लोक कवि के वीडियो अलबम बनावे के झांसा देके उनुका के फँसावत रहवे. आ फिलहाल मोबाइल फोन खरीदे के जुगत उनका के बतावत रहवे. चेयरमैन साहब लोक कवि के आगाहो कइलन कि, 'जइसे बाप दफा 302 के डबल क के 604 में तब्दील कर ओह ठकुराइन के पगला दिहलसि वइसहीं ओह चार सौ बीस वकील के ई बेटवो ओकर डबल माने कि आठ सौ चालीस ह आ तोहरा के का जाई.' लेकिन चेयरमैन साहब के हर नीमन बाउर बात मान लेबे वाला लोक कवि उनुका एह बात पर ना जाने काहे कान ना दिहलन.

अनूप आखिरकार लोक कवि के ऊषा के एगो सेलुलर फोन खरीदवा दिहलसि. सिम कार्ड डलवा के लोक कवि सेलुलर फोन अइसे इस्तेमाल करसु गोया हाथ में फोन ना रिवाल्वर होखो. बातो उ बहुते संक्षेप मे करस आ कई बेर बात पूरा होखे स पहिलहीं खट से काट देसु. लेकिन एक बेर बंबई में कवनो प्रोग्राम कइला का बाद लवटति में लोक कवि के ई सेलुलर फोन गायब हो गइल. लोग पूछबो करे कि, 'कइसे गायब हो गइल?' त लोक कवि बतावसु, 'पी के टुन्न हो गइल रहुवीं. ट्रेन में कवनो मार लिहलसि.'

'कवन मार लिहलसि?' सवाल के जवाब अमूमन लोक कवि टार जासु. लेकिन गुप के अधिकतर कलाकारन के मानना रहल कि मोबाइल अनूपवे चोरवलसि. दिक्कत ई रहे कि लोक कवि के अबकी खाली मोबाइले ना दस हजार रुपियो साथही गायब भइल. बाकिर रुपिया ला लोग अनूप के ना मीनू के नाम बतावे.

जवन होखे, लोक कवि ना त अनूप से कुछ कहलन ना ही मीनू से. अनूप से त उनुका ओतना तकलीफ ना भइल जतना मीनू से भइल. मीनू जेकरा ला उ का ना कइलन। दू गो कोठरी वाला छोटहने सही बाकिर एल.डी.ए. के एगो मकान खरीद कर ना सिर्फ देबे कइलन बलुक ओकर पूरा गिरस्ती बसवले रहन. प्रोग्रामो का फेर में हॉलैंड, इंगलैंड, बैंकाक, अमरीका, मारीशस, सूरीनाम जइसन

कतने देश घुमवले. मर्द छोड़ दिहलसि त ओकरा के पूरा आसरा दिहलन. अउर ना त एक बेर ना जाने कवना के गर्भ ओकरा पेट में आ गइल त उ ना जाने कहवाँ गुप चुप एबॉर्शन करववलसि जवन ठीक से भइल ना आ भ्रूण पूरा से खतम ना भइल, कवनो कण बच्चेदानीए में रह गइल. ओकर जान सांसत में फंस गइल. लागल कि बच ना पाई. अइसनो में लोक कवि दिल्ली ले जा के ओकर इलाज एगो एक्सपर्ट डाक्टर से करववले तब कहीं जा के उ बाचल. लोक कवि पानी का तरह पइसा बहा के ओकर जान बचवलन, लगभग ओकरा के एगो नया जीवन दिहलन. एह तरह जेकरा के जीवन दिहलन, आसरा दिहलन, अपना गुप में स्टार कलाकार के हैसियत दिहलन, अनेके विदेश यात्रा करवलन उ मीनू धोखा से उनुकर रुपिया चुरा लिहलसि? उ मीनू जेकरा के उ आपन मनो देस, उ मीनू? तकलीफ उनुका बहुते भइल बाकिर मन ही मन पी गइलन उ सगती तकलीफ. केहू से कुछ कहलन ना. कहबो करतन त का कहतन? चुपे रहलन. लेकिन मन ही मन टीसत रहलन.

उ अब नया मोबाइल फोन खरीद लिहलन. चोरी ना जाए एह ला चौकन्ना बहुत हो गइल रहले. लेकिन जल्दिए उ नयको मोबाइल उनुका कैंप रेजीडेंसे से एक रात गायब हो गइल. उ तिसरका मोबाइल फोन खरीदलन. लेकिन सेकेंड हैंड. अनूपे खरीदवलसि. लोक कवि जानत रहले कि इहो चोरी हो जाई तबहियो खरीदलन. हालांकि मोबाइल फोन के कवनो खास उपयोगिता उनुका ला ना रहल काहे कि अधिकतर उ कार्यक्रमन में व्यस्त रहसु जहवाँ उ मोबाइल सुन ना पावसु. डिस्टर्ब होखसु उ, फोन से ध्यान टूट जाव. दोसरे, संगीत के शोर में ठीक से सुनाईबो ना करे आ जब कार्यक्रम ना होखे तब उ अमूमन अपना कैंप रेजीडेंसे पर होखसु आ एहिजा उनका लगे टेलीफोन रहबे कइल तबहियो स्टेटस सिंबल मान के उ मोबाइल फोन राखसु. सोचसु कि अगर लोग उनका हाथ में मोबाइल फोन ना देखी त मान लीहि कि आमदनी कम हो गइल बा, मार्केट ठंडा पड़ गइल बा. एहसे मोबाइल फोन बिका गइल, हैसियत ना रहल. अमूमन जमीनी हकीकत पर रहे वाला आ जिनिगी के हकीकत अपना गवनई में ढाले वाला लोक कवि दिखावा के नाक मेनटेन करे लागल रहले. इ उनका खुदही खराब लागे लेकिन फिलहाल त उ फंस गइल रहले. हालां कि उ इहो ऐलान कर दिहले रहले कि, 'अबकी जे मोबाइल चोरी भइल त फेर ना खरीदब.' फेर उ जइसे खुद के तसल्ली देसु, 'फेर ई सेकेंड हैंड मोबाइल केहू चोराई का?' लेकिन इहो भरम उनुकर टूटल आ जल्दिए टूटल. ई सेकेंड हैंड मोबाइलो चोरी हो गइल.

लेकिन अपना ऐलान के मुताबिक उ फेरू चउथका मोबाइल ना खरीदले.

तबो उ परेशान रहलन चोरियन से. अब उनुका किहां खन-बिखन के चोरी होखे लागल रहुवे. एह कैंप रेजीडेंस में उनुकर जँघिया अंगवछा तक सुरक्षित ना रह गइल रहुवे. कई-कई जोडा उ राखसु जँघिया, अंगवछा के. तबहियो कई बेर उनुका ला जँघिया अंगवछा के अकाल पड़ जाव. एक बेर एगो लड़िकी के उ रंगे हाथ पकड़बो कइलन त उ बोलल, 'महीना आ गइल बा गुरु जी, बांधे के बा.' त उ डपटबो कइले, 'त हमरे जँघिया, अंगवछा बन्हबे?' उ बोलल, 'आखिर का बांन्ही गुरु जी, कुर्ता पायजामा त राउर बान्ह ना सकीं.' ई सुन के लोक कवि बेजवाब हो गइलन. ओकरा के पइसा देत कहले, 'केयर फ्री टाइप कुछ मंगवा ल. उहे बान्हस!'

तबहियो उ आए दिन के चोरियन से परेशान हो गइलन. पइसा, कुरता, पायजामा कुछुओ ना बाचे.

बिछवना के चदर ले गायब होखे लागल रहवे. उ कहबो करसु कि, 'असल में ई लड़िकी सभ गरीब परिवार से आवेली स से अपना बाप भाई खातिर अंगवछा, जँघिया उठा ले जाली सँ, बिछवना के चादरो ले जाली सँ, पड़सो कवड़ी ले जाली सँ त चलीं बरदाश्त कर लिहिले. बाकिर एकर का करीं कि सम्मान में मिलल शालो मंचवे पर से गायब हो जाले.' उ बिफरस, 'बताई, सम्मान के शाल भौंसड़ी सभ चोरा लेली सँ! इहे बात खटकेला.' उ जइसे जोड़सु, 'गरीबी के मतलब ई थोड़े ह कि जेकरा से रोजी रोटी मिले ओकरे घरे चोरी करस?' उ बोलस, 'ई त पाप ह पाप. अरे, हमहू गरीबी देखले हई, भयंकर गरीबी. मूस मार के खात रहीं, बाकिर चोरी ना कइनी कबो.' उ कहसु, 'आजुओ जब कबो हवाई जहाज पर चढ़ीले उड़त घरी नीचे देखीले त रोइलें. काहें से कि आपन गरीबी याद आ जाले बाकिर हम कबो चोरी ना कइनी.'

लेकिन लोक कवि चाहे जवन कहसु उनुका किहाँ चोरीचकारी चौतरफा चालू रहल आ अब त उनुकर कुछ चेला कलाकार जे अलग ग्रुप बना लिहले रहले, लोके कवि के गाना गावसु आ गाना का आखिर में तखल्लुस के तौर पर जहवाँ लोक कवि के नाँव आवे ओहिजा से उनकर नाँव हटा के आपन नाँव जोड़ देसु. पहिलहू कुछ चेला अइसन करस बाकिर कबो कभार आ चोरी छुपे. बाकिर अब त अकसर आ खुल्लमखुल्ला. लोक कवि से एह बात के केहू शिकायत करे त उ दुखी त होखसु बाकिर कहसु, 'जाए दीं सब कइसो कमा खात बाड़े सँ, जिए खाए दीं!' पर जब केहू तबो प्रतिवाद करे त उ कहसु, 'हमरा गाना में केहू आपन नाँव खोंस लेता त गाना त ओकर नइखे नू हो जात? एह गाना के कैसेट बा बाजार में हमरा नाँव से. लोग जाने सुनेला गानन के हमरा नाँव से.'

'तबो!' कहे वाला तबहियो प्रतिवाद करे.

'त?' कह के उ बिगड़ जासु, 'चलीं एह कलाकार के त हम बोला के डांट देब. बाकिर केकरा-केकरा के डांटत फिरब?'

'का मतलब?'

'मतलब ई कि बंबई से लिहले पटना ले हमरा गानन के चोरी होखत बा हमरे गाना के धुन, हमरे गाना के भोजपुरी से बदल के हिंदी में केहू से लिखवा-गवा के फिलिमन में गोविंदा हीरो बनल नाचत बाड़े त हम का करीं? कई लोग भोजपुरियै में एने वोने बदल के गावत बा त हम का करीं? केसे-केसे झगड़ा-लड़ाई करीं?' उनकर तकलीफ जइसे उनका जुबान पर आ जाव, 'अब जब गाना सुने वालने के फिकिर नइखे त अकेले हम का करब?' फेर उ अपना गाना के एगो लमहर फेहरिस्त गिना जासु कि कवन-कवन गाना फिलिमन में चोरा लिहल गइल. उहो तब जब एह गानन के कैसेट बाजार में पहिलही से रहल. फेर उ बड़ा तकलीफ से बतावसु, 'बाकिर का करब? भोजपुरी गरीब गंवार के भाषा हवे केहू एकरा साथे कुछओ कर लेव भोजपुरिहा लोग चुप लगा जालें. जइसे गरीब के लुगाई होले वइसहीं भोजपुरी सभकर भउजाई हियस.' उ रुकस ना बोलते जासु, 'लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री भइलन पाकिस्तान के हरा दिहलन, देश के जिता दिहलन लेकिन भोजपुरी के जितावे के फिकिर ना कइलन. चंद्रशेखर जी अपने बलिया वाला, अमरीका के जहाज के तेल दे दिहलन इराक के लड़ाई में बाकिर भोजपुरी के सांस ना दे पवलें. कुछ हजार लोग के बोली डोगरी के, नेपाली के संविधान में बोला लिहलन लेकिन भोजपुरी के भुला गइलन त केहू कुछ बोलल का?' उनकर इशारा संविधान के आठवीं अनुसूची में

भोजपुरी के शामिल ना कइला का ओर होखे. उ कहसु, 'राष्ट्रपति रहले बाबू राजेंद्र प्रसाद. सिवान के रहले, भोजपुरीए में खास-पीयस, बतियावसु, उहो कुछ ना कइलन. एक से एक बड़हन-बड़हन नेता भोजपुरिहा हउवें बाकिर भोजपुरी खातिर सभे मरल जस बा. तब जब कि करोड़ों लोग भोजपुरी बोलेला, गावेला, सुनेला. हालैंड, मारीशस, सूरीनाम में भोजपुरी जिंदा बा, ऊ लोग जियवले रखले बा जे लोग इहां से बंधुआ मजूर बन के गइल रहुवे. बाकिर इहवा लोग भुला गइल बा.' उ कहसु, 'आज काल्ह एतना टी.वी. चैनल खुलल बा, पंजाबी, कन्नड, बंगाली, मद्रासी, इहाँ के कि उर्दूओ में. बाकिर र एकको चैनल भोजपुरी में काहे ना खुलल?' उ जइसे पूछसु, 'भोजपुरी में प्रतिभा नइखे? कि गाना नइखे? कि नेता नइखन? कि पइसा वाला लोग नइखे? तबहियो ना खुलल भोजपुरी में चैनल. दूरदर्शन, आकाशवाणीओ वाला जेतना समय अउरी भषन के देबेले भोजपुरी के कहां देले?' कहत-कहत लोक कवि बिलबिला जासु. अफना जासु. कहे लागस, 'बताई अब पंजाबी गाना में दलेर मेंहदी आरा हिले, बलिया हिले, छपरा हिलेला दू लाइन गा देले त लोग के नीक लागेला. मोसल्लम भोजपुरी में फेर काहे ना सुनेला लोग? जानीलाँ काहें ? उ जइसे पूछस आ खुद ही जवाबो देसु, 'एह नाते कि भोजपुरिहा लोगन में अपना भाषा ला भावना नइखे. एही से भोजपुरी भाषा मरत बिया.' फेर उ बात ले दे के भोजपुरी एलबम अउर सी.डी. पर ले आ के पटक देसु. कहसु कि, 'पंजाबी गानन के एतना अलबम टी.वी. पर देखावल जाला लेकिन भोजपुरी के ना. काहे कि भोजपुरी में अलबम बनले नइखे. एकाध छिटपुट बनलो होखी त हमरा मालूम नइखे.' कह के उ पूरा तरह निराश हो जास आ उनुका एह निराशा के विश्राम देव अनूप कि, 'घबराई जन गुरु जी' हम राउर वीडियो शूटिंग करा के एलबम बनाएब.' आ लोक कवि ई जानतो कि ई सार ठगी बतियावत बा, ओकरा ठगी में समा के चहके लागस. उ जइसे ओकरा वशीभूत हो जास.

कई बेर कुछ गंवाइओ के पावे के तरकीब आजमा के सफल हो जाए वाला लोक कवि के बेर-बेर लागे कि अनूप सिवाय उनुका के लूटे के कुछ नइखे करत. बाकिर उ होखेला नू कि कुछ सपना कवनो कीमत पर आदमी जोड़ेला भलही ओह सपना के सांचो में फिट ना बइठत होखे आ लगातार टूटते जाव तबहियो सपना ना तूडल चाहे! लोक कवि इहे करत रहले आ टूटल जात रहले. हंसत-हंसत. बाखुशी. इ टूटलो अजीब रहल उनकर.

जाने ई उनुकर टूटल भोजपुरी भाषा के बढ़त दुर्दशा ले के रहुवे आ कि एलबम, सी.डी. के बाजार में अपना गैरमौजूदगी के लेके रहल ई समुझ पावल खुद लोको कवि के वश के ना रहे. वश में त अब अपना कैप रेजीडेंस में बढ़त चोरी चकारीओ रोक पावल ना रहल उनुका. बात अब पइसा, कपड़ा-लत्ता आ मोबाइले ले ना रह गइल रहुवे. अब त गैस सिलिंडर ले उनुका किहाँ से चोरी होखे लागल रहुवे. एह चोरी रोके खातिर उ कुछ असरदार ना कर पावत रहले. एहुसे कि लड़िकी उनकर बड़हन कमजोरी बन गइल रहली सँ आ कमजोर छन में कवनो लड़िकी उनुकर कुछुओ ले सकत रहल, मांग सकत रहल. कबो सीधे-सीधे त कबो चोरी छुपे, त कबो-कभार सीनाजोरीओ से. कई बेर त उ पी के टुन्न रहस आ कवनो लड़िकी मौका देख के उनकर कमजोर नस छूवत पूछ लेवे, 'गुरु जी, ई चीज हमरा के दे दीं.' भा 'गुरु जी दस हजार रुपिया दे दीं हमरा के!' भा 'गुरु जी हम त फला चीज ले जात बानी.' जइसन जुमला बोल के कबो गँवे से, कबो फुसफुसा के ले ल सँ आ लोक कवि कबहियो ना नुकुर ना करस, फराख दिल

बन बड़ठस आ आखिरकार मामिला चोरी खाते दर्ज हो जाव. कई बेर इहो होखे कि लोक कवि टुन्नावस्था में सुतल रहस, भा अधजगले भा अधलेटल होखस त लड़िकी भा चेलवो 'प्रणाम गुरु जी!' बोल के कोठरी में घुस जास. एने-वोने ताकत झांकत. गुरु जी से कवनो जवाब ना पा के उनकर गोड़ छूवस. लोक कवि तबहियो टुन्न पड़ल रहसु आ बोलस ना त चेला भा लड़िकी जवने होखे बोले, 'लागत बा गुरु जी सुत गइल बानी का?' तबहियो उ ना बोलसु त अपना सुविधा से मनचाहल चीझु उठा लेस आ ले के निकल लेस ई कहत, 'गुरु जी सुत गइल बानी!' ई सगरी वाकिया, सगरी सच्चाई, संवाद मय अभिनय के लोक कवि बाकायदा छटक-छटक के चलत सदृश्य बतइबो करसु लेकिन कवना दिन कवन रहे, का ले गइल ई बात अमूमन गोल कर जासु. केहू बहुत कुरेदबो करे त उ बात टार जास. कहसु, 'जाए दीं! अरे, इहे सब त मेहनत करेले.' लड़िकियन ला कहसु, 'अरे इहे सभ त गांड हिला-हिला के नाचेली सँ. एकनिए के बूते त हमरा लगे पोरोगरामन के अइसन बाढ लागल रहेला.'

'काहें? रउरा ना गाइलें?' एक दिन उ ठाकुर पत्रकार सवालिया निगाह दउड़ावत कहलसि, 'टीमो त रउरे नाँव से बा. रउरे बुक होखीलें. रउरे नाँव से इहो सभ खाली कमाली सँ.'

'का कहत बानी बाऊ साहब!'

'काहें?' बाबू साहब गिलास के शराब देह में ढकेलत बोलले, 'हम त सच्चाई बतावत बानी.'

'अइसंहीं अखबार में रिपोर्टिंग करीलें रउरा?' लोक कवि तनिका मुसुकात, तनिका तरेरत आ मीठका मार बोलत आपन सवाल दोहरवलन, 'अइसंहीं अखबार में रिपोर्टिंग करीलें रउरा?'

'का मतलब?' बाबू साहब अचकचइले.

'मतलब ई कि रउरा कुछ ना जानीलें.' लोक कवि बोलले तो मिठास घोर के बाकिर अइसे जइसे तमाचा मारत होखसु.

'का मतलब?'

'अब जाए दीं.' लोक कवि कहले, 'कुछ अउर बात करीं.'

'अउर का बात करीं?'

'कुछ विकास के बात करीं, कुछ राजनीति के बात करीं.'

'काहें?'

'कुछऊ करीं बाकिर ई गाना आ लड़िकियन के बात छोड़ दीं!'

'गाना आ लड़िकियन के बात त हम करतो नइखीं. हम त कहत रहीं कि रउरे नाँव से सबकुछ होखेला. रउरे नाँव बिकाला, बस! इहे त हम कहत बानी' बाबू साहब अपना के जस्टीफाई करत कहलें, 'आ रउरा हमरा अखबारी रिपोर्टिंग के बात करे लगनी.' उ कहले, 'अखबार में त हम दोगलईए वाली रिपोर्टिंग करीलें. थोड़े से सच में ज्यादा गप्प और ज्यादा गप्प में थोड़ा सा सच. और कई बार सारे झूठ को सारा सच बता कर. पर यह तो अखबारी नौकरी की विवशता है. कई बार अनचाहे करता हूं तो एकाध बार अपने मन से भी.' वह बोले, 'पर लोक कवि आप का नाम बिकता है यह तो पूरा सच बोल रहा हूं. और कोई नौकरी में नहीं, किसी दबाव में नहीं बल्कि पूरे मन से बोल रहा हूं.'

'बोल चुके आप?' लोक कवि संक्षिप्त सा बोले.

‘बिलकुल!’ बाबू साहब बोले, ‘पर आगे भी बोलूंगा और यही बात बोलूंगा. क्यों कि यही सच है. वास्तविकता है!’

‘सच यह नहीं है!’ लोक कवि बुदबुदाए, ‘आप को तीन पेग में ही आज चढ़ गई है.’

‘नहीं बिलकुल नहीं चढ़ी. चढ़ गई हो शराब तो हराम है शराब मेरे लिए.’ वह बोले, ‘लोक कवि! आफ्टर आल आप मेरी मातृभाषा गाते हैं. और लखनऊ में मेरी मातृभाषा को परवान चढ़ाए हुए हैं.’

‘सब गलत.’

‘तो आप का नाम नहीं बिकता?’ बाबू साहब लोक कवि से बोले, ‘मुझे नहीं आप को चढ़ गई है.’

‘मैंने तो अभी छुई भी नहीं.’ लोक कवि बोले, ‘अभी नहाऊंगा. नहाने के बाद पिऊंगा.’

‘तो फिर क्यों बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं?’

‘बहकी-बहकी बातें मैं नहीं, आप कर रहे हैं.’ लोक कवि बोले, ‘आप की मातृभाषा भोजपुरी को मैं गाता हूं सही है. पर मुझे सुनता कौन है?’

‘क्या?’

‘हां!’ लोक कवि बोले, ‘जानते हैं लोग पोरोगराम बुक करने मेरे पास आते जरूर हैं पर सट्टा करने के पहले पूछते हैं कि लड़कियां कितनी होंगी? यह नहीं पूछते कि आप कितना गाना गाएं? फिर लड़कियों की संख्या पर ही सट्टा और रेट तय होता है.’ लोक कवि बोले, ‘जैसे रैलियों में बड़का नेता लोग लोकल नेताओं से पूछते हैं कि भीड़ कितनी होगी ? वैसे ही पोरोगराम बुक करने वाले पूछते हैं लड़कियां कितनी होंगी? पोरोगराम के लिए पहुंचिए तो छूटते ही पूछते हैं लड़कियां कितनी आई हैं? वह चाहे होली, दीवाली का पोरोगराम हो, चाहे नए साल का या जन्माष्टमी, शादी बियाह का! और अब तो सरकारी पोरोगरामों में भी दबी जबान, फुसफुसा कर ही सही लोग लड़कियों के बारे में दरियाफ्त करते हैं.’ लोक कवि बोले, ‘और जानेंगे? पोरोगराम में जनता भी लड़कियों का डांस ज्यादा देखना चाहती है वह भी धक्का मार सेक्सी डांस. मैं तो कभी कभार तब गाता हूं जब लड़कियां कपड़े चेंज कर रही होती हैं या सुस्ता रही होती हैं. तो वोही मैं एहर वोहर करके दूइ चार गाने में भी ठोंक देता हूं.’ वह बोले, ‘और इनाम मेरे गाना गाने पर नहीं, मेरे ही गाने के कैसेट पर डांस करती लड़कियों के डांस पर आते हैं. और कई बार तो सट्टे के तय रुपए से ज्यादा रुपए इनाम के आ जाते हैं.’ लोक कवि आंखें तरेर कर बोले, ‘तो का ई इनाम आप समझते हैं आप की मातृभाषा के गानों को मिलते हैं? कि लड़कियों के सेक्सी डांस को?’ वह बोले, ‘आप ही तय कर लीजिए मैं कुछ नहीं बोलूंगा.’

‘क्या कह रहे हैं लोक कवि आप?’

‘यही कि अब मैं नहीं गाता हूं.’

‘तो क्या करते हैं आप?’

‘पोरोगराम करता हूं.’ वह बोले ऐसे जैसे अपने ही को परास्त कर चुके हों.

‘यह तो बड़ा दुखद है लोक कवि!’

‘अब बात दुख का रहे चाहे सुख का बकिर है यही!’ लोक कवि बोले ऐसे जैसे वह लुट गए हों.

‘तो आप अपने प्रोगामों में से लड़कियों को हटा क्यों नहीं देते?’

‘हटा दें?’ लोक कवि अर्थभरी लेकिन धीमी मुसकान फँकते हुए बोले.

‘बिलकुल.’ बाबू साहब ठनक कर बोले.

‘मनो हमको बिलवा देंगे?’

‘क्या मतलब?’

‘मतलब ई कि अगर लड़कियों को मैं अपने पोरोगरामों में से हटा दूंगा तो हमारा काम तो ठप समझिए!’

‘क्यों?’

‘क्यों क्या?’ लोक कवि बोले, ‘अरे बाऊ साहब लड़कियां नहीं रहेंगी तो हमको फिर पूछेगा कौन? कौन सुनेगा आप की मातृभाषा? आप की मरी हुई मातृभाषा?’

‘क्या बक रहे हैं आप?’ बाबू साहब अब चौथा पेग खत्म करते हुए बोले, ‘और बार-बार आप की मातृभाषा, आप की मातृभाषा कह-कह कर मेरा उपहास उड़ा रहे हैं यह बंद कीजिए.’ वह बोले, ‘भोजपुरी मेरी ही नहीं आप की भी मातृभाषा है!’

‘मेरी तो रोजी रोटी भी है भोजपुरी!’ लोक कवि बोले, ‘मेरा नाम, सम्मान इसी भाषा के नाते है! मैं क्यों उपहास उड़ाऊंगा बाऊ साहब. मैं तो बस आप को जमीनी हकीकत बता रहा था कि आप समझ जाएं

बाकिर....’

‘बाकिर क्या?’

‘बाकिर दोगली रिपोर्टिंग करते-करते आप की आंख अन्हरा गई है. सच नहीं देखती, सो वही बता रहा था.’ वह बोले, ‘जानते हैं जो आज लड़कियों का डांस हटा दूं और खाली बिरहा गाऊं तो जो आज महीने में पंद्रह से बीस दिन बुक होता हूं साल में भी शायद एतनी बुकिंग नहीं मिलेगी. जो मिलेगी भी वह भी सिर्फ सरकारी.’ वह बोले, ‘बाऊ साहब एक मजेदार बात और बताऊं आप को?’

‘क्या?’

‘जानते हैं लड़कियां जब डांस करते-करते थक जाती हैं, रात के तीन चार बज जाते हैं, पब्लिक फिर भी नहीं छोड़ती तो क्या करता हूं?’

‘क्या?’

‘मैं मंच पर आ के कान में अंगुली डाल के बिरहा गाने लगता हूं. पब्लिक उकता जाती है. धीरे-धीरे खदबदाने लगती है. फिर भी उम्मीद लगाए रहती है कि अभी अगला आइटम फिर डांस का या ड्रिंक का होगा. लेकिन मैं अगले आइटम में किसी लौंडे से भजन गवाने लगता हूं. वह दो तीन भजन ताबड़ तोड़ ठोंक देता है. तब कहीं जा के पब्लिक से छुट्टी मिलती है.’ वह बोले, ‘भोजपुरी और भजन की स्थिति यह है हमारे समाज में. आप भी जान लीजिए, आप पहरूआ हैं समाज के इस लिए बता दिया.’

‘यह तो सचमुच बड़ी मुश्किल स्थिति है.’

‘इस मुश्किल स्थिति से आखिर कैसे निपटा जाए?’ लोक कवि बोले, ‘इस तरह मरती हुई

भोजपुरी में कैसे जान फूँकी जाए?’ वह बोले, ‘आप बुद्धिजीवी हैं, विद्वान हैं, अखबार में हैं. आप ही लोग कुछ सोचिए.’ कह कर लोक कवि अपनी छत पर रखे बाथ टब में नहाने चले गए.

बाबू साहब की दारू थम गई. वह सकते में आ गए. लोक कवि की त्रासदी और अपनी मातृभाषा की दुर्दशा को ले कर. उन्हें अपनी मातृभाषा पर बड़ा गुमान था. भोजपुरी की मिठास, इस का लालित्य और इस की रेंज का बखान वह करते नहीं अघाते थे. दो दिन पहले ही तो प्रेस क्लब में उन्होंने अपनी मातृभाषा का झंडा ऊंचा किया था. पंजाबी साथियों से उन्होंने ने बीयर पीते हुए बघारा था कि तुम्हारे यहां क्या है सिवाए बल्ले-बल्ले और भांगड़ा के? हमारी भोजपुरी में आओ, सब कुछ है यहां. जितने संस्कार गीत भोजपुरी में हैं किसी भाषा में नहीं हैं और आदमी बनता है संस्कार से. बात ज्यादा जब बढ़ी तो वह बोले चड़ता, कजरी, सोहर, लचारी तो छोड़ो भोजपुरी में श्रम गीत ही इतने हैं कि तुम लोग सुनते-सुनते थक जाओ. कहा था कि एक मरने को छोड़ दो तो भोजपुरी में हर समय, हर काम के लिए गीत हैं. चाहे जांत का गीत हो, फसल का हो, मेला बाजार जाने का हो हरदम गीत गाओ. शादी का उदाहरण देते हुए हांका था कि तुम्हारे यहां तो सिर्फ लेडीज संगीत से छुट्टी पा ली जाती है लेकिन भोजपुरी में एक-एक कस्टम के लिए गीत हैं जो भोर में भोरहरी से शुरू हो संझवाती से होते हुए सोने तक चलते हैं. और एक दो दिन नहीं, कई-कई दिन तक. यहां तक कि बारातियों के खाना खाने के समय भी गारी गीत गाए जाते हैं. शादी खत्म होने के बाद भी पांच दिन तक गीतों का कार्यक्रम चलता है. उसने उदाहरण दे-दे कर बताया था. तब वह सब लाचार हो गए थे और कहने लगे कि, ‘हो सकता है पंजाब के गांवों में हमारी पंजाबी में भी यह सब चलता हो पर हमें मालूम नहीं.’ तो एक बुंदेलखंडी पत्रकार उछलता हुआ बोला, ‘हमारे बुंदेलखंड में भी है!’

‘क्या है?’ कह कर बाबू साहब ने उस बुंदेलखंडी को मजाक में दौड़ाया था और पूछा था और जरा ऊंची आवाज में पूछा था कि, ‘सिवाय आल्हा गायन के अलावा क्या है बुंदेलखंड में?’ वह भी निरुत्तर हो गया था. पर जिस भोजपुरी की वीरगाथा उस रोज प्रेस क्लब में उन्होंने ने गाई थी क्या वह गाथा गलत थी? या कि लोक कवि के सवाल गलत हैं? उन के द्वारा बताए गए ब्यौरे गलत हैं?

गलत हैं या सही? कौन सही और कौन गलत में अभी बाऊ साहब सुलग ही रहे थे कि लोक कवि अंगोछा लपेट आ कर कुर्सी में धप्प से बैठ गए. बोले, ‘का बाऊ साहब आप ले क्यों नहीं रहे?’ उन्होंने ने ह्विस्की की ओर इशारा करते हुए कहा और अपना पेग बनाने लगे. बोले, ‘आप भी लीजिए.’

‘क्या लें आप ने तो सारा नशा ही उतार दिया!’

‘क्या?’

‘क्या-क्या बताऊं?’ वह बोले, ‘मैं ऐसे कई लोगों के बारे में जानता हूँ जो या तो अंगरेजी बोलते हैं या भोजपुरी. हिंदी नहीं जानते पर भोजपुरी जानते हैं. और आज आप ने जो भोजपुरी का नक्शा खींचा है, मैं तो दहल गया हूँ.’

‘इसमें दहलने की क्या बात है?’ वह बोले, ‘स्थिति खराब है तो इसे सुधारिए. सुधारने का माहौल बनाइए.’ लोक कवि बोले, ‘पर छोड़िए यह सब ई बताइए कि ऊ लोग कौन हैं जो अंगरेजी और भोजपुरी जानते हैं पर हिंदी नहीं.’

‘यहीं लखनऊ में भी दो चार लोग हैं. दिल्ली में हैं, विदेशों में भी हैं.’

‘अच्छा चहकते हुए लोक कवि बोले, ‘लखनऊ में कौन लोग हैं?’

‘साइंटिस्ट लोग हैं.’ वह बोला, ‘हिंदी टूटी फूटी बोलते हैं पर भोजपुरी सही-सही. ऐसे ही दिल्ली में जे.एन.यू. में बहुत लोग ऐसे मिलते हैं जो या तो अंगरेजी बोलते हैं या भोजपुरी. हिंदी नहीं.’

‘ई दिल्ली में जे.एन.यू. का है?’

‘यूनिवर्सिटी है.’

‘अच्छा-अच्छा.’ वह बोले, ‘हमारा पोरोगराम वहां हो सकता है?’

‘डांस वाला?’ बाबू साहब ने मजकिया लहजे में आंख घुमा कर पूछा.

‘नहीं-नहीं. खाली बिरहा वाला. शुद्ध भोजपुरी वाला पोरोगराम.’

‘आप भी लोक कवि हर बात में पोरोगराम सूंघने लगते हैं.’

‘का करें रोजी रोटी है.’ वह बोले, ‘फिर विद्वान लोगों के बीच गाने का सुख ही और है. और एहले अच्छी बात है कि ऊ लोग हिंदी नहीं जानते तो फिल्मी गाना का फरमाइश नहीं करेंगे. तो डांस वइसे ही कट हो जाएगा.’ वह बोले, ‘बात चलाइए.’

‘यह तो हमसे संभव नहीं है.’

‘तब छोड़िए जाने दीजिए.’ वह बोले, ‘कोई और बात कीजिए.’

‘क्या और बात करूं?’ वह बोला, ‘बताइए एक बहुत बड़े लेखक हैं एस.वी. नायपाल. इंगलैंड में रहते हैं और अंगरेजी में लिखते हैं.’

‘त का इहो भोजपुरी बोलते हैं?’

‘हां.’

‘अंगरेज हो कर भी?’

‘अंगरेज नहीं हैं.’

‘तो?’

‘इनके पुरखे गोरखपुर से गए थे त्रिनिदाद मजूरी करने. बताते हैं कि इनके बाबा गए थे.’

‘तो गोरखपुर में नायपाल कौन जाति होता है?’

‘नायपाल जाति नहीं है उन के बाबा दुबे थे. त्रिनिदाद से घूमते-घामते इंगलैंड पहुंच गए. पुरखे मजूरी करने गए थे पर यह लेखक हो गए. और ऐसे लेखक कि जिनकी अंगरेजी से बड़े-बड़े अंगरेज घबराएं.’

‘बहुत अशुद्ध लिखते हैं का?’ लोक कवि ने मुंह बिगाड़ कर पूछा.

‘अरे नहीं, इतनी अच्छी लिखते हैं कि उस से लोग घबराते हैं.’

‘जैसे हमारे गाने से लोग घबराते हैं?’

‘क्या? बाबू साहब लोक कवि की ही तरह मुंह बिगाड़ कर बोले, ‘बहुत खराब गाते हैं का?’

‘का बाऊ साहब?’ कह कर लोक कवि हो-हो कर हंसने लगे.

‘तो इन एस.वी. नायपाल की कई किताबें मशहूर हो चुकी हैं. वह ज्यादातर भारत के बारे में

लिखते हैं. कई विदेशी पुरस्कार पा चुके हैं. नोबल पुरस्कार भी अभी-अभी मिला है. कुछ दिन पहले. और वह नायपाल हिंदी नहीं जानते पर भोजपुरी जानते हैं?’

‘आप को कैसे पता चला?’ चकित होते हुए लोक कवि ने पूछा.

‘अरे, अखबारों में गजीनों में पढ़ा है. क्यों?’

‘नहीं, हम सोचे कि कहां आप मिले होंगे?’ वह बोले, ‘कबो भारत आए हैं?’

‘हां, आए हैं दो तीन बार. पर मैं नहीं मिला हूं. बहुत पहले आए थे. तो तब जानता भी नहीं रहा होऊंगा उन्हें.’

‘लेकिन ऊ भोजपुरी जानते हैं?’

‘हां, भई!’

‘भोजपुरी में भी एक्को किताब लिखे हैं का?’

‘नहीं, मेरी जानकारी में तो नहीं लिखे हैं.’

‘तब का?’

‘क्या मतलब?’

‘मतलब ई कि ऊ भोजपुरी जानते हैं खाली फैशन के लिए. अपना घाव देखाने के लिए. कि देखिए मजूर का बेटा केतना महान लेखक बन गया.’ लोक कवि बोले, ‘मजा तो तब था कि जब ऊ भोजपुरी में भी लिखते भोजपुरिहों के बारे में लिखते, उन का कुछ विकास करते.’ वह बोले, ‘ऐसे भोजपुरिहों से हम भी बिदेसों में मिला हूं. ऐसे ही लोग, हाई फाई लोग भोजपुरी का विनाश कर रहे हैं. का देस, का बिदेस. भोजपुरी के लिए कुछ करेंगे नहीं. खाली मूड़ी गिना देंगे कि हमहूँ भोजपुरिहा हूं. हूं ह, सजनी हमहूँ राजकुमार! जाने दीजिए अइसे लोगों की बात मत करिए!’

लोक कवि तीसरा पेग खत्म कर रहे थे और साथ ही टुन्नावस्था की ओर भी उन के चरण बढ़ रहे थे. बाबू साहब की भी ज्यादा हो गई थी सो अचानक उठते हुए वह बोले, ‘चलते हैं लोक कवि जी!’

‘अच्छा तो प्रणाम!’ कह कर लोक कवि ने भी जाने का सिगनल दे दिया. फिर बोले, ‘कल दुपहरिया में चेरमैन साहब के साथ बैठकी है. आप भी आइएगा.’

‘ठीक है.’ कह कर बाबू साहब चले गए. इस के बाद खा पी कर वह भी अकेले ही सो गए. हालां कि अकेले वह कम ही सोते थे.

अबहीं ठीक से भोर भइलो ना रहल कि लोककवि के फोन के घंटी बाजल. फोन उहे उठवलें. बाकिर ओने के बात सुनते सन्न रह गइलें. रात के नशा उतर गइल. चेरमैन साहब के हार्ट अटैक भइल रहे. भागल-भागल लोक कवि उनुका घरे चहुँपले तब ले चेरमैन साहब सांस छोड़ चुकल रहलें.

चेरमैन साहब के मजल में बइहन भीड़ जुटल. कमोबेस सगरी राजनीतिक पार्टियन के लोग, हर तबका के लोग ओहमें शामिल रहे. अमीर, गरीब, अफसर, चपरासी, नेता, कलाकार, पत्रकार के ना रहल दोसरका दिने भइल श्रद्धांजलिओ सभा में सभे आइल. अधिकतर लोग औपचारिक ना हो पावल. कमोबेस सभे कवनो ना कवनो संस्मरण सुनावल जवना में चेरमैन साहब झांकत रहलें. लोक कवि कवनो संस्मरण ना सुनवलें. बस अतने भर कहलें, ‘लखनऊ में विधायक जी हमरा के ले अइलें आ उनुका बाद

हम चेयरमैने साहब के शरण में रहनी. गरीबी में हमरा के कुरता पायजामा पहिनावत रहले. खाना खिआवसु. बहुते प्यार से. ऊ हमार अइसन गार्जियन रहलें जे जब चाहे हमरा के डांट सकत रहलें, दुत्कार आ दुलार सकत रहलें. कुछउ कह सकत रहलें, कवनो समय, कतहियों हमरा के बेइज्जत कर सकत रहलें. कतहियों. कबहियों हमरा के अपना कपार पर बइठा सकत रहलें. हमरा के मान, सम्मान दे दुलारा सकत रहलें. उनुका ला हमरा जिनिगी में पूरा छूट रहुवे. हमार अनेके दुख बँटलन, हमार अनेके सुख छीनले, अनेके सुख दिहलें. हरदम हर मोर्चा पर हमार मदद करत रहलें. काहें से कि ऊ हमार गार्जियन रहलें.' कहत-कहत लोक कवि फफक के रो पड़ले. आगे ना बोल पवलें जब कि ऊ बहुत कुछ बोलल चाहत रहलें. बाकिर उनकर रुलाई रुक्त ना रहुवे, उ करबो का करतन?

कुछ दिन उनकर बहुते उदासी में गुजरल. रिहर्सलो वगैरह बंद कर दिहलें. बाकिर जल्दिए ऊ चेयरमैन साहब के गम से उबर गइले. प्रोग्राम रिहर्सल सब शुरू हो गइल. ऊ फेर से गावे लगले, 'साड़ी बता रही है, खींची कहीं गई है/लाली बता रही है, लूटी कहीं गई है.'

हैं, लेकिन ऊ चेयरमैन साहब के भुलड़ले ना. ऊ उनकर चरचा गाहेबगाहे चलावत रहसु. खास कर जब उनका से कवनो गलत फैसला हो जाव आ केहू टोके त ऊ लगभग आह भरत कहतें, 'का करीं गलत-सही बताए वाला चेयरमैन साहब त अब रहले ना. का करीं हो गइल गलती!' बाकिर धीरे-धीरे चेयरमैन साहब के सलाहकार वाली भूमिका ऊ ठाकुर पत्रकार सम्हार लिहले. लेकिन दिक्कत ई रहे कि चेयरमैन साहब जइसन अनुभवी ऊ ना रहलें. धीरज ना रहल उनका में. कई बेर रौ में बह जासु त कई बेर जिद में अड़ जासु. दोसरे, जइसे चेयरमैन साहब कलाकार लड़कियन के देखते बहे लागत रहलें ओहू से कहीं अधिका ई ठाकुर पत्रकार बहे लागे. चेयरमैन साहब लड़कियन संगे नोचा-चोथी, पकड़ा-पकड़ी, बतियावे वतियावही ले सीमित रहसु बाकिर ई पत्रकार हर समय लड़कियन के सुता लेबे के जिद पर अड़ जाव. आ ऊ निशा तिवारी के टीस में बलबलाए लागे. कहे, 'का-का ना कइनी हम रउरा ला बाकिर रउरा एगो निशा ना कर पवनी हमरा ला?' इशू बना लेसु. एही सब बातन के ले के लोक कवि आ उनुका में आए दिन ठन जाव. काहें कि लोक कवि एह बात के पसंद ना करत रहलें. पत्रकार प्रतिवाद करे, 'का सब सती सावित्री हई सँ?'

'हम ना जानीं कि सब सती सावित्री हई कि रंडी. बाकिर एहिजा ई सब ना हो पाई बाऊ साहब.' लोक कवि कहसु, 'वइसही पीठ पीछे लोग हमरा के लवंडिया सप्लायर कहते रहेला. लेकिन हम ई सब आंखि का सोझा ना होखे देब.'

'का रउरा खुद एह लड़कियन के ना सुताई?'

'सुताइलें.' लोक कवि बिफरले, 'बाकिर जबरदस्ती ना जइसन कि रउरा चाहत बानी.' ऊ जोड़तन, 'अब जर्मीदारी ना रहल बाऊ साहब. आ फेर ई शहर ह. बदनामी होला!'

'अच्छा रउरा सुताई त बदनामी ना होखे आ हम सिरिफ सुतावे के बात करीं त बदनामी हो जाला?'

'हँ होला.' लोक कवि कहतन, 'रउरा में भसोट बा त जाई लड़की के सड़क पर पटाई फेर ऊ जाए त जहां चाहीं ले जा के सुताई. बाकिर हमरा हियाँ बइठ के ना त पटाई, ना सुतावे वुतावे के बात करीं. बतियाबे के बा त हमरा से बतियाई, दारू पीहिं, खाई पीहिं, मौज करीं. बाकिर लड़कियन वाला खेल मत

करीं. दुनिया भर पड़ल बा छिनार लड़िकियन से. जाई कहीं आ जोर आजमाइश कर लीं. बाकिर एहिजा ना.’

खूबसूरत डांसर्स सचहुँ लोक कवि के जी के जंजाल बन चलल रहली सँ. उनुका लगे आवे वाला अफसर, नेता भा धनाढ्य किसिम के लोग आवे आ अकसरे बाते बात में घुमा फिरा के लड़िकियन के चर्चा चला देव. ऐन लड़िकियन का सोझा लोक कवि बहुते बेरहमी से ओहलोग के इशारा भरल बात के दबोच लेसु. कहसु, ‘अब रउरा एहिजा से चलीं.’ लेकिन दारू चढवले लोग लड़िकियन का फेर में लागले रहे. एक बेर हालैंड से एगो आयोजक अइले इंडिया घूमे. लखनऊ लोक कवि का लगहूँ अइले. बाते बात में अमरीकन लड़िकियन के चर्चा चला दिहलें. बोलले कि, ‘ओहिजा त पांच लाख लेबेली सँ.’ लोक कवि बात समुझतो लगातार टारत रहले. बाकिर हालैंड निवासी के सुई बेर-बेर, ‘पांच लाख लेबेली सँ!’ पर अटक जाव. आ आखिरकार ऊ दारू के मेज पर एक लाख रुपिया अइसहीं निकाल के राख दिहलें. लोक कवि भड़कले, ‘ई का ह?’

‘कुछु ना राख लीं!’

‘काहें कवनो पोरोगराम के बयाना ह का?’

‘ना. वइसहीं राख लीं.’

‘का समुझीलें भाई रउरा?’ लोक कवि बिगड़ गइलन. बोलले, ‘जाई एहिजा से आ आपन रुपिया उठाई. डालर में बदलवाई आ अमरीका चल जाई.’

‘रउरा नाराज काहे होखत बानी सर?’ हालैंड निवासी बुदबुदाइल.

‘बस, अब रउरा एहिजा से चल जाई!’

‘हम रउरा के एतना प्रोग्राम दिअवनी आ रउरा!’

‘मत दिवाई पोरोगराम अब आ बस.’ लोक कवि गरजले, ‘निकल जाई एहिजा से!’

अइसहीं एक बेर एगो ब्लाक प्रमुख अइले. ठेकेदारी करत रहलें. लोक कवि के जिला के रहले. पइसा बहुते कमा लिहले रहन. लोक कवि के प्रोग्रामो जब तब करवावते रहसु. लखनऊ आइल रहले विधायकी के टिकट जुगाड़े. लोक कवि के सिफारिश चाहत रहले. लोक कवि सिफारिश करियो दिहलन आ उम्मीद का लगभग आश्वासन मिल गइल टिकट के कि चुनाव के ऐलान होखे दीं टिकट राउर पक्का बा. ऊ मारे खुशी के लोक कवि के घर मिठाई, फल आ शराब के बोतलें लिहले आ धमकल. लोक कवि रिहर्सल में रहले. डांसरो रहली सँ. बाकिर ब्लाक प्रमुख के आवते लोक कवि रिहर्सल रोक दिहले. जिला के रहले से उनुका के आपन ई कैंप रेजीडेंस ऊपर से नीचे ले देखवलें. खातिर बातिर कइले. फेर उनुका इच्छा पर उनकरे शराब के बोतल खोल दिहले. आदमी भेज के होटल से मुर्गा, मछरी मंगववले. लड़िकी परोसली सँ. अब ब्लाक प्रमुख दु तीन पेग बाद स्टार्ट हो गइले. सीधे-सीधे ना, तनी का पूरा-पूरा घूमा के. ऊ चर्चा लोक कवि के एह कैंप रेजीडेंस के करत रहलें बाकिर आंख लड़िकियन पर गइल रहे. कहे लगले, ‘लागत बा एह मकान के तुडवावे के पड़ी!’ बाकिर लोक कवि उनुकर बात अनसुनी कर गइले. लेकिन ऊ स्टार्ट रहले, ‘लागत बा एह मकान के तुडवावे के पड़ी!’ आ जब हद हो गइल, ‘तुडवावे के पड़ी!’ के तो लोक कवि पूछिए लिहले, ‘काहे तुडवावे पड़ी?’

‘बहुते बेढंगा बनल बा. फेर से बनवावे खातिर तुडवावे पड़ी.’

‘के तुडवाई? के बनवाई?’

‘अरे भाई हम जिंदा बानी.’ ऊ एगो लड़िकी के लगभग भर आंख ऊपर से नीचे ले घूरत बोलले, ‘हमही तोड़वाइब, हमही बनवाइब.’ ऊ बहकले, ‘एतना हैसियत त बा हमार.’

‘बाकिर कवने खुशी में?’ लोक कवि तनिका मिठास घोरत बाकिर बिफर के बोलले.

‘बस हमार मन.’

‘पता बा केतना पइसा खरच होखी?’

‘अरे जवने पचीस-पचास लाख खरच होखी हम करब.’

‘अइसन-अइसन पता ना कतना बेढंगा मकान बाड़ी स एह मुहल्ला में कवना-कवना के तूडवा के बनवाइब?’

‘हम त बस राउर मकान तूडब आ राउर मकान बनवाइब.’ ब्लाक प्रमुख बहकत एगो लड़िकी के लगभग आंखे-आंख में बोलावत बोलले.

‘तू सब एहिजा का करत बाड़ू? चलऽ लोग एहिजा से.’ लोक कवि लड़िकियन से बोलले, ‘अब काल्हु अइह.’

‘रउरा बहुते नीक गाइलें.’ ब्लाक प्रमुख लड़िकियन के गइला का बादो बात के लाइन पर ले आवत बाकिर मेहराइल स्वर में लोक कवि से बोलले, ‘जान निकाल लिहिलें.’

‘जान हम ना ई लड़िकी निकालेली सँ.’ लोक कवि उनुका के टारत बोलले.

‘नाहीं. सचहू रउरा बहुते नीक गाइले.’ ऊ बहक के बोलले, ‘कलेजा काढ लीलें.’

‘त गाई अबहिये हम?’ लोक कवि तंज करत बोलले, ‘जान निकली अबहिये राउर?’

‘बिलकुल!’ ब्लाक प्रमुख बोलले, ‘बाकिर एगो शर्त के साथ कि संगही डांसो होखे.’

‘हँ, हँ डांसो होखी.’ लोक कवि दू गो लड़िकन के आवाज दे के बोलवले आ कहले कि ‘ई नचीहें सँ, हम गाएब. शुरू करी?’

‘का लोक कवि जी, रउरो मजाक करीले.’ ऊ कहले, ‘अरे सोनपरियन के नचाई!’

‘ऊ सब त चल गइली सँ.’

‘चल गइली सँ?’ ब्लाक प्रमुख अइसे बोललन जइसे उनकर सबकुछ लुटा गइल होखे, ‘सगरी चल गइली सँ. सचहु?’

‘त अउर का?’ लोक कवि कहले, ‘हम गाना सुनाई आप के?’

‘अब रउरा का सुनाएब.’ ब्लाक प्रमुख बोलले, ‘सोनपरियन के डांस का साथे गाना सुने के तुक रहवे. अब त हम राउर गाना रउरा कैसेट से सुन लेब.’ कह के ऊ उठ खड़ा भइलें. बिल्डिंग तुडवा के बनवावे वाली बतियो बिसार गइले. लोक कवि उनुका के अगियाइल आँखिन देखले आ बहुते खिन्न भाव से विदा कइले.

ई आ अइसने तमाम प्रसंगन के देखत झेलत लोक कवि के दिन हंसी खुशी से गुजरते रहवे कि एगो रोड ऐक्सीडेंट में ऊ ठाकुर पत्रकारो चल बसल. अबही चेयरमैन साहब के गम ऊ भुलाते रहले

कि हई एगो अउर गम नत्थी हो गइल. लेकिन चेयरमैन साहब जतना बड़ गम ई ना रहे, तबो मन में टीस त रहले रहे. जवने हो एने-ओने संपर्क के उनकर एगो मजबूत सूत्र उनुका से छीना गइल. अखबारन में पब्लिसिटीओ के वाहक रहले ऊ पत्रकार जे एके साथ कईएक अखबारन में लोक कवि के खबर छपवा देत रहले. कार्यक्रमों में ऊ मददगार रहत रहले. लेकिन एकरो के नियति मान के लोक कवि खामोश हो गइले. बाकिर जब उनुकर खास मिसिराइनो चल बसली त ऊ एकदमे टूट गइले.

मिसिराइन जे उनुका एगो सहकर्मी के पत्नी रहली बाकिर कहही भर के. असल में त ऊ लोक कवि के जीवन संगिनी रहली. मिसिराइन उनुका लखनऊ के शुरुआती जीवन में मिठास घोरले रही. उनुका संघर्ष का दिन में ऊ मिसरी जस बन के उनुका मन में फूटल रही. ठीक वइसही जइसे गांव में अपना लड़िकाईं उमिर में धाना उनुका जिनिगी में मिठास घोरले रही, बाकिर ऊ त थोड़ देर वाली मिठास रहली, बचपना रहल. मिसिराइन के मिठास स्थाई रहल. रहली त ऊ फोर्थ ग्रेड कर्मचारी के पत्नी बाकिर लोक कवि कहसु कि ऊ विचारवान रहली, कवनो पढल लिखल बुद्धिजीवी जइसन. बाकिर नियति उनुका के चपरासी के बीवी बना दिहलसि आ भाग लोक कवि का साथे लगा दिहलसि. ऊ कहसु कि मिसिराइन हमरा के सजवली-संवरली, छीटाए से बचवली. भूखे सूते ना दिहली. आपन परिवार त हम बाद में लखनऊ ले अइनी बाकिर पहिला परिवार लखनऊ में हमार मिसिराइने के परिवार बनल. आगा बतावत लोक कवि चुपा जासु. बाकिर चेयरमैन साहब जइसन लोग कबो मजाक में त कबो आरोप लगा के कहस कि मिसिराइन के सगरी बच्चा लोके कवि के हउवें, मिसरा के ना. एहमें से दू गो बेटी रहली सँ. एहनी के बिआह शादी के खरचा वरचा जब लोक कवि खुले आम उठवले त ई बात जवन दबल ढंकल रहवे सबका सोझा आ गइल. इहाँ ले कि मिसरा के लड़िको के शादी धूम धाम से लोके कवि करवले. एहू शादी में लोक कवि आगे-आगे रहले आ मिसिर जी पीछे-पीछे.

एक बेर चेयरमैन साहब से बाते बात में केहू पूछ लिहल, 'मिसरा कइसे जानत समुझत ई सब बरदाश्त करेला?' चेयरमैन साहब जइसन मुहफट आदिमीओ एह सवाल पर चुप रह गइल. बहुते खरकौंचला पर ऊ कहले, 'लोक कविया के ई प्राइवेटे ना पारिवारिको मामिला ह से हम कुछ ना बोलब.' ऊ एगो पुरा जुमलो ठोंकले, 'पर्सनल इज पॉलिटिक्स.' बाकिर सवाल पूछे वाला एह जुमला के समुझ ना पवलस आ ई सवाल बेर-बेर दोहरावत रहल त चेयरमैन साहब बऊरा के बोलले, 'त हे गांडू ई बतिया बेर-बेर हमरा से काहें पूछत बाड्स? गांडू में दम बा त जा के लोक कवि भा मिसरा भा मिसिराइन से पूछ. हमरा से जाल बट्टा फइलावत बा.' ऊ आदमी तब चुप लगा गइल रहे.

बाकिर मिसिराइन के मरला का बादो लोक कवि मिसिराइन किहां आइल गइल ना छोडले. जब ऊ लखनऊ में होखस त बिना नागा सबेरे साँझ मिसिराइन का बचवन का बीचे होखस. मिसिराइन के बचवन के नाती पोतनो से ऊ ओही दुलार ओही प्यार से पेश आवस जइसे मिसिराइन से पेश आवत रहले.

आ मिसरा जी?

मिसरा जी के ना त मिसिराइन के जीयते जी कवनो एतराज रहे ना मरला का बादो कवनो एतराज भइल. अजबे माटी के बनल रहले मिसरा जी. लोग फुसफुसइबो करे बाकिर मिसरा जी के कान

पर जूँ ना रेंगे. त लोक कविओ उनका बचवन के पढ़ावे लिखावे, पाले पोसे, बिआहे गवनवे में कवनो कसर ना छोड़ले. मिसिराइन के बेटियनो के ऊ सरकारी नौकरी लगवा दिहले. एगो दामादो के. मिसिराइन के एगो बेटी के दिलचस्पी गावे बजावे रहल. नौकरी लागे से पहिले एक बेर दबल जुबान उहो कलाकार बने के बात कहलसु त लोक कवि भभक उठले. ओकरा के त ऊ कुछ ना कहले बाकिर मिसिराइन से आहिस्ता से बोलले, 'रंडी बनावल चाहत बाड़ू का बेटिया के?'

त फेर मिसिराइन प्रतिवाद कइली, 'सगरी कलाकार त अइसन ना होले?' ऊ लता मंगेशकर तक के नाम ले बइठली. बोलली, 'एह लोग के त ईज्जत मिलल बा.'

'केहू के नइखे मिलल ईज्जत सम्मान.' ऊ कहले, 'आ फेर लता मंगेशकर त तपस्विनी हई. कर पाई तपस्या बेटिया तोहर?' लोक कवि के मंशा देख मिसिराइन चुप लगा गइली. बेटियो फेर कबो कलाकार बने के बात ना उठवलसि.

लेकिन लोक कवि अपना बीवी के एगो बेटा के कलाकार बने से ना रोक पवले. हालां कि ऊ अपना बीवी के तीनों बेटवन के जवन जहाँ ले पढ़ल पढ़वले. दू गो के नौकरीओ लगवा दिहले क्लर्क वाली. आ तिसरका के ऊ इंजीनियर बनावल चाहत रहले. ऊ बी.एस.सी. ले त पढ़ल लेकिन कलाकार बने के धुन ओकरा में बीच पढ़ाई समा गइल. बहुत रोकले, बहुत समुझवले लोक कवि ओकरा के बाकिर ऊ ना मानल. लोक कवि कहबो कइले कि, 'बी.एस.सी. पढ़ियो के हमरा तरह नचनिया गवइया मत बनस. केतनो आगा बढ जइब तबो लोग तोहरा के नचनिया पदनिया से बेसी ना समुझी!' तबहियो ऊ ना मानल. पहिले चोरी छुपे, फेर खुल के सामने आ गइल.

लोक कवि हार गइले.

ओ आपने गाना कोट करस आ कहसु, 'जे केहू से नाई हारल ते हारि गइल अपने से.' फेर ऊ कहसु, 'त हमहूँ हार गइनी.' एहतियातन ऊ एतना जरूर कर दिहले कि एह छोटको बेटवा के सचिवालय में चपरासी के नौकरी लगवा दिहले. कि अगर गावे बजावे से एकर पेट ना भरे त नौकरिया त रही नू. एक आदमी पूछबो कइल कि, 'बी.एस.सी. पास रहे त चपरासी के नौकरी काहे लगववनी?'

'त का कलक्टर के नौकरी दिलवा देती?' लोक कवि बोलले, 'एह बेरोजगारी में इहो नौकरी एह नचनिया गवइया के मिल गइल ई का कम बा. नाहीं हमरा मर गइला का बाद साला भूखों मरी ई चिंता त ना रही. एकर परिवार त कष्ट में ना रही!'

लोक कवि के लड़िका पहिले लोक कवि के चेलवने के टीम में जब तब गावे. बाकिर बाद में जब सब क ध के ऊ हार गइले आ लड़िका तबहियो ना मानल त ऊ कहले, 'हमरा चेलवन के नौकरी बजावेले? चल अपना टीम में गाव बजाव.' त ऊ लोक कविए के टीम में गावे बजावे लागल. बाकिर बाद में गावे बजावे में कम टीम के मैनेजरी के काम में ओकर मन बेसी लागे लागल. लड़िकियन के छांट बीनो में ऊ लागल. कई बेर त का होखे कि एके लड़िकी पर बाप बेटा दुनु रियाज मारे लागस. बाकिर दुनु एक दोसरा से लुका छिपा के. लड़िकीओ बाप से पइसा अईठ सँ आ बेटा से जवानी भोग सँ. इहो चरचा अब कलाकारन का बीच आम हो चलल रहे बाकिर लोक कवि आ उनकर बेटा एह बातन पर कान ना देस भा जानत बूझत शतुरमुर्ग बन रेत में मूडी लुका लेस.

केहू लोक कवि भा उन का बेटे पर लगाम लगावे के बातो करत डेराव. बात करे त टीम से बाहर. एहसे सभे चुप-चुप रहे आ चेयरमैन साहब के याद करत कहे, 'चेयरमैन साहब जे जीयत रहते त ऊ एह अनेति के रोक सकत रहले.'

अब आए दिन इहो होखे लागल कि टीम मैनेजरी का रुतबे में लोक कवि के लड़िका कलाकारन संगे मनमानी आ बदसुलूकीओ पर आ गइल रहे. गँवे-गँवे बात अइसन विस्फोटक बन गइल कि कलाकार सब लगभग बगावत करत एगो यूनियन बना लिहले. घंटा आ किलोमीटर का हिसाब से ऊ मेहनताना मांगे लगले. लोक कवि के दिमाग घूम गइल. ऊ समझ गइले कि एह असंतोष के अगर तुरते ना दबवले कवनो तरकीब से त थंधा त चउपट! अइसन समय उनुका चेयरमैन साहब के बहुते याद आइल कि ऊ रहतें त कुछ ना कुछ तरकीब जरूर भिड़वते आ कुछऊ ना होखीत एहनी से. तबहियों लोक कवि हार ना मनले. बतियावे ला दू तीन गो कलाकारन के बोलवले. पूछले कि, 'हमरा टीम में रहि के महीना में नाहियों त पांच सात हजार रुपिया त कमाइए लेत बाइस लोग?'

'हँ, उ त बा.' तीनों एक साथ बोलले.

'अबहीं दू महीना बाद बिदेसी दौरा पर निकले के बा. ओहिजा पोरोगराम करे, आवे जाए में दस बारह दिन लागी आ रुपिया भँटाई महज बीस-बीस, पचीस-पचीस हजार. तबहियों चलबस लोग?'

'बिलकुल गुरु जी!'

'चुप्प भोसडी वाले.'

'का भइल गुरु जी?'

'अरे तोहनी का जवन किलोमीटर, घंटा वाला रेट लगवले बाइ ओकरा हिसाब से त एक लाख रुपिया से अधिका त तोहलिए के देबे के चाहीं हमरा. आ एतना त हम दे ना पाएब.' ऊ कहले कि, 'जहाजो के टिकट कटाई, ओहिजा रहे, खाए, घूमे के बंदोबस्तो करीं. तब त डेढ़ो दू लाख में एगो कलाकार ना ले जा पाएब!' ऊ बिगइले, 'मतलब पोरोगराम बंद कर दीं आ तोहनी के गांड पर लात मार के भगा दीं एहिजा से.'

'ना गुरु जी!'

'त?'

'अब रउरे बताई!'

'हम कुछ ना बताएब.' ऊ कहले, 'तुहीं लोग खुद सोच ल! हमार का? हम त ढपली बजा के अकेलहू बिरहा गा लेब. तू लोग अपना रोजी रोटी के सोच ल!'

'गलती हो गइल गुरु जी! कह के सभ जने लोक कवि के गोड़ पर गिर पड़ले. लोक कवि तीनों के पीठ थपथपवले. बोलले, 'चलस भगवान सद्बुद्धि देस तोहरा लोग के. आ तोहरे लोग जस अउरिओ के!'

'जी गुरु जी!' ऊ सभ विनयवत बोलले.

'तुहीं लोग सोचस कि हम कतना संघर्ष आ जोड़ जोगाइ का बाद तनिका नाम दाम कमइले बानी, टीम खड़ा कइले बानी.' ऊ कहले, 'हमनी का कलाकार हई, सूदखोर ना कि दिन के हिसाब से, घंटा आ किलोमीटर के हिसाब से पइसा तय करीं.' ऊ कहले, 'ई य कवनो कला में संभव नइखे. बड़को-बड़का

भलही पइसा अधिका लेबेले बाकिर खुल्लमखुल्ला अइसन ना करसु!’ लोक कवि पलटत बोलले, ‘ई कवन तोहनी के बुद्धि खराब करत बा? तोहन लोग के कलाकार के मारत बा?’ तीनों एह पर कुछ ना बोलले. एक चुप त हजार चुप. आखिरमें लोके कवि खामोशी तूइले. कहले, ‘घरे जा लोग. ठंडा दिमाग से सोचs. फेरू बतावs!’

तीनों चल गइले.

लोक कवि ई त जान गइले कि यूनियन का नींव में इहे तीनों बाड़ें बाकिर चुप ना लगवले. साम-दाम, दंड, भेद सगरी उपाय लगवले आ चार दिन का भितरे यूनियन के चित्त क के एह तीनों के टीम से बाहर कर दिहले.

बात खतम हो गइल. बाकिर लोक कवि निश्चित ना भइले. अउरी चौकन्ने हो गइले. बेटवा के हालां कि टीम मैनेजरी से तुरते ना हटवले. बोलले, ‘गलत संदेश हो जाई. सब समुझीहें कि ओहनी के खुराफात से डेरा गइल बानी.’ बाकिर धीरे-धीरे बेटवा के टीम मैनेजरी से ई कहत हटा दिहलें कि, ‘जवान बाइs, कलाकारी चमकावs आपन. रिहर्सल रियाज करs. स्टेज पर आवs, गावs बजावs!’ लड़िका बेमने से सही बाकिर मान गइल. ओकर बाही धीरे-धीरे लदा गइल. हालांकि लोक कवि डेराइल रहले कि कहीं बेटवे बगावत मत कर देव. जइसे अकबर से सलीम कइले रहवे. ई बात ऊ कहसु अपना संगी साथियन से.

बाद का दिनो में ऊ साथी कलाकारन के बेंग जइसन अइसे तउलले, अइसे चढवले उतरले, ऊपर नीचे कइले, पेमेंट से ले के परोगराम ले अइसे कटले छटले कि सभही जने सामान्य बन के रह गइले. केहू स्टार कलाकार, स्टार डांसर ना रह गइल. एकाध गो पुरान ‘स्टार’ लोक कवि से बुदबुदइबो कइले कि, ‘गुरु जी अब टीम में केहू स्टार नइखे, कवनो स्टार होखे के चाहीं!’ ‘काहें, हम स्टार ना हई का?’ ऊ कहसु, ‘अब टीम में एकेगो स्टार रही आ ऊ हम रहब.’ ऊ जोइसु कि, ‘का चाहsतार कि आजु स्टार बना दीं, काल्ह के ई यूनियन बना लेसु आ परसों टीम के गोमती में बहा दीं? आखिर सभकर रोजी चलावे के बा, आपन नाम चलावे के बा. ई सब कुछ डुबावे के थोड़े बा!’

‘त अब गुरु जी रउरा पहिले का तरह फेर से गावल बजावल शुरू कर दीं.’ कवनो पुरान चेला ई कहि के लोक कवि को आइना देखावे, चिकोटी काटत उनुका के जइसे उनकर औकात बतावे के कोशिश करे.

‘हे साले, हम ना गवनी त तू पैदा कइसे भइल?’ ओकरा तंज के मजाक में घोरत जइसे ओकरा के जूता मारस, ‘का तोहार बाप तोहरा के जनमवलसि?’ ऊ तनिका रुकस ओकरा चेहरा के भाव पढसु कि जूता पूरा पडल बा कि ना? फेर आहिस्ता से बोलसु, ‘गायकी में के जनमावल तोहरा के?’

‘रउरा गुरु जी.’ चेला हार के अपमान पीयत बोले.

‘त अब हमरा गाना गावे के चाहीं तू बतइबs?’

‘ना, गुरु जी!’

‘अरे, अब पोरोगराम में सब भडुवा लौंडियन के कुल्हा मटकाई आ छातियन के उभार देखे आवेल त ओहिजा हम का गाना गाई? के सुनी?’ ऊ बोलसु, ‘लेकिन साल में चार-छ ठो कैसेट आवेला ओहमें त

गवबे करीले. ओही गानन के केहू अउर से हिंदी में लिखवा के गोविंदा जइसन हीरो सुन के नाचेला त ई का ह? अरे ससुरा समुझ कि हमही गाइलें. बाकिर तू लोग साला हल्ला मचा दिहले बाइस कि गुरु जी अब ना गाईं! ऊ दहाइस, 'कइसे ना गाइलें!'

'त गुरु जी राउर वीडियो एलबम भा सीडी काहे नइखे मार्केट में?' सुन के छन भर ला बेजवाब हो जासु लोक कवि. लेकिन दोसरके छन बोले लागसु, 'एहले कि अमीरन खातिर ना, गरीबन ला गाइलें काहें कि भोजपुरी गरीबन के भाषा ह. आ गरीब आदमी सी.डी., वीडियो ना देखे, सुनेला.' फेर ऊ धीरे से कहसु, 'बाकिर घबरा जिन, अनुपवा लागल बा, कुछ करी.'

'लेकिन कब?'

'अब देखस कब करसता?' कहत लोक कवि लगभग हताश हो जासु.

'ऊ अनुपवा चार सौ बीस के चक्कर से छुट्टी ले लीं गुरु जी!'

'काहें?'

'रउरा के बिकवा दी.' कवनो चेला बोले, 'ऊ रउरा के बेचत बा.'

'बहुत लोग बेच चुकल हमरा के. लेकिन हम ना बिकइनी.' ऊ कहसु, 'तनिका ओकरो के बेच लेबे द.' कह के ऊ बइठकी बर्खास्त कर देसु. बाकिर उनकर चिंता बर्खास्त ना होखे.

साँच इहे रहे कि उनकर नाम भोजपुरी गायकी में अबहियों शिखर पर रहे. अगल बगल त छोड़ीं दूर दराज ले केहू उनका लोकप्रियता के छूवत ना लउके. तबहियों उनुका गाइकी पर पूर्ण विराम ना सही, विराम त लागिण गइल रहे. ई सचाई उहो महसूस करे लागल रहले. फेर बिहार में पैदा भइल बनारस में पढ लिखल एगो ब्राह्मण गायक बहुते तेजी से भोजपुरी गायकी में बढ़त लेत रहुवे. ऊ लडिकियन के अपना कार्यक्रम में ना नचावे आ अकेलही गावे. ओकरा आवाजो में भोजपुरी वाली मिठास बसल रहे, बाकिर ऊ देवी गीत, फिल्मी पैरोडियन पर तनी अधिके आश्रित रहुवे से लोक कवि ओकरा से अधिका चिंतित ना रहले बाकिर निश्चिंतो ना रहले. केहू एह बात के छेडे त लोक कवि कहसु, 'बहुत भंवर हमरी राह में आइल आ देखते-देखते नदी में बिला गइल. कुछऊ ना भइल हमार.' ऊ कहसु, 'ई ना कि भोजपुरी गाना हमरा से बढ़िया गाए वाला लोग नइखे, हमरा से बहुते बढ़िया गाए वाला लोगो बा, अबहियों कुछ जिंदा बाड़े बाकिर मार्केट ओह लोगन के रिजेक्ट कर दिहलसि. लेकिन हम त बरिसन से मार्केट में बानी. त ई भगवान के बइहन कृपा बा. बाकी भोजपुरिहों के प्रेम बा. जे हमार गावल गाना सुनेलें.' ऊ 'नथुनिया पे गोली मारे' गीत के जिक्र करसु. कहसु, 'जवानी में हम ई गाना गवले रहीं, हमार एगो पुरनका कैसेट में मिलियो जाई. लेकिन पटना के एगो गायक कुछ साल पहोले इहे गाना चोरा के 'फास्ट' क के गा दिहलसि. मार्केट में उठ गइल ई गाना. हमार त नींद हराम हो गइल. एतना उठल ई गाना कि हमरे गाना, हमरे नींद उड़ा गइल. लागल कि अब हम मार्केट से आउट हो गइनी. बाकिर लाज बाच गइल. अइसन भइल ना. भगवान के किरपा. बाकिर इहे गाना 'अंखियों से गोली मारे' बनि के गोविंदा पर नाच गइल. अब कहां बा ऊ पटना वाला गायक केहू जानसता?' लोक कवि कहसु, 'बाकिर हम त कहीं ना गइनी. खड़ा बानी रउरा सोझा.' हँ, लोक कवि के एह बात पर मलाल जरूर बनल रह जाव कि ऊ मार्केट में त बाड़ें बाकिर गवनेई में ना.

दिल्ली में एगो पत्रकार उनुका से पूछतो बा कि, 'रउरा अब गावत काहे नइखीं?'

'गावत त बानी?' लोक कवि जवाब देसु, 'अबहीं एही रात रउरा सोझा गवनी ह.'

'ऊ त पुरान गाना गवनी रउरा. आ रउरा कम राउर टीम के लोग अधिका गावल.'

'त रउरा इंटरव्यू हमरा से काहें लेत बानी? टीम से लीं ना.'

'एहले इंटरव्यू लेत बानी कि रउरा अपना टीमो में बड़का गायक हई.'

'मानत बानी रउरा बड़का गायक?' लोक कवि हाथ जोड़ के उलुटे सवाल करत कहत बाड़ें, 'चलीं, राउर बड़ी किरपा!'

'हँ, त हम रउरा से पूछत रहनी कि अब रउरा गावत काहें नइखीं?'

'गाइले!' लोक कवि गंभीर हो गइल बाड़े आ बोलले बाड़े, 'गाइले बाकिर ओहिजा जहाँ हमरा के ठीक से सुनल जाला.'

'कहाँ ठीक से सुनल जाला रउरा के?'

'बिदेस में, कैसेटन में, आकाशवाणी, दूरदर्शन आ सरकारी पोरोगरामन में. जहां दुइए चार गो गावे के होला.' लोक कवि हताश मन से लेकिन उछाह भरल आवाज में कहतारें. फेरू तनिका तिखाई घोरत कहतारें, 'लेकिन वीडियो अलबम अउर सीडी में ना गाइला!' आ जइसे जोड़तारे, 'गरीब मजूर के भाषा के गायक हई नू!'

'खैर बात हम मंचन के करत रहीं कि पहिले त रउरा अइसन मंचो पर बहुते गावत रहीं. जनता जनार्दन के गायक रउरा हइए हई. शायद एही से रउरा के लोक कवि नामो दीहल गइल.'

'ठीक कहतानी.' लोक कवि कहले, 'रउरा विद्वान आदमी हई, सब जानीले.'

'लेकिन हम ई नइखीं जान पावत कि रउरा अब जनता जनार्दन के मंचन से काहे ना गाई? रउरा खुद बताएब?'

'जवाब बहुत मुश्किल बा.' लोक कवि कहतारें, 'जवाब दे सकीलें बाकिर माफ करीं एह मसला पर हमार जवाब दीहल ठीक ना रही!' ऊ कहे लगले, 'भोजपुरी समाजे के ई जवाब खोज निकाले दीं.' फेरू ऊ जोड़तारें, 'हालां कि एकरो ला केकरा फुर्सत बा?'

इंटरव्यू खत्म क के लखनऊ वापिस जाए ला लोक कवि मय अपना टीम नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बाड़े. ऊ सोचतारें कि लड़िकियन के डांस कतना भारी पड़त बा उनुका? पहिले त पोरोगरामों में लड़िकियन के डांस दू कारण से राखत रहलें. एक त खुद के सुस्ताए ला आ दोसरे, पोरोगराम के तनिका ग्लैमर देबे खातिर. बाकिर अब? अब त लड़िकिय सुस्ताली सँ त लोक कवि के गा लेबे के मौका मिलेला. पहिले लड़िकिया फिल्स रहली सँ, अब ऊ अपने फिल्स हो गइल बाड़े. उनकर मन होला कि गाई, 'आवऽ चलीं, ददरी क मेला आ हो धाना!' आ उनुका बरबस धाना के ईयाद आ जाता. बाकिर आयोजक बब्बन यादव, जे लोके कवि के जनपद के हउवें आ दिल्ली में ठेकेदारी आ लीडरी दुनु करेलें, लगही खड़ा बाड़े. कार्यक्रम के सफलता से पगलाइल. स्टेशन पर उहो बाड़े. उनुका खुशी के ठिकाना नइखे. चार छ पेग दारूओ उनका देहि में बा से सफलता के उछाह पूरा ज्वार में बावे. ऊ भीड़ भरल स्टेशन पर अकेले चिल्ला के अचके में उद्धोष करत बाड़े, 'लोक कवि जिंदाबाद!' ऊ दू चार बेर अइसहीं

जिंदाबाद चिल्लइला क तुरते बाद लोक कवि के कान में फुसफुसात बाड़े, 'लेकिन पिंकीआ कहां बिया?' लोक कवि बब्बन यादव के फुसफुसाइल पी जात बाड़े आ साथी कलाकारन के आँखे-आंख में इशारा करत बाड़े कि पिंकी के ट्रेन में कहीं, भा भीड़ में कहीं लुका दिहल जाव. ट्रेन प्लेटफार्म पर आ के लागियो गइल. लेकिन लोक कवि विचलित हो के प्लेटफार्म पर खड़ा बाड़े कि कहीं कवनो अनहोनी मत हो जाव. पिंकी के ले के.

पिंकी लोक कवि के टीम के नईकी डांसर हिय. जवना बिया, कमसिन बिया अउर सेक्सी डांस में निपुण. ओकरा एही निपुणता से बब्बन यादव घाहिल बाड़े आ बउराइल बाड़े. ऊ एके साथ दहाड़त आ फुसफुसात दुनु बाड़े, 'लोक कवि के जय हो ! लेकिन पिंकीआ कहां बिया?'

लोक कवि ठकुआइल बाड़े, खिसियाइलो बाड़े. साथ ही शर्म में डुबलो बाड़े. सोचत बाड़े कि जे ऊ पत्रकार एहिजा एह नई दिल्ली स्टेशन पर मिल जाइत त ओकरा के बोला के ई मंजर देखवते कि, 'लोक कवि जिंदाबाद ! लेकिन पिंकीआ कहां बिया?' आ बतवते कि ऊ अब काहे ना गावसु! बब्बन यादव जइसन लोग उनुका के गावे देला कहीं ?

ई सोच के लाज से उ मूड़ी अउरी नीचे कर लेत बाड़े. लेकिन बब्बन यादव के नारा आ फुसफुसाना चालू बा, 'लोक कवि जिंदाबाद! लेकिन पिंकीआ कहां बिया?'

लोग आवत जावत चिहूँक के बब्बन यादव आ लोक कवि के देखियो लेत बा. लेकिन लोक कवि खुदे से ई सवाल करत बाड़े कि भोजपुरी बिरहा में लड़िकियन के ई फसल उहे बोवले त काटी के? ऊ जवाबो देत बाड़े खुद ही के कि, हम ही काटब. हालां कि बब्बन यादव रह-रह के तबहियो चिल्लइले जात बाड़े, 'लोक कवि के जय!' आ पलट के लोक कवि के कान में फुसफुसात बाड़े, 'लेकिन पिंकीआ कहां बिया?'

त का ई सिरिफ बब्बन यादव के शराब पी के बहके के अंदाजे भर ह? आ कि लोक कवि के येन-केन-प्रकारेण मार्केट में बनल रहला के दंश ह?

लोक कवि अपना सफलता के, एह मार्केट रूपी द्रौपदी के जीतियो के हारल अइसन, ठगाइल महसूस करत बाड़े. प्लेटफार्म पर अइसे खड़ा बाड़े जइसे कि उनुका काठ मार गइल होखे. ई सोचत कि का ऊ सचहू अब ना गावसु? मार्केट के द्रौपदी उनुका गायकी के दूह लिहले बिया? नई दिल्ली स्टेशन के एह प्लेटफार्म पर खड़ा-खड़ा लोक कवि के लागत बा कि अब ऊ द्रौपदी के जीते वाला अर्जुन के भूमिका छोड़ द्रौपदी के जुआ में हार जाए वाला युधिष्ठिर के भूमिका में आ गइल बाड़े. लोक कवि ई सब अबही सोचते बाड़े कि उनुकर एगो चेला उनका के लगभग झिंझोड़त कहऽता, 'गुरु जी डिब्बा में चलीं, ट्रेन अब खुलही वाली बा!'

ऊ चिहूँकत ट्रेन में चढ़ जात बाड़े. ट्रेन सचहू खुल गइल.

ऊ अपना बर्थ पर जा के पटा गइल बाड़े. ऊपरकी बर्थ पर पिंकी उनुका सुरक्षित लउक गइल बिया. ऊ लगभग निश्चित हो गइल बाड़े. काहें कि बब्बन यादव ते प्लेटफार्म पर खड़ा रहले, जब ट्रेन चले लागल रहे.

लोक कवि आँख मूँद लिहले बाड़े आ पटाइले पटाइल अपनही से भितरे-भीतर पूछत बाड़े,

‘भोजपुरी कहाँ बिया?’ ठीक वइसही जइसे बब्बन यादव पूछत रहले, ‘पिंकीआ कहाँ बिया?’ ऊ अपना आपे से पूछत बाड़े, ‘भोजपुरी कहाँ बिया?’ ऊ देखत बाड़े कि पिंकी ते सुरक्षित बिया बाकिर का भोजपुरीओ सुरक्षित बिया? ऊ अपना आपे से फेरू पूछत बाड़े. बाकिर तुरते कवनो जवाब नइखन दे पावत अपनो आप के. ऊ बर्थ पर लेटले-लेटल करवट बदल लेत बाड़े. आ आपने पुरान गाना के लगभग बुदबुदाताड़े, ‘जे केहू से नाई हारल, ते हारि गइल अपने से.’

लोक कवि साचहू अपना आपे से हार गइल बाड़े.

लेकिन ट्रेन बिया कि चलते जात बिया बिना केहू से हरले धड़धड़--धड़धड़!

XXXXXX